BAHN601GET

आधुनिक हिंदी गद्य

आधुनिक भारतीय भाषा (MIL)

बी.ए. / बी. कॉम.

(प्रथम सेमेस्टर के लिए)

दूरस्थ एवं नियमित पाठ्यक्रम पर आधारित स्वयं अध्ययन सामग्री

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय

मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी

हैदराबाद-32, तेलंगाना, भारत

© Maulana Azad National Urdu University, Hyderabad

Course : B.A./B.com

ISBN 978-93-80322-97-1
Edition: June, 2021

प्रकाशक	:	रजिस्ट्रार, मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी, हैदराबाद
प्रकाशन	:	जून, 2021
मूल्य	:	170/-
प्रतियां	:	3000
कम्पोजिंग	:	एस पी हाई-टेक प्रिंटर्स प्राइवेट लिमिटेड, हैदराबाद
डिजाइनिंग एवं सटिंग	:	डॉ. मो. अकमल खान, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू युनिवर्सिटी, हैदराबाद
मुद्रक	:	कर्षक प्रिंट सोल्युशंस, हैदराबाद

आधुनिक हिंदी गद्य

(Modern Hindi Prose)

For B.A./B.com 1st Semester

On behalf of the Registrar, Published by:

Directorate of Distance Education

Maulana Azad National Urdu University

Gachibowli, Hyderabad-500032 (TS), Bharat

Director: dir.dde@manuu.edu.in *Publication :* ddepublication@manuu.edu.in

Phone number: 040-23008314 Website: manuu.edu.in

संपादक-मंडल

(Editorial Board)

प्रो. ऋषभदेव शर्मा
पूर्व अध्यक्ष, उच्च शिक्षा और शोध संस्थान
दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, हैदराबाद
परामर्शी (हिंदी), दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, मानू

प्रो. श्याम राव राठोड़
अध्यक्ष, हिंदी विभाग
अंग्रेज़ी और विदेशी भाषा वि.वि.
हैदराबाद

डॉ. गंगाधर वानोडे
क्षेत्रीय निदेशक,
केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद

डॉ. आफताब आलम बेग
सहायक कुल सचिव
दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, मानू

डॉ. वाजदा इशरत
अतिथि प्राध्यापक
दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, मानू

डॉ. इबरार खान
अतिथि प्राध्यापक
दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, मानू

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय

मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी

गच्चीबौली,हैदराबाद-32, तेलंगाना-भारत

पाठ्यक्रम -समन्वयक

डॉ. आफताब आलम बेग

सहायक कुल सचिव, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय

मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी, हैदराबाद

लेखक	**इकाई संख्या**
• **डॉ. गुर्रमकोंडा नीरजा**, असिस्टेंट प्रोफेसर, उच्च शिक्षा और शोध संस्थान, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, हैदराबाद	**1,2**
• **डॉ वाजदा इशरत**, अतिथि प्राध्यापक, दू. शि. नि., मानू	**3,4**
• **डॉ. चंदन कुमारी**, प्राध्यापक, हिंदी विभाग, भवंस श्री ए.के. दोषी महिला कॉलेज, जामनगर	**5,6**
• **डॉ. सुपर्णा मुखर्जी**, प्राध्यापक, हिंदी विभाग, सेंट एंस जूनियर एंड डिग्री कॉलेज फॉर गर्ल्स एंड वुमेन, मलकाजगिरी, हैदराबाद	**7,8**
• **प्रो. निर्मला एस मौर्य**, कुलपति, पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर	**9,10**
• **डॉ. सुषमा देवी**, सहायक व्याख्याता, हिंदी विभाग, बद्रुका कॉलेज, हैदराबाद	**11,12**
• **प्रो. गोपाल शर्मा,** पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, भाषाविज्ञान विभाग, अरबा मींच विश्वविद्यालय, इथोपिया	**13,14**
• **डॉ. शशि बाला**, हिंदी अध्यापक, केंद्रीय विद्यालय, राष्ट्रीय पुलिस अकादमी, शिवरामपल्ली, हैदराबाद	**15,16**
• **डॉ. मंजु शर्मा**, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, चिरेक इंटरनेशनल स्कूल, हैदराबाद	**17 ,18**
• **डॉ. अविनाश के.,** अकादमिक एसोशिएट,	**19, 20**

डॉ. बी. आर. अंबेडकर सार्वत्रिक विश्वविद्यालय, हैदराबाद

- **डॉ. एन. लक्ष्मीप्रिया**, असिस्टेंट प्रोफेसर, **21,22**
  महात्मा गांधी सरकारी कॉलेज, मायाबंदर (अंडमान निकोबार)
- **डॉ. अबु होरैरा**, अतिथि प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, मानू **23,24**

प्रूफ रीडर:

प्रथम	:	डॉ. वाजदा इशरत, अतिथि प्राध्यापक, दू. शि. नि.
द्वितीय	:	डॉ. मो. अकमल ख़ान, अतिथि प्राध्यापक, दू. शि. नि.
अंतिम	:	डॉ. आफताब आलम बेग, सहायक कुल सचिव, दू. शि. नि.

आवरण : डॉ. मो. अकमल ख़ान

सूची

संदेश	:	कुलपति	8
संदेश	:	निदेशक	9
भूमिका	:	पाठ्यक्रम -समन्वयक	11

खंड /इकाई		**विषय**	**पृष्ठ संख्या**
खंड 1	**:**	**हिंदी साहित्य का संक्षिप्त परिचय**	
इकाई 1	:	आदिकाल	13
इकाई 2	:	भक्तिकाल	28
इकाई 3	:	रीतिकाल	43
इकाई 4	:	आधुनिक काल	58
खंड 2	**:**	**कहानी**	
इकाई 5	:	कहानी : विधागत स्वरूप	73
इकाई 6	:	पंच परमेश्वर (प्रेमचंद) : एक विश्लेषण	88
इकाई 7	:	ममता (जयशंकर प्रसाद) : एक विश्लेषण	103
इकाई 8	:	आतिथ्य (यशपाल) : एक विश्लेषण	118
खंड 3	**:**	**निबंध और एकांकी**	
इकाई 9	:	निबंध : विधागत स्वरूप	133
इकाई 10	:	होली और ओणम (विश्वनाथ अय्यर) : एक विश्लेषण	148
इकाई 11	:	एकांकी : विधागत स्वरूप	163
इकाई 12	:	भोर का तारा (जगदीशचंद्र माथुर) : एक विश्लेषण	178

खंड 4	**:**	**रेखाचित्र और संस्मरण**	
इकाई 13	:	रेखाचित्र : विधागत स्वरूप	193
इकाई 14	:	भाभी (महादेवी वर्मा) : एक विश्लेषण	208
इकाई 15	:	संस्मरण : विधागत स्वरूप	223
इकाई 16	:	त्यागमूर्ति निराला(शिवपूजन सहाय) : एक विश्लेषण	238
खंड 5	**:**	**आत्मकथा और डायरी**	
इकाई 17	:	आत्मकथा : विधागत स्वरूप	253
इकाई 18	:	जौनपुर का एक असाधारण साधारण पुरुष (अमृतलाल नागर) : एक विश्लेषण	268
इकाई 19	:	डायरी : विधागत स्वरूप	283
इकाई 20	:	बम्बई से कन्याकुमारी तक (मोहन राकेश) : एक विश्लेषण	298
खंड 6	**:**	**व्यंग्य और यात्रावृत्त**	
इकाई 21	:	व्यंग्य : विधागत स्वरूप	313
इकाई 22	:	सदाचार का ताबीज़ (हरिशंकर परसाई) : एक विश्लेषण	328
इकाई 23	:	यात्रावृत्त : विधागत स्वरूप	343
इकाई 24	:	धरती का स्वर्ग (विष्णु प्रभाकर) : एक विश्लेषण	358
		परीक्षा प्रश्न पत्र का नमूना	**373**

संदेश

हमारे प्यारे मुल्क की संसद के जिस एक्ट के तहत मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी कायम की गई है, उसकी मूलभूत अनुशंसा उर्दू माध्यम में उच्च शिक्षा को बढ़ावा देना है। ये वो अहम बात है जो एक तरफ इस केंद्रीय विश्वविद्यालय को दूसरे केंद्रीय विश्वविद्यालयों से अलग करती है। तो दूसरी तरफ एक इम्तियाजी खूबी है, एक विशेषता है, जो देश के अन्य संस्थानों को प्राप्त नहीं है। उर्दू माध्यम में ज्ञान विज्ञान को बढ़ावा देने का उद्देश्य उर्दू जानने वाले तबके तक आधुनिक ज्ञान-विज्ञान को पहुंचाना है। एक लंबे समय से उर्दू का दामन ज्ञान-विज्ञान की पाठ्य सामग्री से लगभग खाली है। किसी भी पुस्तकालय या पुस्तक विक्रेता की आलमारियों का सरसरी निगाह से मुआयना करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि उर्दू भाषा कुछ साहित्यिक विधाओं तक सिमटकर रह गई है। यही बात पत्र-पत्रिकाओं के संदर्भ में भी देखी जा सकती है। उर्दू की लेखन सामग्रियाँ पाठक को कभी इश्क़-मोहब्बत के उलझाव भरे रास्तों पर सैर कराती हैं तो कभी भावनात्मक रूप से राजनीतिक मुद्दों में उलझती हैं। कभी सांप्रदायिक और चिंतन की पृष्ठभूमि में धर्म की व्याख्या करती हैं, तो कभी शिकवा–शिकायत से ज़ेहन को भारी बनाती हैं। फिर भी उर्दू पाठक और उर्दू समाज आज के दौर के महत्वपूर्ण ज्ञान-विज्ञान के विषयों चाहे वह स्वयं उसके जीवन और स्वास्थ्य से संबन्धित हों या आर्थिक और व्यावसायिक व्यवस्था से हों या वो जिन कल-पुर्जों के बीच ज़िंदगी गुज़ार रहा है उनसे संबंधित हों या उसके आस-पास की समस्याएँ हों... वो उनसे अनभिज्ञ है। आम तौर पर इन विधाओं की गैर मौजूदगी ने ज्ञान – विज्ञान के प्रति एक अरुचि का वातावरण पैदा किया है, जिसका प्रतिबिंब उर्दू तबके में ज्ञान की काबिलियत की कमी है। यही वे चुनौतियाँ हैं जिनका सामना उर्दू को करना है। पाठ्यक्रम से संबन्धित पाठ्य-सामाग्री की स्थिति भी कुछ अलग नहीं है। स्कूल की सतह पर उर्दू किताबों के न मिलने के चर्चे हर शैक्षिक सत्र के प्रारम्भ में चर्चा में आते हैं। चूंकि उर्दू यूनिवर्सिटी में शिक्षा का माध्यम उर्दू ही है और उसमें ज्ञान-विज्ञान के लगभग सभी महत्वपूर्ण विभाग और कोर्स भी मौजूद हैं। लिहाजा इन तमाम कोर्सेज के लिए पठन-पाठन सामग्री की तैयारी इस विश्वविद्यालय की अहम ज़िम्मेदरियों में से है। हमें उर्दू के साथ-साथ अपनी राजभाषा हिंदी से भी पूरी मोहब्बत है। इसी क्रम में मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी ने बी.ए. और एम.ए. हिंदी का पाठ्यक्रम भी प्रारम्भ किया है। यह पुस्तक उसकी एक कड़ी है। आशा है कि यह पुस्तक विद्यार्थियों के साथ साथ आम लोगों को भी लाभान्वित करेगी। इस पुस्तक के संदर्भ में आपके सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

प्रो.एस.एम. रहमतुल्लाह

कार्यवाहक कुलपति,

मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी

संदेश

आप सभी इस बात से बखूबी वाकिफ हैं कि मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी का बाकायदा आगाज़ 1998 में दूरस्थ शिक्षा प्रणाली और ट्रांसलेशन डिविजन से हुआ था। 2004 में बाकायदा पारंपरिक शिक्षा का आगाज़ हुआ। पारंपरिक शिक्षा के विभिन्न विभाग स्थापित किए गए। नए स्थापित विभागों और ट्रांसलेशन डिविजन में नियुक्तियाँ हुईं। उस वक़्त के शिक्षा प्रेमियों के भरपूर सहयोग से स्व-अधिगम सामग्री को अनुवाद व लेखन के जरिये तैयार कराया गया। पिछले कई वर्षों से यूजीसी-डीईबी (UGC-DEB) इस बात पर ज़ोर देता रहा है कि दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के पाठ्यक्रम व व्यवस्था को पारंपरिक शिक्षा प्रणाली के पाठ्यक्रम व व्यवस्था से लगभग जोड़कर दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के मयार को बुलंद किया जाय। चूंकि मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी दूरस्थ शिक्षा और पारंपरिक शिक्षा का विश्वविद्यालय है, लिहाज़ा इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए यूजीसी-डीईबी (UGC-DEB) के दिशा निर्देशों के मुताबिक दूरस्थ शिक्षा प्रणाली और पारंपरिक शिक्षा प्रणाली के पाठ्यक्रम को जोड़कर और मयारबंद करके स्व-अधिगम सामग्री को पुनः क्रमवार यू.जी. और पी.जी. के विद्यार्थियों के लिए क्रमशः 6 खंड- 24 इकाइयों और 4 खंड – 16 इकाइयों पर आधारित नए तर्ज़ की रूपरेखा पर तैयार कराया जा रहा है।

दूरस्थ शिक्षा प्रणाली को पूरी दुनिया में अत्यधिक कारगर और लाभप्रद शिक्षा प्रणाली की हैसियत से स्वीकार किया जा चुका है और इस शिक्षा प्रणाली से बड़ी संख्या में लोग लाभान्वित हो रहे हैं। मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी ने भी अपनी स्थापना के आरंभिक दिनों से ही उर्दू तबके की शिक्षा की स्थिति को महसूस करते हुए इस शिक्षा प्रणाली को अपनाया है। इस तरह विश्वविद्यालय ने पारंपरिक शिक्षा प्रणाली के पहले दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के द्वारा उर्दू आबादी तक शिक्षा पहुँचाने का सिलसिला शुरू किया। शुरुआती दौर में यहाँ के शैक्षिक कार्यक्रमों के लिए अंबेडकर विश्वविद्यालय और इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों की सामग्री को ज्यों का त्यों या अनुवाद के ज़रिये उपयोग कर लाभ प्राप्त किया गया। इरादा ये था कि बहुत तेज़ी से अपनी पाठ्य सामग्री तैयार करा ली जाएगी लेकिन इरादा और कोशिश दोनों एक दूसरे के साथ नहीं चल पाये, जिसकी वजह से अपनी स्व-अधिगम सामग्री की तैयारी में काफी देर हुई। अंततः एक व्यवस्थित तरीके से युद्धस्तर पर काम शुरू हुआ, जिसके दौरान कदम-कदम पर परेशानियाँ भी आईं मगर कोशिशें जारी रहीं। परिणामस्वरूप बहुत तेज़ी से विश्वविद्यालय ने अपनी पाठ्य सामग्री का प्रकाशन शुरू किया।

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय यू.जी., पी.जी., बी.एड., डिप्लोमा और सर्टिफिकेट कोर्सेज पर आधारित कुल 15 पाठ्यक्रम चला रहा है। बहुत जल्द ही तकनीकी हुनर पर आधारित कोर्सेज शुरू किए जाएंगे। अधिगमकर्ताओं की आसानी के लिए 9 क्षेत्रीय केंद्र (बंगलुरु, भोपाल, दरभंगा,

दिल्ली, कोलकाता, मुंबई, पटना, रांची और श्रीनगर) और 5 उपक्षेत्रीय केंद्र (हैदराबाद, लखनऊ, जम्मू, नूह और अमरावती) का एक बहुत बड़ा नेटवर्क तैयार किया है। इन केन्द्रों के अंतर्गत एक साथ 155 अधिगम केंद्र (लर्निंग सेंटर) काम कर रहे हैं। जो अधिगमकर्ताओं को शैक्षिक और व्यवस्थित सहयोग उपलब्ध कराते हैं। दूरस्थ शिक्षा निदेशालय (डीडीई) ने अपने शैक्षिक और व्यवस्था से संबन्धित कार्यों में आईसीटी का इस्तेमाल शुरू कर दिया है। इसके अलावा अपने सभी पाठ्यक्रमों में प्रवेश सिर्फ ऑनलाइन तरीके से ही दे रहा है।

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय की वेबसाइट पर अधिगमकर्ता को स्व-अधिगम सामग्री की सॉफ्ट कॉपियाँ भी उपलब्ध कराई जा रही हैं। इसके अलावा शीघ्र ही ऑडियो-वीडियो रिकॉर्डिंग का लिंक भी वैबसाइट पर उपलब्ध कराया जाएगा। इसके साथ-साथ अध्ययन व अधिगम के दरमियान एसएमएस (SMS) की सुविधा उपलब्ध की जा रही है। जिसके जरिये अधिगमकर्ताओं को पाठ्यक्रमों के विभिन्न पहलुओं जैसे- कोर्स के रजिस्ट्रेशन, दत्तकार्य, काउंसलिंग, परीक्षा के बारे में सूचित किया जाएगा।

उम्मीद है कि देश में शैक्षिक और आर्थिक रूप से पिछड़ी हुई उर्दू आबादी को मुख्यधारा में शामिल करने में दूरस्थ शिक्षा निदेशालय की भी मुख्य भूमिका होगी।

प्रो. अबुल कलाम

निदेशक, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय
मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी

भूमिका

'आधुनिक हिंदी गद्य' शीर्षक यह पुस्तक मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी, हैदराबाद के बी.ए. (हिंदी) प्रथम सत्र के आधुनिक भारतीय भाषा (एम आई एल) के दूरस्थ शिक्षा माध्यम के छात्रों के लिए तैयार की गई है। इसकी संपूर्ण योजना विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू जी सी) के निर्देशों के अनुसार नियमित माध्यम के पाठ्यक्रम के अनुरूप रखी गई है।

हिंदी साहित्य के आधुनिक काल का उदय आश्चर्यजनक रूप से उस अवधि के साथ मेल खाता है, जब भारत में ब्रिटिश राज को उखाड़ फेंकने के उद्देश्य से गंभीर वैचारिक मंथन चल रहा था। गुलामी के कारणों का विश्लेषण करके उनका निराकरण करने के लिए सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन के लिए समर्पित पुनर्जागरण आंदोलन इसी मंथन का परिणाम था। इसी ने 1857 के प्रथम भारतीय स्वाधीनता संग्राम की पीठिका तैयार की। यही समय देश में शैक्षणिक और वैज्ञानिक आधुनिक बोध के आगमन का समय था। इसे प्रिंटिंग प्रेस के आगमन से विशेष गति मिली। मध्यकाल तक पुस्तकों की प्रतियाँ तैयार करना एक दुष्कर कार्य था। इसलिए मौखिक याद रखे जाने के उद्देश्य से साहित्य मुख्य रूप से पद्य अथवा कविता के रूप में ही रचा जाता था। अब पुस्तकों और पत्रिकाओं का सुगमतापूर्वक बड़ी संख्या में प्रकाशन और वितरण होने लगा, तो कविता के स्थान पर गद्य लेखन को अनुकूल वातावरण मिला। नवजागरण आंदोलन, स्वतंत्रता आंदोलन और स्वतंत्रता के बाद तेज़ गति से नए भारत के निर्माण की चुनौतियों ने साहित्यकारों के समक्ष गद्य की अनेक अलग-अलग विधाओं में साहित्य सृजन के नित्य नए अवसर प्रस्तुत किए। परिणामस्वरूप हिंदी साहित्य में नाटक और निबंध जैसी प्रारंभिक गद्य विधाओं से आगे बढ़कर कहानी, उपन्यास, एकांकी, आत्मकथा, जीवनी, संस्मरण, रेखाचित्र, डायरी, यात्रावृत्त, पत्र साहित्य और व्यंग्य जैसी अनेक नई विधाओं का उद्भव और विकास हुआ।

प्रस्तुत पुस्तक में हिंदी साहित्य के इतिहास को संक्षेप में पृष्ठभूमि के रूप में रखते हुए, विभिन्न आधुनिक गद्य विधाओं के स्वरूप, उद्भव और विकास पर प्रकाश डाला गया है। साथ ही, विभिन्न गद्य विधाओं का तात्विक विश्लेषण भी प्रस्तुत किया गया है। इससे छात्रगण जहाँ एक ओर आधुनिक हिंदी गद्य की बहुमुखी प्रगति से परिचित होंगे, वहीं इस साहित्य में निहित सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संदर्भों, सामाजिक परिवर्तन की आहटों तथा आधुनिक युग के मूल्य बोध से भी अवगत हो सकेंगे। इस सामग्री के अध्ययन से उनके बौद्धिक और नैतिक स्तर का विकास भी होगा। प्रस्तुत पुस्तक की सारी सामग्री को छात्रों की सुविधा के लिए कुल चौबीस इकाइयों के रूप में सरल, सहज और सुबोध भाषा में प्रस्तुत किया गया है।

इस समस्त पाठ सामग्री को तैयार करने में हमें जिन विद्वान इकाई लेखकों, ग्रंथों और ग्रंथकारों से सहायता मिली है, उन सबके प्रति हम कृतज्ञ हैं।

डॉ. आफताब आलम बेग
पाठ्यक्रम समन्वयक

आधुनिक हिंदी गद्य

खंड – I : हिंदी साहित्य का संक्षिप्त परिचय

इकाई 1 : आदिकाल : संक्षिप्त परिचय

इकाई की रूपरेखा

1.0 प्रस्तावना

1.1 उद्देश्य

1.2 मूल पाठ : आदिकाल : संक्षिप्त परिचय

  1.2.1 हिंदी साहित्य का आरंभ : पहला कवि

  1.2.2 काल विभाजन और नामकरण

  1.2.3 आदिकालीन परिवेश

  1.2.4 आदिकाल की प्रवृत्तियाँ

    (क) सिद्ध साहित्य
    (ख) नाथ साहित्य
    (ग) जैन साहित्य
    (घ) रासो साहित्य
    (च) लौकिक साहित्य
    (छ) गद्य साहित्य

1.3 पाठ-सार

1.4 पाठ की उपलब्धियाँ

1.5 शब्द संपदा

1.6 परीक्षार्थ प्रश्न

1.7 पठनीय पुस्तकें

1.0 प्रस्तावना

हिंदी साहित्य का इतिहास सातवीं शती के मध्य से लेकर वर्तमान तक फैला हुआ है। इस लंबी अवधि के इतिहास को विभिन्न काल खंडों में विभाजित करके विद्वानों ने नामकरण किया है। प्रमुख रूप से हिंदी साहित्य के इतिहास को चार कालों में विभाजित किया जाता है-

1. आदिकाल (सातवीं शती के मध्य से चौदहवीं शती के मध्य तक)

2. भक्तिकाल (चौदहवीं शती के मध्य से सत्रहवीं शती के मध्य तक)
3. रीतिकाल (सत्रहवीं शती के मध्य से उन्नीसवीं शती के मध्य तक)
4. आधुनिक काल (उन्नीसवीं शती के मध्य से वर्तमान तक)।

1.1 उद्देश्य

छात्रो! इस इकाई के अंतर्गत आप हिंदी साहित्य के इतिहास के प्रथम काल 'आदिकाल' का अध्ययन करेंगे। इस इकाई के अध्ययन से आप-

- हिंदी साहित्य के पहले कवि के बारे में जान सकेंगे।
- काल विभाजन और नामकरण के संबंध में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- आदिकाल के परिवेश को समझ सकेंगे।
- आदिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियों का संक्षिप्त परिचय प्राप्त कर सकेंगे।

1.2 मूल पाठ : आदिकाल : संक्षिप्त परिचय

1.2.1 हिंदी साहित्य का आरंभ : पहला कवि

प्रिय छात्रो! हिंदी साहित्य के प्रथम कवि के संबंध में काफी मतभेद है। डॉ. शिवसिंह सेंगर ने सातवीं शताब्दी के पुष्य (पुंड) नामक किसी कवि को हिंदी का प्रथम कवि माना था। लेकिन इनकी कोई प्रामाणिक रचना उपलब्ध नहीं होती। यह भी कहा जाता है कि पुष्य या पुंड अपभ्रंश के कवि पुष्पदंत ही है। राहुल सांकृत्यायन ने सातवीं शती के सरहपाद को हिंदी का प्रथम कवि माना है। सरहपाद या सरहपा 84 सिद्धों में से एक थे। रामगोपाल शर्मा दिनेश लिखते हैं कि सरहपा की "कविता में अपभ्रंश का साहित्यिक रूप छूट गया है तथा बोलचाल की भाषा, जो आरंभिक हिंदी है, प्रयुक्त हुई है। वर्ण्य विषय और चेतना की दृष्टि से भी उनका काव्य हिंदी साहित्य के भक्तिकाल का बीजांकुर है।" (सं. नगेंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ. 45)। सरहपाद को हिंदी के प्रथम कवि के रूप में प्रतिष्ठित करने वाले तर्क के संबंध में रामगोपाल शर्मा दिनेश का कथन है कि "सरहपाद ने दोहा और पदों की शैली अपनी कविता में प्रयुक्त की है। यह शैली उनके बाद के सभी हिंदी कवियों ने परंपरा के रूप में अपनाई है। हिंदी मुक्तक काव्य में दोहा सबसे अधिक प्रिय छंद रहा है। अतः सभी दृष्टियों से सरहपाद को हिंदी का प्रथम कवि माना जा सकता है।" (वही)। परंतु एक तथ्य यह भी है कि सरहपाद की रचनाएँ अपने मूल रूप में उपलब्ध नहीं हैं। उनके तिब्बती अनुवाद से राहुल सांकृत्यायन द्वारा हिंदी में किया गया अनुवाद ही प्राप्त है। अतः मूल रचना न मिलने के कारण सरहपाद से हिंदी कविता की शुरूआत मानना सर्व-स्वीकार्य नहीं है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के इतिहास को पढ़ने से यह प्रतीत होता है कि जैन आचार्य देवसेन

प्रथम कवि हैं लेकिन वे भी अपभ्रंश के कवि हैं। हजारी प्रसाद द्विवेदी ने चंदबरदाई को हिंदी भाषा का आदिकवि कहा और साथ ही यह भी माना कि वे अपभ्रंश के अंतिम कवि अधिक हैं। चंदबरदाई कृत 'पृथ्वीराज रासो' को हिंदी का प्रथम महाकाव्य होने का गौरव प्राप्त है। गणपतिचंद्र गुप्त ने 'हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास' में 'भरतेश्वर बाहुबलीरास' (1184 ई.) के रचनाकार शालिभद्र सूरि को हिंदी का प्रथम कवि माना है। 'भरतेश्वर बाहुबलीरास' को हिंदी जैन साहित्य की रास परंपरा का पहला काव्य माना गया है। इस आधार पर शालिभद्र सूरि को हिंदी का प्रथम साहित्यकार और उनकी रचना 'भरतेश्वर बाहुबलीरास' को हिंदी का प्रथम काव्य माना जा सकता है जबकि हिंदी के आदिकवि होने का गौरव चंदबरदाई को प्राप्त है तथा उनकी रचना 'पृथ्वीराज रासो' हिंदी का प्रथम महाकाव्य है।

बोध प्रश्न

- हिंदी के प्रथम कवि के संबंध में रामगोपाल शर्मा दिनेश का क्या कथन है?
- हिंदी का प्रथम साहित्यकार किसे माना जाता है?
- हिंदी के आदिकवि होने का गौरव किसे प्राप्त है?

1.2.2 काल विभाजन और नामकरण

हिंदी साहित्य के इतिहास को अध्ययन की सुविधा हेतु काल खंडों में विभाजित किया जाता है। ध्यान देने से यह स्पष्ट होता है कि विभिन्न कालों का विभाजन और नामकरण किसी ऐतिहासिक घटनाक्रम, शासक, लोकनायक, साहित्यकार, प्रवृत्ति आदि के आधार पर किया जाता है। उदाहरण के लिए -

1. इतिहास के घटनाक्रम के आधार पर : आदिकाल, मध्यकाल, संक्रमण काल, आधुनिक काल

2. शासक और उसके शासनकाल के आधार पर : एलिज़ाबेथ युग, विक्टोरिया युग, मराठा काल

3. राष्ट्रीय, सामाजिक अथवा सांस्कृतिक घटना के आधार पर : भक्तिकाल, पुनर्जागरण काल, सुधार काल, स्वातंत्र्योत्तर काल

4. साहित्यिक प्रवृत्ति के आधार पर : ज्ञानाश्रयी शाखा, प्रेमाश्रयी शाखा, रीतिकाल, छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद

5. साहित्यकार के आधार पर : भारतेंदु युग, द्विवेदी युग, प्रेमचंद युग, प्रेमचंदोत्तर युग, शुक्ल युग, शुक्लोत्तर युग

6. लोकनायक के आधार पर : तिलक युग, गांधी युग

हिंदी साहित्य का काल विभाजन और नामकरण करते समय अनेक समस्याएँ आती हैं। जैसे हिंदी साहित्य के आरंभ का निर्धारण, हिंदी के पहले रचनाकार का निर्धारण तथा काल विभाजन का एक समान आधार आदि। हिंदी साहित्य के काल विभाजन और नामकरण के संबंध में विद्वानों में मतभेद है। हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन के बीज यों तो गार्सां द तासी के ग्रंथ 'इस्त्वार द ल लितरेत्यूर ऐंदुई ऐ ऐंदुस्तानी (1839, 1847) में मिलते हैं। लेकिन 1888 में जार्ज ग्रियर्सन द्वारा रचित 'द मॉडर्न वर्नेक्युलर लिटरेचर ऑफ हिंदुस्तान' नामक ग्रंथ को हिंदी साहित्य का पहला इतिहास कहा जा सकता है। क्योंकि उन्होंने पहली बार कवियों का वर्गीकरण कालक्रमानुसार करते हुए प्रवृत्तियों को भी स्पष्ट किया था। उनके द्वारा किया गया काल विभाजन इस प्रकार है - चारण काल (700-1300 ई. तक), पंद्रहवीं शती का धार्मिक पुनर्जागरण, जायसी की प्रेम कविता, कृष्ण-संप्रदाय, मुगल दरबार, तुलसीदास, प्रेमकाव्य, तुलसीदास के अन्य परवर्ती, अठारहवीं शताब्दी, कंपनी के शासन में हिंदुस्तान और महारानी विक्टोरिया के शासन में हिंदुस्तान। ग्रियर्सन के इस काल विभाजन को पूरी तरह से स्वीकार नहीं किया जा सकता।

आगे मिश्रबंधुओं (गणेश बिहारी मिश्र, श्याम बिहारी मिश्र, शुकदेव बिहारी मिश्र) ने अपनी पुस्तक 'मिश्रबंधु विनोद' में साहित्येतिहास को काल खंडों में विभाजित करने का प्रयास किया जो इस प्रकार है - प्रारंभिक काल, माध्यमिक काल, अलंकृत काल, परिवर्तन काल और वर्तमान काल। इस विभाजन की अनेक सीमाएँ हैं, लेकिन इतिहास लेखन की परंपरा को आगे बढ़ाने में इसका महत्वपूर्ण योगदान है।

हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन में आचार्य रामचंद्र शुक्ल का स्थान सर्वोपरि है। उन्होंने अपने ग्रंथ 'हिंदी साहित्य का इतिहास' में साहित्येतिहास को चार कालों में विभाजित किया जो इस प्रकार हैं - आदिकाल (वीरगाथा काल - सं. 1050 - सं. 1375), पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल - सं. 1375 - सं.1700), उत्तर-मध्यकाल (रीतिकाल - सं. 1700 - सं. 1900) और आधुनिक काल (गद्यकाल - सं. 1900 से)। उन्होंने संपूर्ण भक्तिकाल को चार शाखाओं में बाँटा है। भक्तिकाल को पहले निर्गुण धारा और सगुण धारा में बाँटा और फिर प्रत्येक को दो-दो शाखाओं

में - ज्ञानाश्रयी शाखा व प्रेमाश्रयी शाखा तथा रामभक्ति शाखा व कृष्णभक्ति शाखा।

डॉ. रामकुमार वर्मा ने साहित्यिक प्रवृत्तियों के आधार पर काल विभाजन प्रस्तुत किया है जो इस प्रकार है - संधि काल, चारण काल, भक्ति काल, रीति काल और आधुनिक काल। इस काल विभाजन को देखने से यह स्पष्ट होता है कि संधि काल एक नया काल है। इसके अंतर्गत सिद्ध साहित्य सम्मिलित है। वीरगाथा काल (आदिकाल) को ही रामकुमार वर्मा ने चारण काल कहा है।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने रामचंद्र शुक्ल की कई स्थापनाओं का परिमार्जन करते हुए हिंदी साहित्य का इतिहास लिखा है। उन्होंने जो काल विभाजन प्रस्तुत किया है वह इस प्रकार है - आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल और आधुनिक काल।

गणपतिचंद्र गुप्त, धीरेंद्र वर्मा, राहुल सांकृत्यायन, विश्वनाथ प्रसाद मिश्र आदि विद्वानों ने भी साहित्येतिहास का काल विभाजन प्रस्तुत किया है। विभिन्न इतिहास लेखकों द्वारा प्रस्तावित काल विभाजन और नामकरण का अध्ययन करके एक आदर्श एवं सर्वप्रचलित काल विभाजन प्रस्तुत किया गया है। डॉ.नगेंद्र और डॉ.हरदयाल द्वारा संपादित पुस्तक 'हिंदी साहित्य का इतिहास' में प्रस्तुत यह विभाजन इस प्राकर है -

आदिकाल	:	सातवीं शती के मध्य से चौदहवीं शती के मध्य तक
भक्तिकाल	:	चौदहवीं शती के मध्य से सत्रहवीं शती के मध्य तक
रीतिकाल	:	सत्रहवीं शती के मध्य से उन्नीसवीं शती के मध्य तक
आधुनिक काल	:	उन्नीसवीं शती के मध्य से अब तक
पुनर्जागरण काल (भारतेंदु काल)	:	1857-1900 ई.
जागरण काल (द्विवेदी काल)	:	1900-1918 ई.
छायावाद काल	:	1918-1938 ई.
छायावादोत्तर काल		
(क) प्रगति-प्रयोग काल	:	1938-1953 ई.
(ख) नवलेखन काल	:	1953 ई. से अब तक

छात्रो! आप विभिन्न विद्वानों द्वारा प्रस्तुत काल विभाजन के बारे में जान ही चुके हैं। अब नामकरण की उपयुक्तता के बारे में भी जानकारी प्राप्त करेंगे।

आदिकाल : यह हिंदी साहित्य का प्रथम कालखंड है। जार्ज ग्रियर्सन ने इसे चारण काल कहा तो मिश्रबंधुओं ने प्रारंभिक काल। रामचंद्र शुक्ल ने आदिकाल नाम देकर भी वीरगाथा काल कहा तो रामकुमार वर्मा ने संधि काल और चारण काल। वीरगाथा काल नाम में इस काल की अन्य प्रवृत्तियाँ समाहित नहीं हो पातीं। यही बात चारण काल नाम पर भी लागू है। प्रारंभिक काल

नाम में गंभीरता का अभाव मानते हुए अनेक विद्वानों ने आदिकाल को ही सर्वाधिक उपयुक्त माना है।

भक्तिकाल : चौदहवीं शती के मध्य से सत्रहवीं शती के मध्य तक के कालखंड को भक्तिकाल कहा जाता है क्योंकि इस समय धार्मिक चेतना भक्ति आंदोलन के रूप में प्रबल रही। मूल प्रवृत्तियों के आधार पर इस काल का उप वर्गीकरण किया गया है - निर्गुण भक्तिधारा और सगुण भक्तिधारा। निर्गुण भक्तिधारा के अंतर्गत ज्ञानाश्रयी शाखा (संत साहित्य) तथा प्रेमाश्रयी शाखा (सूफी साहित्य) सम्मिलित हैं। सगुण भक्तिधारा के अंतर्गत कृष्ण भक्ति शाखा और राम भक्ति शाखा सम्मिलित हैं। भक्तिकाल को पूर्व मध्यकाल भी कहा जाता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि इस काल में भारत में मध्यकालीन सामंती प्रवृत्तियों का प्रचलन था। इस कालखंड के लिए भक्तिकाल का नाम अत्यंत उचित है क्योंकि यह नामकरण भारत में व्याप्त भक्ति आंदोलन के संदर्भ में सर्वाधिक सटीक है। तथा इसी मुख्य विषय के आधार पर उपवर्गों का नामकरण भी किया गया है। अतः इसकी उपयुक्तता में कोई संदेह नहीं।

रीतिकाल : इस काल को उत्तर मध्यकाल भी कहा जाता है। इस काल को रामचंद्र शुक्ल ने रीतिकाल कहा। रीतिकाल में काव्य रचना काव्यशास्त्र के लक्षणों से प्रभावित तथा रीति या परिपाटी के अनुरूप हुई। विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने इस काल को शृंगार काल कहा। लेकिन यह नाम अधूरा है क्योंकि इस काल में शृंगार प्रधान रचनाओं के अतिरिक्त नीति, भक्ति और ओज की रचनाएँ भी उपलब्ध हैं। मिश्रबंधुओं ने इसे अलंकृत काल कहा। अलंकृत काल अथवा शृंगार काल का नाम अपर्याप्त है। रीतिकाल कहने से इस काल के सब कवियों की प्रवृत्तियों का बोध होता है। इस काल को रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध और रीतिमुक्त के रूप में वर्गीकृत किया गया है। काव्य के केंद्र में रीति होने के कारण इस काल के लिए सर्वाधिक उपयुक्त नाम रीतिकाल ही हो सकता है।

आधुनिक काल : रामचंद्र शुक्ल ने आधुनिक काल को गद्यकाल भी कहा। इस नामकरण से यह भ्रम पैदा होना स्वाभाविक है कि इस काल में केवल गद्य साहित्य ही लिखा गया है तथा पद्य का अभाव है। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है। पहले तीनों कालों में कुछ अपवादों को छोड़कर गद्य रचना का लगभग अभाव रहा और इस काल में ही उसका विकास हुआ। यह ठीक है कि इस काल में पद्य की अपेक्षा गद्य का महत्व अधिक है। तथापि गद्य काल की अपेक्षा इस काल को आधुनिक काल कहना उचित है। यह नाम देश की परिस्थितियों में बदलाव तथा मध्यकाल की समाप्ति का भी सूचक है।

बोध प्रश्न

- काल विभाजन और नामकरण का आधार क्या है?

- उत्तर मध्यकाल के लिए रीतिकाल का नाम क्यों उपयुक्त है?
- आधुनिक काल को गद्य काल कहने की अपेक्षा आधुनिक काल कहना क्यों उचित है?

1.2.3 आदिकालीन परिवेश

छात्रो! आप जान ही चुके हैं कि हिंदी साहित्य के प्रथम काल को आदिकाल कहा जाता है। इस काल के उपलब्ध साहित्य से उस समय के समग्र परिवेश के बारे में जानकारी प्राप्त की जा सकती है तथा तत्कालीन राजनैतिक, सामाजिक और धार्मिक परिस्थितियों को भी जाना जा सकता है। आदिकालीन परिवेश को समझने के लिए तत्कालीन राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक पृष्ठभूमि को समझना अनिवार्य है।

राजनैतिक पृष्ठभूमि : आदिकालीन भारत में सामंतवादी व्यवस्था थी। इस काल की राजनीति दो कारणों से अव्यवस्थित और कमजोर थी। एक मुख्य कारण था विदेशी आक्रमण। पूरा उत्तर भारत उस समय मुसलमान आक्रमणकारियों के कारण बुरी तरह आतंकित था। "इस काल की राजनैतिक परिस्थिति वर्द्धन साम्राज्य के पतन से आरंभ होती है। हर्षवर्द्धन की मृत्यु ने भारत की संगठित सत्ता के खंड खंड हो जाने की सूचना दी तथा वे राजपूत राज्य सामने आए, जो निरंतर युद्धों की आग में जलते जलते अंततः विशाल इस्लाम साम्राज्य की नींव में समा गए।" (सं. नगेंद्र. हिंदी साहित्य का इतिहास. पृ. 50)। केंद्रीय शक्ति की कमजोरी से विदेशी आक्रमणकारियों ने फायदा उठाया। मुहम्मद बिन कासिम के नेतृत्व में सिंध पर आक्रमण हुआ। पूरा देश अनेक छोटे-छोटे राज्यों में बंट गया। दूसरा कारण था गृह कलह और आपसी स्वार्थ। देशीय राजाओं का पतन विदेशी आक्रमणों के कारण नहीं, बल्कि देशीय राजाओं के गृह-कलह, आपसी द्वेषपूर्ण भेदभाव, कुटिल राजनीति तथा क्षेत्रीयता की संकुचित भावना के कारण ही हुआ।

धार्मिक पृष्ठभूमि : धार्मिक दृष्टि से भी यह काल अव्यवस्थित था। बौद्ध धर्म का ह्रास हो रहा था और वैष्णव धर्म भी अपनी प्रतिष्ठा खोने लगा था। जैन एवं शैव मत का सम्मान बढ़ने लगा। संपूर्ण उत्तर भारत में बौद्ध, शैव और स्मार्त संप्रदायों के विवाद के साथ सिद्ध और नाथ संप्रदाय उभरने लगे। विदेशी आक्रमणों के कारण देश में एक नए धर्म अर्थात इस्लाम का प्रवेश हुआ। इससे राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक सभी क्षेत्रों में उथल-पुथल के साथ-साथ अराजकता की स्थिति पैदा हुई। तत्कालीन जनता में तीव्र असंतोष, क्षोभ और भ्रम छाया हुआ था।

सांस्कृतिक पृष्ठभूमि : आदिकाल के प्रारंभ के समय भारतीय संस्कृति अपने उत्कर्ष पर तथा उसका समापन के समय यहाँ मुस्लिम संस्कृति चरमोत्कर्ष पर थी। इसलिए आदिकाल को दो

संस्कृतियों का संधि काल भी कहा जा सकता है। इसका प्रभाव जनता पर पड़ने लगा था।

सामाजिक पृष्ठभूमि : किसी भी देश की राजनैतिक एवं धार्मिक स्थितियों का प्रभाव सामाजिक जीवन पर पड़ना स्वाभाविक है। सामान्य जनता त्रस्त थी। वर्ण भेद तथा वर्ग भेद के कारण लोगों में अंधविश्वास, धार्मिक कट्टरता तथा जात-पाँत का भेद बढ़ता जा रहा था। स्त्री भोग्या बन कर रह गई थी। वह क्रय-विक्रय एवं अपहरण की वस्तु बनती गई। सती प्रथा उस समय के समाज का अभिशाप थी।

साहित्यिक पृष्ठभूमि : आदिकालीन साहित्य की तीन धाराएँ दिखाई देती हैं - एक संस्कृत साहित्य की, दूसरी प्राकृत एवं अपभ्रंश साहित्य की और तीसरी धारा हिंदी में लिखे जाने वाले साहित्य की। संस्कृत साहित्य की दीर्घ परंपरा थी। नौवीं से ग्यारहवीं शताब्दी तक कन्नौज एवं कश्मीर संस्कृत साहित्य रचना के केंद्र रहे। इस बीच अनेक आचार्य, कवि, नाटककार एवं गद्य लेखक सामने आए। आनंदवर्धन, अभिनवगुप्त, कुंतक, मम्मट, राजशेखर, जयदेव आदि इसी युग की देन हैं। प्राकृत और अपभ्रंश में भी साहित्य सृजन हुआ। अपभ्रंश के कवियों में स्वयंभू, पुष्पदंत, धनपाल, अब्दुल रहमान, जिनदत्त सूरि आदि उल्लेखनीय हैं। सरहपा, शबरपा, लुइपा, गोरखनाथ जैसे कवि अपभ्रंश के साथ-साथ लोकभाषा हिंदी की रचनाएँ भी प्रस्तुत कर रहे थे।

बोध प्रश्न

- आदिकालीन राजनैतिक व्यवस्था क्यों कमजोर थी?
- आदिकाल को दो संस्कृतियों का संधि काल क्यों कहा जाता है?

1.2.4 आदिकाल की प्रवृत्तियाँ

आदिकालीन साहित्य उस समय की विभिन परिस्थितियों की उपज है। आदिकालीन साहित्य के संबंध में रामस्वरूप चतुर्वेदी का यह कथन उल्लेखनीय है - “आदिकालीन कवि धार्मिकता और ऐहिकता, वीर और शृंगार, ईश्वरत्व और मनुष्यत्व के द्वंद्वों का समाहार करने में संलग्न दिखाई देता है। आदिकालीन साहित्य में वैविध्य भरपूर है - विषयों का, काव्य-रूपों का, काव्य-भाषा के आधार-रूपों का। पर समरसता की प्रक्रिया उत्तरोत्तर सूक्ष्म स्तरों में पैठती गई है - विचारों, बोलियों और बानियों से आरंभ होकर वह रचनात्मक परिकल्पना तक उतरी है।” (हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास, पृ. 23)। ध्यान देने की बात है कि शासन संबंधी विषमता, धर्म संबंधी विषमता और विघटित सामाजिक व्यवस्था साहित्य सृजन के प्रेरक बिंदु के रूप में काम कर रहे थे। अतः इस समय के साहित्य में धार्मिक, वीर तथा शृंगार एवं लौकिक

प्रवृत्तियाँ प्रमुख रूप से दिखाई देती हैं। प्रवृत्तियों के आधार पर आदिकालीन साहित्य को निम्नलिखित वर्गों में विभाजित किया जा सकता है -

(क) सिद्ध साहित्य : सिद्ध बौद्ध धर्म की शाखा वज्रयान से संबद्ध कवि हैं। 84 सिद्धों में सरहपा, शबरपा, लुइपा, डोंबिपा, कण्हपा एवं कुक्कुरिपा आरंभिक हिंदी के प्रमुख सिद्ध कवि हैं। सिद्ध साहित्य में सहज जीवन को स्वीकारने पर बल दिया गया है। पाखंड का खंडन, परमात्मा के संबंध में रहस्यमय भावना, माया-मोह का विरोध, रूढ़ियों का खंडन आदि इस साहित्य के प्रमुख विषय हैं। सिद्धों ने गुरु की महिमा को स्वीकारा। उनके अनुसार गुरु के अमृत समान रसपूर्ण उपदेश का पान जो नहीं करता वह शास्त्रार्थ रूपी रेगिस्तान में प्यास से तड़पकर मर जाता है। सिद्ध साहित्य प्रमुख रूप से दो काव्य रूपों - 'दोहा कोश' (दोहों का संग्रह) और 'चर्या कोश' (पदों का संग्रह) में मिलता है। सिद्ध साहित्य की भाषा अपभ्रंश का उत्तर भाषा रूप है। यह हिंदी भाषा का आरंभिक रूप है। इसमें तद्भव शब्दों का प्रयोग पाया जाता है। यह उस समय की जनभाषा के निकट है। यह वस्तुतः सिद्ध साहित्य की भाषागत विशेषता है। इसीलिए इसे संध्या भाषा नाम दिया गया है। यह कोई अलग भाषा नहीं है बल्कि यह सिद्धों द्वारा प्रयुक्त प्रतीकात्मक शैली है जिसके सहारे वे अपनी अनुभूतियों को व्यक्त करते थे। वस्तुतः सिद्धों ने अपभ्रंश और पुरानी हिंदी में रचनाएँ की हैं। रामगोपाल शर्मा दिनेश की मान्यता है कि सिद्ध कवियों ने "हिंदी साहित्य में कविता की जो प्रवृत्तियाँ आरंभ कीं, उनका प्रभाव भक्तिकाल तक चलता रहा। रूढ़ियों के विरोध का अक्खड़पन, जो कबीर आदि की कविता में मिलता है, इन सिद्ध कवियों की देन है।" (सं. नगेंद्र. हिंदी साहित्य का इतिहास. पृ. 60)

बोध प्रश्न

- संध्या भाषा किसे कहते हैं?

(ख) नाथ साहित्य : सिद्ध संप्रदाय की प्रतिक्रिया के रूप में नाथ संप्रदाय का विकास हुआ। इसने भोग मार्ग के स्थान पर योग मार्ग और सहज साधना के स्थान पर हठयोग का प्रतिपादन किया। 'ह' का अर्थ है सूर्य तथा 'ठ' का अर्थ है चंद्र। माना जाता है कि हठयोगी साधना द्वारा शरीर और मन को शुद्ध करके शून्य में समाधि लगाते हैं जहाँ ब्रह्म का साक्षात्कार होता है। इसने धार्मिक अनैतिकता को दूर करने में तथा मनुष्य को आत्मानुशासन प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। नाथ संप्रदाय को सिद्ध मत, सिद्ध मार्ग, योग मार्ग, योग संप्रदाय, अवधूत मत एवं अवधूत संप्रदाय भी कहा जाता है। इस संप्रदाय के प्रवर्तक हैं गोरखनाथ। नाथों की संख्या नौ बताई जाती है। इस संप्रदाय ने शैव मत के सिद्धांतों को स्वीकार किया और शिव को आदिनाथ

माना। हठयोग साधना द्वारा कुंडलिनी शक्ति को जागृत करना, इंद्रिय निग्रह, नारी संसर्ग से दूर रहना आदि पर विश्वास रखने वाले इन नाथ पंथियों के साहित्य में भी यही प्रवृत्तियाँ दिखाई देती हैं। गोरखनाथ ने अपनी रचनाओं में गुरु महिमा, इंद्रिय निग्रह, प्राण साधना, वैराग्य, कुंडलिनी जागरण, शून्य समाधि आदि का वर्णन किया है। नाथ साहित्य के विकास में चौरंगीनाथ, गोपीचंद, चुणकरनाथ आदि का योगदान भी महत्वपूर्ण है।

बोध प्रश्न

- हठयोग साधना किसे कहा जाता है?

(ग) जैन साहित्य : जैन कवियों ने अपने विचारों का प्रचार करने के लिए कविता का माध्यम अपनाया। जैन साहित्य में उपदेश की प्रधानता पाई जाती है। इन कवियों की रचनाएँ आचार, रास, फाग, चरित आदि विभिन्न शैलियों में मिलती हैं। आचार काव्यों में श्रावक धर्म का प्रतिपादन तथा गृहस्थ के कर्तव्यों और विस्तार से जैन मत का प्रतिपादन किया गया है। रास काव्यों में प्रेम, विरह और युद्ध का वर्णन मिलता है। चरित काव्यों में पौराणिक चरित्रों के माध्यम से जैन मत का प्रतिपादन किया गया है। जैन साहित्य की भाषा लोक-भाषा है। यह अपभ्रंश से प्रभावित हिंदी है। स्वयंभू (पउम चरिउ अथवा जैन रामायण), पुष्पदंत (महापुराण), धनपाल, अब्दुर्रहमान, जिनदत्त सूरि आदि अपभ्रंश के जैन कवि हैं तो देवसेन (श्रावकाचार), शालिभद्र सूरि (भरतेश्वर बाहुबली रास), आसगु (चंदनबाला रास) आदि आदिकालीन हिंदी जैन साहित्य के प्रमुख रचनाकार हैं। जैन साहित्य ने साहित्यिक गरिमा को बनाए रखा तथा वैदिक धर्म के राम और कृष्ण के अवतारों तथा पुराणों पर पुनर्विचार प्रकट किया।

बोध प्रश्न

- जैन साहित्य की चार शैलियाँ क्या-क्या हैं?

(घ) रासो साहित्य : इसे वीरगाथा साहित्य भी कहा जाता है। यह आदिकाल की सर्वाधिक प्रचलित प्रवृत्ति है। वीर और शृंगार इनके प्रमुख रस हैं। रामगोपाल शर्मा दिनेश का कथन है कि “रासो काव्यों को देखने से पता चलता है कि उनके रचयिता जिस राजा के चरित का वर्णन करते थे, उसके उत्तराधिकारी राजा गण अपने आश्रित अन्य कवियों से उसमें अपने चरित भी सम्मिलित करा देते थे। यही कारण है कि इन ग्रंथों में मध्यकालीन राजाओं का भी वर्णन मिलता है तथा भाषा में भी उत्तरवर्ती भाषा रूपों की झलक आ जाती है। राजस्थान के कतिपय वृत्त संग्रह कर्ताओं ने अधिकांश रासो काव्यों को इन्हीं बातों के कारण अप्रामाणिक रचनाएँ माना है।”

(सं. नगेंद्र. हिंदी साहित्य का इतिहास. पृ. 62)। हिंदी के प्रमुख वीरगाथात्मक रासो काव्य हैं- खुमाण रासो (दलपति विजय), बीसलदेव रासो (नरपति नाल्ह), पृथ्वीराज रासो (चंदबरदाई), परमाल रासो (जगनिक) आदि।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने चंदबरदाई को हिंदी का प्रथम कवि और पृथ्वीराज रासो को हिंदी का प्रथम महाकाव्य माना है। इस महाकाव्य के चार संस्करण मिलते हैं। सबसे बड़ा संस्करण 2500 पृष्ठों का है। इसमें 69 समय या सर्ग हैं। इसमें पृथ्वीराज चौहान के बाल्यकाल, प्रेम, शौर्य, युद्ध, जय-पराजय की कथा वर्णित है। यह वीर रस प्रधान महाकाव्य है। भाषा की दृष्टि से यह ब्रज भाषा (पिंगल) में लिखा गया है। इसमें राजस्थानी बोलियों का मिश्रण है। हजारी प्रसाद द्विवेदी का कथन है कि यह महाकाव्य मूलतः शुक-शुकी संवाद के रूप में रचा गया था। पृथ्वीराज रासो की प्रामाणिकता के संबंध में काफी विवाद रहा। इसके पक्ष-विपक्ष में अनेक विद्वानों ने मत प्रस्तुत किए। फिर भी सभी विद्वान उसके श्रेष्ठ काव्य-गुण के संबंध में एकमत हैं।

बोध प्रश्न

- रासो साहित्य को क्या कहा जाता है और क्यों?

(च) लौकिक साहित्य : आदिकाल में लौकिक विषयों पर भी साहित्य रचना हुई। इनमें ढोला-मारू रा दूहा, जयचंद प्रकाश, जयमयंक जसचंद्रिका, वसंत विलास तथा खुसरो की पहेलियाँ उल्लेखनीय हैं। ढोला-मारू रा दूहा ग्यारहवीं शताब्दी में रचित एक लोकभाषा काव्य है। यह काव्य पश्चिमी हिंदी प्रदेश (मुख्यतः राजस्थान) में लोकप्रिय है। इसमें ढोला नामक राजकुमार और मारवाणी नामक राजकुमारी की प्रेमकथा है। यह आदिकालीन शृंगार काव्य परंपरा की एक महत्वपूर्ण कड़ी है।

आदिकालीन परिवेश में खड़ीबोली में काव्य रचना करने वाले प्रथम कवि थे अमीर खुसरो। इन्होंने जनता के मनोरंजन के लिए पहेलियाँ और मुकरियाँ लिखीं। उनकी रचनाओं में ख़ालिक़ बारी, पहेलियाँ, मुकरियाँ, दो सुखने, ग़ज़ल आदि प्रसिद्ध हैं। खुसरो की भाषा की विशेषताओं को उनकी पहेलियों में देखा जा सकता है - बीसों का सिर काट दिया। न मारा न खून किया (नाखून)। खुसरो के समय उत्तर भारत में संगीत की भाषा ब्रज थी अतः उन्होंने ब्रज भाषा में गीतों और कव्वालियों की रचना की। खड़ी बोली में लोक रंजन के लिए दोहे, मुकरियाँ और पहेलियाँ कहीं। पर शिष्ट काव्य भाषा की रचना उन्होंने दरबार की भाषा फारसी में ही की। रामस्वरूप चतुर्वेदी का कथन है कि “खुसरो ने दोनों को मिला दिया है - साहित्य को और संगीत को, और इसीलिए हिंदू और तुरक को। यह दृष्टि हिंदी की सिद्धों-नाथों से आरंभ अद्वैती रहस्य-परंपरा से सीधे जुड़ी हुई है।” (हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास. पृ. 26)

(छ) गद्य साहित्य : आदिकाल में काव्य के साथ-साथ गद्य साहित्य भी मिलता है। राउलवेल (चंपू), उक्ति-व्यक्ति-प्रकरण और वर्ण रत्नाकर इस संदर्भ में उल्लेखनीय रचनाएँ हैं। राउलवेल एक शिला पर अंकित कृति है। इसका पाठ मुंबई के प्रिंस ऑफ वेल्स संग्रहालय से उपलब्ध कर प्रकाशित कराया गया है। यह गद्य-पद्य मिश्रित चंपूकाव्य की प्राचीनतम हिंदी कृति है। "इसकी रचना राउल नायिका के नखशिख वर्णन के प्रसंग में हुई है। आरंभ में कवि ने राउल के सौंदर्य का वर्णन पद्य में किया है और फिर गद्य का प्रयोग किया गया है। इस कृति का रचयिता रोडा नामक कवि माना जाता है।" (सं. नगेंद्र. हिंदी साहित्य का इतिहास. पृ. 73)। इसी कृति से हिंदी में नखशिख वर्णन की शृंगार परंपरा आरंभ होती है। गद्य में भी आलंकारिक भाषा का सफल प्रयोग मिलता है।

हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार पंडित दामोदर शर्मा द्वारा रचित 'उक्ति-व्यक्ति-प्रकरण' एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है। इसमें बनारस और आसपास के प्रदेशों की संस्कृति और भाषा आदि पर प्रकाश डाला गया है। उस युग की काव्य कृतियों के संबंध में भी इस कृति के माध्यम से जानकारी प्राप्त होती है।

वर्ण रत्नाकर मैथिली हिंदी में रचित गद्य पुस्तक है। ज्योतिरीश्वर ठाकुर नामक मैथिली कवि इस कृति के रचनाकार हैं। इसकी भाषा में कवित्व, आलंकारिकता तथा तत्समता की प्रवृत्तियाँ दिखाई देती हैं।

बोध प्रश्न

- राउलवेल की विषय वस्तु क्या है?

1.3 पाठ-सार

छात्रो! इस पाठ के अध्ययन से आप जान ही चुके हैं कि आदिकालीन साहित्य मुख्य रूप से धार्मिक और वीरगाथा साहित्य के इर्द-गिर्द घूमता नज़र आता है। यह चेतना तत्कालीन परिवेश के अनुकूल विकसित चेतना है। आदिकालीन राजनैतिक पृष्ठभूमि अव्यवस्थित रही। तत्कालीन राजाओं की गृह कलह और संकुचित राजनीति के कारण विदेशी आक्रमण हुए। इसके परिणामस्वरूप स्वदेशी राजाओं को पराजित होना पड़ा।

आदिकालीन धार्मिक साहित्य सिद्ध, नाथ और जैन साहित्यिक रूपों में उपलब्ध होता है। समाज में व्याप्त रूढ़िवाद, जातिवाद आदि का खंडन करके सिद्ध साहित्य ने नई सामाजिक क्रांति का सूत्रपात किया। नाथपंथियों ने योग साधना का संदेश दिया। योग साधना ने धार्मिक अनैतिकता को दूर करने में तथा मनुष्य को आत्मानुशासन प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जैन साहित्य ने साहित्यिक गरिमा को बनाए रखा तथा वैदिक धर्म के राम और कृष्ण के

अवतारों तथा पुराणों पर पुनर्विचार प्रकट किया। यह भी कहा जा सकता है कि आदिकालीन धार्मिक चेतना ने भक्ति चेतना के लिए बुनियादी वातावरण तैयार किया।

आदिकालीन साहित्य ने तत्कालीन लोक भाषाओं को अपने में समेटकर आरंभ से ही अपनी एक अलग पहचान बनाई। वीरगाथा काव्य और सिद्ध साहित्य की रचनाएँ सामान्य जनता में लोकप्रिय हुईं। कहना गलत नहीं होगा कि आदिकालीन साहित्य ने आगे के युगों तथा साहित्य के लिए मार्ग प्रशस्त किया है।

1.4 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष उपलब्ध हुए हैं-

1. शालिभद्र सूरि को हिंदी का प्रथम कवि और उनकी रचना 'भरतेश्वर बाहुबली रास' को हिंदी का प्रथम काव्य माना जा सकता है जबकि हिंदी के आदि महाकवि होने का गौरव चंदबरदाई को प्राप्त है तथा उनकी रचना 'पृथ्वीराज रासो' हिंदी का प्रथम महाकाव्य है।
2. विभिन्न कालों का विभाजन और नामकरण ऐतिहासिक घटनाक्रम, शासक, लोकनायक, साहित्यकार, प्रवृत्ति आदि के आधार पर किया गया है।
3. आदिकालीन भारत में सामंतवादी व्यवस्था थी। इस काल की राजनीति दो कारणों से अव्यवस्थित और कमजोर थी - एक विदेशी आक्रमण और दूसरा गृह कलह।
4. आदिकाल को दो संस्कृतियों - हिंदू और मुस्लिम - का संधि काल भी कहा जा सकता है।
5. आदिकालीन धार्मिक चेतना ने भक्ति चेतना के लिए बुनियादी वातावरण तैयार किया।
6. समाज में व्याप्त रूढ़िवाद, जातिवाद आदि का खंडन करके सिद्ध साहित्य ने नई सामाजिक क्रांति का सूत्रपात किया।
7. नाथपंथियों ने योग साधना का संदेश दिया। नाथपंथियों द्वारा प्रतिपादित योग साधना ने धार्मिक अनैतिकता को दूर करने में तथा मनुष्य को आत्मानुशासन प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
8. जैन साहित्य ने राम और कृष्ण के अवतारों तथा पुराणों पर पुनर्विचार प्रकट किया।
9. आदिकालीन साहित्य ने तत्कालीन लोक भाषाओं को अपने में समेटकर आरंभ से ही अपनी एक अलग पहचान बना ली है।
10. आदिकालीन साहित्य ने आगे के युगों तथा साहित्य के लिए मार्ग प्रशस्त किया है।

1.5 शब्द संपदा

1. सामंत = किसी राजा के अधीन रहने वाला

2. पुनर्जागरण = सोए हुए का फिर से जगाना

3. वज्रयान = बौद्धों की एक शाखा जो तंत्र-मंत्र आदि में विश्वास करती है

4. हठयोग = चित्तवृत्तियों का निरोध और इन्हें सांसारिकता से विमुख कर अंतर्मुखी करने की एक जटिल भारतीय साधना पद्धति

5. शुक = तोता

1.6 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. हिंदी के प्रथम कवि के संबंध में चर्चा कीजिए।
2. काल विभाजन का परिचय देते हुए आदर्श काल विभाजन को प्रस्तुत कीजिए।
3. आदिकालीन परिवेश को विस्तार से समझाइए।
4. आदिकाल की मुख्य प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए।

खंड (ब)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. हिंदी साहित्य के काल विभाजन और नामकरण की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए यह स्पष्ट करें कि भक्तिकाल नामकरण कहाँ तक उपयुक्त है?
2. आदिकाल की राजनैतिक एवं सामाजिक पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालिए।
3. सिद्ध साहित्य पर टिप्पणी लिखिए।
4. रासो साहित्य के संबंध में विचार व्यक्त कीजिए।
5. आदिकालीन लौकिक एवं गद्य साहित्य पर प्रकाश डालिए।

खंड (स)

I सही विकल्प चुनिए

1. आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने किसे हिंदी का प्रथम कवि माना है? ( )
   (अ) सरहपाद (आ) देवसेन (इ) शालिभद्र सूरि (ई) चंदबरदाई

2. इनमें से कौनसी रचना आदिकालीन शृंगार काव्य परंपरा की एक महत्वपूर्ण कड़ी है? ( )
   (अ) पहेलियाँ (आ) रासो साहित्य (इ) ढोला-मारू रा दूहा (ई) पउम चरिउ

3. आदिकालीन परिवेश में खड़ीबोली में काव्य रचना करने वाले प्रथम कवि कौन हैं? ( )
(अ) देवसेन (आ) चंदबरदाई (इ) स्वयंभू (ई) अमीर खुसरो

4. किस कृति से हिंदी नखशिख वर्णन की शृंगार परंपरा आरंभ होती है? ( )
(अ) राउलवेल (आ) श्रावकाचार (इ) पृथ्वीराज रासो (ई) चर्यापद

II रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए

1. .... ग्रंथ को हिंदी साहित्य का पहला इतिहास माना जा सकता है।

2. हिंदी का प्रथम महाकाव्य .... है।

3. हिंदी जैन रास परंपरा का पहला काव्य .... है।

4. सिद्ध साहित्य की भाषा को .... कहा जाता है।

III सुमेल कीजिए

i) शालिभद्र सूरि (अ) नाथ संप्रदाय

ii) चर्यापद (आ) शुक-शुकी संवाद

iii) हठयोग (इ) हिंदी का प्रथम कवि

iv) पृथ्वीराज रासो (ई) पदों का संग्रह

1.7 पठनीय पुस्तकें

1. हिंदी साहित्य का इतिहास. रामचंद्र शुक्ल

2. हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास. रामस्वरूप चतुर्वेदी

3. हिंदी साहित्य का इतिहास. सं. नगेंद्र और हरदयाल

इकाई 2 : भक्तिकाल : संक्षिप्त परिचय

इकाई की रूपरेखा

2.0 प्रस्तावना

2.1 उद्देश्य

2.2 मूल पाठ : भक्तिकाल : संक्षिप्त परिचय

2.2.1 भक्तिकाल की परिस्थितियाँ

2.2.2 भक्तिकाल की प्रवृत्तियाँ
(क) निर्गुण भक्ति काव्य
(ख) सगुण भक्ति काव्य

2.2.3 भक्तिकालीन गद्य साहित्य

2.2.4 भक्तिकाल का महत्व : स्वर्ण युग

2.3 पाठ-सार

2.4 पाठ की उपलब्धियाँ

2.5 शब्द संपदा

2.6 परीक्षार्थ प्रश्न

2.7 पठनीय पुस्तकें

2.0 प्रस्तावना

उत्तर भारत में मध्यकाल में भक्ति आंदोलन का प्रारंभ हुआ। आचार्य रामचंद्र शुक्ल इसे राजनैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों, खासकर विदेशी आक्रमणों से जोड़कर देखते हैं। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इसे भारतीय चिंता-धारा अर्थात परंपरा के सहज विकास का परिणाम माना। अतः यह कहा जा सकता है कि परिस्थितियों एवं परंपराओं के कारण भक्ति का उदय हुआ। दो धर्मों के अनुयायियों के साथ-साथ रहने के कारण समन्वय का स्वर गूँज उठा और निर्गुण भक्ति का जन्म हुआ। इतना ही नहीं, कृष्ण और राम की उपासना करने वाले कवि उत्पन्न हुए। परिणामस्वरूप सगुण भक्ति का जन्म हुआ।

भक्ति आंदोलन दक्षिण भारत से पूरे देश में फैला। “भक्ति का जो सोता दक्षिण की ओर से धीरे-धीरे उत्तर भारत की ओर पहले से आ रहा था उसे राजनीतिक परिवर्तन के कारण शून्य पड़ते हुए जनता के हृदयक्षेत्र में फैलने के लिए पूरा स्थान मिला। रामानुजाचार्य ने शास्त्रीय

पद्धति से जिस सगुण भक्ति का निरूपण किया था, उसकी ओर जनता आकर्षित होती चली आ रही थी।" (रामचंद्र शुक्ल. हिंदी साहित्य का इतिहास. पृ. 44)। हिंदी साहित्य के इस स्वर्ण काल में कबीर, सूर, तुलसी, जायसी, मीरा, रसखान जैसे अनेक कवि हुए।

2.1 उद्देश्य

छात्रो! इस इकाई के अंतर्गत आप 'भक्तिकाल' का अध्ययन करेंगे। इस इकाई के अध्ययन से आप-

- भक्तिकाल की परिस्थितियों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- भक्तिकाल की विभिन्न प्रवृत्तियों को जान सकेंगे।
- भक्तिकाल के महत्व को समझ सकेंगे।
- भक्तिकालीन गद्य साहित्य पर प्रकाश डाल सकेंगे।

2.2 मूल पाठ : भक्तिकाल : संक्षिप्त परिचय

छात्रो! भक्ति शब्द का सामान्य अर्थ है ईश्वरीय प्रेम में लीन होना। भक्ति को आत्मा और परमात्मा के मिलन का माध्यम माना जाता है। भारतीय संस्कृति में प्राचीन काल से ही भक्ति का प्रचलन था। भक्ति शब्द की व्युत्पत्ति 'भज्' धातु से मानी जाती है, जिसका अर्थ है सेवा करना। अर्थात अपने आराध्य की श्रद्धापूर्वक सेवा करना भक्ति है। भक्ति का सर्वप्रथम उल्लेख श्वेताश्वतर उपनिषद में मिलता है। पूजा को भक्ति का मुख्य साधन माना जाता है। भक्ति के नौ प्रकार के साधन बताए गए हैं - श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वंदन, दास्य, सख्य और आत्मनिवेदन। इसे ही नवधा भक्ति भी कहा जाता है।

बोध प्रश्न

- नवधा भक्ति किसे कहते हैं?

2.2.1 भक्तिकाल की परिस्थितियाँ

14 वीं शती के मध्य से 17 वीं शती के मध्य तक के काल को भक्तिकाल कहा जाता है। भक्तिकाल का नामकरण उस समय की मुख्य प्रवृत्ति भक्ति के आधार पर हुआ है। रामचंद्र शुक्ल ने 'हिंदी साहित्य का इतिहास' में भक्ति के सामाजिक-ऐतिहासिक कारणों पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि "देश में मुसलमानों का राज्य प्रतिष्ठित हो जाने पर हिंदू जनता के हृदय में गौरव, गर्व और उत्साह के लिए वह अवकाश न रह गया। उसके सामने ही देवमंदिर गिराए जाते थे, देवमूर्तियाँ तोड़ी जाती थीं और पूज्य पुरुषों का अपमान होता था और वे कुछ भी नहीं कर सकते थे। अपने पौरुष से हताश जाति के लिए भगवान की शक्ति और करुणा की ओर ध्यान ले जाने के

अतिरिक्त दूसरा मार्ग ही क्या था?" (हिंदी साहित्य का इतिहास. पृ. 43)। किंतु आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का कहना है कि भारत में अगर इस्लाम नहीं आया होता, तो भी भक्ति साहित्य का बारह आना वैसा ही होता जैसा है। रामस्वरूप चतुर्वेदी के अनुसार भक्ति काव्य के पीछे दो प्रमुख तत्व निहित हैं - एक बौद्ध चिंतन प्रक्रिया और दूसरा अपभ्रंशों की शृंगारिकता के विरुद्ध प्रतिक्रिया। (हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास. पृ. 33)। किसी काल के साहित्य का निर्माण अपने समय की राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों के अनुरूप होता है। अतः छात्रो! आगे हम भक्तिकाल की इन परिस्थितियों को समझने की कोशिश करेंगे।

राजनैतिक परिस्थिति

भक्तिकाल को राजनैतिक इतिहास की दृष्टि से दो भागों में विभाजित किया जा सकता है- प्रथम भाग में दिल्ली पर तुगलक और लोदी वंश का राज्य तथा द्वितीय भाग में मुगल वंश का राज्य। राजनैतिक दृष्टि से यह काल अत्यंत अशांत और संघर्षमय काल था। मुसलमान जहाँ एक ओर भारत में अपना आधिपत्य स्थापित करना चाहते थे, वहीं दूसरी ओर यहाँ के विद्वानों और कलाओं का सम्मान भी करते थे। ध्यान देने की बात है कि तुगलक वंश के शासक मुहम्मद तुगलक ने दक्षिण से उत्तर तक अपने राज्य विस्तार को ध्यान में रखकर दिल्ली की अपेक्षा देवगिरि (दौलताबाद) को राजधानी बनाने का प्रयत्न किया। इस चक्कर में उसने दिल्ली को उजाड़ दिया। लेकिन वह कवि, विद्याव्यसनी तथा पक्षपात रहित शासक था। उसके यहाँ कई विद्वानों को आश्रय प्राप्त था। हिंदू प्रजा के प्रति वह उदारमना था। लेकिन उसके उत्तराधिकारी फिरोज़शाह तुगलक में धार्मिक सहिष्णुता का अभाव था। वह कमजोर शासक सिद्ध हुआ।

तुगलक वंश का आधिपत्य समाप्त होने के बाद सैयद वंश और लोदी वंश का शासन स्थापित हुआ। लोदी वंश का अंतिम सुल्तान इब्राहिम लोदी था। उसे "शक्तिशाली मुगलों का सामना करना पड़ा और अंततः लोदी वंश की सल्तनत जाती रही। लोदी वंश के शासन काल में ही केंद्रीय शासन शिथिल पड़ चुका था और मालवा आदि स्वतंत्र सूबे बनने लगे थे।" (सं. नगेंद्र. हिंदी साहित्य का इतिहास. पृ. 83)। 1526 में इब्राहिम लोदी और सूबेदारों के बीच जो गृहयुद्ध हुआ, उसका लाभ उठाकर बाबर ने इब्राहिम लोदी को पानीपत के युद्ध में पारिजित कर दिया और मुगल शासन की नींव डाली। राजनीति एवं साहित्य दोनों क्षेत्रों में मुगलों का महत्वपूर्ण योगदान रहा। बाबर स्वयं साहित्यकार था। उनके द्वारा रचित बाबरनामा में तत्कालीन परिस्थितियों का अंकन है। हुमायूँ भी साहित्यकारों का सम्मान करता था। उसके बाद अकबर ने कुशल शासन स्थापित किया। अकबर के बाद जहांगीर और उसके बाद शाहजहाँ ने सत्ता हासिल की। शाहजहाँ को बंदी बनाकर उनके पुत्र औरंगजेब ने सत्ता हासिल की। यही समय भक्तिकाल की अंतिम सीमा को व्यक्त करता है। राजनैतिक व्यवस्था के प्रति असंतोष के कारण भक्त कवियों ने आवाज उठाई। (वेद धर्म दूरि गये, भूमि चोर भूप भये/ साधु सीद्यमान जान रीति पाप पीन

की। -तुलसी)।

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि इस काल में उत्तर भारत विदेशी आक्रमणकारियों के द्वारा स्थापित सत्ता के अधीन हो चुका था। मुगल सत्ता के समक्ष देशवासियों को आत्मसमर्पण करना पड़ा। लेकिन प्रतिरोध और विद्रोह की चिंगारियाँ भी उठती रहीं। यह भी सच है कि भक्तिकाल के आरंभ में विदेशियों के आक्रमण के कारण जो उथल-पुथल मची थी, आगे उसमें धीरे-धीरे स्थिरता आई।

बोध प्रश्न

- किसी काल के साहित्य का निर्माण किन आधारों पर होता है?
- विदेशी आक्रमणों के कारण भक्तिकाल में क्या हुआ?

सामाजिक परिस्थिति

भक्तिकालीन समाज संक्रमण काल से गुजरने वाला समाज था। वह समाज वर्ण आधारित समाज था। जातीय बंधन कठोर हो चुके थे। उस समय की जाति व्यवस्था की कट्टरता के बारे में लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय का कथन उल्लेखनीय है- "सामाजिक दृष्टि से वर्तमान समय में जो जाति-व्यवस्था प्रचलित है, उसका निश्चित रूप इसी काल में निर्धारित हुआ। विवाहादि एवं खान-पान के मामले में जो प्रतिबंध पहले से चला आ रहा था, उसे और कठोर बनाया गया।" जाति भेद और वर्ग भेद के कारण स्त्रियों की स्थिति सोचनीय बनती गई। उन्हें कई तरह के बंधनों में रहना पड़ता था। सती प्रथा, परदा प्रथा आदि को प्रोत्साहन दिया जा रहा था। इसी समय भारत में इस्लाम धर्म का प्रवेश हुआ। हिंदू धर्म में वर्ण व्यवस्था के रूढ हो जाने के कारण सामाजिक विकास रुका हुआ था, जबकि इस्लाम धर्म भाईचारे का संदेश लेकर आगे बढ़ रहा था। दलित और अधिकतर वंचित जातियों के लोग अपना धर्म परिवर्तन करने लगे। इस परिवर्तन के पीछे धर्म की प्रेरणा की अपेक्षा स्वार्थ, बलात्कार और भय का हाथ अधिक था। इससे हिंदू और मुसलमानों के बीच घृणा और भेदभाव बढ़ने लगा। ऐसे में, बुराइयों को दूर करने के लिए तत्कालीन संतों और भक्त कवियों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जायसी जैसे कवियों ने सूफी मत के माध्यम से धार्मिक भावों को स्वर दिया। हिंदू और मुसलमानों के बीच सामंजस्य स्थापित करने में इनका योगदान महत्वपूर्ण रहा।

आर्थिक आधार पर समाज दो वर्गों में बँटा हुआ था- सुविधा संपन्न वर्ग और असुविधा संपन्न वर्ग। उस समय की सामाजिक-आर्थिक दशा को तुलसीदास की 'कवितावली' की निम्नलिखित पंक्तियों के माध्यम से जाना जा सकता है -

खेती न किसान को, भिखारी को न भीख भली,
बनिक को बनिज न चाकर को चाकरी।
जीविका विहीन लोग सीद्यमान सोच बस,
कहैं एक एकन सो कहाँ जाई, का करी॥

बोध प्रश्न

- भक्तिकाल का समाज कैसा था?

धार्मिक परिस्थिति

छात्रो! आप जान चुके हैं कि तत्कालीन समाज धर्म के नाम पर हिंदू-मुस्लिम समुदायों में बँटा हुआ था। धर्म के नाम पर समाज में दुराचार और पाखंड फैल रहा था। परिणामस्वरूप समाज में अराजकता फैलने लगी। ऐसे समय में दक्षिण से भक्ति की लहर उत्तर भारत की ओर आई। दक्षिण में आलवार संतों ने भक्ति का प्रचार-प्रसार किया। शंकराचार्य ने बौद्ध धर्म के विरोध में अद्वैतवाद का प्रचार किया। इसकी प्रतिक्रिया में अनेक दार्शनिक संप्रदाय सामने आए। उत्तर में रामानंद ने वैष्णव संप्रदाय का प्रचार किया जिसमें जातिगत भेदभाव नहीं था। संतों ने हिंदू-मुस्लिम समाजों में फैले आडंबरों तथा रूढ़ियों का खंडन किया और जनता को जागृत किया। भक्तिकाल के कवियों ने समाज को एकसूत्र में बाँधने का प्रयास किया तथा सामाजिक समरसता एवं सद्भावना को बढ़ाने में विशेष योगदान दिया।

बोध प्रश्न

- भक्तिकालीन कवियों का क्या योगदान रहा?

सांस्कृतिक परिस्थिति

भक्तिकालीन समाज में दो संस्कृतियों (हिंदू-मुस्लिम) का आमना-सामना हुआ। उपनिषदों और वेदों की व्याख्या से अद्वैतवाद, विशिष्टाद्वैतवाद, केवलाद्वैतवाद, द्वैताद्वैतवाद और शुद्धाद्वैतवाद जैसे मतों का विकास हुआ। सभी मतों के अनुसार ईश्वर निरपेक्ष हैं। परशुराम चतुर्वेदी की मान्यता है कि "मध्यकालीन संस्कृति की प्रवृत्ति और परिवेश को ठीक-ठीक समझ पाना प्रायः असंभव है। इस काल में धर्म-साधनों की बाढ़-सी आ गई और गुह्य साधनाओं के अंतर्गत कृच्छ्र साधनाएँ भी प्रवेश पा गईं। धर्माचार के नाम पर अनाचार, मिथ्याचार और व्यभिचार फैलने लगे। फलस्वरूप ज्ञानचर्चा की आड़ में पाखंड को प्रश्रय मिलने लगा और समाज में एक प्रकार की अराजकता फैल गई। बाह्याडंबर तथा कर्मकांडादि बाह्यविधान के प्रति व्यंग्य किए जाने लगे।" (सं. नगेंद्र. हिंदी साहित्य का इतिहास. पृ. 93)।

बोध प्रश्न

- भक्तिकालीन समाज में ज्ञानचर्चा की आड़ में किसको प्रश्रय मिलने लगा?

2.2.2 भक्तिकाल की प्रवृत्तियाँ

भक्तिकाल को हिंदी साहित्य का स्वर्ण युग कहा जाता है। इसकी दो प्रमुख धाराएँ हैं- निर्गुण भक्ति काव्य और सगुण भक्ति काव्य। प्रवृत्ति के आधार पर इनके दो-दो उपभेद हैं। निर्गुण को ज्ञानमार्गी और प्रेममार्गी के रूप में विभाजित किया जाता है तथा सगुण को कृष्ण भक्ति और राम भक्ति के रूप में। इन शाखाओं एवं उपशाखाओं में भिन्नता होने पर भी इनमें मुख्य रूप से ईश्वरीय भक्ति का प्रतिपादन हुआ है। इस काल के कवियों ने अपनी इच्छानुसार भक्ति की अभिव्यक्ति की है। चाहे निर्गुण हो या सगुण; अंतिम उद्देश्य भक्ति ही है।

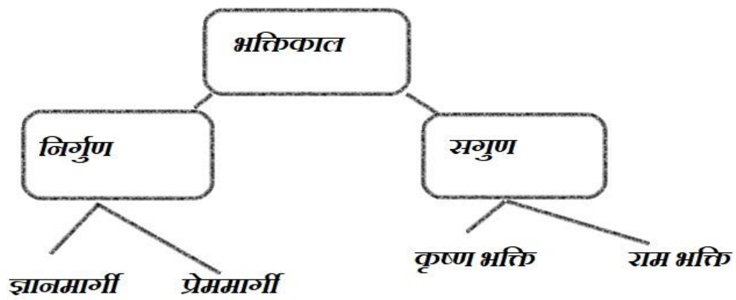

(क) निर्गुण भक्ति काव्य

निर्गुण भक्ति का अर्थ है ऐसे ब्रह्म की उपासना करना जिसका कोई रूप नहीं है। यह ब्रह्म मन के भीतर रहता है। ऐसी भक्ति में कर्मकांड और आडंबर का कोई स्थान नहीं होता। इसीलिए संत साहित्य में इसे सहज भक्ति कहा जाता है। ऐसे ब्रह्म की भक्ति कबीर ने की। उन्होंने निर्गुण राम की उपासना को आधार बनाया। निर्गुण भक्ति शाखा के कुछ प्रमुख तत्व इस प्रकार हैं -

1. अनंत, अनादि, अनाम, अरूप निर्गुण ब्रह्म की उपासना करना।
2. मानसिक भक्ति को महत्व देना।
3. आडंबर विहीन भक्ति का प्रतिपादन करना।
4. प्रेम के माध्यम से दुरूहताओं को दूर करना।
5. मनुष्य और मनुष्यता को महत्व देना।
6. वर्ग, वर्ण, जातिगत भेदभाव को मिटाना।

बोध प्रश्न

- सहज भक्ति किसे कहा जाता है?

अब हम निर्गुण भक्ति काव्य की दो उपशाखाओं - ज्ञानमार्गी और प्रेममार्गी शाखा के बारे

में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त करेंगे।

ज्ञानमार्गी शाखा : इस शाखा के अंतर्गत ज्ञान साधना द्वारा निर्गुण ब्रह्म को प्राप्त करने वाले संत कवियों में कबीरदास, दादूदयाल, सुंदरदास, मूलकदास, रैदास आदि प्रमुख हैं। इस शाखा के प्रवर्तक कवि हैं कबीरदास। इस शाखा को संत काव्य भी कहा जाता है। इसकी सामान्य विशेषताएँ इस प्रकार हैं -

(1) **निर्गुण ईश्वर की उपासना** : निर्गुण संत मत के अनुसार ईश्वर अखंड और अनंत है; और वह हर जगह उपस्थित है। संतों का निर्गुण ब्रह्म इस प्रकार का है-

जाके मुख माथा नहीं, नाहीं रूप कुरूप।
पुहुप बास तें पामरा, ऐसा तत्व अनूप॥ (कबीर)

संतों ने एकेश्वरवाद का समर्थन करके बहुदेववाद और अवतारवाद का खंडन किया। वे समाज में एकता स्थापित करना चाहते थे। इसीलिए तो कहते हैं कि केवल एक राम (ब्रह्म) के सामने ही सिर झुकना चाहिए, किसी दूसरे (बहुत से देवता) के आगे नहीं-

यह सिर नवे न राम कू, नाहिं गिरियो टूट।
आन देव नाहिं परसिये, यह तन जायो छूट॥ (चरनदास)

(2) सद्गुरु का महत्व : संतों ने गुरु को भगवान से भी श्रेष्ठ माना है। इन कवियों का विश्वास है कि गुरु की कृपा के बिना भगवान की कृपा प्राप्त नहीं होगी। क्योंकि गुरु ही ईश्वर को जानने का मार्ग दिखाते हैं। इसीलिए कबीरदास कहते हैं -

गुरु गोबिंद दोऊ खड़े, काके लागूँ पाइ।
बलिहारी गुरु आपने, जिन गोविंद दियो बताय॥

(3) जातिगत भेदभाव का विरोध : संत कवि मनुष्य धर्म को ही श्रेष्ठ मानते थे। उनके अनुसार यह जीवन ईश्वर की देन है। निर्गुण उपासना में जात-पाँत का कोई स्थान नहीं – जाति पाँति पूछे नहीं कोई, हरि को भजे सो हरि का होई! संतों ने छुआछूत तथा सांप्रदायिकता का विरोध किया और बताया कि ईश्वर के दरबार में किसी भक्त की जाति नहीं पूछी जाती - जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।/ मोल करो तरवार का, पड़ा रहन दो म्यान॥ (कबीर)।

(4) मूर्तिपूजा का खंडन : संत कवियों ने मिथ्याडंबर, मूर्तिपूजा, तीर्थ, रोज़ा, व्रत आदि का प्रबल विरोध किया - पाहन पूजे हरि मिलै, तो मैं पूजूँ पहार।/ ताते यह चाकी भली, पीस खाय

संसार॥ (कबीर)।

(5) रहस्यवाद : साधना के क्षेत्र में जिसे अद्वैत कहा जाता है, वही साहित्य के क्षेत्र में रहस्यवाद है। संत यह मानते थे कि आत्मा और परमात्मा दोनों एक ही तत्व हैं। यह शरीर अंत में उस परम तत्व में ही समा जाता है - जल में कुंभ कुंभ में जल है, बाहर भीतर पानी।/ फूटा कुंभ जल जलहि समाना, यह तथ कह्यो गयानी॥ (कबीर)।

बोध प्रश्न

- ज्ञानमार्गी शाखा की प्रमुख विशेषताएँ क्या हैं?

प्रेममार्गी शाखा : इस शाखा को प्रेम काव्य, प्रेमाख्यानक काव्य, सूफी काव्य आदि नामों से जाना जाता है क्योंकि इस धारा में प्रेम तत्व का प्रमुख स्थान है। इस शाखा के काव्यों में स्वच्छंदतापूर्ण दृष्टिकोण, सौंदर्य भावना, साहस आदि का चित्रण देखा जा सकता है। रामचंद्र शुक्ल इसे अभारतीय कहा था, लेकिन हिंदी में शोधकार्य की प्रगति के साथ यह स्पष्ट हुआ कि "स्वछंदता, सौंदर्य, साहस, कल्पना आदि से मिश्रित प्रणय-भावना किसी भाषा विशेष, देश विशेष या संप्रदाय विशेष की विशेषता न होकर एक ऐसी सार्वजनिक प्रवृत्ति है, जो हर भाषा और हर देश के साहित्य में समय-समय पर परिस्थितियों के प्रभाव से उन्मीलित होती रही है। इस प्रवृत्ति को विश्व साहित्य के संदर्भ में रोमांस अर्थात स्वछंद प्रेम कहा गया है।" (सं. नगेंद्र. हिंदी साहित्य का इतिहास. पृ. 135)। प्रेममार्गी शाखा के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं जायसी। इस शाखा की अधिकांश रचनाएँ प्रबंधात्मक शैली में रचित हैं। इन रचनाओं के स्रोत हैं - पौराणिक, ऐतिहासिक आख्यानक। इन्हें कथा स्रोतों के रूप में चुनकर कल्पना के माध्यम से रहस्य और रोमांच का समावेश किया गया है। इन रचनाओं में प्रेम को ही जीवन का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष माना गया है। जायसी (पद्मावत), मुल्ला दाऊद (चांदायन), मंझन (मधुमालती), उसमान (चित्रावली), असाइत (हंसावली), कुतुबन (मृगावती), आलम कवि (माधवानल कामकंदला) आदि इस धारा के प्रमुख कवि हैं। इस शाखा की प्रमुख काव्यगत विशेषताएँ इस प्रकार हैं -

(1) मूल चेतना : इस काव्य की मूल चेतना है प्रेम तत्व। इसीलिए रामचंद्र शुक्ल ने इसे प्रेमाश्रयी शाखा नाम दिया। इस धारा के कवियों ने लौकिक प्रेम के माध्यम से अलौकिक प्रेम की अभिव्यक्ति की है। सूफियों के अनुसार इश्क मिजाजी (सांसारिक प्रेम) की प्रगाढ़ता में ही इश्क हक़ीक़ी (ईश्वरीय प्रेम) की झलक निहित है।

(2) गुरु का महत्व : सूफी मत के अनुसार प्रेमी निरंतर प्रेमपथ पर अग्रसर होकर परमात्मा को

प्राप्त करना चाहता है। लेकिन उसके मार्ग में शैतान बाधा पहुँचाता है। उस समय गुरु ही मार्गदर्शन करता है। अतः सूफी काव्य में गुरु का विशेष स्थान है। उदाहरण के लिए - गुरु सुवा जेहि पन्थ देखावा। बिन गुरु जगत को निरगुण पावा॥ (जायसी)

(3) शृंगार रस की प्रधानता : सूफी काव्य में यों तो वीर, शांत तथा वीभत्स आदि रसों का भी समावेश है, लेकिन नायक-नायिका के मिलन के संदर्भ में शृंगार रस की प्रधानता है। इन काव्यों में संयोग और वियोग शृंगार के दोनों पक्षों का चित्रण पाया जाता है, किंतु वियोग शृंगार प्रधान है। विरह पीड़ा को सहना सूफी मत के अनुसार अनिवार्य है, क्योंकि लंबे विरह के बाद ही आत्मा को परमात्मा से मिलने का संयोग सुख प्राप्त होता है। जायसी कृत पद्मावत में नागमती का विरह वर्णन इसलिए अधिक सजीव हो उठा है।

(4) शैतान का उल्लेख : सूफी कवियों ने शैतान को माया का प्रतीक माना है। वह आत्मा और परमात्मा के मिलन में सदैव बाधक रहा है। सूफी कवि यह मानते हैं कि शैतान द्वारा उपस्थित बाधाओं से साधक की अग्निपरीक्षा होती है। पद्मावत में राघव चेतन शैतान, नागमती माया और हीरामन तोता गुरु के प्रतीक माने जाते हैं।

(5) प्रकृति चित्रण : प्रेमाख्यानक काव्यों में प्रकृति चित्रण को महत्व प्रदान किया है। षड्ऋतु वर्णन और बारहमासा में प्रकृति चित्रण को देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए - कातिक सरद चंद्र उजियारी, जग शीतल हौं विरहै जारी।/ चौदह कला चाँद परगासा, जनहु जरै सब धरनि अकासा॥(जायसी)।

(6) मसनवी शैली : सूफी कवियों ने अपने काव्यों में मसनवी शैली का प्रयोग किया है। इसके अंतर्गत काव्य के प्रारंभ में ईश्वर वंदना, मुहम्मद साहब की स्तुति तथा तत्कालीन बादशाह की प्रशंसा की जाती है। आत्म परिचय भी दिया जाता है।

बोध प्रश्न

- मसनवी शैली किसे कहते हैं?

(ख) सगुण भक्ति काव्य

सगुण भक्ति काव्य धारा के अंतर्गत ब्रह्म के साकार सगुण रूप की प्रतिष्ठा की गई है। सगुण नाम यह सूचित करता है कि परमसत्ता सभी गुणों से संपन्न है। अवतार की महिमा भी इसके अंतर्गत निहित है। उपासना पद्धति के अनुरूप ईश्वर के कई नाम प्रचलित होते गए। सगुण भक्ति में मुख्य रूप से अनुराग और माधुर्य भावों का समावेश हुआ है। सगुण भक्त कवियों का

साध्य परमात्मा का साक्षात्कार ही है। आराध्य देव के अनुरूप सगुण भक्ति काव्य को दो वर्गों में बाँटा जाता है - कृष्ण भक्ति शाखा और राम भक्ति शाखा।

कृष्ण भक्ति शाखा : इस शाखा का आराध्य कृष्ण हैं। इसके प्रेरक वल्लभाचार्य हैं; तथा प्रमुख कवि सूरदास। कृष्ण के माध्यम से प्रेम, भक्ति और समर्पण को स्थापित किया गया है। इस शाखा के काव्य का विकास मूलतः मुक्तक के रूप में ही हुआ है। सूरदास के अतिरिक्त इस शाखा के अन्य कवि हैं कुंभनदास, परमानंददास, कृष्णदास, नंददास, गोविंद स्वामी, छीतस्वामी और चतुर्भुज दास। इन्हें अष्टछाप कहा जाता है। कृष्ण भक्ति शाखा की प्रमुख प्रवृत्तियाँ इस प्रकार हैं -

(1) अवतार : सगुण भक्त कवि भगवान को अजर, अमर और अखंड मानते हैं और साथ ही यह भी मानते हैं कि भगवान अपने भक्तों का कल्याण करने के लिए सगुण साकार रूप धारण करते हैं और पृथ्वी पर अवतरित होते हैं।

(2) भगवान की लीला का वर्णन : कृष्ण की लीलाओं विशेष रूप से बाल और किशोर जीवन की लीलाओं का वर्णन करते समय कृष्ण भक्त कवि एक विशेष प्रकार की अनुभूति का साक्षात्कार करते हैं।

(3) ज्ञान की अपेक्षा भक्ति की श्रेष्ठता : भक्त कवियों ने ज्ञान की अपेक्षा भक्ति के मार्ग को श्रेष्ठ माना है। सूरदास कृत भ्रमरगीत ज्ञान पर भक्ति का जयघोष है-

निरगुण कौन देश को बासी।
मधुकर, कहि समुझाइ, सौंह दै बूझति सांच न हांसी॥
को है जनक, जननि को कहियत, कौन नारि को दासी।
कैसो बरन, भेष है कैसो, केहि रस में अभिलाषी॥ (सूरदास)।

राम भक्ति शाखा : इसमें श्रीराम को आराध्य के रूप में स्वीकारा गया। उत्तर भारत में राम भक्ति के प्रवर्तन का श्रेय रामानंद को है। रामानंद ने विष्णु के अवतार के रूप में राम की सगुण भक्ति का प्रसार किया। यहाँ राम परब्रह्म या परमशक्ति हैं, जो दशरथ के पुत्र के रूप में अवतार लेते हैं। इस शाखा के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं तुलसीदास। रामचरितमानस तुलसी की उत्कृष्ट रचना है। तुलसी का साहित्य समन्वय का साहित्य है। उनके अनुसार ज्ञान और भक्ति में कोई भेद नहीं है (ज्ञानहिं भक्तिहिं नहिं कुछ भेदा। उभय हरहिं भव संभव खेदा॥) तथा स्वामी और सेवक भाव के अभाव में मुक्ति प्राप्त नहीं हो सकती (सेवक-सेव्य भाव बिनु, भव न तरिय उरगारि।) इस शाखा के तमुख कवि हैं तुलसीदास, केशवदास, सेनापति, नाभादास आदि। राम भक्ति शाखा की कुछ

प्रमुख विशेषाएँ इस प्रकार हैं -

(1) राम का स्वरूप : इस धारा के कवियों ने राम को ब्रह्म का स्वरूप माना है। वे मनुष्य के अवतार में भक्तों की रक्षा करते हैं। (जब जब होइ धरम के हानि, बढ़हिं असुर अधम अभिमानी/ तब तब धरि प्रभु मनुज सरीरा हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा। -तुलसी)।

(2) आदर्श चरित्र : इनके राम मर्यादा पुरुषोत्तम हैं। वे सभी रूपों में आदर्श हैं।

(3) भक्ति की प्रधानता : इस धारा के कवि ज्ञान और भक्ति को अभिन्न मानते हैं, लेकिन भक्ति को श्रेष्ठ बताते हैं।

(4) समन्वय की भावना : इस धारा में समन्वय की भावना प्रमुख रूप से दिखाई देती है। तुलसी का काव्य इसका अद्भुत उदाहरण है।

(5) लोकमंगल भावना : इस धारा के कवि जनकवि हैं। तुलसीदास को लोकनायक कहा जाता है। उन्हें लोकहित का पूरा ध्यान था। वे यह भलीभाँति जानते थे कि जब तक लोक मर्यादा का पालन नहीं होगा, तब तक जन कल्याण असंभव है। इसीलिए उन्होंने राम राज्य की कल्पना की।

(6) सेवक-सेव्य भाव : इस धारा के कवियों ने राम की भक्ति एक सेवक की तरह दासी भाव से की है। इसीलिए तुलसी कहते हैं कि सेवक-सेव्य भाव बिनु भव न तरिय उरगारि/ भजहु राम पद पंकज अस सिद्धांत बिचारि।

बोध प्रश्न

- तुलसी का साहित्य कैसा साहित्य है?
- तुलसी को लोकनायक क्यों कहा जाता है?

2.2.3 भक्तिकालीन गद्य साहित्य

भक्तिकाल में काव्य के साथ-साथ गद्य साहित्य भी प्राप्त होता है। धर्म, दर्शन, अध्यात्म, चिकित्सा, ज्योतिष, गणित, व्याकरण आदि भक्तिकालीन गद्य के प्रमुख विषय हैं। इस गद्य को चार वर्गों में विभाजित किया जा सकता है - ब्रजभाषा गद्य, खड़ी बोली गद्य, दक्खिनी गद्य और राजस्थानी गद्य। भक्तिकालीन गद्य में ललित गद्य का भी समावेश पाया जाता है।

ब्रजभाषा गद्य : धार्मिक और आध्यात्मिक विषयों के साथ-साथ इतिहास, भूगोल, प्रश्न, ज्योतिष, सामुद्रिक आदि विषयों का प्रतिपादन ब्रजभाषा में हुआ है। ब्रजभाषा गद्य परंपरा में

गोरखपंथी ग्रंथों का उल्लेख मिलता है। प्रमुख ब्रजभाषा गद्य रचनाएँ हैं - ध्रुवदास कृत सिद्धांतविचार, नाभादास कृत अष्टयाम, बैकुंठमणि शुक्ल कृत वैसाख महातम आदि।

खड़ी बोली गद्य : उत्तर भारत में खड़ी बोली में निर्मित गद्य रचनाएँ सत्रहवीं शताब्दी से प्रामाणिक रूप में मिलती हैं। इस काल की कुछ गद्य रचनाएँ हैं - कुतुबशतम, भोगलू पुरान, गणेस गोसठ, पोथी सचुषंड।

दक्खिनी गद्य : दक्खिनी का आविर्भाव सूफियों और संतों के द्वारा हुआ। इन रचनाओं का विषय प्रेमाख्यानक रहा। गेसूराज बंदानवाज़ उल्लेखनीय रचनाकार हैं। दक्खिनी गद्य साहित्य में मुल्ला वजही कृत सबरस का विशेष महत्व है। इसका गद्य कवित्वमय है। यह गद्य उर्दू-फारसी के मिश्रित रूप में सामने आता है।

राजस्थानी गद्य : मारवाड़ी बोली में समृद्ध गद्य साहित्य प्राप्त होता है। राजस्थानी गद्य की प्रमुख रचनाएँ हैं - तत्वविचार प्रकरण, पृथ्वीचंद्र चरित्र, धनपाल कथा, अंजनासुंदरी कथा आदि।

भक्तिकाल में ललित गद्य की संख्या बीस से अधिक नहीं है। भक्तिकाल में सामान्य गद्य रचनाओं का परिमाण भी विशाल नहीं है। “साहित्यिक अभिव्यक्ति के लिए पद्य ही इस समय तक प्रमुख और विशिष्ट माध्यम था। गद्यात्मकता की दृष्टि से भक्तिकाल का गद्य स्थूलतः द्विविध है - तुकमय पद्याभास गद्य और तुकरहित शुद्ध गद्य।”

(सं. नगेंद्र. हिंदी साहित्य का इतिहास. पृ. 247)।

बोध प्रश्न

- भक्तिकालीन गद्य के रूप क्या-क्या हैं?

2.2.4 भक्तिकाल का महत्व : स्वर्ण युग

हिंदी साहित्य के इतिहास में भक्तिकाल का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। भक्तिकाल के उदय की व्याख्या करते हुए रामस्वरूप चतुर्वेदी ने लिखा है कि आदिकाल में आत्मविश्वास का भाव निश्चित रूप से मिलता है, परंतु “एक के बाद एक राजनैतिक-सैनिक पराजय के क्रम में जातीय आत्मविश्वास भाव स्खलित होता जाता है, और भक्ति-भावना मुखर हो उठती है।” (हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास. पृ. 30)।

निर्गुण और सगुण भक्ति धाराओं में प्रवाहित भक्तिकालीन काव्य अत्यंत समृद्ध है। सही अर्थों में यह काल हिंदी साहित्य के इतिहास का स्वर्ण काल है। इस काल का साहित्य अपने पूर्ववर्ती और परवर्ती साहित्य से उत्कृष्ट है। कबीर, जायसी, तुलसी, सूर, मीरा, रसखान आदि

इसी काल में हुए। भक्ति और काव्य का ऐसा उच्चकोटि का सम्मिश्रण किसी और काल में नहीं मिलता। इस काल में अनेक महान भक्त कवियों ने अपनी रचनाधर्मिता और लालित्यपूर्ण काव्य के माध्यम से लोकमंगल की भावना को जगाया। तत्कालीन विसंगतियों को दूर करने के लिए इन भक्त कवियों ने मिथ्याडंबरों और धार्मिक रूढ़ियों के खोखलेपन का खंडन किया। कबीर ने तो स्पष्ट शब्दों में यह घोषित किया कि वे चौराहे पर जलती लकड़ी लिए खड़े हैं (कबिरा खड़ा बजार में, लिए लुकाठी हाथ।/ जो घर फूँके आपनौ, चले हमारे साथ)। इन कवियों ने सांस्कृतिक सामंजस्य स्थापित करने के साथ-साथ यह सिद्ध किया है कि भगवान को चाहे राम कहो या रहीम, कृष्ण कहो या करीम, खुदा कहो या कुछ और- वह एक ही परमतत्व है। भक्तिकालीन साहित्य के महत्व को स्पष्ट करते हुए आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है कि समूचे भारतीय इतिहास में यह अपने ढंग का अकेला साहित्य है। वास्तुकला, चित्रकला, मूर्तिकला, संगीतात्मकता की दृष्टि से भी भक्तिकाल श्रेष्ठ है। अतः भक्तिकाल निश्चित रूप से सभी दृष्टियों से स्वर्ण काल है।

बोध प्रश्न

- भक्तिकालीन कवियों ने अपनी रचनाधर्मिता के माध्यम से किस भावना को जगाया?

2.3 पाठ-सार

छात्रो! इस पाठ के अध्ययन से आप जान चुके हैं कि यह युग भारत में मुस्लिम साम्राज्य के क्रमिक उत्थान-पतन का युग है। राज्य विस्तार के लिए निरंतर युद्ध एवं धार्मिक दमन के परिणामस्वरूप वैष्णव भक्ति के पुनर्जागरण को बल मिला। अखिल भारतीय स्तर पर धार्मिक आंदोलन प्रारंभ हुआ। इसे ही भक्ति आंदोलन कहा जाता है। इस आंदोलन का उद्गम स्थल दक्षिण को माना जाता है (भक्ति द्राविड उपजी, लाये रामानंद।/ परगट किया कबीर ने, सप्त द्वीप, नौखंड)। आलवारों और नायनमारों का दक्षिण के भक्ति आंदोलन में विशेष महत्व रहा है। उत्तर में रामानंद के माध्यम से भक्ति आंदोलन प्रबल हुआ। अनेक भक्त कवियों और संतों ने तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियों को सहज रूप से अभिव्यक्त किया तथा त्रस्त जनता का ध्यान भगवत भक्ति की ओर आकृष्ट किया। सही अर्थों में भक्तिकालीन साहित्य संवेदनशील साहित्य है और यह काल सभी दृष्टियों से स्वर्ण काल है।

2.4 पाठ की उपलब्धियाँ

छात्रो! इस पाठ के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं -

1. भक्तिकाल हिंदी साहित्य के इतिहास का स्वर्ण काल है।
2. भक्ति साहित्य पर तत्कालीन परिस्थितियों का प्रभाव रहा।

3. प्रतिपाद्य, काव्य शिल्प, गुणवत्ता, परिमाण और समन्वयकारी भावना की दृष्टि से भक्ति काव्य का अपना उच्च कोटि का साहित्य है।

4. भक्तिकालीन काव्य सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टि से नवीन भावबोध उत्पन्न करने वाला काव्य है।

2.5 शब्द संपदा

1. अद्वैतवाद	=	भारतीय दर्शन का वह सिद्धांत जिसमें मात्र ब्रह्म को परमार्थिक सत्ता माना जाता है।
2. आलवार	=	दक्षिण भारतीय वैष्णव भक्त
3. कृच्छ्र	=	कष्टमय, कठिन
4. गुह्य	=	गुप्त, रहसमय
5. पाखंड	=	छल-कपट
6. सद्भावना	=	शुभ भावना
7. समरसता	=	सामंजस्य

2.6 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

- भक्तिकाल की राजनैतिक परिस्थितियों पर प्रकाश डालिए।
- भक्तिकाल की सामाजिक परिस्थितियों को समझाइए।
- निर्गुण भक्ति शाखा की प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए।
- सगुण भक्ति शाखा की प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए।

खंड (ब)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. 'भक्तिकाल हिंदी साहित्य के इतिहास का सवर्ण काल है।' सिद्ध कीजिए।
2. भक्तिकालीन गद्य साहित्य पर टिप्पणी लिखिए।

खंड (स)

I सही विकल्प चुनिए

1. बाबर और इब्राहिम लोदी के बीच पानीपत युद्ध किस वर्ष में हुआ? ( )
   (अ) 1326 (आ) 1426 (इ) 1526 (ई) 1626

2. माधवानल कामकंदला के रचनाकार कौन हैं? ( )
   (अ) मंझन (आ) जायसी (इ) आलम कवि (ई) उसमान

3. पद्मावत में हीरामन तोता किसका प्रतीक है? ( )
   (अ) गुरु (आ) माया (इ) शैतान (ई) प्रियतम

II रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए

1. सूरदास कृत भरमरगीत .... पर .... का जयघोष है।
2. तुलसी के साहित्य में .... भावना निहित है।
3. दक्खिनी गद्य रचनाओं का विषय .... रहा।

III सुमेल कीजिए

i) सबरस	(अ) ज्ञानमार्गी शाखा
ii) अद्वैतवाद	(आ) सूफी काव्य
iii) मसनवी शैली	(इ) दक्खिनी गद्य
iv) दादूदयाल	(ई) भारतीय दर्शन

2.7 पठनीय पुस्तकें

1. हिंदी साहित्य का इतिहास. रामचंद्र शुक्ल
2. हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास. रामस्वरूप चतुर्वेदी
3. हिंदी साहित्य का इतिहास. सं. नगेंद्र और हरदयाल

इकाई 3 : रीतिकाल : संक्षिप्त परिचय

इकाई की रूपरेखा

3.0 प्रस्तावना

3.1 उद्देश्य

3.2 मूल पाठ : रीतिकाल : संक्षिप्त परिचय

3.2.1 रीतिकाल का नामकरण एवं परिचय

3.2.2 रीतिकाल की पृष्ठभूमि

3.2.3 रीतिकालीन काव्य की प्रवृत्तियाँ

3.2.4 रीतिकाल की काव्य धाराएँ

3.2.5 रीतिकाल के प्रमुख कवि

3.2.6 रीतिकालीन गद्य

3.3 पाठ-सार

3.4 पाठ की उपलब्धियाँ

3.5 शब्द संपदा

3.6 परीक्षार्थ प्रश्न

3.7 पठनीय पुस्तकें

3.0 प्रस्तावना

सत्रहवीं शताब्दी के मध्य में हिंदी कविता में एक नया मोड़ आया। इस काल में रीति यानी शैली (पद्धति) पर कुछ न कुछ लिखने की प्रवृत्ति कवियों में पाई जाती थी। कविगण प्रायः अपनी रचनाएँ रीति के साँचे में ढालकर ही प्रस्तुत करना पसंद करते थे। अतः इस काल को 'रीतिकाल' के नाम से जाना जाता है। इसकी समय सीमा संवत 1700 से 1900 विक्रमी (1643 ई॰ से 1843 ई॰) तक मानी जाती है। रीतिकाल को उत्तर-मध्य काल भी कहा जाता है। प्रस्तुत इकाई में आप इसी के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।

3.1 उद्देश्य

प्रिय छात्रो! इस इकाई के अध्ययन द्वारा आप -

- रीतिकाल का सामान्य परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- रीतिकाल के नामकरण के बारे में जान सकेंगे।
- रीतिकालीन परिस्थितियों से परिचित हो सकेंगे।
- इस युग के काव्य की प्रवृत्तियों से अवगत होंगे।
- रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध और रीतिमुक्त काव्य धाराओं के भेद से अवगत होंगे।
- रीतिकाल के मुख्य कवियों का परिचय प्राप्त करेंगे।
- रीतिकालीन गद्य साहित्य का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

3.2 मूल पाठ : रीतिकाल : संक्षिप्त परिचय

हिंदी साहित्य के रीतिकाल के केंद्र में 'रीति' अर्थात 'काव्य रचना की शास्त्रीय परिपाटी' का विचार सक्रिय दिखाए देता है। यहाँ इसके विविध पक्षों पर संक्षिप्त चर्चा की जा रही है।

3.2.1 रीतिकाल का नामकरण एवं परिचय

सत्रहवीं शताब्दी के मध्य से उन्नीसवीं सताब्दी के मध्य तक लगभग 1643 ई॰ से 1843 ई॰ तक के समय को आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने 'रीतिकाल' नाम से पुकारा। उनके अनुसार इस समय के काव्य में रीति तत्व की प्रधानता पाई जाती थी अतः इसका ध्यान रखते हुए इस काल का नाम 'रीतिकाल' कहा गया है। इस समय के कविगण अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन के लिए लक्षण ग्रंथ लिखना अनिवार्य समझते थे। इन कवियों ने आचार्यत्व का निर्वाह करते हुए लक्षण ग्रंथ की परिपाटी पर रीति ग्रंथों की रचना की, जिनमें अलंकार, रस, नायिका भेद आदि काव्य अंगों का बहुत ही विस्तार से वर्णन किया गया है। इस समय के कवि अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन लक्षण ग्रंथों को लिखकर करते थे। काव्यांग की चर्चा में बहुत गौरव का अनुभव करते थे। अतः काव्यांग की अधिकता के कारण इस काल में रीति तत्व की प्रधानता दिखाई देती है और इसी कारण इस काल का नाम 'रीतिकाल' रखा गया है। रीतिकाल को भिन्न-भिन्न विद्वानों ने अलग-अलग नामों से पुकारा है, उनमें प्रमुख हैं - अलंकृत काल (मिश्र बंधु), शृंगार काल (विश्वनाथ प्रसाद मिश्र), कलाकाल, उत्तर मध्यकाल आदि। लेकिन इनमें 'रीतिकाल' को ही व्यापक स्वीकृति प्राप्त है।

बोध प्रश्न

- रीतिकाल की समय सीमा कब से कब तक मानी गई है?
- 'रीतिकाल' नाम किस आचार्य के द्वारा रखा गया?

- रीतिकाल में कवि अपनी प्रतिमा के प्रदर्शन के लिए किस प्रकार के ग्रंथों की रचना करते थे?

3.2.2 रीतिकाल की पृष्ठभूमि

रीतिकाल लगभग 200 वर्ष की अवधि में फैला हुआ है। इसकी पृष्ठभूमि को समझने के लिए तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों का ज्ञान होना आवश्यक है।

1. राजनीतिक परिस्थितियाँ

रीतिकाल सही अर्थों में मुगलों की सत्ता के चरम वैभव का काल है। इसी काल में मुगल साम्राज्य का उत्कर्ष भी देखा गया तथा पतन भी। शाहजहाँ के शासनकाल में मुगलों का वैभव अपनी चरम सीमा पर था। इस समय राजा और सामंत अपने मनोरंजन के लिए कवियों और कलाकारों को बहुत अहमियत देते थे। शाहजहाँ के बाद औरंगजेब ने सत्ता संभाली। वह अपनी धर्मांधता और कट्टरता के लिए जाना जाता है। उसे संगीत कला आदि में कोई रुचि नहीं थी। औरंगजेब के बाद मुगल सत्ता का पतन होना शुरू हो गया। इस समय अनेक प्रदेशों में राजा एवं सामंतों ने अपनी स्वतंत्र सत्ता स्थापित कर ली, तथा नादिर शाह एवं अहमद शाह अब्दाली के आक्रमण हुए। मुगल सत्ता कमजोर हो गई। बाद में अंग्रेजों ने बक्सर की लड़ाई में शाह आलम को हराकर मुगलों को अपने अधीन कर लिया।

2. सामाजिक परिस्थितियाँ

रीतिकाल के समय समाज में सामंतवाद का बोलबाला था। आम लोगों की दशा बहुत ही दयनीय थी। अमीर लोग विलासिता में डूबे हुए थे। समाज का ढाँचा कमजोर होता जा रहा था। नैतिकता का पतन हो रहा था। लड़कियों का अपहरण हो रहा था। वेश्याओं को सम्मान मिल रहा था। घटिया किस्म के मनोरंजन का बोलबाला था। जनता अशिक्षित थी और अंधविश्वास तथा रूढ़ियों में फँसी थी। बहुविवाह प्रथा प्रचलित थी।

3. धार्मिक परिस्थितियाँ

औरंगजेब से पहले जो मुगल शासक थे, उनकी धार्मिक नीतियाँ बहुत ही उदार थीं। हिंदू-मुसलमान मिलकर रहते थे। किंतु औरंगजेब की कट्टर धार्मिक नीतियों के कारण वह उदारता समाप्त हो गई। इस समय इस्लाम धर्म में रूढ़िवादिता बहुत बढ़ गई थी। दूसरी तरफ हिंदू मंदिर-मठ भी विलास के केंद्र बन गए थे। दरबारी संस्कृति के असर से राधा-कृष्ण की शृंगार लीलाओं को भक्ति समझा जाता था।

4. साहित्यिक परिस्थितियाँ

साहित्य और कला की दृष्टि से यह काल बहुत ही समृद्ध था। कला में बहुत अधिक

प्रगति हुई। इस काल के कवि साधारण परिवार से होते थे, किंतु उन्हें राज दरबार में बहुत इज्जत दी जाती थी। कविगण अपनी कविताओं में उच्च वर्ग की भावनाओं के अनुरूप शृंगार एवं विलास का वर्णन करते थे। जनसाधारण की समस्याओं की चिंता उन्हें नहीं थी। इस समय की काव्यभाषा ब्रजभाषा थी। राजकाज की भाषा फारसी थी। इस समय के कवियों में प्रशंसा प्रकार लिखने की प्रवृत्ति अधिक थी।

बोध प्रश्न

- किस मुगल शासक के समय मुगल वैभव अपनी चरम सीमा पर था?
- किस मुगल शासक के शासनकाल से मुगल सत्ता का पतन माना जाता है?

3.2.3 रीतिकालीन काव्य की प्रवृत्तियाँ

रीतिकाल की काव्य रचना पर सामंती युग का प्रभाव है। अतः इसमें दरबारी काव्य की सभी विशेषताएँ पाई जाती हैं। इन कवियों के काव्य में अलंकरण की प्रधानता, चमत्कार प्रदर्शन की प्रवृत्ति एवं शृंगारिकता का पुट प्रधान है। नारी इस समय के काव्य का केंद्रबिंदु है। इस काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ निम्नलिखित हैं-

1. रीति निरूपण

रीतिकालीन कवियों की मुख्य प्रवृत्तियों में से एक है 'रीति निरूपण' अर्थात लक्षण ग्रंथों की रचना करना। इसी प्रवृत्ति के कारण आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इस काल का नाम 'रीतिकाल' रखा है। इस समय के कवियों को काव्यशास्त्र का बहुत अच्छा ज्ञान था। इन कवियों का मुख्य उद्देश्य था काव्य शास्त्र का ज्ञान आम पाठकों तक पहुँचाना। रीति निरूपक रचनाओं में मुख्य हैं - केशव की कवि प्रिया, चिंतामणि की कविकुलकल्पतरु तथा भूषण की शिवराज भूषण आदि। इसके बावजूद यह भी देखा जाता है कि रीतिकालीन आचार्यों ने काव्यशास्त्र के क्षेत्र में कोई मौलिक उपलब्धि प्राप्त नहीं की। इसी कारण आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इन रीति ग्रंथकारों को आचार्य न मानकर कवि ही माना है।

2. शृंगारिकता

शृंगारिकता को रीतिकालीन काव्य का केंद्र बिंदु माना जाता है। इस समय के काव्य में शृंगार को प्रमुखता दी जाती थी। लक्षित शृंगार चित्रण के अंतर्गत नायिका के रूप सौंदर्य का वर्णन किया गया है। राधा कृष्ण की प्रेम लीलाओं का विविध रूपों में चित्रण हुआ है। शृंगार रस के दोनों पक्षों संयोग और वियोग का चित्रण इस समय के काव्य में पाया जाता है।

3. आलंकारिकता

रीतिकालीन काव्य में आलंकारिकता की प्रधानता पाई जाती है। दरबारी काव्य होने के

कारण इसमें अलंकरण शैली का बहुत उपयोग होता था। इस काल का संपूर्ण काव्य ऐसा प्रतीत है जैसे कोई स्त्री आभूषणों से सुसज्जित होकर बैठी है। रीतिकालीन कवियों ने अपने काव्य में सभी प्रकार के अलंकारों का प्रयोग किया है; जैसे - अनुप्रास, यमक, श्लेष, उपमा आदि। अलंकार जो कविता में पहले साधन हुआ करता था, इस काल में साध्य के रूप में प्रयोग होने लगा।

4. आश्रयदाताओं की प्रशंसा

रीतिकाल में अधिकांश कविगण दरबारों के आश्रय में रहते थे; जैसे बिहारी, देव, भूषण आदि। स्वाभाविक था कि वे अपने आश्रयदाता राजा की प्रशंसा में कविता लिखा करते थे। वीर रस के प्रसिद्ध कवि भूषण ने शिवाजी की प्रशंसा में शिवराज भूषण, शिवा बावनी तथा छत्रसाल की प्रशंसा में छत्रसाल दशक की रचना की। भूषण जैसे कुछ कवियों को छोड़कर अधिकांश कवियों ने आश्रयदाताओं की काल्पनिक अतिशयोक्ति पूर्ण प्रशंसा की। कवियों को राजनीतिक दावपेंच में रहना पड़ता था। इसी कारण उनके काव्य में भावनात्मक गहराई में कमी आने लगी थी।

5. भक्ति एवं नीति

रीतिकालीन काव्य का मुख्य तत्व तो शृंगार है किंतु कुछ कवियों ने इस समय भी भक्ति और नीति से परिपूर्ण काव्य रचे। अधिकतर कवि अपने जीवन के अंतिम दिनों में भक्ति से ओतप्रोत रचनाएँ करते थे। भक्ति एवं नीतिपरक रचनाएँ लिखने वाले मुख्य कवि हैं- बेताल, वृंद, गिरिधरदास आदि।

6. नारी के प्रति दृष्टिकोण

रीतिकालीन कवियों ने अपने काव्य में नारी के रूप चित्रण को बहुत अधिक महत्व दिया है। इस समय के काव्य का केंद्रबिंदु नारी चित्रण ही रहा है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है, “श्रृंगारकालीन काव्य में 'नारी' कोई व्यक्ति या समाज के संगठन की इकाई नहीं है, बल्कि सब प्रकार की विशेषताओं के बंधन से यथासंभव मुक्त विलास का एक उपकरण मात्र है।” देव कवि की यह उक्ति इस धारणा की पुष्टि करती है-

कौन गनै पुर वन नगर, कामिनि एकै रीति।
देखत हरै विवेक को, चित हरै करि प्रीति॥

7. प्रकृति चित्रण

रीतिकाल में प्रत्यक्ष रूप से प्रकृति का चित्रण बहुत कम हुआ है, जबकि आलंकारिक

रूप में प्रकृति चित्रण काफी मिलता है। इस काल में किसी-किसी स्थान पर षड्ऋतु वर्णन एवं बारहमासे का चित्रण भी हुआ है। रीतिकालीन कवियों में प्रकृति चित्रण के मुख्य कवि सेनापति को माना जाता है। इनके द्वारा किया गया वर्षा ऋतु का वर्णन बहुत ही उत्तम कोटि का है।

8. बहुज्ञता का प्रदर्शन

रीतिकालीन कवियों ने अपने काव्य में विभिन्न विषयों से संबंधित अपने ज्ञान को खुल कर दिखाया है। ये कवि नायक-नायिका के प्रेम को दर्शाने में जितने कुशल थे, उतने ही अन्य विषयों में भी कुशल थे; जैसे ज्योतिष, नीतिशास्त्र, काव्यशास्त्र, आयुर्वेद आदि।

9. संकुचित जीवन दृष्टि

रीतिकालीन कवियों की जीवन दृष्टि का बहुत विस्तार नहीं हुआ था। वे कुछ ही विषयों को लेकर कविता करते थे। उनका मुख्य उद्देश्य था शृंगार प्रधान रचनाएँ लिख कर अपने आश्रयदाता राजाओं का मनोरंजन करना। इनकी आधार भूमि बहुत ही संकुचित थी।

10. मुक्तक काव्य की रचना

रीतिकाल के अधिकांश कवि मुक्तक काव्य की रचना करते थे। प्रबंध काव्य उस समय कम रचे जाते थे। आलंकारिकता, बहुज्ञता एवं चमत्कार प्रियता का प्रदर्शन करने के लिए मुक्तक काव्य ही रचे जाते थे। उस समय के दरबारी वातावरण के लिए मुक्तक काव्य अधिक उपयुक्त थे। किसी भी राजा-महाराजा को अपने विलासी जीवन के कारण इतना अवकाश नहीं था कि वह प्रबंध काव्य को समझ सके। अतः कविगण मुक्तक काव्य की रचना करते थे।

11. ब्रज भाषा का प्रयोग

रीतिकाल में पूरे 200 वर्षों तक ब्रजभाषा काव्यभाषा के रूप में प्रतिष्ठित रही जबकि भक्ति काल में यह भाषा केवल कृष्ण काव्य तक ही सीमित थी। रीतिकाल में सभी कवियों ने, चाहे वह किसी भी भौगोलिक क्षेत्र से हों, काव्य रचना की भाषा ब्रजभाषा को ही रखा।

निष्कर्ष के तौर पर कहा जा सकता है कि रीतिकालीन साहित्य की प्रवृत्तियाँ अधिकतर भौतिकवाद से प्रभावित थी।

बोध प्रश्न

- रीतिकालीन काव्य में किस रस की प्रधानता पाई जाती है?
- रीतिकालीन कवि किसकी प्रशंसा में कविता लिखते थे?

- रीतिकाल के कवियों के काव्य का मुख्य उद्देश्य क्या था?
- रीतिकाल में काव्य भाषा के रूप में किस भाषा का प्रयोग किया गया?

3.2.4 रीतिकाल की काव्यधाराएँ

रीतिकालीन काव्य को मुख्यतः तीन वर्गों में बाँटा जाता है, जिन्हें हम रीतिकाल की काव्यधाराएँ भी कह सकते हैं। ये तीन धाराएँ हैं-

1. रीतिबद्ध काव्यधारा
2. रीतिसिद्ध काव्यधारा
3. रीतिमुक्त काव्यधारा

1. रीतिबद्ध काव्य धारा

रीतिकाल के कवि जिन्होंने लक्षण ग्रंथों के अनुकरण पर काव्य अंगों का लक्षण एवं उदाहरण देते हुए रीति ग्रंथों की रचना की, वे 'रीतिबद्ध कवि' कहलाए। इन कवियों का प्रमुख उद्देश्य अपनी काव्य प्रतिभा का परिचय देना था। वे लक्षणों पर उतना ध्यान नहीं देते थे, जितना उदाहरणों पर। प्रमुख रीतिबद्ध कवि और उनके काव्य हैं - चिंतामणि (काव्य विवेक), मतिराम (ललित ललाम, अलंकार पंचाशिका), भूषण (शिवराज भूषण), देव (भाव विलास, काव्य रसायन), भिखारीदास (काव्य निर्णय), पद्माकर (जगद्विनोद) आदि।

2. रीतिसिद्ध काव्यधारा

रीतिसिद्ध कवियों के अन्तर्गत उन कवियों को लिया जाता है, जिन्होंने कोई रीति ग्रंथ नहीं लिखा, जबकि उन्हें रीति की पूरी जानकारी थी, जिसका उपयोग करते हुए उन्होंने अपने काव्य ग्रंथों की रचना की। ऐसे कवि 'रीति' में पूर्ण पारंगत थे, इसीलिए इन्हें रीतिसिद्ध कवि कहा जाता है। इस वर्ग के प्रमुख कवि हैं 'बिहारी'। उनकी एकमात्र रचना है 'बिहारी सतसई'।

3. रीतिमुक्त काव्यधारा

रीतिमुक्त काव्यधारा के अन्तर्गत वे कवि आते हैं जो रीति के बंधनों से पूर्णतः मुक्त थे। इन्होंने अपने काव्य में रीति का प्रयोग नहीं किया और न ही लक्षण ग्रंथ ही लिखे। इस धारा को स्वच्छंद काव्यधारा भी कहा जाता है। इन कवियों ने स्वतंत्र होकर काव्य रचना की। सभी प्रकार के काव्य नियमों से ये मुक्त थे। इन कवियों में मुख्य हैं - घनानंद, बोधा, आलम और ठाकुर।

बोध प्रश्न

- रीतिबद्ध काव्यधारा के कवियों का मुख्य उद्देश्य क्या था?
- चिन्तामणि किस काव्यधारा के कवि हैं?
- रीतिसिद्ध काव्यधारा के एक कवि का नाम बताइए।
- घनानंद किस काव्यधारा के कवि हैं?
- रीतिकाल में कितनी काव्यधाराएँ हैं?

3.2.5 रीतिकाल के प्रमुख कवियों का परिचय

1. केशवदास (1555 ई. - 1617 ई.)

केशवदास हिंदी के प्रमुख अलंकारवादी आचार्य माने जाते हैं। समय की दृष्टि इन्हें भक्तिकाल का कवि माना है किंतु प्रवृत्ति की दृष्टि से वे रीतिकाल के अंतर्गत आते हैं। ऐसा माना जाता है कि केशवदास से हिंदी की रीति परंपरा प्रारंभ होती है। ये ओरछा नरेश रामसिंह के भाई इंद्रजीत के आश्रय में रहते थे। इन्होंने कुल 9 ग्रंथों की रचना की, जिनमें से प्रमुख हैं - रसिकप्रिया (1591), रामचन्द्रिका (1601), कविप्रिया (1601), रतन बावनी (1607), वीरसिंह देव चरित (1607), विज्ञानगीता (1607), जहाँगीर जसचंद्रिका (1612)। इन्होंने कविता में अलंकार को बहुत अधिक महत्व दिया है। इनका मानना है कि अलंकारहीन कविता को कविता नहीं कहा जा सकता।

2. बिहारी (1606 ई. - 1663 ई.)

रीतिकालीन कवियों में बिहारी का स्थान सर्वश्रेष्ठ है। ये जयपुर के मिर्जा राजा जयसिंह के दरबारी कवि थे। इनका एकमात्र ग्रंथ है- बिहारी सतसई। बिहारी सतसई में कुल 713 दोहे हैं। इसकी रचना 1662 ई. में हुई। बिहारी ने वैसे तो कोई भी लक्षण ग्रंथ नहीं लिखा। किंतु इन्हें रीतिशास्त्र की पूरी जानकारी थी, जिसका प्रयोग इन्होंने अपनी रचनाओं में खुलकर किया है।

3. देव (1673 - 1767)

देव रीतिकाल के श्रेष्ठ कवियों में माने जाते हैं। इनका पुरा नाम देवदत्त था। इनकी तुलना बिहारी से की गई है। इन्होंने अनेक आश्रयदाताओं के यहाँ आश्रय प्राप्त किया और उनकी रुचि के अनुसार रचनाएँ की। इनके ग्रंथों की संख्या बहुत है। इनमें कुछ इस प्रकार हैं - भावविलास, भवानीविलास, रसविलास, सुखसागर तरंग, अष्टयाम, प्रेमचंद्रिका और काव्यरसायन।

4. भूषण (1613 - 1715)

भूषण रीतिकाल में वीर रस के प्रमुख कवि माने जाते हैं। ये 'छत्रपति शिवाजी' और राजा 'छत्रसाल' के आश्रय में रहे। चित्रकूल के राजा रुद्र सोलंकी ने इन्हें 'भूषण' की उपाधि दी थी। तभी से ये भूषण के नाम से प्रसिद्ध हो गए। इन्होंने रीति काव्य की परंपरा में एक अलंकार ग्रंथ 'शिवराज भूषण' रचा। इनके अन्य प्रमुख काव्य हैं - शिवा बावनी और छत्रसाल दशक। कुछ लोग इनके तीन और ग्रंथ मानते हैं - भूषण उल्लास, दूषण उल्लास, भूषण हजारा।

5. घनानंद (1689 - 1739)

घनानंद रीतिमुक्त काव्यधारा के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं। ये दिल्ली के बादशाह मुहम्मद शाह रँगीले के यहाँ मीर मुंशी थे तथा सुजान नामक नर्तकी से प्रेम करते थे। बादशाह की आज्ञा की अवमानना के अपराध में इन्हें देश निकला दिया गया था। उन्होंने सुजान को साथ चलने को कहा किंतु उसने मना कर दिया। इस कारण उन्हें वैराग्य हो गया और वे वृंदावन जाकर निम्बार्क संप्रदाय में दीक्षित हो गए। घनानंद ने लगभग 41 ग्रंथों की रचना की जो ज्यादातर मुक्तक हैं। इनकी कुछ मुख्य रचनाएँ हैं - सुजानहित, कृपाकन्द, वियोगबेलि, इश्कलता, प्रेम सरोवर आदि।

6. मतिराम (1617 - 1701)

मतिराम भी रीतिकालीन कवियों में मुख्य स्थान के अधिकारी माने जाते हैं। ये प्रसिद्ध कवियों भूषण और चिन्तामणि के भाई थे। ये बहुत सारे राजाओं के आश्रय में रहे और बहुत सारे ग्रंथों की रचना की। इनके मुख्य ग्रंथों में रसराज, ललित ललाम आदि शामिल हैं।

बोध प्रश्न

- हिंदी की 'रीति परंपरा' का प्रारंभ किस कवि से होता है?
- केशवदास ने कविता में किस चीज़ को महत्व दिया है?
- बिहारी की ख्याति किस ग्रंथ के कारण हुई?
- भूषण रीतिकाल में किस रस के कवि हैं?

3.2.6 रीतिकालीन गद्य साहित्य

रीतिकाल में गद्य विधा भक्तिकाल की अपेक्षा अधिक समृद्ध थी। इस युग का ब्रजभाषा और राजस्थानी का गद्य साहित्य भी काफी विकसित है। खड़ी बोली, दक्खिनी, मैथिली आदि भाषाओं में भी इस काल में गद्य साहित्य मिलता है। अनूदित गद्य रचनाएँ भी इस काल में पाई

जाती हैं। इस समय की प्रमुख गद्य विधाएँ हैं - कथा-कहानी, वार्ता, बात, वर्णन, चरित्र, वचनिका, दवावैत, सलोक, वचनामृत (प्रवचन) गोसट, जनम साखी, परचीओ, जीवनी, नाटक ख्यात, पीढ़ी, विगत, वंशावली, पत्र आदि। पुस्तक परिचय और निबंधात्मक रचनाएँ भी गद्य विधा के रूप में पाई जाती हैं। गद्य का एक और रूप इस समय देखने को मिलता है और वह है शिलालेखों तथा भित्ति-प्रशस्तियों के रूप में। इस समय के गद्य साहित्य के मुख्य विषय थे- धर्म, दर्शन, इतिहास, अध्यात्म, भूगोल, चिकित्सा, ज्योतिष, काव्यशास्त्र, प्रश्नशास्त्र, सामुद्रिक, गणित और व्याकरण आदि।

1. ब्रजभाषा गद्य

रीतिकाल का ब्रजभाषा गद्य बहुत अधिक विकसित था। धार्मिक और ललित गद्य की ब्रजभाषा में बहुत मात्रा में लिखा गया। हिंदी के बहुत से काव्य ग्रंथों पर टीका-टिप्पणी लेखन ब्रजभाषा में बहुत देखा गया है। वल्लभ संप्रदाय के हरिराय जी, कल्याण भट्ट, द्वारिकेश जी, गोकुल नाथ जी, काका वल्लभ, ब्रज भूषण और हरीराम जी के लगभग 30 ग्रंथ मिलते हैं।

2. खड़ीबोली गद्य

रीतिकाल में खड़ीबोली गद्य प्रायः मिश्रित भाषा में पाया जाता है। इस समय की रचनाओं पर ब्रजभाषा, पूर्वी हिंदी, राजस्थानी तथा पंजाबी का प्रभाव देखा गया है। इस समय की मौलिक रचनाएँ हैं - एकादशी महिमा, सुकनावली, फर्सनामा, बाजनामा, हकीकत, रानी केतकी की कहानी आदि।

3. दक्खिनी गद्य

रीतिकाल में दक्खिनी भाषा में भी गद्य साहित्य प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। इसमें पूर्व परंपरा के अनुसार सूफी तथा इस्लामी धर्म ग्रंथों का भाष्य और अनुवाद हुआ। इस समय की प्रमुख रचनाएँ हैं - आबिदशाह अलहसन उलहुसेनी कृत 'गुलज़ारुस्सालिकीन' तथा 'कंजुल मोमिनीन' आदि। उर्दू शैली के बावजूद शब्द एवं वाक्य विन्यास के लिहाज से दक्खिनी गद्य की भाषा आधुनिक खड़ी बोली के बहुत निकट है।

4. राजस्थानी गद्य

रीतिकाल में राजस्थानी गद्य काफी समृद्ध अवस्था में था। ब्रजभाषा गद्य की तुलना में राजस्थानी गद्य की स्थिति अच्छी थी। राजस्थानी गद्य का 'बात-साहित्य' बहुत प्रसिद्ध है। यह

आधुनिक कहानी के बहुत करीब की विधा है। विषय की दृष्टि से इसके छह प्रकार हैं - प्रेमपरक, वीरतापूर्ण हास्यमय, धार्मिक, शांतरस परक, स्त्रीचातुर्य विषयक और अदभुत तत्व पूर्ण। अनुवाद भी इस समय बहुत हुए, जैसे 'पंचतंत्र', 'सिंहासन बत्तीसी' 'बैताल पच्चीसी' आदि का अनुवाद -छायानुवाद।

बोध प्रश्न

- रीतिकाल में गद्य साहित्य किस अवस्था में था?
- खड़ी बोली गद्य की रचनाओं पर किन-किन भाषाओं का प्रभाव था?
- राजस्थानी गद्य साहित्य की एक प्रमुख विधा का नाम बताइए।

3.3 पाठ-सार

हिंदी साहित्य के इतिहास को चार कालों में विभाजित किया गया है, जिनमें से तृतीय काल को रीतिकाल की संज्ञा दी गई। इस काल की पृष्ठभूमि के निर्माण में दरबारी परिवेश की मुख्य भूमिका रही। दरबारी संस्कृति से ही इस काल की राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक परिस्थितियों का निर्माण हुआ। इस समय की काव्य रचना पर सामंती प्रभाव देखा जाता है। इसमें दरबारी काव्य की सभी विशेषताएँ पाई जाती हैं; जैसे अलंकरण और शृंगारिकता की प्रधानता। स्त्री इस काल के काव्य का केंद्र थी। रीतिकालीन कवियों की मुख्य प्रवृत्तियों में से एक है 'रीति निरूपण' अर्थात लक्षण ग्रंथों की रचना करना। इसी प्रवृत्ति के कारण आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इस काल का नाम 'रीतिकाल' रखा है। इस समय के कवियों को काव्यशास्त्र का बहुत अच्छा ज्ञान था। इन कवियों का मुख्य उद्देश्य था काव्य शास्त्र का ज्ञान आम पाठकों तक पहँचाना। रीति निरूपक रचनाओं में मुख्य हैं - केशव की कवि प्रिया, चिंतामणि की कविकुलकल्पतरु तथा भूषण की शिवराज भूषण आदि। इसके बावजूद यह भी देखा जाता है कि रीतिकालीन आचार्यों ने काव्यशास्त्र के क्षेत्र में कोई मौलिक उपलब्धि प्राप्त नहीं की। इसी कारण आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इन रीति ग्रंथकारों को आचार्य न मानकर कवि ही माना है। शृंगारिकता को रीतिकालीन काव्य का केंद्र बिंदु माना जाता है। इस समय के काव्य में शृंगार को प्रमुखता दी जाती थी। लक्षित शृंगार चित्रण के अंतर्गत नायिका के रूप सौंदर्य का वर्णन किया गया है। राधा कृष्ण की प्रेम लीलाओं का विविध रूपों में चित्रण हुआ है। शृंगार रस के दोनों पक्षों संयोग और वियोग का चित्रण इस समय के काव्य में पाया जाता है। रीतिकालीन काव्य में आलंकारिकता की प्रधानता पाई जाती है। दरबारी काव्य होने के कारण इसमें अलंकरण शैली का बहुत उपयोग होता था। इस काल का संपूर्ण काव्य ऐसा प्रतीत है जैसे कोई

स्त्री आभूषणों से सुसज्जित होकर बैठी है। रीतिकालीन कवियों ने अपने काव्य में सभी प्रकार के अलंकारों का प्रयोग किया है; जैसे - अनुप्रास, यमक, श्लेष, उपमा आदि। अलंकार जो कविता में पहले साधन हुआ करता था, इस काल में साध्य के रूप में प्रयोग होने लगा। रीतिकालीन काव्य की मुख्य तीन धाराएँ थीं - रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध, रीतिमुक्त। इस काल के प्रमुख कवि हैं- केशवदास, बिहारी, देव, भूषण, घनानंद, मतिराम, पद्माकर आदि। भक्ति काल की तुलना में रीतिकालीन गद्य बहुत ही समृद्ध था। इस काल में राजस्थानी और ब्रजभाषा का गद्य साहित्य काफी विकसित हुआ।

3.4 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित महत्वपूर्ण बिन्दु निष्कर्ष के रूप में प्राप्त हुए हैं-

1. सत्रहवीं शताब्दी के मध्य से उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक हिंदी साहित्य की मुख्य प्रवृत्ति रीति निरूपण की है, इसलिए इसे रीतिकाल कहा जाता है।
2. यह समय भारतीय इतिहास में मुगलों के उत्थान और पतन का काल था।
3. रीतिकाल में नैतिक मुल्यों का ह्रास हो रहा था।
4. इस काल में कवि और आचार्य राजे-रजवाड़ों पर आश्रित थे।
5. रीतिकालीन कवियों ने प्रायः अपने आश्रयदाताओं के मनोरंजन के लिए विलासपूर्ण साहित्य की रचना की।
6. इस समय के कवियों के काव्य में नारी केंद्र बिंदु होती थी।
7. इस समय काव्य की तीन धाराएँ थी, रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध और रीतिमुक्त।
8. इस काल में शृंगारिकता के साथ-साथ वीररस की भी कविताएँ रची जाती थी।
9. इस समय के मुख्य कवियों में केशवदास, बिहारी, देव, भूषण, घनानंद आदि थे।
10. इस समय का गद्य साहित्य भी काफी विकसित था।

3.5 शब्द संपदा

1. अतिशयोक्ति = बढ़ा-चढ़ा कर कही गई बात

2. धर्मान्धता	=	धर्म में अंध श्रद्धा या विश्वास
3. निरंकुशता	=	मनमाना आचरण, तानाशाही
4. पक्षपात	=	भेदभाव
5. परिपाटी	=	परंपरा, पद्धति
6. परिस्थिति	=	वातावरण, माहौल
7. रीति	=	कोई कार्य करने का तरीका
8. वैभव	=	शक्ति
9. सामन्तशाही	=	वह स्थिति जिसमें किसी देश में सामंतों का राज्य या शासन हो
10. सार्थक	=	सफल

3.6 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. रीतिकालीन काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए।

2. रीतिकाल के नामकरण पर विचार करते हुए 'रीतिकाल' नाम की सार्थकता को स्पष्ट कीजिए।

3. रीतिकाल की परिस्थितियों पर प्रकाश डालिए।

खंड (ब)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. रीतिकाल की रीतिमुक्त काव्य धारा का परिचय दीजिए।

2. केशवदास और देव का परिचय दीजिए।

3. रीतिसिद्ध काव्य धारा की विशेषता को बताते हुए बिहारी के योगदान पर प्रकाश डालिए।

4. रीतिकालीन काव्य को दरबारी काव्य क्यों कहा जाता है? स्पष्ट कीजिए।

खंड (स)

I सही विकल्प चुनिए

1. रीतिकाल को 'शृंगार काल' किसने कहा? ( )

(क) रामचंद्र शुक्ल (ख) हजारी प्रसाद द्विवेदी

(ग) विश्वनाथ प्रसाद मिश्र (घ) मिश्र बंधु

2. रीतिमुक्त काव्य धारा के कवि हैं - ( )

(क) बिहारी (ख) बोधा

(ग) मतिराम (घ) केशव

3. इनमें से मतिराम की रचना कौन सी है? ( )

(क) अलंकार प्रकाश (ख) अलंकार भ्रम भंजन

(ग) अलंकार पंचाशिका (घ) रसराज

4. 'प्रेम सरोवर' किसकी रचना है? ( )

(क) देव (ख) घनानंद

(ग) गोप (घ) ग्वाल

II रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

1. रीतिकाल को कलाकाल .... ने कहा।

2. केशव रीति काल के .... कवि हैं।

3. रीतिकाल की समय सीमा .... है।

III सुमेल कीजिए

i) बिहारी	(अ) रसिक प्रिया
ii) केशवदास	(आ) सतसई
iii) घनानंद	(इ) शिवा बावनी
iv) भूषण	(ई) इश्कलता

3.7 पठनीय पुस्तकें

1. हिंदी साहित्य का इतिहास. रामचंद्र शुक्ल

2. हिंदी साहित्य का इतिहास. सं. नगेंद्र, हरदयाल

3. रीतिकालीन साहित्य का पूनर्मूल्यांकन. रामकुमार वर्मा

4. हिंदी साहित्य का रीतिकाल. सुषमा अग्रवाल

5. हिंदी साहित्य का नवीन इतिहास. लाल साहब सिंह

इकाई 4 : आधुनिक काल : संक्षिप्त परिचय

इकाई की रूपरेखा

4.0 प्रस्तावना

4.1 उद्देश्य

4.2 मूल पाठ : आधुनिक काल : संक्षिप्त परिचय

4.2.1 आधुनिक काल : नामकरण

4.2.2 हिंदी गद्य का उदय

4.2.3 पुनर्जागरण काल : भारतेंदु युग

4.2.4 जागरण-सुधार काल : द्विवेदी युग

4.2.5 छायावाद युग

4.2.6 छायावादोत्तर काल

4.2.6.1 प्रगतिवाद

4.2.6.2 प्रयोगवाद

4.2.7 नवलेखन काल : स्वातंत्र्योत्तर काल

4.3 पाठ-सार

4.4 पाठ की उपलब्धियाँ

4.5 शब्द संपदा

4.6 परीक्षार्थ प्रश्न

4.7 पठनीय पुस्तकें

4.0 प्रस्तावना

हिंदी साहित्य का 'आधुनिक काल' भारत के इतिहास के तेजी से बदलते हुए स्वरूप से सीधे-सीधे प्रभावित है। नवजागरण, स्वतंत्रता संग्राम और राष्ट्रीयता की भावना का प्रभाव साहित्य पर भी देखा गया। भारत में औद्योगीकरण का विकास होने लगा। अंग्रेजी शिक्षा का प्रभाव बढ़ने लगा तथा लोगों के जीवन में बदलाव आने लगा। भावना के साथ-साथ विचारों को भी प्रधानता मिलने लगी। पद्य के साथ-साथ गद्य का भी विकास देखा गया। इस युग में हिंदी

गद्य की अनेक नई विधाओं का विकास हुआ।

4.1 उद्देश्य

प्रिय छात्रो! इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप -

- आधुनिक काल का सामान्य परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- आधुनिक काल के नामकरण और उपविभाजन से परिचित हो सकेंगे।
- भारतेंदु युग के मुख्य कवियों और गद्य लेखकों के बारे में जान सकेंगे।
- द्विवेदी युग के मुख्य कवियों और गद्य लेखकों के बारे में जान सकेंगे।
- छायावाद युग के मुख्य कवियों और गद्य लेखकों के बारे में जान सकेंगे।
- प्रगतिवाद और प्रयोगवाद के विकास से परिचित होंगे।
- नवलेखन काल की साहित्यिक उपलब्धियों को जान सकेंगे।

4.2 मूल पाठ : आधुनिक काल : संक्षिप्त परिचय

हिंदी साहित्य का आधुनिक काल 19 वीं शताब्दी के मध्य से प्रारंभ होता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने हिंदी साहित्य के इस चतुर्थ काल खंड को गद्य की प्रधानता के कारण 'गद्य काल' नाम दिया है और इसे संवत 1900 वि० अर्थात सन् 1843 ई.से आरंभ माना है।

4.2.1 आधुनिक काल : नामकरण

गद्य की प्रधानता के बावजूद यह नहीं कहा जा सकता कि काव्य रचना इस काल में गौण हो गई। इसलिए 'गद्य काल' नाम अधूरा प्रतीत होता है। इसकी तुलना में 'आधुनिक काल' अधिक उपयुक्त है, क्योंकि यह समय पूरे भारतीय इतिहास में मध्यकालीनता की समाप्ति और आधुनिकता के उदय का समय है।

बोध प्रश्न

- आधुनिक काल की आरंभिक सीमा क्या है?

4.2.2 हिंदी गद्य का उदय

हिंदी गद्य का उदय आधुनिक साहित्य की बड़ी और परिवर्तनकारी घटना है। यद्यपि 1741 ई. में रामप्रसाद निरंजनी ने 'भाषा योग वशिष्ठ' नामक ग्रंथ की रचना खड़ी बोली में कर

चुके थे। लेकिन 1800 ई. में कलकत्ता में स्थापित फोर्ट विलियम कॉलेज ने आधुनिक गद्य के विकास में प्रमुख भूमिका निभाई। लल्लू लाल ने 'प्रेमसागर', सदल मिश्र ने 'नासिकेतोपाख्यान', सदासुख लाल नियाज़ ने 'सुखसागर' तथा इंशा खाँ ने 'रानी केतकी की कहानी' लिखकर आरंभिक खड़ी बोली गद्य की अलग-अलग शैलियाँ विकसित कीं।

बोध प्रश्न

- 'भाषा योग वशिष्ठ' के रचनाकार कौन हैं?
- फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना कब हुई?

4.2.3 पुनर्जागरण काल : भारतेंदु युग

आधुनिक काल का प्रथम चरण भारतेंदु युग अथवा पुनर्जागरण काल के नाम से जाना जाता है। इसकी अवधि प्रथम स्वाधीनता संग्राम से लेकर उन्नीसवीं सदी के अंत तक अर्थात 1857- 1900 ई. मानी जाती है। भारतेंदु युगीन कविता की मुख्य प्रवृत्तियाँ ये रहीं - (1) राष्ट्रप्रेम की भावना, (2) सामाजिक दुर्दशा का निरूपण, (3) शृंगारिकता, (4) भक्ति भावना, (5) प्रकृति चित्रण, (6) हास्य-व्यंग्य की प्रधानता, (7) समस्या पूर्ति, (8) शिल्प विधान।

भारतेंदु युग के प्रमुख कवि

1. भारतेंदु हरिश्चंद्र (1850-1885 ई.) : भारतेंदु हरिश्चंद्र ने लगभग 70 कृतियों की रचना की जिनमें 'प्रेममालिका', 'प्रेमसरोवर', 'प्रेम प्रलाप', 'प्रेम फुलवारी', 'नए जमाने की मुकरी' आदि प्रमुख हैं। भारतेंदु ने गद्य के लिए खड़ी बोली का समर्थन किया, लेकिन कविताएँ मुख्यतः ब्रजभाषा में ही रचीं।

2. बदरीनारायण चैधरी 'प्रेमघन' (1855 - 1923 ई.) : इनकी प्रसिद्ध काव्य-कृतियों में 'जीर्ण जनपद', 'आनंद-अरुणोदय' और 'भारत भाग्योदय' उल्लेखनीय हैं। इन्होंने मुख्य रूप से ब्रजभाषा में ही रचना की, किंतु खड़ी बोली से भी इन्हें लगाव था।

3. प्रतापनारायण मिश्र (1856 - 1894 ई.) : इनकी प्रसिद्ध काव्य कृतियाँ हैं - 'प्रेम पुष्पावली', 'मन की लहर', 'शृंगार विलास' आदि।

भारतेंदु युग के मुख्य गद्य लेखक

निबंध : इस काल में हिंदी निबंध और पत्र-पत्रिकाओं का उद्भव हुआ। साहित्यकार अपने

सामाजिक उत्तरदायित्व को देखते हुए अनेक विषयों पर निबंध लिखते थे। मुख्य निबंधकारों में भारतेंदु, प्रतापनारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट आदि शामिल हैं।

नाटक : भारतेंदु युग में नाटक विधा का पुनर्प्रचलन हुआ। उनके द्वारा समकालीन परिस्थितियों का चित्रण किया जाता था। मुख्य नाटककार थे- भारतेंदु हरिश्चंद्र, प्रतापनारायण मिश्र, राधाचरण गोस्वामी आदि।

उपन्यास : इस काल में उपन्यास लिखने का प्रचलन भी प्रारंभ हो गया था। मुख्य उपन्यास लेखकों में पंडित गौरी दत्त, लाला श्रीनिवास दास, बालकृष्ण भट्ट, बाबु देवकीनंदन खत्री तथा किशोरीलाल गोस्वामी माने जाते हैं।

आलोचना : इस युग के मुख्य आलोचकों में बदरीनारायण चैधरी 'प्रेमघन' तथा बालकृष्ण भट्ट को माना जाता है।

बोध प्रश्न

- भारतेंदु युग का समय कब से कब तक है?

4.2.4 जागरण-सुधार काल : द्विवेदी युग

द्विवेदी युग अथवा जागरण-सुधार काल समय सन् 1900 ई. से 1918 ई. तक माना जाता है। 1900 ई. से 'सरस्वती' पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। सन् 1903 ई. में महावीर प्रसाद द्विवेदी इसके संपादक बने। इस पत्रिका के माध्यम से नवजागरण की लहर को आगे बढ़ाया गया। इस समय नए विषयों पर कविता लिखी जाने लगी। काव्य भाषा के रूप में ब्रजभाषा को छोड़कर 'खड़ी बोली' का प्रयोग किया जाने लगा।

इस युग की प्रवृत्तियाँ निम्नलिखित हैं - 1. देश प्रेम की भावना, 2. सामाजिक समस्याओं का चित्रण, 3. नैतिकता एवं आदर्शवाद, 4. सामान्य मानवता, 5. विषय वस्तु का विस्तार, 6. भाषा परिवर्तन, 7. स्त्री के प्रति दृष्टिकोण में बदलाव।

द्विवेदी युग के प्रमुख कवि

1. श्रीधर पाठक (1859 ई.- 1928 ई.) : श्रीधर पाठक खड़ी बोली के प्रथम कवि हैं। इनकी मौलिक कृतियों में 'वनाष्टक', 'कश्मीर सुषमा' (1904), 'देहरादून' (1915) और 'भारतगीत' (1928) आदि विशेष उल्लेखनीय हैं।

2. महावीर प्रसाद द्विवेदी (1864 ई.- 1938 ई.) : द्विवेदी युग के प्रवर्तक महावीर प्रसाद द्विवेदी मुख्य काव्य-कृतियाँ हैं - काव्यमंजूषा, कुमार संभव सार आदि।

3. अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' (1865 ई. 1947 ई.) : हरिऔध को 'खड़ी बोली के प्रथम महाकवि' होने का गौरव प्राप्त है। इनकी मुख्य रचनाएँ हैं - प्रियप्रवास - महाकाव्य (1914), चुभते चौपदे, चोखे चौपदे (1932), बोलचाल, रसकलश, वैदेही वनवास (1940) आदि।

4. मैथिलीशरण गुप्त (1886 - 1964 ई.) : राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त, द्विवेदी युग के सर्वश्रेष्ठ कवि माने जाते हैं। गुप्त जी के प्रमुख काव्यग्रंथ हैं - जयद्रथ वध, भारत भारती, पंचवटी, साकेत, यशोधरा, द्वापर, जयभारत, विष्णुप्रिया आदि।

5. रामनरेश त्रिपाठी (1889 - 1962 ई.) : इनके काव्य में श्रीधर पाठक की तरह स्वच्छंदता की प्रवृत्ति मिलती है। त्रिपाठी जी के चार काव्य ग्रंथ प्रसिद्ध हैं - मिलन (1918), पथिक (1920), मानसी (1927) और स्वप्न (1929)।

द्विवेदी युग के मुख्य गद्य लेखक

कहानी : हिंदी कहानी का वास्तविक विकास 1900 ई. से 'सरस्वती' पत्रिका के प्रकाशन से प्रारंभ होता है। इस काल में किशोरीलाल गोस्वामी की 'इन्दुमती' (1900 ई.), रामचंद्र शुक्ल की 'ग्यारह वर्ष' का समय (1903 ई.), गिरजादत्त बाजपेयी की 'पंडित और पंडिताइन' तथा बंग-महिला की 'दुलाईवाली' (1907 ई.) कहानियाँ प्रकाशित हुई। इस समय के मुख्य कहानीकार हैं- किशोरीलाल गोस्वामी, वृंदावन लाल वर्मा, विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक, चंद्रधर शर्मा गुलेरी, जे.पी. श्रीवास्तव तथा राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह।

निबंध : इस युग के मुख्य निबंधकारों में महावीरप्रसाद द्विवेदी, बालमुकुंद गुप्त, माधवप्रसाद मिश्र, गोविंदनारायण मिश्र, चंद्रधर शर्मा गुलेरी, सरदार पूर्ण सिंह, पद्मसिंह शर्मा, श्यामसुंदर दास, हरिऔध आदि शामिल हैं।

उपन्यास : द्विवेदी युग के प्रमुख उपन्यासकारों श्रद्धाराम फुल्लौरी (भाग्यवती), लाला श्रीनिवास दास (परीक्षा गुरु), बालकृष्ण भट्ट, अयोध्यासिंह उपाध्याय, बाबू देवकीनंदन खत्री, गोपालराम गहमरी, किशोरीलाल गोस्वामी आदि मुख्य हैं।

आलोचना : इस समय के मुख्य आलोचकों में महाराज प्रताप नारायण सिंह, लाला भगवानदीन, पद्मसिंह शर्मा, महावीर प्रसाद द्विवेदी, बालमुकुंद गुप्त, श्यामसुंदर दास, राधाकृष्ण दास आदि उल्लेखनीय हैं।

बोध प्रश्न

- द्विवेदी युग की समय सीमा क्या है?
- महावीर प्रसाद द्विवेदी किस पत्रिका के संपादक थे?
- द्विवेदी युग में काव्यभाषा के रूप में किस भाषा का प्रयोग किया जाता था?

4.2.5 छायावाद युग

छायावाद युग की समय सीमा 1918 ई. से 1936 ई. तक मानी जाती है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार "छायावाद शब्द का प्रयोग दो अर्थों में समझना चाहिए। एक तो रहस्यवाद के अर्थ में जहाँ उसका संबंध काव्यवस्तु से होता है अर्थात जहाँ कवि उस अनन्त और अज्ञात प्रियतम को आलम्बन बनाकर अत्यंत चित्रमयी भाषा में प्रेम की अनेक प्रकार से व्यंजना करता है। छायावाद का दूसरा प्रयोग काव्य शैली या पद्धति विशेष के व्यापक अर्थ में हैं।" इसे द्विवेदी युग की इतिवृत्तात्मकता अर्थात स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह भी कहा जाता है।

छायावादी काव्य की विशेषताएँ

1. आत्म अभिव्यक्ति, 2. सौन्दर्य चित्रण, 3. नारी सौन्दर्य, 4. प्रकृति चित्रण, 5. दुःख और वेदना की अभिव्यक्ति, 6. रहस्यवाद, 7. कल्पनाशीलता, 8. बिम्ब योजना, 9. प्रतीक योजना।

छायावाद के प्रमुख कवि : छायावाद चतुष्टय

1. जयशंकर प्रसाद (1890 - 1937 ई.) : जयशंकर प्रसाद 'छायावाद' युग के प्रवर्तक के नाम से जाने जाते हैं। 'कामायनी' इनकी अमर कृति है। इनकी प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं - 'उर्वशी', 'वनमिलन', 'अयोध्या का उद्धार', 'करुणालय', 'कामायनी महाकाव्य', 'आँसू', 'झरना', 'लहर' आदि।

2. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' (1897 - 1962 ई.) : निराला को ओज और औदात्य का कवि कहा जाता है। इनकी मुख्य कृत्तियाँ हैं - 'तुलसीदास', 'सरोज स्मृति', 'राम की शक्तिपूजा', 'अनामिका' (1923), 'परिमल' (1930), 'गीतिका' (1936), 'कुकुरमुत्ता', 'अणिमा' आदि।

3. सुमित्रानंदन पंत (1900 - 1977 ई.) : पंत को प्रकृति का सुकुमार कवि कहा जाता है। पंत जी की प्रथम कविता 'गिरजे का घण्टा' है। उनकी प्रमुख काव्य कृत्तियाँ हैं - 'वीणा', 'ग्रन्धि', 'पल्लव' और 'गुंजन', 'युगान्त', 'युगवाणी', 'ग्राम्या', 'उत्तरा', 'लोकायतन'।

4. महादेवी वर्मा (1907 - 1987 ई.) : महादेवी को आधुनिक युग की मीराँ कहा जाता है। इनके मुख्य काव्य संग्रह हैं - 'निहार', 'रश्मि', 'नीरजा', 'सांध्यगीत', 'यामा' और 'दीपशिखा'।

छायावादी काव्यधारा के साथ एक ऐसी काव्यधारा चल रही थी जिसमें राष्ट्रीय भावना थी। किंतु उनमें कल्पना की उतनी उड़ान नहीं थी। ऐसे कवियों में बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', रामधारी सिंह दिनकर, माखनलाल चतुर्वेदी और सुभद्राकुमारी चौहान प्रमुख हैं।

छायावाद युग के मुख्य गद्य लेखक

1. कहानी : आलोच्य काल में कहानी के क्षेत्र में प्रेमचंद का नाम सर्वोपरि है। इन्होंने पहली बार कहानी को मनोवैज्ञानिक विश्लेषण, जीवन के यथार्थ चित्रण और स्वाभाविक वर्णन से जोड़ने और कल्पना की मात्रा को कम करने का आग्रह किया। इस परंपरा के कहानीकारों में सुदर्शन, विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक', भगवतीप्रसाद वाजपेयी, ज्वालादत्त शर्मा तथा जयशंकर प्रसाद आदि मुख्य हैं।

2. निबंध : निबंध की दृष्टि से भी यह काल बहुत ही महत्वपूर्ण माना जाता है। इस काल को हिंदी निबंध का 'उत्कर्ष-काल' कहा जाता है। इस काल के मुख्य निबंधकार आचार्य रामचंद्र शुक्ल हैं। इस युग के अन्य निबंधकारों में जयशंकर प्रसाद, रायकृष्ण दास, वियोगी हरि, चतुरसेन शास्त्री, नंददुलारे वाजपेयी आदि के नाम प्रमुख हैं।

3. उपन्यास : हिंदी उपन्यास साहित्य में प्रेमचंद का प्रवेश एक युगान्तकारी घटना है। छायावाद का यह समय उपन्यास विधा के लिए 'प्रेमचंद काल' कहलाता है। इस समय के मुख्य उपन्यासकारों में प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, निराला, जैनेंद्र, वृन्दावन लाल वर्मा, भगवतीचरण वर्मा, सियारामशरण गुप्त आदि मुख्य हैं।

4. नाटक : इस युग में हिंदी नाटक रंगमंच और जीवन के यथार्थ से जुड़ गया था। इस समय के मुख्य नाटककारों में जयशंकर प्रसाद, माखनलाल चतुर्वेदी, गोविन्द वल्लभ पंत, बेचन शर्मा 'उग्र', प्रेमचंद, हरिकृष्ण प्रेमी आदि आते हैं।

5. आलोचना : आलोचना में इस युग का नेतृत्व आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने किया। नन्ददुलारे वाजपेयी ने छायावादी आलोचना को स्थापित किया। इस युग के अन्य आलोचकों में शांतिप्रिय द्विवेदी, डॉ. नगेंद्र आदि मुख्य हैं। इनकी समीक्षा पर अभिव्यंजावाद, कलावाद, सौन्दर्यवाद, रसवाद आदि सभी का प्रभाव देखा जाता है।

6. एकांकी : हिंदी एकांकी का प्रारंभ प्रसाद कृत 'एक घूंट' एकांकी से माना जाता है। इस समय के मुख्य एकांकीकार जयशंकर प्रसाद, रामकुमार वर्मा, भुवनेश्वर, सेठ गोविन्ददास, उदय शंकर भट्ट, उपेन्द्रनाथ अश्क, विष्णु प्रभाकर तथा जगदीश चंद्र माथुर आदि माने जाते हैं।

बोध प्रश्न

- छायावाद की समय सीमा क्या है?
- छायावाद के प्रमुख कवि कौन कौन हैं?
- ओज और औदात्य का कवि किसे कहा जाता है?
- हिंदी एकांकी का प्रारंभ कब से माना जाता है?

4.2.6.1 प्रगतिवाद

प्रगतिवाद का संबंध मार्क्सवादी आन्दोलन से है। 1936 ई. में लखनऊ में 'भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ' का पहला अधिवेशन हुआ जिसकी अध्यक्षता प्रेमचंद ने की। प्रेमचंद ने अपने भाषण में कहा कि "साहित्य केवल मनोरंजन की वस्तु नहीं, उसका लक्ष्य समाज का हित होना चाहिए।" राजनीति के क्षेत्र में जो मार्क्सवाद है, वही साहित्य के क्षेत्र में प्रगतिवाद है। अतः प्रगतिवादी साहित्य का लक्ष्य भी 'साम्यवादी' विचारधारा का प्रचार करना तथा शोषित वर्ग को क्रान्ति के लिए शोषक वर्ग के विरुद्ध उकसाना है।

प्रगतिवादी काव्य की प्रवृत्तियाँ - 1. शोषण का विरोध, 2. समतामूलक समाज का निर्माण, 3. शोषित वर्ग की दयनीय स्थिति का वर्णन, 4. नारी विषयक नया दृष्टिकोण, 5. यथार्थवाद, 6. उपयोगितावाद, 7. साम्यवादी प्रतीक, 8. सहज भाषा-शैली।

बोध प्रश्न

- प्रगतिवाद का संबंध किस आन्दोलन से है?

प्रमुख प्रगतिवादी कवि

1. रांगेय राघव (1923 - 1962 ई.) : रांगेय राघव बहुमुखी प्रतिभा संपन्न प्रगतिवादी कवि थे। इन्होंने कविता के साथ-साथ कहानियाँ, उपन्यास और आलोचनाएँ भी लिखी। इनके मुख्य काव्य संग्रह हैं - पिघलते पत्थर, श्यामला, मेधावी, अजेय, खण्डहर, राह के दीपक तथा पांचाली।

2. रामविलास शर्मा (1912 - 2000 ई.) : प्रगतिशील विचारधारा के कवि और आलोचक के रूप में हिंदी साहित्य के विकास में रामविलास शर्मा का योगदान महत्वपूर्ण माना जाता है। इनकी मुख्य काव्यकृतियाँ हैं - रूप तरंग, सदियों से सोए जाग उठे, चाँदनी, परिणति।

3. नागार्जुन (1911 - 98 ई.) : नागार्जुन का वास्तविक नाम वैद्यनाथ मिश्र था। मैथिली में ये 'यात्री' नाम से काव्य रचना करते थे। बौद्ध धर्म में दीक्षा लेने के बाद इन्होंने अपना नाम नागार्जुन रखा। प्रगतिवादी कवियों में ये बहुत महत्वपूर्ण जनकवि माने जाते हैं। इनके प्रमुख काव्य संग्रह है - युगधारा, सतरंगे पंखों वाली, प्यासी पथराई आँखें, तुमने कहा था, खिचड़ी विप्लव देखा हमने, पुरानी जूतियों का कोरस आदि।

प्रगतिवाद के अन्य प्रमुख कवि हैं - नरेन्द्र शर्मा, शिवमंगल सिंह 'सुमन', केदारनाथ अग्रवाल, भारतभूषण अग्रवाल, नेमिचंद्र जैन, त्रिलोचन शास्त्री आदि।

प्रमुख प्रगतिवादी गद्य लेखक

कहानी - इस समय कहानी कला अपने उत्कर्ष पर थी। उस पर समाजवादी विचारधारा का प्रभाव था। मुख्य कहानीकारों में यशपाल, रांगेय राघव, अमृतलाल नागर, प्रभाकर माचवे, अमृतराय, विष्णु प्रभाकर, उपेंद्रनाथ अश्क आदि उल्लेखनीय हैं।

निबंध - इस काल के मुख्य निबंधकारों में आचार्य रामचंद्र शुक्ल, राहुल सांकृत्यायन, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, नगेंद्र, रामविलास शर्मा आदि मुख्य हैं।

उपन्यास - इस काल के उपन्यासकारों में जैनेंद्र, इलाचंद्र जोशी, डॉ. उदयशंकर भट्ट, उपेंद्रनाथ अश्क, राजेंद्र यादव, रांगेय राघव, मन्नू भंडारी, अमृत राय, बद्दीउज्ज़मा, फणीश्वनाथ रेणु, यशपाल, वृन्दावनलाल वर्मा का प्रमुख स्थान है।

नाटक - इस काल के मुख्य नाटककारों में माखनलाल चतुर्वेदी, पण्डित गोविन्द वल्लभ पंत, चतुरसेन शास्त्री आदि शामिल हैं।

आलोचना - इस काल के मुख्य आलोचकों में शिवदान सिंह चैहान, रामविलास शर्मा, प्रकाशचंद गुप्त, रागेय राघव, अमृत राय तथा नामवर सिंह के नाम विशेष उल्लेखनीय है।

बोध प्रश्न

- प्रगतिवाद का संबंध किस आंदोलन से है?
- 'भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ' के प्रथम अध्यक्ष कौन थे?

4.2.6.2 प्रयोगवाद

प्रयोगवाद का प्रारंभ 1943 ई. में अज्ञेय द्वारा सम्पादित 'तार सप्तक' के प्रकाशन से माना जाता है। प्रयोगवादी कवि प्रयोग करने में विश्वास करते हैं। उन्होंने अपने व्यक्तिगत सुख-दुःख को, अपनी संवेदनाओं को नए-नए माध्यमों से व्यक्त किया और उस यथार्थ को अभिव्यक्ति प्रदान की, जिसके वे भोक्ता हैं। प्रयोगवाद का ही विकास कलान्तर में 'नई कविता' के रूप में हुआ।

तार सप्तक के कवि : गजानन माधव मुक्तिबोध, नेमिचंद्र जैन, भारतभूषण अग्रवाल, प्रभाकर माचवे, गिरिजाकुमार माथुर, रामविलास शर्मा एवं अज्ञेय।

4.2.7 नवलेखन काल : स्वातंत्र्योत्तर काल

'दूसरा सप्तक' (1953) के प्रकाशन के साथ नई कविता का प्रवर्तन हुआ। अन्य विधाओं में भी विशेष रूप से 1960 के बाद समकालीनता बोध का विकास हुआ।

प्रमुख कवि

इस समय के बहुत सारे कवि प्रयोगवाद और नई कविता दोनों धाराओं से जुड़े हुए हैं। जैसे - सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय', गजानन माधव मुक्तिबोध, शमशेरबहादुर सिंह, केदारनाथ सिंह, धर्मवीर भारती, धूमिल, भवानी प्रसाद मिश्र, मुक्तिबोध।

नई कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

1. नवीनता, 2. बौद्धिकता, 3. अतिशय वैयक्तिकता, 4. क्षणवादिता, 5.भोगवाद एवं वासना, 6. यथार्थवाद, 7. आधुनिक युग बोध, 8. व्यंग्य की प्रवृत्ति, 9. अलंकार के प्रयोग में नवीनता।

नवलेखन काल के मुख्य गद्य लेखक

कहानी - इस युग के मुख्य कहानीकारों में धर्मवीर भारती, शिवप्रसाद सिंह, मार्कण्डेय, अमरकांत, मोहन राकेश, कमलेश्वर, राजेंद्र यादव, निर्मल वर्मा, ऊषा प्रियंवदा आदि उल्लेखनीय हैं।

निबंध - इस काल के मुख्य निबंधकारों में आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, नगेंद्र, रामधारी सिंह दिनकर, प्रभाकर माचवे, शिवप्रसाद सिंह, विद्यानिवास मिश्र आदि उल्लेखनीय हैं।

नाटक - इस युग के मुख्य नाटककारों में विष्णु प्रभाकर, जगदीशचंद्र माथुर, धर्मवीर भारती, लक्ष्मीनारायण लाल, मोहन राकेश, नरेश मेहता, शिवप्रसाद सिंह, सुरेंद्र वर्मा आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

उपन्यास - इस युग के मुख्य उपन्यासकार हैं जैनेंद्र, इलाचंद जोशी, अज्ञेय, यशपाल, राहुल सांस्कृत्यायन, रांगेय राघव, भैरवप्रसाद गुप्त, अमृतराय, वृंदावनलाल वर्मा, फणीश्वरनाथ रेणु, नागार्जुन, राही मासूम रज़ा, विवेकी राय, मोहन राकेश, मन्नू भंडारी, निर्मल वर्मा, उषा प्रियंवदा, धर्मवीर भारती।

आलोचना - इस युग के मुख्य आलोचकों में राम विलास शर्मा, शिवदान सिंह चैहान, प्रकाश चंद गुप्त, नामवर सिंह, अमृतराय, अज्ञेय, इलाचंद जोशी, देवराज उपाध्याय आदि उल्लेखनीय हैं।।

बोध प्रश्न

- स्वतंत्र्योत्तर काल के 4 उपन्यासकारों के नाम बताइए।
- 1953 के बाद की कविता को किस नाम से जानते हैं?
- प्रयोगवाद का प्रारंभ कब से माना जाता है?

4.3 पाठ-सार

हिंदी साहित्य का 'आधुनिक काल' साहित्यिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। आधुनिक काल को कई उपविभागों में बाँटा गया है - 1. पुनर्जागरण काल (भारतेंदु युग) 1857 ई. - 1900 ई., 2. जागरण सुधार काल (द्विवेदी युग) 1900 ई. - 1918 ई., 3. छायावादी युग 1918 ई. - 1938 ई., 4. छायावादोत्तर काल - (अ) प्रगति-प्रयोग काल - 1938 ई. - 1953 ई., (ब) नवलेखन काल - 1953 ई. - अब तक ।

याद रहे कि हिंदी गद्य का उदय आधुनिक साहित्य की बड़ी और परिवर्तनकारी घटना है। यद्यपि 1741 ई. में रामप्रसाद निरंजनी ने 'भाषा योग वशिष्ठ' नामक ग्रंथ की रचना खड़ी बोली में कर चुके थे। लेकिन 1800 ई. में कलकत्ता में स्थापित फोर्ट विलियम कॉलेज ने आधुनिक गद्य के विकास में प्रमुख भूमिका निभाई। लल्लू लाल ने 'प्रेमसागर', सदल मिश्र ने 'नासिकेतोपाख्यान', सदासुख लाल नियाज़ ने 'सुखसागर' तथा इंशा खाँ ने 'रानी केतकी की कहानी' लिखकर आरंभिक खड़ी बोली गद्य की अलग-अलग शैलियाँ विकसित कीं। आधुनिक काल में साहित्य ने धर्माश्रय और राज्याश्रय से मुक्ति प्राप्त की। अब उसका विकास लोकाश्रय में होने लगा। लोक जीवन की परिस्थितियों के बदलाव के कारण इस काल में साहित्य के सरोकारों में भी तेजी से बदलाव आने लगा।

उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में देश में सामाजिक- सांकृतिक पुनर्जागरण की लहर चली तो बीसवीं शताब्दी का समस्त पूर्वार्ध स्वतंत्रता आंदोलन से उद्वेलित रहा। इसके साथ ही शिक्षा और जनसम्पर्क के भी नए नए रास्ते खुले, तो भारतीय समाज शेष दुनिया के संपर्क में आया। तरह-तरह की विचारधाराओं और आंदोलनों का प्रभाव भी उस पर पड़ा। इसीलिए आज़ादी से पूर्व के आधुनिक कालीन साहित्य में समाज सुधार, राष्ट्रीयता, बलिदान की भावना, सांस्कृतिक पुनरुत्थान, स्वच्छंदता और स्वतन्त्रता की कामना, मार्क्सवाद , मनोविश्लेषणवाद, यथार्थवाद, अतियथार्थवाद और अस्तित्ववाद के स्वर सुनाई पड़े। इसी प्रकार आज़ादी के बाद राजनीतिक चेतना अपने प्रखर रूप में उभरी।

4.4 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित महत्वपूर्ण निष्कर्ष उपलब्ध हुए हैं-

1. आधुनिक काल में गद्य की प्रधानता के कारण इसे गद्य काल भी कहा गया है।
2. हिंदी गद्य के आरंभिक विकास में फोर्ट विलियम कॉलेज की प्रमुख भूमिका रही।
3. आधुनिक काल में परिमार्जित गद्य की प्रथम पुस्तक 'भाषा योग वासिष्ठ' है, जिसकी रचना रामप्रसाद निरंजनी ने 1714 ई. में की थी।
4. आधुनिकता भारतेंदु युग की मुख्य प्रवृत्ति है जो उसे मध्यकाल से अलग करती है।
5. भारतेंदु काल से हिंदी साहित्य दरबारीपन से मुक्त होकर व्यापक समाज के सुख दुःख के साथ जुड़ा।

6. महावीर प्रसाद द्विवेदी ने खड़ी बोली का परिमार्जन किया तथा साहित्य में राष्ट्रीयता और नैतिकता के समावेश पर बल दिया।

7. द्विवेदी युग के गद्य में सामाजिक, राष्ट्रीय, राजनैतिक और आर्थिक जागरूकता दिखाई देती है।

8. छायावादी युग में वैयक्तिकता का आग्रह प्रमुख रहा।

9. प्रगतिवादी साहित्य का मूल स्वर शोषण के विरोध का रहा।

10. प्रयोगवाद का मुख्य बल नई राहों की खोज पर था।

11. आज़ादी के बाद नवलेखन के केंद्र में समकालीनता बोध की प्रवृत्ति दिखाई देती है।

4.5 शब्द संपदा

1. परिवेश	=	वातावरण, माहौल
2. मौलिक	=	असली, वास्तविक
3. रहस्यवाद	=	चिंतन-मनन के द्वारा ईश्वर से संपर्क स्थापित करने की प्रवृत्ति
4. शोषित	=	जिसका शोषण किया गया हो
5. शोषक	=	शोषण करने वाला व्यक्ति
6. साम्यवादी	=	साम्यवाद का पक्षधर या समर्थक

4.6 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 500 शब्दों में दीजिए

1. आधुनिक काल के उदय की पृष्ठभूमि और उसके नामकरण की सार्थकता पर प्रकाश डालिए।
2. द्विवेदी युग का संक्षिप्त परिचय देते हुए महावीर प्रसाद द्विवेदी के योगदान की चर्चा कीजिए।
3. छायावाद युग का परिचय दीजिए।

खंड (ब)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 200 शब्दों में दीजिए।

1. हिंदी साहित्य में भारतेंदु के योगदान की चर्चा कीजिए।

2. आधुनिक काल में गद्य के विकास के प्रमुख कारण कौन से हैं?

3. प्रगतिवाद के अर्थ को समझाते हुए इस युग के किसी एक कवि का परिचय दीजिए।

4. नवलेखन काल की साहित्यिक उपलब्धियों पर प्रकाश डालिए।

खंड (स)

I सही विकल्प चुनिए

1. 'प्रार्थना समाज' की स्थापना किसने की? ( )

(क) स्वामी विवेकानंद (ख) केशवचंद्र सेन

(ग) राजा राम मोहन राय (घ) रामकृष्ण परमहंस

2. दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता के रचनाकार कौन हैं? ( )

(क) गोकुलनाथ (ख) बल्लभाचार्य

(ग) गोसाई बिट्ठलनाथ (घ) नाभादास

3. मैथिलीशरण गुप्त किस युग के कवि हैं? ( )

(क) छायावादी युग (ख) भारतेंदु युग

(ग) द्विवेदी युग (घ) प्रगतिवादी युग

II रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए

1. प्रयोगवाद की समय सीमा .... है।

2. खड़ी बोली का पहला महाकाव्य.......................... है।

3. 'प्रेमसरोवर' के रचनाकार .... हैं।

III सुमेल कीजिए

i) प्रियप्रवास	(अ) मैथिलीशरण गुप्त
ii) उर्वशी	(आ) प्रतापनारायण मिश्र
iii) मन की लहर	(इ) अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
iv) पंचवटी	(ई) जयशंकर प्रसाद

4.7 पठनीय पुस्तकें

1. हिंदी साहित्य का इतिहास. रामचंद्र शुक्ल

2. हिंदी साहित्य का इतिहास. (सं) नगेंद्र, हरदयाल

3. हिंदी साहित्य का सरल इतिहास. विश्वनाथ त्रिपाठी

4. हिंदी साहित्य का नवीन इतिहास. लाल साहब सिंह

5. गद्य की नई विधाओं का विकास. माजिद असद

6. हिंदी का गद्य साहित्य. रामचंद्र तिवारी

खंड – II : कहानी

इकाई 5 : कहानी : विधागत स्वरूप

इकाई की रूपरेखा

5.0 प्रस्तावना

5.1 उद्देश्य

5.2 मूल पाठ : कहानी : विधागत स्वरूप

5.2.1 परिभाषा : पाश्चात्य दृष्टि

5.2.2 परिभाषा : भारतीय दृष्टि

5.2.3 कहानी कला के तत्व

5.2.4 कहानी : स्वरूप और प्रकार

5.3 पाठ सार

5.4 पाठ की उपलब्धियाँ

5.5 शब्द संपदा

5.6 परीक्षार्थ प्रश्न

5.7 पठनीय पुस्तकें

5.0 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो! कहानी मानव जीवन का जीवंत दस्तावेज है। मानव की उत्पत्ति के साथ ही दुनिया में कहानी का भी जन्म हुआ होगा। जीवन का हर क्षण कुछ कहता है, जो वह कहता है, वह एक कहानी बन जाती है। कहानियों का स्वरूप अपने युग की प्रवृत्ति और उस युग में पलते मानव के संस्कारों से निश्चित होता है, या कहें उससे प्रभावित होता है। जिन प्राचीन कहानियों में तिलिस्म, जादू, इतिहास, उपदेश, स्वर्ग-नरक और दैवीय कल्पना इत्यादि तत्वों की प्रमुखता दिखाई देती है, उन कहानियों के लेखन काल का अध्ययन करने पर हम पाते हैं कि उस युग के मानव की स्वाभाविक वृत्तियाँ ऐसी ही थीं। यथार्थ और कल्पना समन्वित, हमारे संस्कार ही

लेखन में प्रस्फुटित होते हैं। लोक कथा और जातक कथा आरंभिक कहानियाँ हैं। आधुनिक काल में कहानियाँ वर्तमान के ठोस यथार्थ को आधार बनाकर लिखी जाने लगीं। प्रस्तुत इकाई में हम कहानी कला के विविध पक्षों पर चर्चा करेंगे।

5.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत आप-

- कहानी के अर्थ और परिभाषा को समझ सकेंगे।
- कहानी विधा की विशेषताओं को आत्मसात कर सकेंगे।
- कहानी कला के तत्वों का विवेचन कर सकेंगे।
- कहानी के स्वरूप के विभिन्न पक्षों से अवगत हो सकेंगे।

5.2 मूल पाठ : कहानी : विधागत स्वरूप

'कहानी' हिंदी गद्य की केंद्रीय विधा है। यह कथा साहित्य के स्वरूप के विकास के साथ हिंदी भाषा के विकास की भी एक महत्वपूर्ण कड़ी है। हिंदी में आधुनिक अर्थ में 'कहानी' के व्यवहार के संबंध में डॉ. गोपाल राय का यह मत विचारणीय है कि – "संस्कृत साहित्य में 'कहानी' का एक अतिप्राचीन पर्याय 'कथा' है, जिसके किंचित् अर्थान्तरों के साथ, 'आख्यान', 'उपाख्यान', 'आख्यायिका', 'वृत्त', 'इतिवृत्त', 'गाथा', 'इतिहास', 'पुराण', 'वार्ता', 'चरित' आदि रूप प्रचलित हैं। 'कथा' शब्द ही अपभ्रंश में 'कहा' का रूप ग्रहण कर अवधी, भोजपुरी आदि भाषाओं में 'कहनी', 'कहानी' आदि पदों में बदल गया है। 'हिन्दी' में यह शब्द वस्तुतः अवधी, भोजपुरी आदि से ही आया है।" (हिंदी कहानी का इतिहास, पृष्ठ 17)

साहित्य की हर विधा के मूल में एक कहानी रहती है। व्यापक स्तर पर कथा साहित्य के दो प्रकार दिखाई देते हैं - उपन्यास और कहानी। उपन्यास की तुलना में कहानी की कथावस्तु अत्यंत संक्षिप्त होती है। 'स्व' और 'पर' की अनुभूति को किसी एक दृष्टिकोण से सँजोकर, रचनाकार एक 'कहानी' बना लेता है। यह 'एकोन्मुखता और संक्षिप्तता' कहानी की विशेषता है। आकार के आधार पर कहानी और उपन्यास में जो अंतर दिखाई देता है, वह बाहरी अंतर है। व्यापक रूप में यह अंतर इन दोनों विधाओं की आत्मा के स्तर यानी इनकी मौलिक संरचना और अंतर्वस्तु का है। कहानी जीवन के एक अंश की प्रस्तुति है, पर वह अंश किसी भी कोण से अपूर्ण

नहीं है, अपने आप में पूर्ण है। जीवन के किसी एक पक्ष को किसी एक दृष्टि से संपूर्णता में छूने की रचनाकार की कोशिश कहानी है। इस कोशिश की सफलता रचना से उत्पन्न होनेवाले प्रभाव में निहित रहती है। कहानी के प्रभावी या अप्रभावी होने में जिन तत्वों की अहम भूमिका होती है, वे हैं - कथावस्तु, पात्र, संवाद, वातावरण की सृष्टि, रचनाकार की भाषायी दक्षता तथा कहानी लेखन में प्रयुक्त शैली। जीवन के जिन पहलुओं को रचनाकार छूना चाहता है, उन्हें ही आधार बनाकर वह आगे बढ़ता है। उस कथानक के आसपास वह अन्य घटनाओं और पात्रों को सुनियोजित करके अनुकूल वातावरण में, कहानी का विकास करता है। रचनाकार का सृजन कर्म सोद्देश्य होता है। अपनी बात वह अपनी रचना के माध्यम से कहता है। अपनी बात कहने की उसकी शैली संकेतात्मक होती है, जिसे पाठक अपनी चेतना के स्तर पर अनुभूत करते हुए, पाठ का मूल आशय निकालने को स्वतंत्र होता है। हर बार रचनाकार की चेतना और संवेदना उत्कृष्ट नहीं होती। हर बार कथावस्तु का चयन, विकास और निर्वाह उत्तम नहीं होता, ये स्थितियाँ किसी भी रचना की स्वीकार्यता और अस्वीकार्यता के लिए जिम्मेदार होती हैं। भारतीय और पाश्चात्य विद्वानों ने कहानी को अपने-अपने ढंग से परिभाषित किया है। उनकी परिभाषाएँ कहानी के स्वरूप को विस्तार से समझने में मददगार साबित होंगी।

बोध प्रश्न

- कहानी क्या है? इसकी मुख्य विशेषता क्या है?
- कहानी की सफलता और असफलता के उत्तरदायी तत्व क्या हैं?

5.2.1 परिभाषा : पाश्चात्य दृष्टि

i) कहानी रसोद्रेक करने वाली वह छोटी आख्यानात्मक रचना है, जिसे एक बैठक में पढ़ा जा सके, और जो अपने आप में पूर्ण हो। - एडगर एलन पो

ii) कहानी किसी एकल चरित्र, एकल घटना, एकल भावना से या एकल परिस्थिति द्वारा उपयोग में लाई गई भावनाओं की शृंखला से संबंध रखती है। - ब्रांडर मैथ्यूज

iii) कहानी कहानी होनी चाहिए अर्थात उसमें घटित होने वाली घटनाओं-दुर्घटनाओं का लेखा-जोखा होना चाहिए और वह आकस्मिकता से पूर्ण हो। उसमें क्षिप्र गति के साथ अप्रत्याशित विकास हो जो कौतुहल द्वारा चरमबिन्दु और संतोषजनक अंत तक ले जाय। - सर ह्यू वालपोल

iv) कहानी जीवन की महत्वपूर्ण घटना एवं विषम परिस्थितियों का संक्षिप्त विवरण है। यह हमारे भीतर स्थित आधारभूत गुणों को प्रदर्शित करती है। - आर फ्रांसिस फोस्टर

v) कहानीकार हमेशा उस बिंदु को चुनने की प्रक्रिया में रहता है, जहाँ से वह मानव जीवन तक पहुँच सके। हर चुनाव के साथ या तो नया शिल्प प्राप्त हो सकता है या असफलता हाथ लग सकती है। - कोन्नोर

vi) उत्तमपुरुष (मैं) शैली अपनाकर लिखी गई कहानियाँ अचेतन रूप से पाठक पर लेखक की आत्मप्रशंसा का प्रभाव छोड़ती हैं जबकि लेखक का उद्देश्य आत्मप्रशंसा करना नहीं होता है। - एंटोनी ट्रोलोप

vii) कहानी वह है जो लाठी की मार की तरह हृदय पर चोट करे। - गोर्की

viii) आधुनिक कहानी के खिलाफ कथानकहीनता, शिथिल संरचना आदि के जो आरोप लगाए जाते हैं, उन्हें आधुनिक कहानी के शिल्पगत नवीन परिवर्तन से जोड़कर देखना चाहिए। - ए. एल. बाडर

ix) कथा मनोरंजन मात्र नहीं है, यह संवेदनशीलता को बढ़ाती है, और आलोचनात्मक भावना को जगाती है। सभ्यता का अस्तित्व बनाए रखने के लिए, मानवीय गुणों के नवीकरण और संरक्षण के लिए यह हमारी आवश्यकता है। - मारियो वार्गास ल्योसा

बोध प्रश्न

- एडगर एलन पो ने कहानी की क्या परिभाषा दी है?
- कहानी के प्रभाव के बारे में गोर्की ने क्या कहा है?
- आपके अनुसार कहानी का क्या अर्थ है?

5.2.2 परिभाषा : भारतीय दृष्टि

i) कहानी एक रचना है जिसमें जीवन के किसी एक अंग या किसी एक मनोभाव को प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्देश्य रहता है। उसके चरित्र, उसकी शैली, उसका कथा-विन्यास, सब उसी एक भाव को पुष्ट करते हैं। - प्रेमचंद

ii) कहानी जीवन की प्रतिच्छाया और जीवन स्वयं एक अधूरी कहानी है। एक शिक्षा है, जो उम्र भर मिलती है और समाप्त नहीं होती। - अज्ञेय

iii) कहानी स्वतः एक पूर्ण रचना है जिसमें एक तथ्य या प्रभाव को अग्रसर करनेवाली शक्ति, केन्द्रीय घटना या घटनाओं के आवश्यक परंतु कुछ-कुछ अप्रत्याशित ढंग से उत्थान-पतन और

मोड़ के साथ पात्रों के चरित्र पर प्रकाश डालने वाला कौतुहलपूर्ण वर्णन हो। - गुलाबराय

iv) कहानी जीवन को समय सापेक्ष चतुर्दिक अंकित न कर केवल एक क्षण में घनीभूत जीवन दृश्य दिखाने लगी है। - श्यामसुंदर दास

v) कहानीकार अनुभव संस्कारों का संयोजन कर, पात्रों द्वारा कथा को किसी चरम बिंदु तक पहुँचाने का लक्ष्य रखता है। - महादेवी वर्मा

vi) कहानी का प्रत्यक्ष कैनवास बहुत छोटा और साधारण हो सकता है, पर जिस परोक्ष की ओर उसका संकेत होता है, वह छोटा साधारण नहीं होता है। - मोहन राकेश

vii) कहानी तो एक जीवंत अस्तित्व है जो अपना जन्म आप ले लेती है। कहानियों में कोई एक बात पूरी ही नहीं पड़ती। कई-कई बातें मिलकर एक बात बनती है। कई घटनाएँ मिलकर एक घटना बनती है। कई शब्द मिलकर एक शब्द बनता है। इसलिए कहानी लिखना मुझे कठिन लगता है। - कमलेश्वर

बोध प्रश्न

- प्रेमचंद के अनुसार कहानी किसे कहा जाता है?
- गुलाबराय ने कहानी की क्या परिभाषा दी है?
- कमलेशवर के अनुसार कहानी क्या है?

5.2.4 कहानी कला के तत्व

कहानी कला के तत्व कहानी की समीक्षा के प्रतिमान हैं। इसके अंतर्गत कहानी में जिन तत्वों को परखा जाता है, वे तत्व हैं - कथावस्तु, चरित्र चित्रण, कथोपकथन, वातावरण, उद्देश्य और भाषा-शैली। इन्हीं तत्वों की कसौटी पर कहानी का मूल्यांकन किया जाता है।

भाव और विचार तत्व भी महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। भाव और विचार कहानी के मौलिक ढाँचे में निहित होते हैं, इसलिए कहानी के तत्वों में इनका उल्लेख अलग से नहीं किया जाता है। 'विचार और भाव' कहानी के कथानक को जीवन देते हैं, उसकी उत्पत्ति का आधार यही हैं, इसलिए विचार और भाव के बिना कहानी संभाव ही नहीं है।

1. कथावस्तु

कहानी का विकास धीरे-धीरे होता है। इस विकास का एक क्रम होता है, जिसके चार

पायदान हैं - आरंभ, आरोह, चरम स्थिति और अवरोह। अपने ही अंतर्जगत या बाह्यजगत से जिस कथावस्तु को कहानीकार बीज रूप में ग्रहण करता है, वही उसकी कहानी का आधार होता है। इसके विकास की गति और इसका समन्वित प्रभाव लेखकीय कल्पना और भाषागत कौशल के साथ घटनाओं के प्रयोग की दक्षता पर निर्भर करता है। इन घटनाओं का जुड़ाव केवल बाह्य स्थूल संसार से नहीं होता है। बाहर घटती हुई अप्रभावी दिखाई देनेवाली घटनाएँ भी किसी के मन को गहराई से छूने में सक्षम होती हैं। इस कोटि की रचनाएँ जिनमें मुख्य रूप से मानसिक अंतर्द्वंद्व का उद्घाटन हो, या जिनका केंद्रीय सत्य मनोजगत की तार्किकता की अपेक्षा रखता हो, वे रचनाएँ मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से लिखी गई मानी जाती हैं। कथानक के रूप में मनोविश्लेषण से इतर विषय का भी चयन किया जाता है, जैसे - ऐतिहासिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, सामाजिक, साहसिक, आंचलिक इत्यादि। कहानी में इन विषयों का सूक्ष्मता से निर्वाह किया जाता है। याद रखने वाली बात यह है कि संसार में 'घटित होनेवाली घटनाएँ, मनुष्य की बाह्य चेष्टा और उसकी मनःस्थिति' से कथानक का केंद्र निर्मित होता है।

छात्रो! अब हम कहानी कला के तत्व के रूप में कथावस्तु के विकास क्रम की अवस्थाओं का अध्ययन करेंगे।

- **आरंभ :** कथानक के विकास की पहली अवस्था है 'आरंभ'। इसके अंतर्गत कहानी के आरंभ में ही पात्र-परिचय के द्वारा कहानी के कथा सूत्र से पाठक को अवगत करा दिया जाता है। कहानी के आरंभ का मूल बिंदु है - 'कौतुहल या जिज्ञासा की उत्पत्ति'। कहानी की शुरूआत किसी वातावरण के चित्रण से, पात्रों के परिचय या उनके परस्पर संवाद से की जा सकती है, पर उस आरंभ करने की प्रक्रिया में कौतुहल को उत्पन्न करने की शक्ति होनी चाहिए ।
- **आरोह :** यह कहानी के विकास का दूसरा सोपान है। पात्र परिचय की आवश्यक औपचारिकता के बाद अब रचनाकार का सारा ध्यान उन पात्रों के मनोविकास और उनके अनुकूल घटनाक्रम के सहज संयोजन पर रहता है। पात्रों की मनोगति और अन्य तथ्यों और घटनाओं की तारतम्यता से कहानी के प्रभाव पर असर पड़ता है। यह पाठक की उत्सुकता को बढा भी सकता है या उसमें अरुचि भी जगा सकता है।
- **चरम स्थिति :** चरम यानी सबसे ऊपर। इस स्थिति में कहानी के भीतर जो कौतुहल कारक तत्व हैं वे अपनी सर्वोच्च ऊंचाई पर होते हैं। कहानी के अंतिम मोड़ के प्रति उत्सुकता का चरम जब कहानी में दिखाई दे तब माना जाता है कि कहानी की स्थिति अपने अंत की ओर अग्रसर है।

- **अवरोह :** यह कहानी का अंतिम चरण है। इस चरण में पाठक कहानी के अंत को पा लेता है। यहाँ से कहानी का प्रतिपाद्य निकलता है। उस प्रतिपाद्य का प्रभाव कहानी की उत्कृष्टता का अंतिम मापदंड होता है। जैसे कहानी का आरंभ कौतुहल वर्धक होना चाहिए वैसे ही उसका अंत निर्णायक होना चाहिए। यह प्रायः संक्षिप्त रहता है और किसी न किसी मर्म का उद्घाटन करनेवाला होता है।

2. चरित्र चित्रण

कहानी की कला का सौन्दर्य बरकरार रखने के लिए रचनाकार पात्रों और घटनाओं का समायोजन करता है। इस समायोजन से पात्रों के क्रियाकलापों का संकेत मिलता है, जो चरित्र चित्रण का एक आधार बनता है। वास्तविक जीवन में किसी मनुष्य के चरित्र का संकेत भी अन्य व्यक्तियों के साथ उसके व्यवहार एवं क्रियाकलाप से ही मिलता है। कहानी में भी चरित्र चित्रण के मुख्य आधार के रूप में यही तत्व काम करते हैं। 'जिस पात्र का चरित्र चित्रण करना है, उसका संबंध कहानी के अन्य पात्रों के साथ कैसा है? कहानी में घट रही घटनाओं एवं उससे प्रभावित व्यक्तियों के प्रति उसका रुख कैसा है? उस पात्र के बाह्य जीवन एवं उसके भाव संसार का पारस्परिक संबंध कैसा है?' - इन घटकों की छानबीन करके किसी भी पात्र के चरित्र का आसानी से चित्रण किया जा सकता है। इसके सूत्र संकेत रूप में कहानी में ही छिपे रहते हैं।

3. कथोपकथन

कथोपकथन यानी संवाद। यह मौन भी हो सकता है। चित्रमयी भाषा प्रयोग द्वारा भी इसे दिखाया जा सकता है। कहानी के स्वाभाविक विकास के लिए कथोपकथन का निर्वाह पात्र, वातावरण और देशकाल के अनुरूप ही किया जाता है। पात्रों के मध्य संवाद योजना न अति संक्षिप्त होनी चाहिए और न ही बहुत विस्तृत। संवादों का स्वरूप कहानी की कथावस्तु के अनुसार तय किया जाता है और यह सुनिश्चित किया जाता है कि प्रयुक्त संवादों में प्रभाव उत्पन्न करने की पर्याप्त क्षमता हो।

4. वातावरण

कहानी में पात्र के इर्द-गिर्द निर्मित वातावरण दो तरह का होता है। एक, यह भौतिक जगत: और दूसरा, पात्र का मानसिक जगत। भौतिक वातावरण के अंतर्गत पात्रों से संबंधित स्थानों, घटनाओं और प्राकृतिक परिवेश का सजीव और स्पष्ट वर्णन किया जाता है। यह वर्णन कहानी के विषय, स्थान और समय के अनुकूल किया जाता है। पात्र की मानसिक अवस्था के चित्रण में कथानक का मर्म उभरता है। वातावरण और देशकाल की उपयुक्त सृष्टि से रस निष्पत्ति की संभावना बढ़ती है।

5. उद्देश्य

कहानियों का उद्देश्य केवल मनोरंजन करना नहीं होता। इनकी केंद्रीय संवेदना कुछ मार्मिक सत्यों का उद्धाटन करके हमारे मन को उद्वेलित कर जाती है। किन्तु केवल यह मानसिक उद्वेलन कहानी का उद्देश्य नहीं है। बल्कि कहानी का परम उद्देश्य जीवन के सत्य से सांकेतिक साक्षात्कार कराना होता है।

6. भाषा-शैली

कहानी लिखने के लिए प्रयोग की गई विशेष पद्धति कहानी की शैली कहलाती है। शैली के दो प्रमुख तत्व हैं - भाषा पक्ष और शिल्प पक्ष। किसी शैली विशेष में कहानी लिखने के लिए जो खास टेकनीक अपनाई जाती है, वह कहानी का शिल्प है। कहानी लेखन की कई व्यवहृत शैलियाँ हैं, जैसे - वर्णनात्मक, आत्मकथात्मक, संवादात्मक, नाटकीय, पूर्व दीप्ति शैली, काव्यात्मक, व्यंग्यात्मक इत्यादि। इसके अलावा शैली के स्तर पर रेखाचित्र, संस्मरण, डायरी एवं पत्र जैसी अन्य गद्य विधाएँ भी कहानी के स्वरूप में घुली-मिली देखने को मिल जाती हैं।

- **वर्णनात्मक शैली :** कहानी का मूल भाव और पात्रों के चरित्र के गुण-अवगुण, इस शैली में प्रत्यक्ष दिखाई देते हैं। इसके अंतर्गत पात्रों के बाह्य रूपों, विषम मनोभावों एवं क्रियाकलापों के विवरण के साथ घटनाओं का सरल संयोजन विवरण प्रधान होता है।
- **संवादात्मक शैली :** यह शैली कथानक का स्वरूप स्पष्ट करने में संवादों की उपयोगिता को रेखांकित करती है। प्रभावोत्पादक बातचीत से पात्रों का चरित्र, उनका परिवेश सामान्यतः उजागर हो जाता है। यह बातचीत कहानी के उद्देश्य से भी परिचित करा जाती है।

- **आत्मकथात्मक शैली :** आत्मकथा यानी 'अपनी कथा अपने आप किसी को सुनाना।' इसके कहानी में प्रयोग के कुछ तरीके हो सकते हैं, जैसे - (i) शुरू से अंत तक कहानी का मुख्य पात्र अपनी पूरी कहानी स्वयं कह दे। (ii) कहानी के सभी पात्र अपनी-अपनी कहानी कहें और उनकी कहानियों से कोई सार्थक विचार, दर्शन या संवेदना प्रकट हो। (iii) कहानीकार स्वयं कहानी में उपस्थित रहकर मैं-शैली में पूरी कहानी कहे।

- **व्यंग्यात्मक शैली :** इसमें साधारण शब्दों में निहित अर्थ गांभीर्य के द्वारा हँसी-मजाक का वातावरण भी रचा जाता है और गंभीर राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक समस्याओं को भी प्रभावशाली तरीके से उद्धाटित किया जाता है।

- **काव्यात्मक शैली :** 'गद्य लिखते हुए कवित्व शक्ति का प्रयोग कर काव्यात्मक गद्य लिखना' काव्यात्मक शैली है। गद्य के कलात्मक सौंदर्य के लिए इस शैली का प्रयोग किया जाता है।
- **पूर्व दीप्ति शैली :** इसका प्रयोग वर्णनात्मक शैली के प्रयोग से कथानक में उत्पन्न एकरसता को भंग करने के लिए किया जाता है। किसी घटना से प्रभावित होकर या किसी विशेष प्रसंग के संयोजन की आवश्यकता के अनुरूप पात्र अपने अतीत को याद करते हुए उसे अपने वर्तमान से जोड़कर देखने लगता है। कथानक में इस तरह के संयोजन को पूर्व दीप्ति शैली कहते हैं।
- **चित्रात्मक शैली :** बिंब, अलंकार और प्रतीक का प्रयोग करते हुए रचनाकार अपनी रचना में दृश्यों और पात्रों का शब्दचित्र खींचता है। उसकी प्रखर अभिव्यंजना शक्ति और कलात्मक कौशल से ये सब आँखों के सामने नाच उठते हैं।

शैली का प्रयोग कहानी के भाव पक्ष को उन्नत करता है। तो, कथानक की भाषा उसकी अभिव्यक्ति को सशक्त रूप में प्रस्तुत करती है। सहज और सरल भाषा की रचनाएँ व्यापक प्रसार पाती हैं। कहानी की भाषा उसकी विषयवस्तु के अनुरूप होनी चाहिए। इस लक्ष्य को साधने के लिए कहानी के परिवेश, समय, उसमें संयोजित घटनाएँ, पात्रों के व्यक्तित्व एवं उनके क्रियाकलापों का पूर्ण अध्ययन आवश्यक है। इन सभी तथ्यों को ध्यान में रखकर किया गया भाषा प्रयोग कहानी की सजीवता और स्वाभाविकता बनाए रखता है।

भाषा संदर्भगर्भित हो - यानी कि कहानी के बुने गए संदर्भ को यदि अन्य भाषाओं या अन्य विषयों के शब्द व्यंजित कर रहे हैं तो उन शब्दों का प्रयोग करना चाहिए, पर इस प्रयोग में प्रवृत्ति हिंदी की ही हो, अन्यथा सम्प्रेषण में बाधा आ सकती है। इसी के तहत अंग्रेजी, उर्दू, फारसी, संस्कृत इत्यादि भाषाओं के शब्द, तकनीकी और वैज्ञानिक शब्दावली - ये सभी हिंदी साहित्य की कहानी जैसी विधाओं में देखने को मिल जाते हैं।

भारत की सांस्कृतिक अस्मिता विविधता भरी है। इस अस्मिता को साहित्य में जिंदा रखने के उद्देश्य से लोकभाषा में प्रयुक्त लोक बोली का प्रयोग किया जाता है। संभव है कि रचनाकार द्वारा यह प्रयोग उसके सहज भावावेग में अनायास ही हो जाता हो। इसे संरक्षित करने का सायास प्रयत्न आवश्यक है। 'मुहावरे और लोकोक्तियाँ' भाषा प्रयोग को अधिक समर्थता प्रदान करते हैं। कहानी की अभिव्यंजना को प्रभावपूर्ण बनाने के लिए इनका प्रयोग किया जाता है। इनके प्रयोग से कम शब्दों में ही गंभीर अर्थ की व्यंजना हो जाती है।

बोध प्रश्न

- कहानी कला के तत्व क्या-क्या हैं?
- कथावस्तु के विकास की स्थितियों के नाम बताइए।
- कहानी में वातावरण का क्या महत्व है?
- कहानीकार के कहानी लिखने का परम उद्देश्य क्या होना चाहिए?
- कथोपकथन से क्या अभिप्राय है?
- शैली के किन्हीं 4 प्रकारों के नाम लिखिए।
- पूर्व दीप्ति शैली से क्या अभिप्राय है?
- आत्मकथात्मक के कहानी में प्रयोग के क्या तरीके हो सकते हैं?

5.2.4 कहानी : स्वरूप और प्रकार

साहित्य की विधा के रूप में विकसित होने से पहले कहानी का अस्तित्व मनुष्य की जिज्ञासा वृत्ति को संतुष्ट करने के लिए आपस में कुछ कहने-सुनने की ज़रूरत से जुड़ा हुआ है। भारतीय और पाश्चात्य विद्वानों की परिभाषाओं से कहानी के स्वरूप पर प्रकाश पड़ता है। उसका विश्लेषण करते हुए हम सकते हैं कि कहानी के प्रति अपने अलग-अलग दृष्टिकोण में विद्वानों ने यथार्थ, अनुभूति और मनोविश्लेषण को ही प्रमुखता दी है। यह स्पष्ट है कि कहानी कला के छह तत्वों के आधार पर ही कहानी के स्वरूप को देखा जाता है। हिंदी के संदर्भ में यह उल्लेखनीय है कि, “प्रेमचन्द ने 1908 में प्रकाशित अपने कहानी संग्रह सोजे वतन की भूमिका में पहली बार 'शॉर्ट स्टोरी' पद के अर्थ में 'कहानी' पद का प्रयोग किया था, पर हिंदी में आने के बाद वे अपनी कहानियों को कभी 'कहानी', कभी 'आख्यायिका' और कभी ‘गल्प' कहते रहे। उनकी यह दुविधा उनके जीवन भर बनी रही, जिसका प्रमाण 1936 में प्रकाशित 'मानसरोवर' की भूमिका है। पर शुक्ल जी की स्वीकृति की मुहर लगने के बाद चौथे दशक में 'शॉर्ट स्टोरी' के लिए 'छोटी कहानी' (संक्षेप में 'कहानी') पद आलोचकों और कहानीकारों, दोनो के बीच, लगभग मान्य हो गया।” (हिंदी कहानी का इतिहास, गोपाल राय, पृष्ठ 18)

कहानी कला के तत्वों की प्रमुखता के आधार पर कहानी का स्वरूपगत वर्गीकरण चार रूपों में किया जाता है, वे हैं - कथानक या घटना प्रधान कहानी, चरित्र प्रधान कहानी, देशकाल या वातावरण प्रधान एवं भाव प्रधान कहानी। कथानक प्रधान कहानी के अंतर्गत घटना प्रधान और कार्य प्रधान कहानी आती है। ऐसी कहानी को कला की दृष्टि से साधारण कोटि का माना जाता है। इनमें घटनाओं का रुचिकर संयोजन किया जाता है। यह कौतुहल बढ़ानेवाला,

चमत्कार दिखानेवाला और मनोरंजक होता है। यदि इनमें मनोविश्लेषण के लिए अवसर मौजूद रहता है और इनके केंद्र में कोई सूक्ष्म भाव या विचार पल रहा होता है, तब इन्हें श्रेष्ठ कहा जाता है। आदर्शवादी, जासूसी और तिलस्मी कहानियाँ इसी कोटि की हैं। चरित्र प्रधान कहानी में लेखक मनोवैज्ञानिक रीति से पात्रों के चरित्र निरूपण को प्रमुखता देता है। यहाँ घटनाएँ गौण हो जाती हैं और उनसे निकलने वाला प्रभाव जो पात्रों को मानसिक अंतर्द्वंद्व की स्थिति में पहुँचाता है, वही प्रधान रहता है। मनोविश्लेषण इस तरह की कहानियों की विशेषता है। वातावरण प्रधान कहानी में वातावरण और देशकाल की पुरजोर उपस्थिति रहती है। ऐतिहासिक कहानियाँ इसी कोटि में आती हैं। वर्तमान में कहानी के जरिए किसी भी युग और उसकी घटनाओं से परिचय किया जा सकता है। इन कहानियों को प्रभावी बनाने में वातावरण के साथ-साथ कहानी की संवाद योजना का भी महत्वपूर्ण योगदान रहता है। भावप्रधान कहानी में कथानक का विकास किसी केंद्रीय भाव के इर्द-गिर्द किया जाता है। इसके लिए प्रतीकात्मक चरित्रों और वातावरण की सृष्टि की जाती है। लघुकथा हिंदी कहानी साहित्य का सबसे नया रूप है। इसमें भाव और विचार की उपस्थिति प्राथमिक होती है। इसका कथानक अतिसंक्षिप्त होता है। इसकी रचना में चित्रात्मक शैली का प्रयोग किया जाता है।

कहानी के वर्गीकरण के अन्य आधार भी हैं, जैसे - लेखन शैली, चयनित विषय, लेखन का लक्ष्य और विविध कालों में कहानी के स्वरूपगत विकास का रेखांकन। लेखन शैली का पूर्व परिचय दिया जा चुका है। विषय वस्तु के आधार पर कहानी को ऐतिहासिक, सामाजिक, राजनीतिक, मनोविश्लेषणात्मक, आंचलिक इत्यादि रूपों में वर्गीकृत किया जा सकता है। रचना लक्ष्य के आधार पर इसके तीन पारंपरिक रूप संभव हैं - आदर्शवादी, यथार्थवादी, आदर्शोन्मुख यथार्थवादी। हिंदी साहित्य के विभिन्न कालों में कहानी के प्रवृत्तिगत विकास को यदि कहानी के वर्गीकरण का आधार बनाया जाता है तो अपने रचनाकाल के आधार पर इन कहानियों का भी युगीन वर्गीकरण किया जा सकता है।

आजादी के बाद के दौर में परिवेश बदला और बदले हुए परिवेश में लोगों की मानसिकता बदली, इससे नई परिस्थितियों ने जन्म लिया। उन नई परिस्थितियों ने नए संघर्ष, नई चुनौतियाँ और नए अवसर को जन्म दिया। इस समय की कहानियों में नई प्रवृत्ति का समावेश स्वाभाविक था। इस समय कहानी की कथावस्तु और उसका केंद्रीय भाव मुख्य रहा और शिल्प पक्ष गौण। इसे 'नई कहानी' का नाम दिया गया।

बोध प्रश्न

- तत्वों की प्रधानता के आधार पर कहानी के 4 रूप क्या हैं?

- लक्ष्य के आधार पर कहानी के तीन रूपों के नाम लिखिए।

5.3 पाठ सार

कहानी कहना और सुनना मनुष्य मात्र की सहज वृत्ति है। इसका उपयोग भी काल के अनुसार बदलता रहा है। कभी कहानी को एक बैठक में पढ़ी जा सकने वाली रचना माना गया और कभी वह उपन्यास तक के रूप में विस्तृत भी दिखाई दी। हडसन ने केवल एक भाव पर आधारित लेखन को कहानी माना। एलेरी ने इसे घुड़दौड़ के रूपक के आधार पर समझाया। प्रेमचंद ने कहानी पर विचार करते हुए कहा है कि "कहानी एक ऐसी गद्य रचना है जिसमें जीवन के किसी एक अंग या मनोभाव को प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्देश्य रहता है। उसके चरित्र, उसकी शैली तथा कथाविन्यास सब उसी एक भाव को पुष्ट करते हैं।" इस आधार पर यह कहना उचित होगा कि कहानी 'कथातत्व प्रधान' ऐसा गद्य रूप है जिसमें जीवन के किसी अंश, एक स्थिति या तथ्य का उत्कट संवेदना के साथ स्वतःपूर्ण और प्रभावशाली चित्रण किया जाता है। वैसे कहानी के छह विधागत तत्व माने गए हैं – 1. कथानक, 2. पात्र और चरित्र चित्रण, 3. संवाद, 4. वातावरण, 5. शैली और 6. उद्देश्य। कहानी विधा के शिल्प के मूल आधार हैं – कहन प्रक्रिया का समावेश, संप्रेषणीयता, एकाग्रता और उत्सुकता। कहानी के शीर्षक का चयन भी कहानीकार के संरचना कौशल का परिचायक होता है। कथानक की प्रस्तुति ऐसी होनी चाहिए की निरंतर उत्सुकता बनी रहे। अनेक कहानीकार इसके लिए फ़्लैशबैक या पूर्वदीप्ति शैली का प्रयोग करते हैं। इस शैली के अनुसार कहानी घटनाचक्र के मध्य से शुरू होती है और अंत की ओर अग्रसर होती है। उसका आरंभिक अंश आवश्यकता के अनुसार बीच में प्रस्तुत किया जाता है।

कहानी व्यक्ति समाज और परिवेश से जुड़े विचारों और भोगे हुए यथार्थ की अनुभूतियों की अभिव्यक्ति का माध्यम है। कहानी में आभासी दुनिया के लिए भी पर्याप्त जगह है। 'जो या जैसा होना चाहिए' यह आभास है। यह यथार्थ में नहीं है पर कहानी के पन्नों पर जीवित है। वर्तमान कहानी लेखन के शिल्प और शैली में बदलाव आया है। इसमें गद्य की अन्य विधाओं (पत्र, डायरी, रेखाचित्र, संस्मरण) का भी समावेश हुआ है। कहानी में भाषा के स्तर पर लचीलापन बढ़ा है। कथानक कहानी की आवश्यकता है, शिल्प उसमें निहित रहता है।

आलोचकों ने हिंदी कहानी के विशाल भंडार को वस्तु, विषय, शैली और आंदोलन के आधार पर वर्गीकृत किया है। प्रेमचंद काल के तत्काल बाद कहानी को चार वर्गों में बांटा गया –

1. कथानक या घटनाप्रधान कहानी, 2. चरित्रप्रधान कहानी, 3. वातावरणप्रधान कहानी और 4. भावप्रधान कहानी। लेकिन इस वर्गीकरण को पूर्ण नहीं माना जा सकता। इसलिए विषय की दृष्टि से कहानियों को वर्गीकृत किया गया जैसे – ऐतिहासिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, मनोविश्लेषणात्मक, साहसिक, रोमांचक एवं जासूसी आदि। इस वर्गीकरण को भी परिपूर्ण नहीं माना जाता। अतः शैली के आधार पर भी कहानी विधा का वर्गीकरण किया जाता है। जैसे – विवरणात्मक, आत्मकथात्मक, पत्रात्मक और डायरी शैली की कहानियाँ। इसी प्रकार आंदोलन के आधार पर भी हिंदी कहानी का वर्गीकरण किया गया है जैसे – नई कहानी, अकहानी, सचेतन कहानी, सक्रिय कहानी, सहज कहानी और जनवादी कहानी आदि।

5.4 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष उपलब्ध हुए हैं-

1. कहानी का आधार मनुष्य समाज की अपने अनुभवों, भावनाओं, विचरों और कल्पनाओं को आपस में बांटने की प्रवृत्ति में निहित है।
2. आधुनिक गद्य विधा के रूप में यथार्थ, अनुभूति और विश्लेषण कहानी विधा के मूल आधार हैं।
3. कहानी का विकास व्यक्ति और परिस्थिति के घात-प्रतिघात से होता है। इसी के साथ विभिन्न तत्व रूप ग्रहण करते चलते हैं।
4. कहानी के कथासूत्र को आगे बढ़ाने में अंतर्द्वंद्व की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है।
5. कथानक, वातावरण और पात्रों के अनुरूप भाषा के प्रयोग से कहानी की विश्वसनीयता और रोचकता में वृद्धि होती है।

5.5 शब्द संपदा

1. अंतर्द्वंद्व	= मानसिक संघर्ष
2. आंचलिक	= किसी क्षेत्र (अंचल/प्रदेश या प्रांत का एक भाग) विशेष से संबंधित
3. ऐतिहासिक	= इतिहास से संबंधित
4. घात-प्रतिघात	= संघर्ष

5. सांस्कृतिक = संस्कृति से संबंधित। संस्कृति के तत्व हैं, आहार-विहार, मानसिक विचारों से उत्पन्न भावनाएँ और सामाजिक व्यवहार। इन तत्वों से जुड़ी विशेषताएँ सांस्कृतिक कहलाती हैं।

5.6 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. कहानी कला के मुख्य तत्वों के आधार पर कहानी के स्वरूप पर चर्चा कीजिए।
2. विषय वस्तु के आधार पर कहानी के वर्गीकरण पर प्रकाश डालिए।
3. कथानक का महत्व बताते हुए उसके विकास की स्थितियों का परिचय दीजिए।
4. कहानी के स्वरूप पर प्रकाश डालिए।

खंड (ब)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. भारतीय दृष्टि से कहानी को परिभाषित कीजिए।
2. कहानी विधा में मिश्रित अन्य गद्य विधाएँ कौन-सी हैं? संक्षिप्त परिचय दें।
3. कहानी विधा के वर्तमान स्वरूप की भाषिक विशिष्टता क्या है? स्पष्ट कीजिए।
4. शैली किसे कहते हैं? कहानी लेखन के संदर्भ में व्यवहृत लेखन शैलियों पर प्रकाश डालिए।

खंड (स)

I सही विकल्प चुनिए

1. कहानी कला के मुख्य तत्वों में शामिल नहीं है? ( )

(क) कथानक (ख) चरित्र
(ग) वातावरण (घ) कल्पना

2. कहानी कला के कितने तत्व हैं? ( )

(क) 6 (ख) 4
(ग) 3 (घ) 2

3. लक्ष्य के आधार पर कहानी का एक प्रकार नहीं है? ( )

(क) आदर्श (ख) आदर्शोन्मुख यथार्थ

(ग) यथार्थ (घ) राजनीति

II रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए

1. कहानी ....करने वाली वह छोटी आख्यानात्मक रचना है,
2. कहानी वह है जो ....की तरह हृदय पर चोट करे।
3. कहानी एक रचना है जिसमें जीवन के किसी एक अंग या किसी एक .... को प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्देश्य रहता है।

III. सुमेल कीजिए

(i) शैली के प्रकार (क) आरंभ, आरोह, चरम. अवरोह

(ii) कथावस्तु के अंग (ख) रेखाचित्र, पत्र, संस्मरण, डायरी, कहानी

(iii) कहानी के तत्व (ग) संवादात्मक, पूर्वदीप्ति, चित्रात्मक

(iv) गद्य विधाएँ (घ) कथावस्तु, वातावरण, चरित्र, संवाद, शैली, उद्देश्य

5.7 पठनीय पुस्तकें

1. हिंदी कहानी : प्रक्रिया और पाठ. सुरेन्द्र चौधरी.

2. हिंदी कहानियों की शिल्पविधि का विकास. लक्ष्मी नारायण लाल.

3. साहित्य के सामान्य पक्ष : संप्रत्ययात्मक व्याख्या, एम. बालकुमार।

इकाई 6 'पंच परमेश्वर' (प्रेमचंद) : एक विश्लेषण

इकाई की रूपरेखा

6.0 प्रस्तावना

6.1 उद्देश्य

6.2 मूल पाठ : 'पंच परमेश्वर' (प्रेमचंद) : एक विश्लेषण

6.2.1 कहानीकार प्रेमचंद का परिचय

6.2.2 'पंच परमेश्वर' का तात्विक विवेचन

6.2.2.1 कथावस्तु

6.2.2.2 चरित्र चित्रण

6.2.2.3 संवाद

6.2.2.4 वातावरण

6.2.2.5 उद्देश्य

6.2.2.6 भाषा शैली

6.3 पाठ सार

6.4 पाठ की उपलब्धियाँ

6.5 शब्द संपदा

6.6 परीक्षार्थ प्रश्न

6.7 पठनीय पुस्तकें

6.0 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो! प्रेमचंद को हिंदी साहित्य में 'कथा सम्राट' के रूप में जाना जाता है। उन्होंने अपने लेखन के द्वारा कथा साहित्य की दोनों विधाओं (कहानी और उपन्यास) को लेखन कला और लोकप्रियता के उच्च शिखर पर पहुँचाया। प्रस्तुत इकाई में हम उनकी प्रसिद्ध कहानी 'पंच परमेश्वर' का गहन अध्ययन करेंगे।

6.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत आप -

- कहानीकार प्रेमचंद के बारे में जान सकेंगे।
- कहानी 'पंच परमेश्वर' की कथावस्तु से परिचित हो सकेंगे।
- 'पंच परमेश्वर' के ग्रामीण परिवेश से अवगत हो सकेंगे।
- इस कहानी में निहित सत्य, न्याय और आपसी संबंध की महत्ता से परिचित हो सकेंगे।
- कहानी कला के तत्वों के आधार पर 'पंच परमेश्वर' का विश्लेषण कर सकेंगे।
- प्रेमचन्द की भाषा-शैली की विशेषताओं से अवगत हो सकेंगे।

6.2 मूल पाठ : 'पंच परमेश्वर' (प्रेमचंद) : एक विश्लेषण

'पंच परमेश्वर' ग्रामीण परिवेश की कहानी है। इसके लेखक प्रेमचन्द हैं। वर्ष 1916 में यह कहानी प्रकाशित हुई। माना जाता है कि इस कहानी से कहानी विधा में एक परिवर्तनकारी मोड़ आया। कहानी में इस परिवर्तन का संबंध कथानक, भाषा और शैली से था। कहानी विधा के शिल्प का पुराना आख्यानात्मक ढर्रा टूटा। बीसवीं सदी के आरंभ में इस नई पहल को प्रेमचंद और उनके समकालीन लेखकों के द्वारा बल मिला।

6.2.1 कहानीकार प्रेमचंद का परिचय

प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई, 1880 ई. को वाराणसी से कुछ दूर लमही नामक गाँव में हुआ। कानपुर की साहित्यिक पत्रिका 'जमाना' सहित अन्य पत्रिकाओं से प्रेमचंद का गहरा जुड़ाव रहा। उनकी पहली उर्दू कहानी 'दुनिया का सबसे अनमोल रतन' (1907) है। यह कहानी नवाबराय के नाम से प्रकाशित हुई। अंग्रेजों द्वारा उनके कहानी संग्रह 'सोज़े वतन' (1908) को जब्त कर लिए जाने से पहले तक यह प्रेमचंद का साहित्यिक नाम था। उनका वास्तविक नाम धनपतराय था। प्रेमचंद के नाम से प्रकाशित होनेवाली उनकी पहली उर्दू कहानी 'बड़े घर की बेटी' (1910) है तथा दिसंबर 1915 में सरस्वती में प्रकाशित हिंदी कहानी 'सौत' उनकी पहली हिंदी कहानी है। साहित्य जगत में उनके अवदान के लिए उन्हें 'कथा सम्राट' और 'कलम के सिपाही' के नाम से जाना जाता है। 'कफन' उनकी अंतिम कहानी है। 1936 में उनका देहावसान हो गया।

प्रेमचंद ने हिंदी कहानी की भाषा को आम आदमी की भाषा का मुहावरा प्रदान किया। वे भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा सुझाए गए मध्यमार्ग के पथिक थे। यह मध्यमार्ग है उच्च उर्दू और संस्कृत निष्ठ हिंदी के बीच का; अर्थात बोलचाल की हिंदी का मार्ग। कहना गलत न होगा कि महात्मा गांधी ने जिस भाषा रूप को 'हिंदुस्तानी' कहा था, प्रेमचंद ने अपने कथासाहित्य में उसे चरितार्थ करके दिखाया है। कथाभाषा के मर्मज्ञ विद्वान डॉ.रामस्वरूप चतुर्वेदी ने इस संबंध में यह माना है कि प्रेमचंद का रचनात्मक मूल्यांकन कई कारणों से समस्या उपस्थित करता है। वे

पाठक के लिए जितने सरल और सहज हैं, आलोचक के लिए उतने ही मुश्किल। दरअसल उनकी कहानियों में घटनाओं और अनुभवों की बहुलता पाठक को तो पसंद आती है, लेकिन आलोचक के लिए समस्या खड़ी कर देती है। "अनुभव-बहुलता के जिस विशिष्ट गुण के लिए पाठक के रूप में वह आभारी था, वही अनुभव-बहुलता आलोचक के रूप में उसके सामने एक सीमा बनाती है। प्रेमचंद अपनी रचना-प्रक्रिया में भाषा का संपूर्णतः दोहन कर लेते हैं, फलतः आलोचक के लिए ऐसी भाषा-छवियाँ, संकेत शेष नहीं बचते जिनके सहारे वह उस रचना में आगे अर्थ का संवर्धन कर सके। और यहाँ प्रेमचंद गांधी के सबसे निकट आते हैं। विचारधारा के स्तर पर वे गांधी से प्रभावित रहे या फिर उनसे उपराम होते गए, यह एक स्थूल जानकारी की बात है। रचना के क्षण में वे गांधी के सबसे नज़दीक होते हैं।" (हिंदी गद्य : विन्यास और विकास, पृष्ठ 250)

बोध प्रश्न

- भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा सुझाया गया मध्य मार्ग क्या है?
- प्रेमचंद महात्मा गांधी के सबसे निकट क्यों हैं?

6.2.2 'पंच परमेश्वर' का तात्विक विवेचन

'पंच परमेश्वर' घटना प्रधान कहानी है। इसमें रोजमर्रा की जिंदगी से ली गई घटनाएँ है। कहानी के बीज तत्व के रूप में गाँव के जीवन से उठायी गई इन घटनाओं को लेखक ने अपनी कल्पना के अनुसार क्रमबद्ध किया। घटनाओं की यह क्रमबद्धता कहानी के सुरुचिकर और सजीव होने के लिए आवश्यक है। कल्पना और यथार्थ का सम्मिश्रण कहानी को प्रभावी बनाता है। इस कहानी की कथावस्तु सशक्त और कालजयी है। इसमें चित्रित किया गया समाज और उसकी समस्याएँ, कुछेक बदलते परिदृश्यों के साथ आज के समय में भी मौजूद हैं। इसमें जीवन की बाहरी घटनाओं का जितना जिक्र किया गया है, उतना ही पात्रों के मन के भीतर की उथल-पुथल को भी दिखाया गया है।

6.2.2.1 कथावस्तु

किसी कहानी की कथावस्तु के क्रमविन्यास में आरंभ, आरोह, चरमसीमा और अवरोह ये चार अनिवार्य स्थितियाँ आती हैं। इस कहानी में ये सभी स्थितियाँ सुगठित हैं। इसका कथानक (कथावस्तु) सामाजिक और मनोविश्लेषणात्मक है, पर बीच-बीच में दार्शनिक स्वर भी उभरा है। कहानी का आरंभ कहानी कहने की रीति से हुआ है। लेखक कहानी कहते हुए मुख्य पात्रों का परिचय करा देता है। कहानी की प्रारंभिक पृष्ठभूमि में सांस्कृतिक सौहार्द का अंकन किया गया है। जब सारी फिजा विषैली हो, वहाँ कहीं एक घट हो और घट के भीतर एक बूँद अमृत हो, तो

उसे पाने की लालसा किसे न होगी। इस कहानी का आरंभ पाठक को उसके अंत के प्रति जिज्ञासु बनाता है। जुम्मन और अलगू की दोस्ती के परिचय से कहानी शुरू होती है। 'खाला' का कहानी में प्रवेश और अपनी जायदाद की रजिस्ट्री अपने भांजे जुम्मन के नाम कर देने की घटना कहानी का आरोह है। इस आरोह का विकास करने में खाला के प्रति जुम्मन की बेदिली और करीमन का चरित्र सहयोगी रहा। 'हलवा-पूरी' से 'विश्वासघात और अपमान' का रस चखने के बाद पंचायत के लिए दौड़ लगाती वह बूढ़ी काया इस आरोह की गति की तीव्रता है। पंचायत में सरपंच के रूप में अलगू का स्पष्ट न्याय खाला के हक में जाता है। इससे जुम्मन अचंभित और हारा हुआ महसूस करता है। इसके साथ ही बदले की भावना उसके मन में घर कर जाती है। शीघ्र ही उसे अवसर भी मिल जाता है। यह कहानी का चरम बिन्दु है। कहानी को चरम तक पहुँचाने में घटनाओं का संयोजन और सूत्रों का विस्तार एकदम स्वाभाविक तरीके से किया गया है। ये घटनाएँ पाठक पर अपना प्रभाव छोड़ते हुए उसे सोचने और निर्णय लेने की स्थिति में लाकर छोडती हैं। मुख्य घटनाओं के इर्द-गिर्द छोटी घटनाएँ रची गई हैं एवं वैचारिक उद्भावनाएँ दी गई हैं। ये कहानी की जीवन्तता और बौद्धिकता का परिचायक हैं।

अलगू का एक बैल मर जाता है। बचे हुए दूसरे बैल को वह समझू साहू को बेच देता है। बैल का दाम एक माह में चुकाने की बात तय होती है। समझू साहू की नासमझी और दरिंदगी से बैल मर जाता है, अब वह दाम देने से माना करता है। पंचायत की नौबत आती है। इस बार सरपंच जुम्मन है। अवसर था कि अलगू के प्रति अपने दुराग्रह का बदला वह ले सके पर उसने सब भूलकर केवल न्याय किया। अपने निर्णय से उसने महसूस किया कि पंच में परमेश्वर का वास होता है और उसकी ज़ुबान खुदा की ज़ुबान है। सारी शिकायतों का पुलिंदा फेंककर वह अपने मित्र अलगू से मिला। अपने मन की छिपी हुई बदले की भावना को अलगू के सामने खोलकर उसका मन हल्का हो गया। दोनों की आँखों से बहते हुए आँसू ने उनकी बेजान पड़ी हुई मित्रता को नया जीवन दिया। यह कहानी का अवरोह और अंत है। कुल मिलाकर, कहानी प्रेरणादायक है।

बोध प्रश्न

- इस कहानी में चरमबिंदु क्या है?
- इस कहानी से क्या प्रेरणा मिलती है?

6.2.2.2 चरित्र चित्रण

कथानक के गति निर्वाह के लिए पात्रों की सृष्टि की जाती है, जो घटनाओं को अपने अंजाम तक पहुँचाते हैं। मोटे तौर पर इन पात्रों को दो कोटियों में रखा जाता है - मुख्य पात्र और गौण पात्र। इस कहानी में मुख्य पात्र हैं - खाला, जुम्मन शेख, अलगू चौधरी, और समझू

साहू। कहानी के गौण पात्र हैं - जुमराती शेख, अलगू के पिता, करीमन, चौधराइन, साहू आइन, नाई, रामधन मिश्र इत्यादि। रामधन मिश्र को कहानी में उन लोगों का प्रतिनिधि बनाकर पेश किया गया है जो किसी के किसी व्यवहार से स्वतः आहत हो जाते हैं, और उसे अपना अहित समझते हैं। अपना अहित करने वाले से अप्रत्यक्ष रूप से वैर रखते हुए, बदला लेने का अवसर ढूँढते रहते हैं। जुमराती, जुम्मन के पिता हैं जिनका भरोसा छड़ी पर है। अलगू के पिता भाग्यवादी हैं। विद्या प्राप्ति को वे गुरु सेवा से प्राप्त आशीर्वाद और भाग्य की देन मानते हैं। करीमन का चरित्र असहिष्णुता का प्रतीक है। वह खाला के प्रति निष्ठुर थी और जुम्मन (उसका पति) के अनैतिक कामों की सहयोगी। इस पात्र के रूप में एक साधारण ग्रामीण स्त्री पात्र की सृष्टि की गई है। इस स्त्री को अपनी आन की शान में झगड़े से भी परहेज नहीं है। बैल को विष देकर जुम्मन द्वारा मार दिए जाने की शंका चौधराइन द्वारा व्यक्त किए जाने पर वह उससे उलझ जाती है। पहला बैल कैसे मरा यह कहानी में स्पष्ट नहीं किया गया है।

जुम्मन ज्ञानी है, साथ में अवसरवादी और अहंकारी भी है। अहंकार उसे अपने ज्ञान का है, जिसके कारण लोग कागजी कामों में उसकी मदद लेते हैं और उसके प्रति अहसानमंद भी हैं। उसमें छल, वैर और स्वार्थ की प्रवृत्ति भी है। कहानी के अंत में उसका केवल एक रूप बचा! सच्चे मित्र का रूप! अटल विश्वासी का रूप! न्याय का पक्षधर! अलगू धनवान है। गुरुसेवा में उसकी रुचि है पर थोडा दब्बू भी है। वह खाला के पक्ष में खड़ा होने से डरता है क्योंकि उसे अपनी मित्रता बचानी है। खाला उसकी चेतना को झकझोर कर रख देती है। समझू साहू व्यापारी है, जो गाँव से गुड और घी मंडी ले जाता है, और मंडी से नमक तेल गाँव लाकर बेचता है। उसकी मानसिकता केवल व्यापारी वाली, हानि-लाभ की है। बहुत अधिक काम लेने और चारे का उचित प्रबंध न करने के कारण इक्का गाड़ी खींचते हुए ही बैल ने दम तोड़ दिया। मरे हुए बैल के प्रति साहू के व्यवहार का एक अंश कहानी से यहाँ उद्धृत किया जा रहा है, देखें - "साहू जी ने बहुत पीटा, टाँग पकड़कर खींचा, नथनों में लकड़ी ठूँस दी; पर कहीं मृतक भी उठ सकता है? .... अभागे। तुझे मरना ही था, तो घर पहुँचकर मरता! ससुरा बीच रास्ते ही में मर रहा। अब गाड़ी कौन खींचे?" यह निर्मम और निर्दय मानसिकता का चरम है। केवल अपना जीवन अपना है, दूसरे के जीवन का कोई मोल नहीं! उसकी नीयत में बेईमानी भी थी। तभी वह बैल का दाम अलगू को देने से कतराने लगा था। अपनी करनी से उसे नुकसान हुआ, पर अपने नुकसान की भरपाई करने के लिए दूसरे भलेमानुष का नुकसान करना, यह कैसा बेतुका तर्क है!

इस तरह स्त्री-पुरुष चरित्रों की वैविध्यपूर्ण सृष्टि वाली इस कहानी में 'खाला' का चरित्र एक निर्भीक, सशक्त और स्वतंत्र स्त्री के रूप में उभरा है। वह बूढ़ी है पर बेजान नहीं। ऐसे चरित्र की सृष्टि निराश, कुंठित और त्रस्त मनुष्यों की धमनियों में भी रक्त का संचार कर सकती है। कर्मठता और विपरीत परिस्थिति में हार नहीं मानने का संदेश देती खाला के दृढ़ व्यक्तित्व के भीतर ममता भी है, जो पंचायत में उनके इस वक्तव्य से झलकती है - "अगर मुझमें कोई ऐब

देखो, तो मेरे मुँह पर थप्पड़ मारो। जुम्मन में कोई बुराई देखो, तो उसे समझाओ, क्यों एक बेकस की आह लेता है!" पंचों से जुम्मन के लिए उन्हें दंड नहीं चाहिए। यह उनका स्नेह ही तो है।

बोध प्रश्न

- खाला के चरित्र की विशेषताएँ बताइए।
- क्या इन पात्रों से कहानी को गति मिली है? अपने उत्तर के पक्ष में तर्क दें।

6.2.2.3 संवाद : संवाद कहानी को सजीव बनाते हैं। इनकी योजना पात्र, वातावरण, स्थान और समय के अनुकूल बनाकर की जाती है। संक्षिप्त पर अर्थयुक्त संवाद योजना वाली कहानी सफल मानी जाती है। इस कहानी में पंचायत के दौरान अपना पक्ष रखने के क्रम में लंबे संवाद भी प्रयुक्त हुए हैं, और ये रुचिकर तथा वातावरण के अनुकूल हैं। एक तरह का संवाद भी उपस्थित व्यक्तियों पर अलग-अलग प्रभाव छोड़ता है। जैसा कि अलगू ने जब जिरह शुरू की, तब जुम्मन और रामधन के मन के भाव अलग थें, देखें - "उसने जुम्मन से जिरह शुरू की। एक-एक प्रश्न जुम्मन के हृदय पर हथौड़ी की चोट की तरह पड़ता था। रामधन मिश्र इस प्रश्नों पर मुग्ध हुए जाते थे। जुम्मन चकित थे कि अलगू को क्या हो गया।"

इस कहानी में एकतरफा संवाद करीमन और खाला का है जहाँ खाला केवल सुनती है और करीमन तिरस्कार के अंदाज में सुनाती रहती है। परस्पर संवाद लोगों के चरित्र को जानने का कारगर उपाय है। जुम्मन और खाला के मध्य, खाला और अलगू के मध्य तथा खाला और अन्य ग्रामीणों के मध्य जो संवाद हुए उनसे सभी का दृष्टिकोण स्पष्ट हुआ। बहुत कम लोगों ने खाला के दुःख को साझा किया। झगड़ा या विवाद भी एक तरह का संवाद ही है जो पहले बैल के मरने के बाद करीमन और चौधराइन के बीच हुआ और दूसरे बैल के मरने के बाद साहू-साहूआइन तथा अलगू के बीच झड़प के रूप में हुआ। संवाद का व्यापक रूप पंचायत के दौरान देखने को मिलता है।

उदाहरण :

"खाला ने चिल्लाकर कहा – अरे अल्लाह के बंदे! पंचों का नाम क्यों नहीं बता देता? कुछ मुझे भी तो मालूम हो।

जुम्मन ने क्रोध से कहा – इस वक्त मेरा मुँह न खुलवाओ। तुम्हारी बन पड़ी है जिसे चाहो, पंच बदो।

खालाजान जुम्मन के आक्षेप को समझ गईं, वह बोली – बेटा, खुदा से डरो। पंच न किसी के दोस्त होते हैं, न किसी के दुश्मन। कैसी बात कहते हो! और तुम्हारा किसी पर विश्वास न हो, तो जाने दो; अलगू चौधरी को तो मानते हो, लो, मैं उन्हीं को सरपंच बदती हूँ।"

खाला के पंचायत बुलाने के आग्रह पर किसी ने तो यों ही ऊपरी मन से हाँ–हूँ करके टाल दिया, और किसी ने इस अन्याय पर ज़माने को गालियाँ दी! कहा, "कब्र में पाँव लटके हुए हैं, आज मरे कल दूसरा दिन; पर हवस नहीं मानती। अब तुम्हें क्या चाहिए? रोटी खाओ और अल्लाह का नाम लो। तुम्हें अब खेती–बारी से क्या काम है?" यह कथन गाँव के कुछ लोगों ने खाला से तब कहा जब वे पंचायत में आने के लिए लोगों से निवेदन कर रही थीं। स्पष्ट है की प्रेमचंद की संवाद योजना पात्रों के मन का आईना है, तथा कहानी को आगे बढ़ाने में सहायक भी।

बोध प्रश्न

- प्रेमचंद की संवादयोजना की दो विशेषताएँ बताइए।

6.2.2.4 वातावरण : मनुष्य के स्थूल शरीर और सूक्ष्म मन की तरह कहानी में भी वातावरण के दो स्तर हैं – एक बाहरी दुनिया से जुड़ा हुआ और दूसरा बाहरी दुनिया से प्रभावित अंतर्मन जो भीतर ही उथल–पुथल मचाता हुआ, चेहरे पर भाव उकेरता रहता है। हर कहानी में इनकी उपस्थिति रहती है, इसमें भी है। इस कहानी में वातावरण (देशकाल) का निर्माण बीसवीं सदी के आरंभिक दशकों के भारत के गाँव और वहाँ के लोगों को मिलाकर किया गया है। गाँव का बाह्य परिवेश तथा वहाँ रहनेवाले लोगों के मानसिक भावों का चित्रण करते हुए लेखक के भीतर भारतीयता वाला तत्व अदृश्य रूप से विद्यमान था। धर्म संप्रदाय से परे आपसी भाईचारा और परस्पर विश्वास का चित्रण तभी संभव है। जुम्मन और अलगू के संदर्भ में कहानी के आरंभ में ही यह दिखाया गया है। अलगू की गुरु सेवा का चित्रण दिखाता है कि वह युग सेवा, आस्था और निष्ठा का भी था। ये बातें आज के बदलते परिदृश्य में इस कहानी की उपयोगिता पुनः सिद्ध करती हैं। अन्याय और दुराचार तब भी था पर तब वह न्याय पर हावी हो जाने की क्षमता नहीं रखता था। खाला के साथ पंचायत में न्याय हुआ और जुम्मन ने उसे स्वीकार किया। अलगू के साथ भी न्याय हुआ और समझू ने उस न्याय को स्वीकार किया। व्यवस्थाएँ तब बिकी नहीं थीं। सच सबसे ऊपर था क्योंकि उसने खुद पर बिकाऊ होने का बिल्ला नहीं लगाया था। उसे खरीदने की हैसियत भी कोई नहीं रखना चाहता था, क्योंकि सच और खुदा में सबकी आस्था थी। माटी के पुतले से गलती न हो तो वही खुदा हो जाएगा। मनुष्य में कमजोरियाँ हैं, तभी दुराग्रह और हठ उसके साथी हैं। यह बाहरी परिवेश का भीतरी सामूहिक सच है।

बाहरी वातावरण में गाँव है। उसमें धर्म का भेद भूलकर आपसी प्रेम से रहनेवाले लोग हैं। गाँव में किसान का अभाव भरा जीवन जहाँ गुड़ और घी तो उनका अपना है, पर नमक और तेल केवल मंडी में मिलते हैं। मंडी गाँव से दूर है। समझू साहू अपनी इक्का गाड़ी से वहाँ जाता है और वहाँ से सामान लाकर गाँव में बेचता है। यह उसकी समाज सेवा नहीं, उसका व्यापार है। उसकी निर्दयता से उसकी इक्का-गाड़ी में जुटा हुआ पानीदार बैल दम तोड़ देता है। एक शर्मनाक

और निर्मम हादसा। ऐसे या इससे बदतर हादसे मनुष्यों के साथ भी हो सकते हैं। जुम्मन के घर के भीतर के बदलते वातावरण का अंकन भी चेतना को झकझोरे बिना नहीं छोड़ता। मिलकियत जुम्मन के नाम जब तक नहीं हुई थी, तब तक उसके घर में खाला के लिए केवल सत्कार और अपनापन था। दानपत्र की रजिस्ट्री होते ही दुत्कार और सूखी रोटी तक बात पहुँच गई। बाह्य और मानसिक दोनों तरह के वातावरण का प्रभावी अंकन लेखक ने इस कहानी में किया है।

उदाहरण देखें : "पर रजिस्ट्री की मोहर ने इन खातिरदारियों पर भी मानो मुहर लगा दी। जुम्मन की पत्नी करीमन मानो रोटियों के साथ कड़वी बातों के कुछ तेज, तीखे सालन भी देने लगी। जुम्मन शेख भी निठुर हो गये। अब बेचारी खालाजान को नित्य ही ऐसी बातें सुननी पड़ती थीं।

बुढ़िया न जाने कब तक जियेगी। दो–तीन बीघे ऊसर क्या दे दिया मानो मोल ले लिया है! बघारी दाल के बिना रोटियाँ नहीं उतरतीं! जितना रुपया इसके पेट में झोंक चुके, उतने से तो अब तक गाँव मोल ले लेते।"

घर के दायरे के बाहर जो वातावरण का वृहत्तर आयाम है, उसे अंकित करते हुए लेखक ने इंसानों का ही नहीं पशुओं के मनोभावों का भी सूक्ष्म चित्रण किया है। पंचायत के दौरान आदमियों की भीड़ देखकर गाँव के कुत्ते भी वहाँ जमा हो रहे थे। उनके विचार में गाँव में भीड़ का आयोजन भोज के अवसर पर होता है। भोज की जूठी पत्तलों में उनकी दावत की सामग्री उन्हें भरपूर मिल जाती है।

अलगू के सरपंच बनने के बाद पंचायत में उपस्थित मुख्य लोगों की मनःस्थिति जिससे मानसिक वातावरण प्रत्यक्ष हो रहा है, देखने लायक है। यथा - "अभी यह अलगू मेरे साथ बैठा हुआ कैसी-कैसी बातें कर रहा था! इतनी ही देर में ऐसी कायापलट हो गई कि मेरी जड़ खोदने पर तुला हुआ है। न मालूम कब की कसर यह निकाल रहा है?"

गाँव के सहज वातावरण में रचित इस कहानी में लेखक ने नाई का जिक्र पंचायत में चिलम भरने के संदर्भ में किया है। पंचायत के परिवेश में प्रकृति का चित्रण भी हुआ है। दरख्त की छाँव में हर बार न्याय हुआ। शुक मंडली और कौओं की पंचायत की लेखक की कल्पना से कहानी का वातावरण रोचक और हल्का हुआ। साथ ही विचार करने के लिए कुछ प्रश्न भी उभर कर सामने आए। लेखक के आत्मकथ्य से यह अर्थगांभीर्य और बढ़ा है।

बोध प्रश्न

- जुम्मन के परिवार का वातावरण कैसा था?

6.2.2.5 उद्देश्य

प्रेमचंद किसी विशेष वाद या विचारधारा से नहीं जुड़े थे। उनकी यह कहानी

'आदर्शोन्मुख यथार्थवाद' को परिलक्षित करती है। इस कहानी में विविध घटनाओं के माध्यम से लेखक ने जीवन के प्रति मानव के स्वस्थ दृष्टिकोण को उभारा है। संवादों के द्वारा इन उद्देश्यों का प्रभावशाली अंकन हुआ है। 'विश्वास' जुम्मन और अलगू की मित्रता के पहले पक्ष में स्थापित किया गया, पर कहानी के आगे बढ़ने के क्रम में यह खंडित हुआ तथा अंत में पुनः यह प्रगाढ़ हुआ। जुम्मन और करीमन द्वारा खाला से किया गया विश्वासघात, समाज में बुजुर्गों की दयनीय स्थिति का एक संकेत है। संकेत इसलिए दिया गया ताकि उसे दूर करने की पहल आरंभ हो। इससे दूसरा संकेत मिल रहा है 'सचेत रहने का' ताकि दगा वाली फितरत के फेरे में पड़ने से बचे रहें। इंसान इतना कमजोर नहीं कि कोई भी छल कर चला जाय, फिर भी यदि वह छला जाता है तो नियति मान कर खाली बैठने से बेहतर है न्याय पाने के लिए जुगत लगाना; जैसा कि बूढी खाला ने लगाया। समाज की व्यवस्था बनी रहे इसके लिए लोगों की आस्था न्याय व्यवस्था में होनी चाहिए। न्याय व्यवस्था को इस कहानी में चित्रित गाँव की पंचायत की तरह निष्पक्ष, ईमानदार और सत्य के प्रति आस्थावान होना चाहिए ताकि जब न्याय हो तो फैसले की जय-जयकार हो, न कि पीड़ित को ही और पीड़ा पहुंचाई जाए।

'पंच परमेश्वर' शीर्षक का औचित्य भी इसी में निहित है भी इसी में है। यह सामान्य कथन नहीं लोक की आस्था का सूचक है। आस्था का टूटना भी न्यायोचित नहीं। सोचिये अगर पंचायत का फैसला खाला के पक्ष में नहीं होता तो खाला जीवन की मार कैसे झेलत? लुभावने वादों के फेर में अपने आत्मसम्मान की हत्या को हर पल सहने को विवश ही होती! समस्या भले अपनी किसी कमजोरी की उपज हो, पर उसका निदान मुँह छिपाने से नहीं संभव है। समस्या का हल खोजना होगा। इसके लिए उद्यम करना होगा, जैसा खाला ने किया। वे ऐसा कर सकीं क्योंकि वे आत्मविश्वासी थीं और उनका पक्ष सत्य का पक्ष था। खाला के प्रति जुम्मन और करीमन के व्यवहार का संकेत संबंधों के बदलते समीकरण को भी दिखाता है। संबंध भी एक व्यापार की तरह हो गए हैं शायद, जहाँ अनुपयोगी की कोई दरकार नहीं।

बैल के प्रति समझू साहू की निर्दयता ने उस बैल की जान ले ली। कहानी में कुछ सभ्य व्यक्ति उसकी निर्दयता के लिए भी उसे दंडित करना चाहते हैं, पर अलगू ने पंचायत केवल उसका दाम पाने के लिए की था, बैल तो वह महीने भर पहले बेच चुका था। समझू साहू को केवल अलगू को बैल का दाम देना पड़ा। बैल की हत्या की थोड़ी सजा, उसे मंडी से गाँव आने के रास्ते में ही मिल चुकी थी; पर क्या इतने से उसकी क्रूर वृत्ति और स्वार्थी प्रवृत्ति पर अंकुश लग जाएगा? किसी क्रूर और आततायी व्यक्ति का हृदय परिवर्तन कैसे किया जाए? शुक मण्डली की पंचायत के माध्यम से सोचने के लिए प्रेमचन्द ने एक और प्रश्न छोड़ा है, "बेमुरौव्वत कौन, इंसान या पशु?" करीमन और चौधराइन के बीच की गरम झड़प को दोनों के पतियों ने क्रमशः जिन विधियों (डांट डपट, तर्कपूर्ण सोटे) से शांत किया उससे समाज में स्त्री–पुरुष की स्थिति पर थोड़ा प्रकाश डालने की कोशिश लेखक ने की है। किसान जीवन के विभिन्न पक्षों को उद्घाटित करती हुई इस कहानी में जीवन सत्यों की सहज अभिव्यक्ति है।

बोध प्रश्न

- इस कहानी का उद्देश्य क्या है?
- किसी का हृदय परिवर्तन करने के लिए कौन सा मार्ग उपयुक्त है – दंड या प्रेम?

6.2.2.6 भाषा-शैली

कहानी की भाषा विषय के अनुसार बदलती रहती है जिससे न रस ग्रहण करने में कोई बाधा आती है और न ही एकरसता से ऊब आती है। डॉ. रामविलास शर्मा मानते हैं कि प्रेमचंद की सफलता का रहस्य बड़ी हद तक उनकी भाषा में निहित है। उनकी यह बात 'पंच परमेश्वर' पर भी पूरी तरह लागू होती है कि प्रेमचंद को देहाती बोली और हिंदी के एकीकरण में इतनी सफलता मिली है कि गाँव का रहने वाला पाठक भी प्रेमचंद के किसानों की बात सुनकर उसे अस्वाभाविक नहीं कह सकता। "जो सुंदर मुहावरे, कहावतें, उपमाएँ और हास्य के पुट उनके गद्य में हमें मिलते हैं, उन्हें प्रेमचंद ने अपने गाँव की बोली से सीखा था। अपनी उपमाएँ उन्होंने बहुधा ग्रामीण जीवन से ली हैं। प्रेमचंद की भाषा के अलंकार उसके प्रवाह में सजह ही सज जाते हैं। सारी बात अनुभव और सच्चाई की है। प्रेमचंद जनता को जानते थे, उसकी भाषा को जानते थे, वहीं से उन्हें शक्ति मिली है।" (डॉ. रामविलास शर्मा, प्रेमचंद, 1941: पृष्ठ 138)

कहानी में मुख्य रूप से वर्णनात्मक और संवादात्मक शैली अपनाई गई है। अलंकार, लोकोक्ति और प्रतीक के प्रयोग से कहानी की शैली में सौंदर्य बरक़रार रहता है। संवादों में हास्य और व्यंग्य का समावेश इस सौंदर्य की अभिवृद्धि करता है।

विवरणात्मक शैली : 'पंच परमेश्वर' में अनेक स्थलों पर विवरणात्मक शैली का प्रयोग दिखाई देता है। इसके अंतर्गत कहानी में प्रयोग किये जानेवाले तथ्यों यानी कथानक को संगठित कर उसे सुविकसित करके प्रस्तुत किया जाता है। इस प्रक्रिया में पात्रों के बाहरी क्रियाकलापों के साथ-साथ सूक्ष्म मनोभावों का भी चित्रण किया जाता है। घटनाओं का सूक्ष्म और परिणामपरक निरीक्षण इस शैली की विशिष्टता है। लेखक का बल दृष्टिकोण पर होता है। व्यक्तिविशेष का दृष्टिकोण उसके चरित्र का सूचक होता है। जैसे - "अलगू चौधरी फूले न समाए। उठ खड़े हुए और जोर से बोले - पंच-परमेश्वर की जय! इसके साथ ही चारों ओर से प्रतिध्वनि हुई- 'पंच परमेश्वर' की जय! यह मनुष्य का काम नहीं, पंच में परमेश्वर वास करते हैं, यह उन्हीं की महिमा है। पंच के सामने खोटे को कौन खरा कह सकता है? थोड़ी देर बाद जुम्मन अलगू के पास आए और उनके गले लिपट कर बोले - भैया, जब से तुमने मेरी पंचायत की तब से मैं तुम्हारा प्राण-घातक शत्रु बन गया था; पर आज मुझे ज्ञात हुआ कि पंच के पद पर बैठ कर न कोई किसी का दोस्त है, न दुश्मन। न्याय के सिवा उसे और कुछ नहीं सूझता। आज मुझे विश्वास हो गया कि

पंच की ज़बान से खुदा बोलता है। अलगू रोने लगे। इस पानी से दोनों के दिलों का मैल धुल गया।"

संवादात्मक शैली : संवाद रचना की संप्रेषणीयता में सहायक होते हैं। संवादात्मक शैली के प्रयोग से रचना की संप्रेषणीयता बढती है। यह कहानी छोटी है पर संवाद प्रयोग का वैविध्य यहाँ दर्शनीय है। जैसे -

"अलगू – मुझे बुलाकर क्या करोगी? कई गाँव के आदमी तो आवेंगे ही।

खाला – अपनी विपदा तो सबके सामने रो आयी। अब आने-न-आने का अख्तियार उनको है।

अलगू – यों आने को आ जाऊँगा, मगर पंचायत में मुँह न खोलूँगा।

खाला – क्यों बेटा?

अलगू – अब इसका क्या जवाब दूँ? अपनी ख़ुशी। जुम्मन मेरा पुराना मित्र है। उससे बिगाड़ नहीं कर सकता।

खाला – बेटा, क्या बिगाड़ के डर से ईमान की बात न कहोगे।"

स्वगत कथन : वे कथन जो कहानी में लेखक के मुख से निकलते हैं स्वगत कथन या आत्मकथ्य कहलाते हैं। उदाहरण : "पंचायत में किसकी जीत होगी, इस विषय में जुम्मन को कुछ भी संदेह न था। आस-पास के गाँवों में ऐसा कौन था जो उसके अनुग्रहों का ऋणी न हो; ऐसा कौन था, जो उसको शत्रु बनाने का साहस कर सके? किसमें इतना बल था, जो उसका सामना कर सकें? आसमान के फरिश्ते तो पंचायत करने आवेंगे नहीं।"

भाषा का प्रयोग पात्र के स्वभाव और परिवेश के अनुरूप किया गया है। अलगू द्वारा अपने गुरु जुमराती की सेवा के प्रसंग की भाषा इस दृष्टि से देखने योग्य है, जैसे - "खूब रकाबियाँ माँजी, खूब प्याले धोये।" समझू और उसकी पत्नी ने बैल के लिए 'कुलच्छिनी' और 'सत्यानाशी' का प्रयोग किया। परिस्थिति सम हो या विषम व्यक्ति का शब्द प्रयोग और उसका व्यवहार उसके अपने चरित्र से अवगत कराता है। दानपत्र की रजिस्ट्री होने से पहले जुम्मन के घर में खाला के लिए 'हलवे-पुलाव की वर्षा' थी और अब पंचायत में लोग जुटाने की मशक्कत करने में उनकी 'कमर झुक कर कमान हो गई थी'। भाषा का प्रयोग संदर्भ के अनुकूल है। हास्य और व्यंग्य का पुट भी भाषा में देखने को मिलता है। हास्य का एक उदाहरण देखें - "झुकी हुई कमर, पोपला मुँह, सन के - से बाल इतनी सामग्री एकत्र हों, तब हँसी क्यों न आवे?" इसी प्रकार - "जुम्मन हँसे, जिस तरह कोई शिकारी हिरण को जाल की तरफ जाते देखकर मन-ही-मन हँसता है।"

कहानी में सरल सहज और मुहावरेदार भाषा का प्रयोग किया गया है, जैसे - कसर निकालना, जड़ खोदना, दूध का दूध और पानी का पानी करना, मन लहराना, कन्नी काटना,

लाले पड़ना, लहू सूखना इत्यादि।

अंततः प्रेमचंद की कथाभाषा के संबंध में डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी का यह कथन उल्लेखनीय है कि , "किफ़ायतसारी का आदर्श जैसा प्रेमचंद के यथार्थ-चित्रण में है उससे और गहरे धरातल पर उनके भाषिक विधान में है। भाषा का सत अपनी रचना में वे पूरी तरह से निचोड़ लेते हैं। यथार्थ के नियमन की तरह उनका यह गुण भी पाठक के लिए अत्यंत तोषप्रद है।"

बोध प्रश्न

- इस कहानी में कौन कौन सी शैलियाँ मिलती है?
- कहानी में प्रयुक्त पाँच मुहावरे खोज कर लिखिए।

6.3 पाठ सार

प्रेमचंद भारतीय जीवन मूल्यों के प्रति आस्थावान लेखक हैं। उनका जन्म 31 जुलाई, 1880 ई. को वाराणसी से कुछ दूर लमही नामक गाँव में हुआ। उनकी पहली उर्दू कहानी 'दुनिया का सबसे अनमोल रतन' (1907) है। यह कहानी नवाबराय के नाम से प्रकाशित हुई। अंग्रेजों द्वारा उनके कहानी संग्रह 'सोज़े वतन' (1908) को जब्त कर लिए जाने से पहले तक यह प्रेमचंद का साहित्यिक नाम था। उनका वास्तविक नाम धनपतराय था। प्रेमचंद के नाम से प्रकाशित होनेवाली उनकी पहली उर्दू कहानी 'बड़े घर की बेटी' (1910) है तथा दिसंबर 1915 में सरस्वती में प्रकाशित हिंदी कहानी 'सौत' उनकी पहली हिंदी कहानी है। 'कफन' उनकी अंतिम कहानी है। उनका देहावसान 1936 में हुआ। साहित्य जगत में उनके अवदान के लिए उन्हें 'कथा सम्राट' और 'कलम के सिपाही' के नाम से जाना जाता है। सांस्कृतिक सौहार्द, सद्भाव और सहअस्तित्व की भावना उनके कथा साहित्य में दृढ़ता के साथ उपस्थित है। स्त्री, दलित और किसान के जीवन की समस्यायों को उन्होंने उजागर किया है।

'पंच परमेश्वर' कहानी ग्रामीण पृष्ठभूमि को आधार बनाकर लिखी गई है। जुम्मन और अलगू की मित्रता इस कहानी का केंद्र बिंदु है। कहानी की कथावस्तु का विस्तार यहीं से होता है। दोनों मित्रों को एक-दूसरे पर बहुत भरोसा था। घर से बाहर जाने की स्थिति में वे एक-दूसरे को अपना घर सौंप कर जाते थे। जुम्मन की एक खाला थी जिनका उसके अलावा और कोई करीबी रिश्तेदार नहीं था। उसने खाला को समझा-बुझा कर उनकी जमीन अपने नाम रजिस्ट्री करवा ली। जब तक जमीन की रजिस्ट्री नहीं हुई थी जुम्मन और करीमन उनका खूब आदर करते थे; पर अपना काम हो जाने के बाद उनकी नीयत बदल गई। अब वे खाला की दैनिक जरूरतों का भी ध्यान रखना आवश्यक नहीं समझते थे। खाला अपने साथ हो रहे रोज के दुर्व्यवहार से तंग होकर जुम्मन से मासिक खर्च की मांग करती है। पर वह मना कर देता है। इस विषय पर

पंचायत बैठती है। इस पंचायत में सरपंच अलगू को चुना गया था। फैसला खाला के हक में जाता है। सभी लोगों की यह आस्था दृढ़ होती है कि पंच में परमेश्वर का वास होता है। यह कहानी की चरम स्थिति में भी यथावत है। अलगू चौधरी और समझू साहू के बीच बैल की मृत्यु से उत्पन्न विवाद जिसमें समझू साहू बैल का दाम अलगू को नहीं देना चाहता था; इस विषय पर भी पंचों का फैसला सत्य के पक्ष में था, जबकि सरपंच जुम्मन था जो कि खाला के पंचायत के बाद से मन ही मन अलगू का शत्रु बन गया था। कहानी का अवरोह पुनः इन दोनों मित्रों की मित्रता के पुनर्जीवन के साथ होता है। कहानी के पात्रों के पारस्परिक बर्ताव के द्वारा लेखक ने उनके चरित्र को स्पष्ट किया है। ग्रामीण संस्कार में निहित भोलेपन और विश्वास के साथ चारित्रिक दुर्बलता (क्रोध, लोभ, छल) का भी चित्रण इस कहानी में देखने को मिलता है। चरित्र चित्रण में संवाद भी बहुत उपयोगी बन पड़े हैं। वर्णनात्मक और संवादात्मक शैली के साथ लेखक की टिप्पणियाँ कहानी के वातावरण की प्रभावी सृष्टि करती हैं। यह कहानी इंसान को सत्य के प्रति आस्थावान बनाते हुए; अपने कर्तव्य के प्रति ईमानदार होना सिखाती है। इसका मूल संदेश है, “पंच में परमेश्वर का वास होता है”।

6.4 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष उपलब्ध हुए हैं -

- प्रेमचंद को ‘कथा सम्राट’ और ‘कलाम का सिपाही’ के रूप में याद किया जाता।
- प्रेमचंद आरंभ में नवाबराय उपनाम से उर्दू में कहानियाँ लिखते थे।
- ‘सोज़े वतन’ के जब्त होने के बाद लेखक ने ‘प्रेमचंद’ नाम स्वीकार किया, और हिंदी में लिखने लगे।
- ‘पंच परमेश्वर’ प्रेमचंद द्वारा स्थापित आदर्शोन्मुख यथार्थवाद की प्रतिनिधि कहानी है।
- विवेच्य कहानी में यथार्थ का बेबाक चित्रण है, लेकिन अंत में हृदयपरिवर्तन के माध्यम से आदर्श की स्थापना की गई है।
- यह कहानी ग्रामीण भारत का प्रामाणिक चित्र प्रस्तुत करती है।

6.5 शब्द संपदा

1. उज्र	=	आपत्ति
2. ऊसर	=	बंजर जमीन
3. ता-हयात	=	जिंदगी भर

4. दूभर	=	मुश्किल
5. धृष्ट	=	ढीठ
6. बैनामा	=	ज़मीन या मकान का विक्रय पत्र
7. मिलकियत	=	जायदाद
8. मुहर्रिर	=	वकील का मुंशी, लिखने वाला
9. रकाबियाँ	=	प्लेटें
10. रहननामा	=	गिरवी रखने का शपथ पत्र
11. वैमनस्य	=	शत्रुता
12. हिब्बा करना	=	अपनी संपत्ति किसी को दे देना

6.6 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. कहानी कला के तत्वों के आधार पर 'पंच परमेश्वर' कहानी की समीक्षा कीजिए।
2. इस कहानी के आधार पर प्रेमचंद के लेखन में प्रयुक्त भाषा-शैली को सोदाहरण समझाइए ।
3. 'पंच परमेश्वर' कहानी का सारांश अपने शब्दों में लिखें।
4. यह कहानी किससे प्रेरित है – यथार्थ, आदर्श या इन दोनों से? अपने मत को तर्क सहित सिद्ध कीजिए।

खंड (ब)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. प्रेमचंद का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
2. 'पंच परमेश्वर' कहानी से लेखक ने क्या संदेश देना चाहा है? स्पष्ट कीजिए।
3. 'पंच की जबान से खुदा बोलता है' – पठित कहानी के आधार पर इस कथन की समीक्षा कीजिए।

खंड (स)

I सही विकल्प चुनिए

1. मित्रता का मूलमंत्र क्या है? ( )

    (अ) समान प्रतिष्ठा (आ) समान व्यवसाय
    (इ) समान विचार (ई) समान आयु

2. 'मृतक भी कहीं उठ सकता है क्या?' यह कथन किसने किसके लिए कहा है? ( )

    (अ)करीमन ने खाला के लिए (आ) कहानीकार ने बैल के लिए
    (इ) अलगू ने समझू के लिए (ई) शुक मंडली ने बैल के लिए

3. पूरा गाँव किसके अनुग्रह का ऋणी था? ( )

    (अ) रामधन मिश्र (आ) अलगू चौधरी
    (इ) जुम्मन शेख (ई) समझू साहू

II रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए

1. खूब .... माँजी, खूब प्याले धोए।

2. कमर झुक कर .... हो गई थी।

3. पंच में .... वास करते हैं।

4. समझू साहू की .... ने बैल की जान ले ली।

III सुमेल कीजिए

(i) प्रेमचंद का जन्म	(क) 1910
(ii) सोज़े वतन	(ख) 1936
(iii) बड़े घर की बेटी	(ग) 1908
(iv) प्रेमचन्द का निधन	(घ) 1880

6.7 पठनीय पुस्तकें

1. पंच परमेश्वर तथा अन्य कहानियाँ. प्रेमचंद.

2. प्रेमचंद और उनका युग. रामविलास शर्मा.

इकाई 7 : ममता (जयशंकर प्रसाद) : एक विश्लेषण

इकाई की रूपरेखा

7.0 प्रस्तावना

7.1 उद्देश्य

7.2 मूल पाठ : ममता (जयशंकर प्रसाद) : एक विश्लेषण

7. 2.1 कहानीकार जयशंकर प्रसाद का परिचय

7. 2.2 कहानी 'ममता' का तात्विक विवेचन

7.2.2.1 कथावस्तु

7.2.2.2 पात्र एवं चरित्र चित्रण

7.2.2.3 देशकाल

7.2.2.4 संवाद योजना

7.2.2.5 उद्देश्य

7.2.2.6 भाषा-शैली

7.2.3 'ममता' : शीर्षक का औचित्य

7.3 पाठ सार

7.4 पाठ की उपलब्धियाँ

7.5 शब्द संपदा

7.6 परीक्षार्थ प्रश्न

7.7 पठनीय पुस्तकें

7.0 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो! आधुनिक काल में साहित्य की केन्द्रीय विधा कहानी को माना जाता है। इससे पहले यह स्थान कविता को प्राप्त था। परंतु आधुनिक काल में मानव जीवन की परिस्थितियाँ बदलने के कारण, विशेष रूप से मुद्रण काला आविष्कार होने से गद्य के विकास को बल मिला। यों तो, गद्य की अनेक विधाएँ हैं, लेकिन मनुष्यता के आरंभिक काल से ही कहानी सुनने सुनाने की पुरानी परंपरा रही है। मनुष्य के इस कथा प्रेमी स्वभाव के कारण ही

आधुनिक युग में कहानी को अग्रणी साहित्य विधा बनने का अवसर मिला है। हिंदी कहानी का इतिहास सौ वर्ष से अधिक का है। जिसमें अनेक लोकप्रिय कहानीकार हुए हैं। जयशंकर प्रसाद भी अत्यंत सफल कहानीकार माने जाते हैं, हालांकि उनकी प्रसिद्धि मुख्य रूप से कवि के रूप में है। प्रस्तुत इकाई में हम उनकी प्रसिद्ध कहानी 'ममता' पर गहन चर्चा करेंगे।

7.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत आप –

- जयशंकर प्रसाद के जीवन और साहित्यिक योगदान से परिचित हो सकेंगे।
- प्रसाद की कहानी 'ममता' के मुख्य कथासूत्रों से अवगत हो सकेंगे।
- विवेच्य कहानी का विश्लेषण कहानी के तत्वों के आधार पर कर सकेंगे।
- विवेच्य कहानी में निहित प्रसाद के जीवन दर्शन और संदेश को समझ सकेंगे।

7.2 मूल पाठ : ममता (जयशंकर प्रसाद) : एक विश्लेषण

प्रिय छात्रो! 'ममता' शीर्षक प्रस्तुत कहानी के रचनाकार जयशंकर प्रसाद हैं। आप जानते ही हैं कि जयशंकर प्रसाद हिंदी कविता में छायावाद के उन्नायक महाकवि हैं। वे एक श्रेष्ठ नाटककार भी हैं। एकांकी के क्षेत्र में भी उनके योगदान से आप परिचित होंगे। इन सब के साथ ही वे उच्च कोटि के कहानीकार भी थे।

7.2.1 कहानीकार जयशंकर प्रसाद का परिचय

जयशंकर प्रसाद का जन्म सन् 1889 ई. में काशी के एक संपन्न व्यवसायी परिवार में हुआ था। उनके पिता देवीप्रसाद जी तम्बाकू और इत्र का व्यापार करते थे। इसी कारण से काशी में इनका परिवार सुँघनी साहु के नाम से प्रसिद्ध था। प्रसाद जी के पिता साहित्य प्रेमी थे। इस कारण से साहित्यिक वातावर्ण प्रसाद जी को अपने घर से ही प्राप्त हुआ। प्रसाद जी ने हिंदी साहित्य की सभी विधाओं में श्रेष्ठ साहित्य की रचना की। कविता, नाटक, एकांकी आदि के साथ साथ उन्होंने कहानी लेखक के रूप में भी अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया। यदि यह कहा जाए कि उन्होंने प्रेमचंद युग में हिंदी कहानी को अपने लेखन द्वारा एक अलग पहचान दिलाई, तो गलत न होगा। कहानीकार के रूप में प्रेमचंद तथा जयशंकर प्रसाद के कहानी लेखन में बहुत अंतर है। जहाँ प्रेमचंद जीवन के चारों ओर फैले यथार्थ को लेकर कहानी लिखते हैं, वहीं प्रसाद जी की रचनाओं में भारत के अतीत का गौरव और भावुकता दिखाई पड़ती है। जयशंकर प्रसाद की कहानियों की प्रमुख विशेषता रही - भारतीय संस्कृति को कहानियों के माध्यम से पाठकों

तक पहुँचाने की कला। प्रसाद जी की मृत्यु सन् 1937 ई. में हुई।

प्रसाद जी की प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं -

1. **काव्य :** झरना, कानन कुसुम, आँसू, लहर,कामायनी
2. **नाटक :** कल्याणी परिणय, चंद्रगुप्त, स्कंदगुप्त, ध्रुवस्वामिनी
3. **चम्पू काव्य :** उर्वशी, प्रेमराज्य
4. **कहानी संग्रह :** छाया, प्रतिध्वनि , आकाशदीप, आँधी, इन्द्रजाल
5. **उपन्यास :** कंकाल, तितली, इरावती (अपूर्ण)
6. **निबंध :** काव्य और कला आदि।

बोध प्रश्न

- प्रेमचंद और जयशंकर प्रसाद की कहानियों में क्या अंतर है?

7.2.2 कहानी 'ममता' का तात्विक विवेचन

छात्रो! आपको मालूम है कि कहानी कला के मुख्य तत्व हैं – कथावस्तु, पात्र परिकल्पना, देशकाल, संवाद, भाषा-शैली और उद्देश्य।

7.2.2.1 कथावस्तु

'ममता' शीर्षक कहानी रोहतास के दुर्ग से प्रारम्भ होती है, जहाँ ममता नाम की विधवा युवती अपने पिता चूड़ामणि के साथ रहती है। चूड़ामणि रोहतास दुर्ग के मंत्री हैं। ममता उनकी इकलौती बेटी है, जो असमय वैधव्य की पीड़ा से व्याकुल रहती है। पिता, पुत्री का यह दुःख सह नहीं पाते हैं। वे किसी भी हालत में पुत्री को सुखी देखना चाहते हैं, लेकिन ऐसा क्या करें कि बेटी को प्रसन्नता मिले, यह उन्हें समझ में नहीं आता है। इसी बीच शेरशाह रोहतास दुर्ग पर आक्रमण करता है। चूड़ामणि अपने राजा के साथ गद्दारी करता हैं और शेरशाह के साथ हाथ मिला लेते हैं। बदले में शेरशाह चूड़ामणि को धन-दौलत देता है, चूड़ामणि सब लाकर बेटी के सामने रख देते हैं। उन्हें लगता है कि बेटी इस धन-दौलत को देखकर प्रसन्न होगी। लेकिन ममता प्रसन्न नहीं होती। इसके विपरीत वह पिता को धन-दौलत शेरशाह को वापस दे देने को कहती है। लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। शेरशाह न केवल रोहतास को जीत लेता है बल्कि वह चूड़ामणि की हत्या भी कर देता है। ममता किसी प्रकार से बच निकलती है और काशी में आकर अपनी झोंपड़ी बनाकर रहने लगती है। इस घटना को कई साल बीत चुके हैं। ममता अपनी झोंपड़ी में अपना जीवन किसी प्रकार से बीता रही है। एक रात अचानक उसकी झोंपड़ी

के सामने एक व्यक्ति आ खड़ा होता है। वह घायल, थका हुआ और भूखा भी था। ममता उसे अपनी झोंपड़ी में आश्रय दे देती है और स्वयं खंडहर में रात बिताती है। उल्लेखनीय है कि वह व्यक्ति भारत का तत्कालीन का सम्राट हुमायूँ था। रात बीतने पर हुमायूँ बाहर ममता की झोंपड़ी से बाहर निकलता है और सैनिकों को ममता को खोज निकालने को कहता है पर ममता छिप जाती है। हुमायूँ के सैनिक उसे नहीं खोज पाते। परंतु जाते-जाते हुमायूँ अपने सैनिकों को ममता की झोंपड़ी की जगह उसे महल बना देने की बात कहता है और वहाँ से चला जाता है।

चौसा के मुगल पठान युद्ध को कई साल बीत चुके थे। ममता अब 70 साल की वृद्धा थी जो मृत्यु के करीब थी। एक दिन कुछ सैनिक उसे खोजते हुए आते हैं। उनको अकबर ने भेजा था- ममता की झोंपड़ी को महल बना देने के लिए। पर वे उस जगह को और ममता को पहचान नहीं पा रहे थे। ममता ने उनको स्थान दिखा दिया और उसकी मृत्यु हो गई।

ममता ने अंतिम समय में जब रुक-रुककर कहा - "मैं नहीं जानती कि वह शंहशाह था, या साधारण मुगल पर एक दिन इसी झोंपड़ी के नीचे वह रहा। मैंने सुना था कि वह मेरा घर बनवाने की आज्ञा दे चुका था। भगवान ने सुन लिया, मैं आज इसे छोड़े जाती हूँ। अब तुम इसका मकान बनाओ या महल, मैं अपने चिर-विश्राम-गृह में जाती हूँ।" यह सुनकर मुगल सैनिक भी आश्चर्यचकित रह गया। ये वाक्य केवल ममता द्वारा कही गई बातें नहीं थे। ये उसकी धर्मनिष्ठा, आत्मसंतोष, साहस और संयम के प्रतीक थीं।

सैनिक आश्चर्य से इस घटना को देखते रहे। वहाँ एक अष्टकोण मंदिर बना और उस पर शिलालेख लगाया गया - "सातों देश के नरेश हुमायूँ ने एक दिन यहाँ विश्राम किया था। उनके पुत्र अकबर ने उनकी स्मृति में यह गगनचुम्बी मंदिर बनाया।"

पर उसमें ममता का नाम कहीं नहीं था। अकबर ने पिता की शान में अष्टकोण मंदिर तो बनवाया, लेकिन फिर भी एक विधवा के आत्मसम्मान, आत्मसंतोष को मुगल साम्राज्य कुचल नहीं सका।

बोध प्रश्न

- ममता से आश्रय माँगने कौन आया था?

7.2.2.2 पात्र एवं चरित्र-चित्रण

विवेच्य कहानी का मुख्य पात्र ममता है। वह एक आदर्श महिला है। अपने चारित्रिक गुणों के द्वारा उसने कहानी को आरंभ से लेकर अंत तक प्रभावित किया है। ममता एक विधवा थी। उसे अपने वैधव्य का शोक तो था। लेकिन उसे अपनी सभ्यता एवं संस्कृति पर अहंकार भी था। वह किसी भी हालत में अपने आत्मसम्मान के साथ समझौता नहीं करने वाली स्वाभिमानी स्त्री थी। जब वह देखती है कि उसके पिता शेरशाह के हाथों बिक चुके हैं तो वह उनका भी

विरोध करती है। उसके लिए उसकी मातृभूमि के सम्मान से अधिक और कुछ महत्वपूर्ण नहीं था। साथ ही वह आत्मसंतुष्ट स्त्री थी। इसी कारण उसे धन दौलत का कोई मोह नहीं था। ममता एक सुबुद्धि सम्पन्न स्त्री थी। अपनी समझदारी के बल पर ही वह रोहतास दुर्ग से बच निकालने में सफल हो पाती है और ऐसी सतर्कता वह तब भी दिखाती है
जब उसे हुमायूँ के सैनिक उसके आदेश पर ईनाम देने के लिए खोजते हैं। ममता में वीरता के साथ-साथ दया भाव भी था। इसीलिए वह घायल हुमायूँ के लिए अपनी झोंपड़ी में सुरक्षित रहने की व्यवस्था कर देती है।

ममता ने हुमायूँ की सहायता की क्योंकि उस समय वैसा करना उसका धर्म था। लेकिन न तो उसने मुगलों पर विश्वास किया था न अपने पिता के हत्यारे पठानों को माफ किया था। इसी कारण वह मुगल सेना से बचने के लिए पशुओं के रहने के स्थान पर जाकर छिप गई थी। और यह जानकर भी कि हुमायूँ उसके लिए पक्का मकान बनवाना चाहता है, वह बाहर नहीं निकली क्योंकि उसके मन में मुगलों के लिए क्षमाभाव और विश्वास भाव दोनों नहीं थे।

ममता कहानी की नायिका है। परंतु चूड़ामणि को भी नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता। कहानी के प्रारंभ में भले ही यह लगा कि वह गद्दार है लेकिन कहानी जैसे-जैसे आगे बढ़ी यह बात स्पष्ट हो गई कि पिता की चिंता ने भले ही उससे गद्दारी करवाई हो, परंतु उसमें वीरता की कोई कमी नहीं थी। दुर्ग की स्त्रियों के सम्मान की रक्षा के लिए उसने मुगलों के साथ युद्ध करते हुए अपने प्राण का बलिदान दे दिया और सिद्ध कर दिया कि पुत्री के मोह ने भले ही उन्हें कमज़ोर कर दिया था लेकिन वह धनलोलुप नहीं था।

बोध प्रश्न

- ममता के चरित्र की क्या विशेषता है?
- आपके विचार से चूड़ामणि कैसा व्यक्ति था?

7.2.2.3 देशकाल

'ममता' कहानी का संबंध भारत के अतीत से है। कहानीकार ने अत्यंत प्रामाणिक ढंग से यह दिखाया है कि मध्यकाल में किस प्रकार से मुगल और पठान आपस में लड़ रहे थे, और मुगल किस प्रकार से छल, बल, कौशल के द्वारा देशी राजाओं के राज्यों को हड़प रहे थे। साथ ही साथ सोन नदी के प्राकृतिक सौंदर्य के साथ प्रसाद जी ने एक विधवा के मन के हाहाकार को जिस प्रकार से जोड़ा है, वह अपने आप में अनोखा है। इस कहानी के द्वारा यह बात भी सामने आई है कि मुगलकाल में स्त्रियों की दशा, विशेषकर विधवा स्त्रियों की दशा बहुत खराब थी। मुगलों के भारत में आने के बाद भारतीय स्त्री को अपने धर्म, मान्यताओं तथा रीति-रिवाजों को सुरक्षित रखने की चिंता हमेशा बनी रहती थी। जैसा कि हमने देखा ममता अपने जीवन के अंतिम क्षण तक अपने एकमात्र सहारे अपनी झोंपड़ी के लिए चिंतित थी क्योंकि उसने सुना था कि हुमायूँ

ईनाम के रूप में उसकी झोंपड़ी के स्थान पर उसे पक्का मकान बनवा देना चाहता था। लेकिन ममता ऐसा कुछ भी नहीं चाहती थी। एक तरफ युद्ध का वातावरण है तो दूसरी ओर एक विधवा स्त्री के त्याग, संतोष, वीरता और दया धर्म का चित्रण। इस प्रकार, प्रसाद जी ने देशकाल और उससे जुड़े परिवेश का सजीव चित्र प्रस्तुत किया है।

बोध प्रश्न

- मुगलकाल में स्त्रियों की दशा कैसी थी?

7.2.2.4 संवाद योजना

ममता कहानी की संवाद योजना सशक्त है। इस कहानी की नायिका एक विधवा स्त्री है जो पग-पग पर लाचार है। परंतु वह अपनी लाचारी भी किसी को दिखा नहीं सकती। पिता को कहेगी तो वे और दुखी होंगे और समाज के सामने कहेगी तो वह भी उल्टे उसे ही लांछित करेगा ऐसे में उस स्त्री के संवाद कैसी होने चाहिए, इस बात का ध्यान लेखक ने कहानी के प्रारम्भ से लेकर अंत तक रखा है। जैसे धर्म को महत्व प्रदान करते हुए ममता कहती है, “तो क्या आपने म्लेच्छ का उत्कोच स्वीकार कर लिया? पिताजी यह अनर्थ है, अर्थ नहीं, लौटा दीजिए। पिताजी! हम लोग ब्राह्मण हैं, इतना सोना लेकर क्या करेंगे?”

“हे भगवान! तब के लिए! विपद के लिए! इतना आयोजन! परम पिता की इच्छा के विरुद्ध इतना साहस! पिताजी, क्या भीख न मिलेगी? क्या कोई हिन्दू भू-पृष्ठ पर न बचा रह जायेगा, जो ब्राह्मण को दो मुट्ठी अन्न दे सके? यह असंभव है। फेर दीजिए पिताजी, मैं काँप रही हूँ- इसकी चमक आँखों को अंधा बना रही है।”

कहने को तो ममता हिन्दू समाज की वह विधवा है जिसे लोग अभिशाप और अपशकुन ही मानते हैं। लेकिन उसके संवादों से यह स्पष्ट है कि वह आत्मगौरव से युक्त और निर्लोभ स्त्री है। उसके संवाद वस्तुतः एक वीरांगना के मन की बात हैं, जो आत्मसम्मान के साथ समझौता करने को कदापि तैयार नहीं। माना कि, चूड़ामणि ने अपने राजा के साथ गद्दारी की थी परंतु उसने अपने लिए कुछ नहीं किया था। एक पिता अपनी विधवा पुत्री के भविष्य को लेकर चिंतित था और इसी चिंता ने उसे गद्दार बना दिया। पिता-पुत्री के बीच के संवाद को देखने से एक पिता की मनोदशा को आसानी से समझा जा सकता है -

“इस पतनोन्मुख प्राचीन सामंत-वंश का अंत समीप है, बेटी! किसी भी दिन शेरशाह रोहिताश्व पर अधिकार कर सकता है; उस दिन मंत्रित्व न रहेगा, तब के लिए बेटी!”

प्रसाद जी की संवाद योजना की यही तो विशेषता है। बहुत भारी-भरकम शब्द योजना का सहारा प्रसाद जी ने नहीं लिया, लेकिन कम से कम शब्दों में उन्होंने ऐसी संवाद योजना की कि एक पिता की सारी बेबसी पाठक के समक्ष आ जाती है।

प्रसाद जी ने अपनी कहानियों के द्वारा भारतीय सभ्यता और संस्कृति को पाठकों तक पहुँचाया है। 'ममता' कहानी के द्वारा भी उन्होंने यही किया है। ममता के माध्यम से कहानीकार ने भारतीय सभ्यता और संस्कृति के प्रमुख गुणों दया, क्षमा आदि पर प्रकाश डाला है। ममता के स्वकथन को इस संदर्भ में देखा जा सकता है -

“मैं ब्राह्मणी हूँ, मुझे तो अपने धर्म अतिथि देव की उपासना का पालन करना चाहिए। परंतु यहाँ ... हीं-नहीं ये सब विधर्मी दया के पात्र नहीं। परंतु यह दया तो नहीं...कर्तव्य करना है। तब?” ममता ने मन में कहा-“यहाँ कौन दुर्ग है! यही झोंपड़ी न; जो चाहे ले-ले, मुझे तो अपना कर्तव्य करना पड़ेगा।” वह बाहर चली आई और मुगल से बोली - “जाओ भीतर, थके हुए भयभीत पथिक! तुम चाहे कोई हो, मैं तुम्हें आश्रय देती हूँ। मैं ब्राह्मण कुमारी हूँ; सब अपना धर्म छोड़ दें; तो मैं भी क्यों छोड़ दूँ?”

प्रसाद जी ने अपनी संवाद योजना के द्वारा सत्य की स्थापना भी की है। इतिहास गवाह है कि राजाओं-महाराजाओं ने अपनी संतुष्टि के लिए न जाने कितने आक्रमण किए, कितने मंदिर-मस्जिद बनवाए। लेकिन इन सबमें उन्होंने कभी साधारण जनता की सुख-सुविधा, मान-सम्मान, उनके बलिदान को महत्व नहीं दिया। नीचे दिया गया संवाद इसी सच्चाई का प्रतीक है-

"वहाँ एक अष्टकोण मंदिर बना; और उस पर शिलालेख लगाया गया - ‘सातों देश के नरेश हुमायूँ ने एक दिन यहाँ विश्राम किया था। उनके पुत्र अकबर ने उनकी स्मृति में यह गगनचुंबी मंदिर बनाया।" पर उसमें ममता का कहीं नाम नहीं।

ऊपर विश्लेषित संवादो के आधार पर यह स्पष्ट है कि जयशंकर प्रसाद केवल पात्रों के लिए संवाद लिखते नहीं थे, वे अपने पात्रों के संवादों के द्वारा भावनाओं, सच्चाइयों, राजनैतिक, सामाजिक, ऐतिहासिक परिस्थितियों पर भी प्रकाश डालने का अनोखा कार्य करने में सिद्ध हस्त थे।

बोध प्रश्न

- ममता के संवादों से क्या पता चलता है?

7.2.2.5 उद्देश्य

कोई भी साहित्यकार केवल अपने आनंद के लिए साहित्य रचना नहीं करता। साहित्य

समाज का आईना है, इसलिए साहित्यकार का समाज के प्रति दायित्व रहता है। इसी दायित्व के कारण साहित्यकार किसी उद्देश्य को लेकर ही साहित्य रचना का काम करता है। इसी बात को हम जयशंकर प्रसाद द्वारा लिखित 'ममता' कहानी में भी देख सकते हैं। प्रसाद जी ने ममता कहानी की रचना कुछ उद्देश्यों को लेकर ही की है।

प्रसाद जी का उद्देश्य अवश्य ही हुमायूँ, शेरशाह आदि की सत्ता लालसा को दिखाना रहा। इसी कारण से उन्होंने कहानी के प्रारंभ से लेकर अंत तक जहाँ-जहाँ संभव हुआ है रोहतास युद्ध, मुगल-पठान युद्ध आदि का वर्णन किया है। इन युद्धों के द्वारा उन्होंने इस बात पर भी प्रकाश डाला है कि युद्ध तो राजा करते हैं लेकिन सबसे अधिक नुकसान साधारण प्रजा को उठाना पड़ता है।

प्रसाद जी का उद्देश्य मुगलकाल में भारतीय समाज में स्त्रियों की दशा विशेषकर विधवा स्त्रियों की दुर्दशा को दिखाना भी है। उस काल में, ऐसी बेसहारा स्त्रियों के जीवन में सुरक्षा की कितनी कमी थी, इस बात पर भी प्रकाश डालना लेखक का उद्देश्य है। 'ममता' कहानी की नायिका 'ममता' के जीवन की परिस्थितियों के द्वारा उन्होंने अपने इस उद्देश्य को पूरा किया है।

इसमें कोई संदेह नहीं कि प्रसाद जी ने अपनी कहानियों द्वारा भारतीय संस्कृति और सभ्यता का गुणगान किया है। प्रस्तुत कहानी भी इसका अपवाद नहीं है। 'ममता' में भी प्रसाद जी का एक उद्देश्य भारतीय स्त्रियों के आदर्शों को पाठकों तक पहुँचाना रहा और उन्होंने कहानी की नायिका की चारित्रिक विशेषताओं के द्वारा अपने इस उद्देश्य को बखूबी पूरा किया है। माना कि ममता विधवा और लाचार थी, लेकिन अपनी इस लाचारी को उसने कभी किसी के सामने उजागर नहीं किया। वह हमेशा अपने आत्मसम्मान, अपने धर्म की रक्षा का प्रयास करती हुई नज़र आती है। जीवन में उसने अनेक कठिन परिस्थितियों को देखा, लेकिन उन कठिन परिस्थितियों में भी उसने कभी धैर्य, साहस, बुद्धि, करुणा आदि भावनाओं का त्याग नहीं किया।

प्रसाद जी का उद्देश्य अपने पाठकों को यही समझाना रहा कि जीवन में कई बार कठिन परिस्थितियाँ भी आती हैं, उसी समय मनुष्य की असली परीक्षा होती है। मनुष्य को कठिन परिस्थितियों में भी अपने सद्गुणों अर्थात अच्छे गुणों का त्याग नहीं करना चाहिए। प्रसाद जी 'ममता' कहानी में अपने लेखाकिय उद्देश्यों में सिद्धि में पूर्ण सफल सिद्ध होते हैं।

बोध प्रश्न

- 'ममता' कहानी के क्या-क्या उद्देश्य हैं?

7.2.2.6 भाषा-शैली

'ममता' का अध्ययन करते हुए यह बात ध्यान खींचती है कि लेखक ने पृष्ठभूमि का निर्माण करने के लिए जहाँ काव्यात्मक भाषा-शैली का प्रयोग किया है, वहीं पात्रों के संवादों में इस बात का पूरा ध्यान रखा है कि पात्रों की भाषा उनके सामाजिक स्तर और मनोभाव के अनुकूल हो। कहानी का कौन सा पात्र किस प्रकार की भाषा-शैली का प्रयोग करेगा इसका ध्यान प्रसाद जी ने कहानी के प्रारंभ से लेकर अंत तक रखा। प्रकृति वर्णन की सजीवता कहानी के प्रारंभ में ही हमें दिखाई पड़ती है-

"शोण के प्रवाह और उसके कलनाद में ममता अपना जीवन मिलाने में बेसुध थी।" यहाँ सोन नदी को ही शुद्ध संस्कृतनिष्ठ भाषा में 'शोण' कहा गया है। लेखक ने प्रकृति चित्रण तथा एक विधवा स्त्री के एकाकी जीवन दोनों को एक साथ एक ही वाक्य में जोड़ दिया है। प्रसाद जी संस्कृतनिष्ठ भाषा का प्रयोग अधिक करनेवाले साहित्यकार रहे हैं। ममता कहानी में उनकी यह विशेषता दिखाई पड़ती है। जैसे- "वह रोहतास-दुर्गपति के मंत्री चूड़ामणि की अकेली दुहिता थी, फिर उसके लिए कुछ अभाव होना असंभव था, परंतु वह विधवा थी - हिन्दू-विधवा संसार में सबसे तुच्छ निराश्रय प्राणी है- तब उसकी विडंबना का कहाँ अंत था?"

प्रस्तुत वाक्य है तो प्रश्नवाचक लेकिन प्रश्न का उत्तर भी प्रश्न के भीतर ही हमें मिल जाता है। इस तरह से भाषा को भावना के साथ जोड़ने में प्रसाद जी हमेशा आगे रहे हैं। प्रसाद जी को भारतीय संस्कृति से, शुद्ध खड़ी बोली, संस्कृतनिष्ठ भाषा से इतना प्रेम रहा कि उन्होंने दंभी मुगलों से भी उसी भाषा संभाषण कराया। उदाहरण देखिए-

'परंतु उस व्यक्ति ने कहा- "माता! मुझे आश्रय चाहिए।"

"तुम कौन हो?" स्त्री ने पूछा।

"मैं मुगल हूँ। चौसा-युद्ध में शेरशाह से विपन्न होकर रक्षा चाहता हूँ। इस रात अब आगे चलने में असमर्थ हूँ।"...स्वस्थ होकर मुगल ने कहा- "माता! तो फिर मैं चला जाऊँ?" मुगल अपनी तलवार टेककर खड़ा हुआ। ममता ने कहा- "क्या आश्चर्य है कि तुम भी छल करो; ठहरो।"

"छल! नहीं, तब नहीं स्त्री! जाता हूँ, तैमूर का वंशधर स्त्री से छल करेगा? जाता हूँ। भाग्य का खेल है।"

तो, आपने देखा यहाँ एक मुगल यानि हुमायूँ और एक हिन्दू विधवा स्त्री के बीच बातें हुईं लेकिन लेखक ने अपनी भाषा-शैली के साथ कोई समझौता नहीं किया।

प्रसाद जी ने अपनी भाषा-शैली के द्वारा स्थान-स्थान पर भारतीय धार्मिक मान्यताओं की विशेषता पर भी प्रकाश डाला है। भारतीयों के लिए सदियों से ईश्वर केवल पत्थर की मूर्ति नहीं बल्कि उनका सब कुछ रहा। भारतीय धर्म परंपरा में ईश्वर को ही मनुष्य का पालनहार, सबसे बड़ा मित्र आदि माना गया है और ईश्वर ने भी यही कहा है-

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।।

अर्थ : जो अनन्य भक्त केवल मेरी चिंता करते हुए मेरी उपासना करते हैं, मेरे लिए निरंतर प्रयास करनेवाले उन भक्तों को मैं अपने में धारण करता हूँ।

गीता के इस ज्ञान को 'ममता' कहानी की नायिका की संध्या पूजा के माध्यम से लेखक ने हम तक पहुँचाया है।

तो छात्रो! अब आप समझ गए होंगे कि प्रसाद जी की भाषा-शैली को क्यों गंभीर और भारतीय सभ्यता और संस्कृति के निकट की वस्तु माना जाता है।

बोध प्रश्न

- इस कहानी की भाषा-शैली की क्या विशेषता है?

7.2.3 शीर्षक का औचित्य

विवेच्य कहानी का शीर्षक कहानी की नायिका के नाम के आधार पर रखा गया है। क्योंकि कहानी के ऐतिहासिक, धार्मिक आदि सभी पक्षों को ममता ने अपनी चारित्रिक विशेषताओं के द्वारा प्रभावित किया है। यह कहानी ममता नामक केंद्रीय पात्र के विवरण के साथ ही आरंभ होती है। यथा –

"रोहतास-दुर्ग के प्रकोष्ठ में बैठी हुई युवती ममता, शोण के तीक्ष्ण गम्भीर प्रवाह को देख रही है। ममता विधवा थी। उसका यौवन शोण के समान ही उमड़ रहा था। मन में वेदना, मस्तक में आँधी, आँखों में पानी की बरसात लिये, वह सुख के कण्टक-शयन में विकल थी। वह रोहतास-दुर्गपति के मंत्री चूड़ामणि की अकेली दुहिता थी, फिर उसके लिए कुछ अभाव होना असम्भव था, परन्तु वह विधवा थी-हिन्दू-विधवा संसार में सबसे तुच्छ निराश्रय प्राणी है-तब उसकी विडम्बना का कहाँ अन्त था? चूड़ामणि ने चुपचाप उसके प्रकोष्ठ में प्रवेश किया। शोण के प्रवाह में, उसके कल-नाद में अपना जीवन मिलाने में वह बेसुध थी। पिता का आना न जान सकी।"

इसके बाद संपूर्ण कहानी ममता के जीवन के चारों ओर घूमती नज़र आती है। 'ममता' मनुष्य जीवन की एक भावना का भी नाम है। विशेषकर, 'ममता' नामक भावना को स्त्री का आभूषण भी माना जाता है। बेटी, माँ, पत्नी, सेविका आदि अनेक रूपों में स्त्री अपनी इस भावना द्वारा दूसरों के जीवन को सुंदर बनाती है। नायिका ममता, में भी 'ममता' नामक भावना की कोई कमी नहीं। उसे अपनी मातृभूमि से प्रेम था। अपने पिता और परिवार के लिए भी वह ममतामयी बेटी ही थी। ममता ने अपरिचित मुगल सैनिक (जो वास्तव में हुमायूँ था) को आश्रय देकर, उसे पानी पिला कर जिस प्रकार उसके प्राणों की रक्षा की इससे उसका चरित्र आदर्शपूर्ण बन गया है। करुणा और वात्सल्य भारतीय संस्कृति और सभ्यता के केन्द्रीय मूल्य हैं। कहानी की नायिका ने अपने चरित्र द्वारा इन महान जीवन मूल्यों को कहानी में स्थापित किया है। ममता रहती थी झोंपड़ी में। लेकिन झोंपड़ी में रहते हुए भी वह जिस प्रकार से आसपास के गाँववालों की सहायता निःस्वार्थ भाव से करती रही, वह सबके लिए प्रेरणा का विषय है। इसलिए कहानी का शीर्षक 'ममता' पूर्णतः उचित सिद्ध होता है।

बोध प्रश्न

- क्या आप कहानी के शीर्षक से सहमत है?

7.3 पाठ सार

विवेच्य कहानी 'ममता' प्रसिद्ध छायावादी साहित्यकार जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित है। वे एक युगप्रवर्तक साहित्यकार थे। उन्होंने जहाँ 'आँसू' और 'कामायनी' जैसे कालजयी काव्यों की रचना की, वहीं 'चंद्रगुप्त' और 'ध्रुवस्वामिनी' जैसे नाटक रचकर अपार ख्याति अर्जित की। कथाकार के रूप में उनकी प्रसिद्धि जहाँ 'तितली' और 'कंकाल' जैसे यथार्थवादी उपन्यासों पर आधारित है, वहीं कहानी क्षेत्र में जिन कहानियों ने उन्हें लोकप्रियता दिलाई उनमें 'आकाशदीप', 'ममता' और 'मधुआ' जैसी अनेक कहानियाँ सम्मिलित हैं। उनका जन्म सन् 1889 ई. में काशी के एक संपन्न व्यवसायी परिवार में हुआ था। उनके पिता देवीप्रसाद जी तंबाकू और इत्र का व्यापार करते थे। इसी कारण से काशी में इनका परिवार सुँघनी साहु के नाम से प्रसिद्ध था। प्रसाद जी के पिता साहित्य-प्रेमी थे। इस कारण से साहित्यिक वातावरण प्रसाद जी को अपने घर से ही प्राप्त हुआ। जैसा पहले बताया जा चुका है, प्रसाद जी ने हिंदी साहित्य की सभी विधाओं में श्रेष्ठ साहित्य की रचना की। कविता, नाटक, एकांकी आदि के साथ साथ उन्होंने कहानी लेखक के

रूप में भी अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया। यदि यह कहा जाए कि उन्होंने प्रेमचंद युग में हिंदी कहानी को अपने लेखन द्वारा एक अलग पहचान दिलाई, तो गलत न होगा। याद रहे कि कहानीकार के रूप में प्रेमचंद तथा जयशंकर प्रसाद के कहानी लेखन में बहुत अंतर है। जहाँ प्रेमचंद जीवन के चारों ओर फैले यथार्थ को लेकर कहानी लिखते हैं, वहीं प्रसाद जी की रचनाओं में भारत के अतीत का गौरव और भावुकता दिखाई पड़ती है। जयशंकर प्रसाद की कहानियों की प्रमुख विशेषता रही - भारतीय संस्कृति को कहानियों के माध्यम से पाठकों तक पहुँचाने की कला।

जयशंकर प्रसाद की कहानी 'ममता' का गहन अध्ययन करते हुए हमने देखा कि रोहतास अर्थात रोहिताश्व दुर्ग को कैसे छल द्वारा शेरशाह ने जीता। लेकिन दुर्ग जीतने के बाद भी वह दुर्ग के सेनापति चूड़ामणि की इकलौती बेटी ममता के आत्मसममान और उसकी वीरता को पराजीत न कर सका। ममता और हुमायूँ का आमना-सामना तब हुआ जब चौसा युद्ध में शेरशाह से हारकर हुमायूँ जान बचाने के लिए आश्रय खोज रहा था। जिस शेरशाह ने छल से ममता के पिता की हत्या की थी उसी से हार कर हुमायूँ आश्रय के लिए ममता के दरवाजे पर खड़ा था। ममता ने उसे आश्रय देकर अपना धर्म निभाया। इससे कहानी में उसका चरित्र आदर्शवान बन गया। ममता ने अपनी चारित्रिक विशेषताओं द्वारा बार-बार पाठक को यह शिक्षा दी है कि विपरीत परिस्थितियों में ही मनुष्य की असली परीक्षा होती है और आत्मसंतोष से बड़ा कोई धन नहीं है। हमने इस पाठ में यह भी देखा कि प्रसाद जी ने जितनी समग्रता के साथ एक तरफ युद्ध के वातावरण को दर्शाया है, तो दूसरी तरफ उन्होंने एक विधवा स्त्री की लाचारी के साथ-साथ उसके त्याग, संतोष, वीरता, दया आदि गुणों को भी दर्शाया है। हुमायूँ ने ममता को 'माता' कहकर इस कहानी में संबोधित किया है यह संबोधन इस बात का प्रतीक है कि स्त्री मनोरंजन की वस्तु नहीं, उसके शरीर को बलपूर्वक जीतने में कोई वीरता नहीं क्योंकि वह मातृस्वरूपा है।

प्रस्तुत कहानी के द्वारा हमें प्रसाद जी की संवाद योजना, भाषा-शैली को समझने का भी अवसर मिला है। प्रसाद जी ने पात्र, स्थान, काल आदि के अनुसार ही संवादों का चयन किया है लेकिन भाषा-शैली के साथ उन्होंने कोई समझौता नहीं किया है। यहाँ उन्होंने संस्कृतनिष्ठ शुद्ध खड़ी बोली को ही महत्व प्रदान किया है। कहानी के अंत में लेखक ने एक आदर्श भी स्थापित किया है, वह यह कि अकबर चाहता तो ममता की झोंपड़ी को तोड़कर मस्जिद भी बनवा सकता था लेकिन 'अष्टकोण मंदिर' इस बात का भी संकेत है कि मानवता से बढ़कर कोई धर्म नहीं। प्रत्येक धर्म, जाति, सम्प्रदाय आदि में अच्छे-बुरे, क्रूर-दानी मनुष्य मिलते हैं। यह मानव जाति की विशेषता है इसके लिए धर्म दोषी नहीं। अतः हमारा प्रयास होना चाहिए कि हम धर्म की पहली शिक्षा के रूप में मानवता को अपना सके।

7.4 पाठ की उपलब्धियाँ

प्रिय छात्रो! इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं -

1. छायावाद की शीर्षस्थ कवि जयशंकर प्रसाद केवल अपने समय के श्रेष्ठ कवि ही नहीं थे, बल्कि उन्होंने गद्य साहित्य को भी उसी प्रकार समृद्ध किया जिस प्रकार पद्य साहित्य को।
2. जयशंकर प्रसाद ने नाटक, एकांकी, निबंध, कहानी और उपन्यास लिखकर हिंदी गद्य को संपन्नतर बनाया।
3. कहानीकार के रूप में प्रसाद ने विशेष रूप से ऐतिहासिक पृष्ठभूमि वाली कहानियाँ अधिक रची।
4. विवेच्य कहानी 'ममता' भी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के लिए जानी जाती है।
5. इस कहानी में पठानों और मुगलों के संघर्ष की पृष्ठभूमि में एक स्वाभिमानी अकेली स्त्री के गौरव को रेखांकित किया गया है।

7.5 शब्द संपदा

1. अश्वारोही = घुड़सवार
2. कण्टक शयन = काँटों का बिस्तर
3. गगनचुम्बी = आसमान छूने वाला।
4. तीक्ष्ण = धारदार
5. दुहिता = बेटी
6. पद शब्द = पैरों की आवाज़
7. प्रकोष्ठ = कमरा
8. भू-पृष्ठ = धरती
9. व्यथित = दुखी
10. शिलालेख = पत्थर पर लिखा लेख
11. शोण = सोन नदी
12. समीप = निकट, पास

7.6 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. ममता कहानी का सारांश लिखिए।

2. 'ममता' कहानी की संवाद योजना की विशेषताएँ उदाहरण सहित समझाइए।

3. प्रसाद जी की भाषा-शैली पर 'ममता' कहानी के आधार पर प्रकाश डालिए।

खंड (ब)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. ममता की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

2. 'ममता' कहानी में वर्णित देशकाल का परिचय दीजिए।

3. ममता कहानी के शीर्षक के औचित्य पर चर्चा कीजिए।

4. ममता कहानी के उद्देश्य की व्याख्या कीजिए।

खंड (स)

I सही विकल्प चुनिए

1. प्रसाद जी का जन्म किस वर्ष में हुआ? ( )
   अ) 1889 ई. ब) 1981 ई. स) 1900 ई. ड़) 1901 ई.

2. प्रसाद जी का कौन सा उपन्यास अपूर्ण है? ( )
   अ) इरावती ब) कामायनी स) कंकाल ड़) छाया

3. ममता के पिता का नाम क्या था? ( )
   अ) शिवसिंह ब) चूड़ामणि स) शेरसिंह ड़) चूड़ासिंह

II रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए

1. प्रसाद जी की मृत्यु सन ....ई. में हुई।

2. चौसा का युद्ध शेरशाह और............................. के बीच हुआ था।

3. झोंपड़ी के स्थान पर .... मंदिर बनाया गया।

4. अष्टकोण मंदिर .... ने बनवाया।

III सुमेल कीजिए

i) देवी प्रसाद	चंपू काव्य
ii) कंकाल	सुँघनी साहु
iii) रोहतास	उपन्यास
iv) उर्वशी	दुर्ग

7.7 पठनीय पुस्तकें

1. हिंदी कहानी का इतिहास. गोपाल राय.

2. कथाकारों की दुनिया. ऋषभदेव शर्मा.

3. हिंदी गद्य : विन्यास और विकास. रामस्वरूप चतुर्वेदी.

इकाई 8 : आतिथ्य (यशपाल) : एक विश्लेषण

इकाई की रूपरेखा

8.0 प्रस्तावना

8.1 उद्देश्य

8.2 मूलपाठ : आतिथ्य (यशपाल) : एक विश्लेषण

8.2.1 कहानीकार यशपाल का परिचय

8.2.2 'आतिथ्य' का तात्विक विवेचन

8.2.2.1 कथावस्तु

8.2.2.2 पात्र एवं चरित्र चित्रण

8.2.2.3 देशकाल

8.2.2.4 संवाद योजना

8.2.2.5 उद्देश्य

8.2.2.6 भाषा शैली

8.2.3 शीर्षक का औचित्य

8.3 पाठ सार

8.4 पाठ की उपलब्धियाँ

8.5 शब्द संपदा

8.6 परीक्षार्थ प्रश्न

8.7 पठनीय पुस्तकें

8.0 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो! मनुष्यता के आरंभ से अब तक कहानी कहने और सुनने की प्रवृत्ति सभ्यता के साथ-साथ विकसित होती गई है। इस प्रवृत्ति ने पहले मौखिक कहानियों को जन्म दिया और फिर क्रमशः लिखित कहानियाँ सामने आई। भारत में आख्यायिका के रूप में कहानी का इतिहास काफी समृद्ध रहा है। लेकिन आधुनिक कहानी के सूत्र पाश्चात्य 'शॉर्ट स्टोरी' से भी जुड़े हुए हैं। आधुनिक हिंदी गद्य की केंद्रीय विधा के रूप में कहानी को स्थापित करने में जिन लेखकों

का योगदान अविस्मरणीय है, उनमें प्रगतिवादी कथाकार यशपाल का महत्वपूर्ण स्थान है। यशपाल को प्रेमचंदोत्तर काल का अग्रणी कथाकार माना जाता है। वे विद्यार्थी जीवन से ही स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े रहे। उनकी अनेक रचनाओं में ब्रिटिश साम्राज्यवाद के प्रति गुस्से और नफरत को देखा जा सकता है। आरंभ में उन्हें महात्मा गांधी के विचारों ने काफी प्रभावित किया। लेकिन मैट्रिक के बाद नेशनल कॉलेज, लाहौर में वे भगत सिंह, सुखदेव और भगवती चरण वोहरा के संपर्क में आए। नौजवान भारत सभा की गतिविधियों में सक्रिय हिस्सेदारी के इस दौर में उनका गांधी और गांधीवाद से मोह भंग हुआ। साहित्यिक दृष्टि से वे हिंदी कथा साहित्य में प्रगतिवाद के पोषक माने जाते है। प्रस्तुत इकाई में हम उनकी एक रोचक कहानी 'आतिथ्य' का अध्ययन करेंगे।

8.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप –

- कहानीकार यशपाल के जीवन के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- यशपाल की रचनाओं से परिचित हो सकेंगे।
- विवेच्य कहानी 'आतिथ्य' की विषय वस्तु से अवगत हो सकेंगे।
- विवेच्य कहानी 'आतिथ्य' की समीक्षा तत्वों के आधार पर कर सकेंगे।
- विवेच्य कहानी के उद्देश्य और शीर्षक का औचित्य समझ सकेंगे।

8.2 मूल पाठ : 'आतिथ्य' (यशपाल) : एक विश्लेषण

किसी रचना का विवेचन करने से पूर्व यह आवश्यक होता है कि उसके रचनाकार के व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय प्राप्त कर लिया जाए। आगे हम पहले कहानीकार यशपाल के जीवन और रचनाओं का परिचय प्राप्त करेंगे। और उसके बाद विवेच्य कहानी पर विस्तार से चर्चा की जाएगी।

8.2.1 कहानीकार यशपाल का परिचय

यशपाल का नाम आधुनिक हिंदी साहित्य के कथाकारों में प्रमुख है। प्रेमचंद के बाद हिंदी के सुप्रसिद्ध प्रगतिशील कथाकारों में इनका नाम लिया जाता है। यशपाल का जन्म 3 दिसम्बर, 1903 को पंजाब में, फिरोजपुर छावनी में एक साधारण खत्री परिवार में हुआ था। उनकी माँ श्रीमती प्रेमदेवी फिरोजपुर छावनी के ही एक अनाथालय के एक स्कूल में अध्यापिका थीं, और उनके पिता हीरालाल एक साधारण कारोबारी व्यक्ति थे। पिता से अधिक यशपाल की

माँ उनकी शिक्षा-दीक्षा के प्रति सजग थीं। यशपाल की मानसिकता के निर्माण में गरीबी के प्रति तीखी घृणा, आर्य समाज और स्वाधीनता आंदोलन के प्रति उपजे आकर्षण का प्रभाव निहित है जिसके मूल में उनकी माँ और इस परिवेश की एक निर्णायक भूमिका रही है। यशपाल के रचनात्मक विकास में उनके बचपन में भोगी गरीबी की एक विशिष्ट भूमिका दिखाई देती है। अपने विद्यार्थी जीवन से ही यशपाल क्रांतिकारी आंदोलन से जुड़े रहे। इस कारण उन्हें कई बार जेल भी जाना पड़ा। बाद में उन्होंने बंदूक को छोड़कर साहित्य को अपना शस्त्र बनाया। 'मेरी तेरी उसकी बात' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ। सन् 1970 में उन्हें पद्‌भूषण से भी सम्मानित किया गया।

यशपाल की मृत्यु 26 दिसंबर 1976 को हुई।

यशपाल द्वारा लिखित रचनाओं की जानकारी नीचे प्रस्तुत की जा रही है-

उपन्यास : दिव्या, देशद्रोही, झूठा सच, अमिता, मेरी तेरी उसकी बात आदि।

कहानी संग्रह : पिंजरे की उड़ान, फूलो का कुर्ता, धर्मयुद्ध आदि।

व्यंग्य संग्रह : चक्कर क्लब।

बोध प्रश्न

- संक्षेप के मानसिक विकास पर किन बातों का प्रभाव पड़ा?
- यशपाल को साहित्य अकादेमी पुरस्कार किस पुस्तक पर मिला?

8.2.2 'आतिथ्य' का तात्विक विवेचन

छात्रो! कहानी विधा के स्वरूप का अध्ययन करते हुए आपने उसके तत्वों के बारे में पढ़ा है। ये तत्व हैं – कथावस्तु, पात्र एवं चरित्र चित्रण, संवाद योजना, देशकाल, उद्देश्य और भाषा शैली। किसी कहानी की समीक्षा जब इन तत्वों के आधार पर की जाती है, तो उसे तात्विक विवेचन कहते हैं। आगे विवेच्य कहानी 'आतिथ्य' की तात्विक विवेचना की जा रही है।

8.2.2.1 कथावस्तु

'आतिथ्य' यशपाल जी के द्वारा लिखित कहानी है। यह कहानी उनके प्रसिद्ध कहानी संकलन 'फूलो का कुरता' से ली गई है। प्रस्तुत कहानी की कथावस्तु रामशरण नामक प्रमुख पात्र के इर्द गिर्द बुनी गई है। रामशरण भारत सरकार के अर्थ विभाग में क्लर्क थे। इस विभाग में काम करते हुए रामशरण को तीन वर्ष बीत चुके थे। रामशरण का जन्म तो मेरठ जिले के एक

गाँव में हुआ था, जहाँ हरियाली की कोई कमी नहीं थी, लेकिन शहर और सरकारी नौकरी की सुख-सुविधा के सामने गाँव का आनंद तो फीका पड़ता ही है। रामशरण के साथ भी ऐसा ही था, उसे अपने गाँव से प्रेम था। गाँव से लाए हुए घी को खाकर ही वह बलवान बना हुआ था। परंतु उसके पास सरकारी नौकरी के कारण जो सुख-सुविधाएँ थीं, वे उसे गाँव में वापस लौट जाने से रोकती थीं। प्रतिवर्ष गर्मी के मौसम में 6 महीने तक शिमला जाकर रहने की सुविधा उसे मिली हुई थी, और 6 महीने दिल्ली में रहकर वहाँ की रौनक देखने का आनंद तो रामशरण के लिए कुछ और ही था। रामशरण सरकारी नौकरी करने के बाद भी उत्साहहीन नहीं था। काम के समय वह काम करता, लेकिन काम खत्म होने पर वह पहाड़ी सुंदरता, यात्रा के रोमांच को लेकर मन ही मन अनेक कल्पनाओं को जन्म देता और उन्हें जीने के लिए योजना भी बनाता। उसे पहाड़ी जीवन को लेकर कहानी सुनना बहुत पसंद था। इसलिए वह उन साहसी व्यक्तियों के साथ बैठता जो पहाड़ों की यात्रा कर आए थे और उनसे पहाड़ी यात्रा कैसे की जाए, यह जानकारी भी प्राप्त करता।

अपनी इसी पहाड़ों की यात्रा करने की इच्छा को पूरा करने के लिए रामशरण ने एक बार तीन महीने की छुट्टी ले ली और गर्मी के बाद जब सब दिल्ली लौटने लगे तब वह पहाड़ों की यात्रा करने निकल पड़ा। उसने सुना था, पहाड़ी लोग जी-जान लगाकर अतिथि की सेवा करते हैं और उनके घर की स्त्रियाँ अतिथि की थकान दूर करने के लिए अपने हाथ से अतिथि का शरीर दबाती हैं। रामशरण का मन गुदगुदाने लगा। वह इस यात्रा को लेकर काफी रोमांचित था। एक झोले में मामूली सा सामान, एक कम्बल और एक बल्लम लगी लाठी लेकर वह अपनी यात्रा पर निकल पड़ा। वह एक ऐसी जगह जाना चाहता था जहाँ आधुनिक सभ्यता न पहुँची हो, जहाँ के लोग सरल हों और जहाँ उसे रोमांचकारी आतिथ्य मिल सके। कई मील पैदल चलकर, कई पहाड़ों को पार कर, जंगल में रास्ता भटककर आखिर रामशरण एक गाँव में पहुँच ही गया। गाँव बहुत छोटा था। वहाँ केवल दस-बारह घर ही थे। रामशरण ने घड़ी देखी। साढ़े सात ही बजे थे। लेकिन वहाँ फैले सन्नाटे को देखकर रामशरण समझ गया कि वह जिस तरह के गाँव में रहकर आतिथ्य पाना चाहता था, वहाँ वह पहुँच गया है। वह आश्रय माँगने के लिए, आवाज लगाने लगा। कुछ लोग बाहर निकले तो सही लेकिन रामशरण को आश्रय देने के बजाय उन्होंने उसे गाँव से बाहर निकाल दिया। रामशरण तो अब बुरी तरह से फँस गया। पीछे भयानक जंगल था और रात काटने के लिए खुले आसमान के अलावा कोई दूसरा साधन उसके पास नहीं था। उसे अब अपनी मूर्खता पर गुस्सा आ रहा था। ठंड के कारण उसका शरीर काँप रहा था। उसने अपने सिर और शरीर को कसकर कम्बल में लपेट लिया। पर समय बीतता न था। उसे लगा,

सवेरे तक वह बच नहीं सकेगा। उसके सिर में दर्द होने लगा। दर्द से ध्यान हटाने के लिए वह अपनी ही साँसों को गिनने लगा। पर तभी उसे लगा, कोई उसे छू रहा है। पहले तो उसे लगा, कोई जानवर है। फिर वह समझा कि जानवर नहीं, इंसान है, जो उसे आश्रय देने को तैयार था। चोरी-चोरी रामशरण उसके घर में आ गया। वहाँ उस आदमी की बेटी और स्त्री भी थीं। ठंड से काँपते रामशरण को उस आदमी ने हुक्का पीने को दिया जिसका अभ्यास उसे नहीं था, फिर भी वह मना नहीं कर सका। वह आदमी बार-बार उसे कह रहा था, अगर गाँव वालों को पता चल गया कि वह यहाँ है तो वे उसकी जान ले लेंगे। पर रामशरण तो न जाने किस दुनिया में था। उस स्त्री ने उसे खाने को भी दिया, पर न तो वह ठीक से खा सका और न ठीक से सो सका। वह स्त्री तो उसका बदन भी दबाती रही, पर रामशरण तो स्त्री गंध, पुरुष, बड़बड़ाहट, सर दर्द आदि के बीच में खुद को कमजोर महसूस करता रहा, और जब आँख लगी उस आदमी ने उसे झकझोर कर जगा दिया और उसे गाली देते हुए गाँव की सीमा पर छोड़ आया।

रामशरण खुद को संभालने की कोशिश में रास्ते में बैठ गया और रात में मिले विचित्र 'आतिथ्य' के बारे में सोचने लगा। यही पर आकर कहानी समाप्त हो जाती है।

बोध प्रश्न

- रामशरण पहाड़ी कहानियाँ क्यों सुना करता था?
- रामशरण को किस प्रकार का आतिथ्य मिला? संक्षेप में समझाइए।

8.2.2.2 पात्र एवं चरित्र-चित्रण

यशपाल के द्वारा लिखित कहानी 'आतिथ्य' का प्रमुख पात्र है - रामशरण। रामशरण की विभिन्न गतिविधियों के चारों तरफ ही कहानी घूमती नज़र आती है। इस कारण रामशरण के चरित्र को समझना आवश्यक हो जाता है।

रामशरण वैसे तो सरकारी दफ्तर में काम करनेवाला व्यक्ति था। शिमला और दिल्ली में सुविधानुसार रहने की स्वतंत्रता उसके पास थी। पर इन सुविधाओं के बाद भी वह आलसी नहीं था। यह बात लेखक के इन शब्दों से साफ हो जाती है- "रामशरण गाँव से लाए कनस्तर का घी खाकर दफ्तर में सरकार के आय-व्यय का हिसाब करोड़ों की संख्या तक कर अपने मस्तिष्क को थका देता।" इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि रामशरण एक परिश्रमी व्यक्ति था तथा वह खाने का भी शौकीन था। परिश्रमी तथा भोजनप्रिय होने के साथ ही रामशरण प्रकृति प्रेमी भी था। "अवकाश के समय वह आस-पास की पहाड़ियों पर उन्मुक्त वायु में गहरे साँस ले, सीना फुला

मीलों दूर तक निगाहें दौड़ाकर प्रकृति का आनंद लेता"।

रामशरण प्रकृति प्रेमी होने के साथ-साथ यात्रा प्रेमी भी था। वह पहाड़ों की यात्रा करना चाहता था। वहाँ की जीवनशैली को समझना चाहता था। इसलिए वह उन लोगों को खोजता फिरता जो पहाड़ की यात्रा कर आए थे। उनकी कहानियों को सुनकर वह कल्पना के संसार में पहुँच जाता। वैसे रामशरण प्रकृति प्रेमी और यात्रा प्रेमी था, केवल इसी कारण वह यात्रा करना चाहता था ऐसा नहीं है। एक अन्य कारण भी था उसके यात्रा प्रेम का "पूछ-पूछ कर रामशरण ने अनेक अद्‌भुत कथाएँ और वृत्तांत सुने थे; वहाँ की प्राकृतिक छटा, नारी रूप और विचित्र व्यवहार। जिस देश के उदार और भोले निवासी भटक कर अपने गाँव में आ गए अतिथि के सत्कार का अवसर पाने के लिए आपस में झगड़ बैठते हैं; जहाँ चम्पा के रंग की गृह वधुएँ अतिथि की थकावट मिटाने के लिए उसके शरीर को अपने हाथों से दबाती हैं, अपने सामर्थ्य भर अतिथि के लिए कोई सुविधा दुर्लभ नहीं रहने देतीं! वह देश देखने रामशरण का मन किलक उठता।"

तो, आप देख रहे हैं, कैसे रामशरण की अपनी कल्पनाओं, कहानियों की अलग दुनिया है जहाँ उसका मन आनंदित होकर नाचता है। रामशरण में साहस की कमी नहीं थी। अपने सपने को पूरा करने के लिए सबेरे से लेकर शाम तक न जाने वह कितने रास्तों, पहाड़ों, जंगलों को पार करता चला गया और अंत में आधुनिक सभ्यता से दूर एक सुनसान गाँव में पहुँच गया। रामशरण की इच्छा तो थी कि पहाड़ी गृहवधू उसके हाथ-पैर दबाए पर आतिथ्य पाने का जब यह अवसर आया तो वह सकुचा गया। इससे यही स्पष्ट होता है कि रामशरण अंदर से एक शर्मीला, संकोची युवक था। साथ ही यह बात भी हमारे सामने आई कि दिल्ली में रहने के बाद, सरकारी नौकरी करने के बाद भी रामशरण में किसी प्रकार का नशा करने की प्रवृत्ति नहीं थी। उसने कभी हुक्का भी नहीं पिया था। पर हाँ, उसे ग्रामीण मनोविज्ञान का ज्ञान था। इसलिए उसने अपने साथ सिगरेट रख ली थी। क्योंकि उसे पता था कि ग्रामीणों से सहायता लेने के लिए उन्हें सिगरेट देने से लाभ होगा। साथ ही उसे यह भी पता था कि ग्रामीण राह भटके यात्रियों की सहायता के लिए हमेशा तैयार रहते हैं। तभी तो वह खुद को राह भटका मुसाफिर ही कहा है।

इस प्रकार यशपाल ने रामशरण के रूप में एक ऐसे शहर में निवास करने वाले युवक का चरित्र गढ़ा है जो पर्वतीय गांवों की प्राकृतिक सुषमा और उनके शिष्टाचार के प्रति आकर्षित है। साथ ही उसके मन में यह सोच कर रोमानी कल्पनाएँ पैदा होती हैं कि पर्वतीय अंचल की भोलीभाली युवतियाँ अथिति की सेवा जी-जान से करती हैं। यहाँ तक की उसका सिर भी दबा देती है। उसकी यह रोमानी कल्पना तब धराशायी हो जाती है, जब गाँव के लोग उसे धक्के मार कर निकाल देते हैं।

बोध प्रश्न

- रामशरण क्या-क्या कल्पनाएँ करता है?
- रामशरण साहसी था, इसे सिद्ध कीजिए।

8.2.2.3 देशकाल

यशपाल ने 'आतिथ्य' कहानी में सतरंगी वातावरण प्रस्तुत किया है। रामशरण मेरठ के एक गाँव का मूल निवासी था, और अपने परिश्रम के बल पर दिल्ली के सरकारी विभाग तक पहुँचा था। ऐसे में गाँव और शहर के बीच में मनोवैज्ञानिक स्तर पर सामंजस्य बैठाने का प्रयास उसे लगातार करना पड़ता है। यह केवल रामशरण की कहानी नहीं है। आज भी जब किसी गाँव का कोई युवक नौकरी की तलाश में या नौकरी मिल जाने पर शहर में रहने के लिए आता है तो गाँव उसके हृदय में रह जाता है। और शहर में अपने पैर जमाने के लिए उसे मेहनत करनी पड़ती है। इस परिस्थिति का सामना तो सदियों से युवक कर रहे हैं। लेखक ने सरल कथावस्तु के द्वारा रोजगार, प्रवास और इन दोनों के साथ जुड़ी मानवीय भावनाओं का सुंदर चित्र प्रस्तुत किया है।

यशपाल ने प्रस्तुत कहानी के द्वारा ग्रामीण जीवन, शहरी जीवन और पहाड़ी जीवन के वातावरण को पाठकों तक पहुँचाया है। इसके साथ ही कहानी के प्रारंभ में ही उन्होंने सरकारी और गैर सरकारी नौकरी की सुख-सुविधा के बीच के अंतर को भी स्पष्ट किया है। उन्होंने कहानी के प्रारंभ में लिखा है- "रामशरण को भारत सरकार के अर्थ विभाग में क्लर्की करते तीन वर्ष बीत चुके थे। इतनी बड़ी सरकार की व्यवस्था में जगह और उसके आश्रय पर रामशरण ने अनेक ऐसी सुविधाएँ पाईं जो जन साधारण के लिए स्वप्न मात्र हैं। प्रतिवर्ष मैदानों को तड़पा देने वाली गर्मी से भागकर छः मास तक शिमला-शैल पर निवास और छः मास तक देहली के शाही शहर की रौनकें।" प्रस्तुत कथन के द्वारा लेखक ने उस वातावरण को सजीव कर दिया है जहाँ विभिन्न प्रकार की असमानताएँ हैं और इन्हीं असमानताओं के कारण किसी भी देश, समाज, परिवार में विरोध की स्थिति भी पैदा होती है। इससे यह भी पता चलता है कि सरकारी विभागों में पहले ऋतु के अनुसार ऑफिस एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाए जाते थे।

यह तो हुई शहरी जीवन और आजीविका के प्रभाव की बात। आगे लेखक ने ग्रामीण वातावरण और वहाँ की परिस्थितियों पर प्रकाश डाला है- "रामशरण का जन्म हुआ था मेरठ जिले के एक गाँव में, जहाँ भूमि ऋतु-ऋतु में अपने उदर पर हल के फले का प्रहार सहकर बीज ग्रहण करने के लिए तटस्थ उदारता से प्रस्तुत रहती है। कुछ ही दिन हरी-भरी फसलों के आवरणों से उस भूमि की नग्नता ढक पाती है कि किसान फसल को काटकर अपने खलिहानों में

समेट लेते हैं। ज़मीन बेचारी बेरौनक और उदास हो जाती है और अपने को ढक पाने की आशा में फिर हल का फला सहने के लिए तैयार होती है।" भारत की पहचान ही उसके गाँवों से है और किसानी इन गाँवों का प्राण। भारत, गाँव और खेती के बीच के परस्पर संबंध को लेखक ने इस सजीव विवरण के द्वारा प्रस्तुत किया है।

इसी तरह से पहाड़ी वातावरण का सुन्दर चित्र भी लेखक ने इस प्रकार अंकित किया है - "झरने के समीप ही एक पगडण्डी पहाड़ से उतर रही थी। कदमों की आहट मिली। रंगीन टोपी पहने एक बूढ़ा उसके समीप आया और हाथ की लाठी एक ओर रख जमीन पर बैठ गया। मुट्ठी होठों पर रख उसने 'बाबू' से एक सिगरेट माँगी। रामशरण सिगरेट के प्रति पहाड़ियों की कातरता से परिचित था। चलते समय कई डिबिया सिगरेट लेकर उसने झोले में रख ली थी।" यहाँ 'रंगीन टोपी', 'हाथ की लाठी', 'तम्बाकू के प्रति पहाड़ियों की कातरता' आदि शब्दों द्वारा लेखक ने पहाड़ी जीवन की जीवनशैली, वहाँ के लोगों की मानसिकता आदि का जीवन्त चित्र खड़ा किया है। शहरी सभ्यता से दूर बीहड़ पहाड़ियों के बीच रंगीन कपड़े, नशा यही तो पहाड़ियों के जीवन को थोड़ा सुगम बनाते हैं।

इस प्रकार विवेच्य कहानी 'आतिथ्य' में वर्णित ग्रामीण, शहरी और पहाड़ी जनजीवन के देशकाल का चित्रण अत्यंत प्रामाणिक बन पड़ा है।

बोध प्रश्न

- कहानी में किन-किन क्षेत्रों के वातावरण का चित्रण है?

8.2.2.4 संवाद योजना

'कला, कला के लिए' - इस सिद्धांत में यशपाल को विश्वास नहीं था। मानसिक संतुष्टि के लिए सौंदर्य आवश्यक है लेकिन जीवन की आवश्यकताओं, सामाजिक सुधारों से अधिक महत्व सौंदर्य का नहीं है। उनकी विचारधारा समाजवादी थी। उनके साहित्य में वर्ग संघर्ष तथा व्यंग्य साफ तौर पर झलकते हैं। उनका साहित्य जीवन की वास्तविकता के निकट है तथा समाज की विविध परिस्थितियों का चित्रण करता है। उनके द्वारा लिखित 'आतिथ्य' कहानी की प्रभावी संवाद योजना में भी इसे देखा जा सकता है। उन्होंने प्रस्तुत कहानी में अपनी संवाद योजना द्वारा रहस्य की भी सृष्टि की है- "पड़ोसी बहुत खराब है। कोई देख तो नहीं रहा था?.. तूने झाँका था?.. यह देस के आदमी बड़े बदमाश होते हैं। रखेड़ी गाँव में रत्तू की घरवाली को एक पंजाबी भगा ले गया था न! इन लोगों को घर में कोई कैसे पाँव रखने दे?" इस संवाद योजना में रहस्य है। गाँव और शहर के लोगों के बीच में किस प्रकार का संदेहजनक संबंध है और स्त्री यहाँ भी कैसे

इस संदेहजनक संबंध को जीवित रखने की एक कड़ी है। इन सब मुद्दों को ऊपर दिए गए संवाद द्वारा हम समझ सकते हैं।

लेखक ने कहानी की संवाद योजना द्वारा स्थान-स्थान पर प्रकृति के मनोहारी दृश्य भी उभारे हैं। कथा को आगे बढ़ाने वाले वार्तालाप विशेष रूप से आकर्षक बन पड़े हैं। जैसे –

“रामशरण ने पहाड़ी पर चढ़ती पगडंडी की ओर संकेत करके पूछा –

“यह रास्ता कहाँ जाता है?”

"लंगोड़ी को।” बूढ़े ने तम्बाकू के धुएँ से खाँसते हुए उत्तर दिया, “आगतिल्ला है फिर शोपा। ऐसे ही गाँव-गाँव चीनी तक चला जाता है। उसके आगे छोटा तिब्बत है। हम लोग इन्हीं रारतों रो आते-जाते हैं। सड़क तो बहुत घूमकर जाती है। इन पगडण्डियों से दो दिन की मंजिल एक दिन में हो जाती है।"

"रास्ते में घने जंगल होंगे।" रामशरणने पूछा, “आदमी राह भूल जाय तो?"

“जंगल भी है, ग्राम भी है। सब बसा हुआ इलाका है।"

"जंगल में क्या जानवर मिलता है?"

“घुरड़ है, रीछ है, कभी बाध भी होता है, चीता बहुत है।"

"जानवर आदमी को नहीं मारता?"

"आदमी को कम छेड़ता है, जानवर पर पड़ता है।"
बूढ़ा सिगरेट समाप्त कर राम-राम कह अपनी राह चल दिया और रामशरण पगडण्डी पर चढ़ने लगा।”

संवाद योजना द्वारा जिस प्रकार पात्रों के मनोभावों को समझा जा सकता है, ठीक उसी प्रकार परिस्थितिजन्य संवाद योजना का सफल चुनाव कर लेखक कहानी में क्लाइमेक्स यानि रोमांचकारी पल भी ला सकता है। विवेच्य कहानी में हम इस क्लाइमेक्स को भलीभाँति देख सकते हैं- “उस स्त्री का मुस्कुराता हुआ चेहरा रामशरण की मुंदी पलकों के आगे नाच रहा था और कान सुन रहे थे- “अब आप चंगे हो पाहुने जी!” नींद लाने के लिए उसके शरीर पर फिरते उस स्त्री के हाथ उसकी नींद को कोसों दूर भागा चुके थे”... “झपकी आने पर सहसा किसी ने ठेल कर जगा दिया। स्वर वही पहिचाना हुआ कोमल सा था- “उठो पाहूने जी”...और मर्द के कठोर कण्ठ ने उस बात को पूरा किया- ‘दिन चढ़ने को हो रहा है। पड़ोसी बैलों को घास डालने के लिए उठते होंगे। इस बदमाश को गाँव से निकाल आऊँ। नहीं तो दाव से इसके टुकड़े कर खेत में डाल दूँ कुत्तों के सामने..!’

तो देखा आपने कैसे दो अलग प्रकार के संवादों के द्वारा लेखक ने पूरी कहानी को रहस्यात्मक बना दिया है।

बोध प्रश्न

- कहानी की संवाद योजना को कैसी है?

8.2.2.5 उद्देश्य

यशपाल सामाजिक जीवन को महत्व देने वाले लेखक हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं के द्वारा समाज के विभिन्न वर्गों के जनमानस के जीवन को पाठकों तक पहुँचाया हैं। 'आतिथ्य' भी उनके द्वारा लिखित इसी प्रकार की कहानी है। इस कहानी लेखक का उद्देश्य है - रहस्य, रोमांच, पर्यटन तथा विभिन्न क्षेत्रों में रहने वाले लोगों की जीवनशैली का तुलनात्मक प्रस्तुतीकरण। 'आतिथ्य' कहानी के नायक 'रामशरण' के माध्यम से लेखक ने अपने उद्देश्य को पूरा किया है। साथ ही पहाड़ी लोगों के कथोपकथन के माध्यम से यह भी स्पष्ट किया है कि पहाड़ी लोग शहरी लोगों के बारे में क्या सोचते हैं। स्त्री तो हमेशा से ही जिज्ञासा की वस्तु रही है और अगर वह पहाड़ी स्त्री है तो उसे लेकर कल्पनाएँ और अधिक बढ़ जाती हैं। ऐसा आज के वर्तमान युग में भी है तो रामशरण को पहाड़ी स्त्रियों को लेकर उत्सुक दिखाकर लेखक ने एक प्रकार से पाठकों को आईना ही दिखाया है।

इस कहानी का एक सूक्ष्म उद्देश्य यह भी प्रतीत होता है कि लेखक इस सच को सांकेतिक रूप में उभारना चाहता है कि शहरी लोग सैलानी बन कर पहाड़ी अंचलों में जाते हैं, और वहाँ की भोलीभाली स्त्रीयों का दैहिक शोषण करते हैं। यही कारण है कि जिस पहाड़ी आदिवासी गाँव में रामशरण पहुंचता है वहाँ के लोग शहर से आए लोगों को शक की नज़र से देखते हैं। लेखक ने रामशरण की रोमानी कल्पनाओं का जो हश्र कहानी के अंत में दिखाया है उससे वह विडम्बना और व्यंग्य का पात्र बन जाता है। इस प्रकार यह कहानी सरकारी नौकरी करने वाले सुविधा सम्पन्न शहरी मध्यवर्ग की मानसिक तुच्छता का भी पर्दाफाश करती है। वस्तुतः यशपाल मध्यवर्ग के अंतर्विरोधों को विश्लेषित करने वाले कथाकार हैं। इस कहानी में भी उन्होंने सफलतापूर्वक ऐसा ही किया है।

बोध प्रश्न

- लेखक ने रामशरण के द्वारा पाठकों को क्या दिखाया है?

8.2.2.6 भाषा शैली

यह तो हम सबको पता है कि कहानी का जन्म वैसे तो बहुत पहले ही हो चुका था, लेकिन प्रेमचंद ने कहानी को एक अलग ही पहचान प्रदान की। यशपाल वैसे तो प्रेमचंद के

जीवनकाल से ही कहानी रचना का कार्य प्रारंभ कर चुके थे, लेकिन उनकी कहानियों का प्रकाशन कुछ देर से हुआ। कहानीकार के रूप में उनकी विशेषता यह है कि उन्होंने प्रेमचंद की कहानी कला की नकल न करते हुए अपनी एक अलग पहचान बनाई। उनके साहित्य में वर्ग-संघर्ष तथा व्यंग्य साफ तौर पर झलकता है। 'आतिथ्य' कहानी भी उनकी इन्हीं विशेषताओं को दर्शाने वाली कहानी है। एक उदाहरण देखें -

"लड़की का बाप समीप बैठा - देश के लोगों के बदमाश होने और अपने गाँव के लोगों के जालिम होने की बात दोहराता जा रहा था कि कोई देख ले तो कैसी मुसीबत हो! देश के लोगों को तो दाव से दो टुकड़े कर कुत्तों को ही डाल दे तो सब से अच्छा। दरवाजे पर पाहुना आ जाय तो मुसीबत ही तो है। टिकाओ तो घर की औरत भगा ले जाय, गाँव के लोग लड़ें।" 'देश के लोगों' से यहाँ अर्थ है- 'शहरी लोग', 'पाहुना' शब्द का प्रयोग बहुतायत गाँव के लोग ही करते हैं जिसका अर्थ है- 'अतिथि'। इस उदाहरण से यह पता स्पष्ट है की लेखक ने शब्दों का चयन पात्र और वातावरण के अनुरूप किया है। साथ ही, गृहस्वामी के अंतर्द्वंद्व और खीज को प्रकट करने के लिए ऐसे शब्द चुने हैं जो उसकी मानसिकता के अनुरूप हैं। जैसे - 'दाव से दो टुकड़े कर कुत्तों को डालना।'

विवेच्य कहानी में लेखक ने कई प्रकार की शैलियों का प्रयोग किया है। जैसे - रामशरण का परिचय देने के लिया विवरणात्मक शैली, गाँव वालों से बात करने के लिए संवादात्मक शैली, रामशरण और गांववासी के अंतर्द्वंद्व को प्रकट करने के लिए स्वगत शैली का प्रयोग द्रष्टव्य है।

बोध प्रश्न

- कहानी में कौन-कौन सी शैलियों का प्रयोग हुआ है?

8.2.3 शीर्षक का औचित्य

विवेच्य कहानी में रहस्य, रोमांच, ग्रामीण, शहरी, पहाड़ी जीवन की कथाओं जैसे अनेक रंगों को हम देख सकते हैं परंतु इन रंगों के बीच में 'आतिथ्य' का रंग एक पल के लिए भी हल्का नहीं हुआ है। पर्वतीय आदिवासी गाँव का रहने वाला व्यक्ति इतना सज्जन है कि गांववालों के विरोध का खतरा उठाते हुए भी, और शहरी लोगों के दुश्चरित्र को जानते हुए भी वह केवल इसलिए रामशरण को अपने घर में शरण देता है कि उसका पहाड़ी संस्कार किसी अथिति को दुतकारने की अनुमति नहीं देता। 'आतिथ्य' शब्द में ही बहुत सारी भावनाएँ छिपी हुई है। देखा जाए तो, इस संसार में हम सब 'अतिथि' ही तो हैं जो प्रकृति के कण-कण से आतिथ्य प्राप्त कर रहे हैं और प्रकृति का कण-कण भी तो धरती का अतिथि ही होता है, तभी तो बीज जो पौधा

बंता है, फिर फसल बंता है फिर काट दिया जाता है। फिर इंतज़ार नई फसल और नए अतिथि का। ये बातें तो कहानी में है ही, लेकिन मुख्य बात है- रामशरण के मन में आतिथ्य पाने की इच्छा। पहाड़ी गृहवधुओं के हाथ से मालिश करवाने की इच्छा। उसकी इन इच्छाओं के कारण से ही तो कहानी में पर्यटन, रहस्य, रोमांच आदि को स्थान मिला है। रामशरण ने अपनी यात्रा को शुरू किया था आतिथ्य पाने की इच्छा से और कहानी का अंत होता है रामशरण के आतिथ्य प्राप्ति के समापन के साथ। जहाँ वह खुद भी नहीं समझ पाता कि उसने किस प्रकार का रहस्यमय आतिथ्य प्राप्त किया। और ऐसा उसके साथ क्यों हुआ? उसके मन में उमड़ने-घुमड़नेवाले सवालों और कल्पनातीत आतिथ्य प्राप्त करने की इच्छा ने कहानी को पल-पल रोमांचकारी बनाया है। इस कारण इस कहानी का शीर्षक 'आतिथ्य' तर्क संगत और उचित है।

बोध प्रश्न

- क्या आप कहानी के नाम से सहमत हैं? क्यों?
- ग्रामीण लोग शहरी पर्यटकों से नफरत क्यों करते हैं?

8.3 पाठ सार

प्रिय छात्रो, विवेच्य कहानी 'आतिथ्य' का केन्द्रीय पात्र रामशरण सभी दृष्टियों से इस कथा का नायक बनने के उपयुक्त है और कहानी के प्रारंभ से लेकर अंत तक उसने कहानी को एक सूत्र में बाँधकर रखा है। एक छोटे से गाँव में पैदा हुआ रामशरण सरकारी विभाग में काम करता है। सरकारी नौकर होने के कारण उसे ऐसी बहुत सी सुविधाएँ प्राप्त हैं, जिन्हें प्राप्त करना साधारण लोगों के लिए संभव नहीं। पर रामशरण इन सुविधाओं से भी अधिक कुछ और प्राप्त करना चाहता है। वह चाहता है निर्जन पहाड़ी गाँव का अतिथि बनने का सुख और पहाड़ी गृहवधुओं के हाथ की गुदगुदी मालिश के रूप में आतिथ्य का उपहार। उसकी इस इच्छा के कारण ही वह यात्रा शुरू करता है और जैसे-जैसे यात्रा आगे बढ़ती है, कहानी भी आगे बढ़ती है। कहानी के साथ जुड़ता है उसका चरमउत्कर्ष जो रहस्य-रोमांच से भरपूर है। इस रोमांच को लेखक ने कहीं भी बोझिल नहीं बनने दिया, नीरस नहीं बनने दिया है। लेखक का उद्देश्य ग्रामीण, शहरी, पहाड़ी जीवन शैली को एक साथ पाठकों तक पहुँचाना है। केवल जीवनशैली ही नहीं, लेखक का उद्देश्य अलग-अलग स्थानों में रहनेवाले लोग एक-दूसरे के बारे में क्या सोचते हैं इस विषय को भी पाठकों तक पहुँचाना रहा है। लेखक अपने इन उद्देश्यों को पूरा करने में सफल रहे हैं। इसी के साथ-साथ पात्रों की जीवनशैली और मानसिकता के अनुसार लेखक ने संवादों को गढ़ा है तथा भाषा शैली को जीवन्त रूप प्रदान किया है। भाषा कहीं भी अमर्यादित नहीं हुई है। एक उदाहरण देखिए- "रत्तू और मतीया बागी तक ढूँढ़ने गए, मिला नहीं। मिलता तो (उसने गाली दी) के टुकड़े कर देते और (उसने भागी हुई औरत को गाली दी) की काट काट लेते।" क्रोध

में अपनी भाषा को नियंत्रित करना कठिन कार्य है परंतु साहित्यकार ने वर्जित शब्दों को छिपाकर भाषिक मर्यादा का निर्वाह किया है।

इस कहानी की प्रमुख बात यह है कि रामशरण के मन में पहाड़ी गृहवधुओं का 'आतिथ्य' पाने की उत्कट इच्छा है। यह इच्छा उसके मन में इसलिए जागी क्योंकि उसने इन गृहवधुओं के बारे में रोमांचकारी कहानियाँ सुन रखी थीं। यशपाल ने रामशरण तथा पाठकों दोनों के रोमांचऔर जिज्ञासा को अंत तक बरकरार रखा है, साथ ही यह भी स्पष्ट कर दिया है कि शहरी लोगों की लंपटता के कारण पहाड़ी ग्रामीण लोग अब सभी पर्यटकों से नफरत करने लगे हैं। इस संदर्भ में कहानी का यह अंतिम दृश्य द्रष्टव्य है - "समीप की एक पगडण्डी से उसने रामशरण को सड़क पर पहुँचा दिया और बगल में दबे दाव को हाथ में ले दिखा रुद्र मुद्रा और कठोर स्वर में उसने धमकाया- 'चला जा बदमाश यहाँ से! खबरदार किसी से कहा कि घर में टिकाया था- मैं बड़ा जालिम आदमी हूँ।...बोटी बोटी काट डालूँगा। "आ गया"- एक घृणित गाली देकर उसने कहा... मेहमान बनकर, औरत चोरों के देश का बदमाश।'

वह आदमी तुरंत लौट पड़ा। रामशरण दम लेने के लिए पलभर सड़क पर बैठ रात के विचित्र आतिथ्य की बात सोचता रहा।"

8.4 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष उपलब्ध हुए हैं –

- यशपाल प्रेमचंदोतर युग के प्रतिनिधि कथाकार हैं।
- यशपाल ने अपनी कहानियों में शहरी मध्यवर्ग के अंतर विरोधों को उभारा है।
- विवेच्य कहानी से लेखक के व्यापक लोकनुभाव का पता चलता है।
- लेखक ने शहरी मध्यवर्ग की पर्वतीय अंचल के विषय में जिज्ञासा को उसकी लोलुपता का प्रतीक माना है।
- लेखक ने दर्शाया है कि कुछ शहरी पर्यटक पहाड़ी स्त्रीयों का शोषण करते हैं, जिसके कारण वे शहरियों से नफरत करने लगते हैं।

8.5 शब्द संपदा

1. आतिथ्य = अतिथि के रूप में प्राप्त होने वाली सेवा, प्रेम, सम्मान आदि।
2. देहली = दिल्ली

3. नवोढ़ा = नई

4. पगडण्डी = खेत के बीच में से छोटा रास्ता

5. पाहुना = अतिथि

6. मानिनी = क्रोधित

7. रूपगर्विता = सौंदर्य का घमंड रखनेवाली (स्त्री)

8. सामर्थ्य = क्षमता

8.6 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. 'आतिथ्य' कहानी की कथावस्तु लिखिए।

2. तत्वों के आधार पर 'आतिथ्य' कहानी की विवेचना कीजिए।

3. आतिथ्य कहानी की संवाद योजना पर उदाहरण सहित प्रकाश डालिए।

खंड (ब)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. यशपाल के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालिए।

2. रामशरण की चारित्रिक विशेषताओं पर उदाहरण सहित चर्चा कीजिए।

3. आतिथ्य कहानी में वर्णित देशकाल - वातावरण पर प्रकाश डालिए।

4. 'आतिथ्य' कहानी के उद्देश्य पर टिप्पणी लिखिए।

खंड (स)

I सही विकल्प चुनिए

1. यशपाल का जन्म किस सन् में हुआ?

अ) सन् 1904 ब) सन् 1906 स) सन् 1903 द) सन् 1900

2. यशपाल को पद्मभूषण किस सन् में मिला?

अ) सन् 1970   ब) सन् 1971   स) सन् 1973   द) सन् 1900

3. रामशरण किस शहर में नौकरी करता था?

अ) मुम्बई   ब) दिल्ली   स) आगरा   द) मेरठ

II रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए

1. आतिथ्य कहानी के नायक का नाम .... है।

2. यशपाल की माँ का नाम .... है।

3. रामशरण .... पाने के लिए यात्रा कर रहा था।

4. 'दिव्या' यशपाल के द्वारा लिखित............... है।

III सुमेल कीजिए

1. चक्कर क्लब	(अ) मेरी तेरी उसकी बात
2. फूलो का कुरता	(आ) उपन्यास
3. झूठा सच	(इ) कहानी का संग्रह
4. साहित्य अकादमी पुरस्कार	(ई) व्यंग्य

8.7 पठनीय पुस्तकें

1. हिंदी कहानी का इतिहास, गोपाल राय

2. कथाकारों की दुनिया, ऋषभदेव शर्मा

3. हिंदी गद्य : विन्यास और विकास, रामस्वरूप चतुर्वेदी

खंड – III : निबंध और एकांकी

इकाई 9 : निबंध : विधागत स्वरूप

इकाई की रूपरेखा

9.0 प्रस्तावना

9.1 उद्देश्य

9.2 मूल पाठ : निबंध : विधागत स्वरूप

9.2.1 निबंध विधा का सामान्य परिचय

9.2.2 निबंध : अर्थ एवं परिभाषाएं

9.2.3 निबंध के तत्व प्रकार, प्रकार और शैली

9.2.4 हिंदी निबंध : उद्भव और विकास

9.2.5 प्रमुख निबंधकारों की गद्यशैली

9.2.5.1 निबंध का सामान्य परिचय

9.2.5.2 निबंध का अर्थ एवं परिभाषाएँ

9.2.5.3 निबंध का स्वरूप-विकास

9.2.5.4 प्रसिद्ध निबंधकार एवं आचार्य रामचंद्र शुक्ल

9.3 पाठसार

9.4 पाठ की उपलब्धियाण

9.5 शब्द संपदा

9.6 परीक्षार्थ प्रश्न

9.7 पठनीय पुस्तके

9.0 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो! आप जानते ही हैं कि गद्य की अनेक विधाओं में 'निबंध' भी एक विधा है। लेकिन इस शब्द का प्रयोग किसी विषय की तार्किक और बौद्धिक विवेचना करने वाले लेखों के

लिए भी किया जाता है। साहित्यिक आलोचना में सबसे अधिक प्रचलित शब्द 'निबंध' ही है और इसे अंग्रेजी में 'कंपोजीशन' और 'एस्से' के अर्थ में ग्रहण किया जाता है। इसमें संदेह नहीं की आधुनिक हिंदी निबंध बड़ी हद तक 'एस्से' की अवधारणा से प्रभावित रहा है। इस अवधारणा के अनुसार यह ऐसी विधा है जिसमें 'मन की मुक्त भटकन' की अभिव्यक्ति होती है। हिंदी निबंध को मौलिक स्वरूप प्रदान करने वाले आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इसे नया अर्थ भी प्रदान किया, जिसके परिणाम स्वरूप हिंदी निबंध विचारों की एकतार्किक सुसंबद्ध व्यवस्था का अर्थ लिए सामने आया है। उनके विचार से निबंध गद्य की वह विधा है जिसके अंतर्गत विचारों और उन्हें व्यक्त करने वाली भाषा का पूर्ण एकात्म हो। निबंध अपने स्वरूप में एक निहायत कसी हुई विचार व्यवस्था वाली विधा है। साथ ही यह भी ज़रूरी है कि वह नीरस और शुष्क भी न हो। उसमें बुद्धि वैभव के साथ साथ हृदय की तरलता भी ज़रूरी है। इस इकाई में हम निबंध के विधात्मक स्वरूप पर चर्चा करेंगे।

9.1 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई को पढ़ने के पश्चात आप -

- गद्य की विधा के रूप में निबंध के स्वतंत्र अस्तित्व से अवगत हो सकेंगे।
- निबंध विधा के महत्व से परिचित हो सकेंगे।
- निबंध की विविध परिभाषाओं को समझ सकेंगे।
- निबंध के स्वरूप के बारे में जानकारी पा सकेंगे।
- निबंध के तत्वों और प्रकारों के बारे में जान सकेंगे।
- हिंदी में निबंध के उद्भव और विकास से परिचित हो सकेंगे।

9.2 मूल पाठ : निबंध : विधागत स्वरूप

यद्यपि वर्तमान संदर्भ में निबंध के आधुनिक गद्य विधा है लेकिन इसमें संदेह नहीं कि संस्कृत साहित्य में बहुत पुराने समय से निबंध का प्रचलन है। प्राचीन संस्कृत साहित्य के निबंधों में धर्म शास्त्रीय सिद्धांतों की तार्किक व्याख्या की जाती थी। परंतु आधुनिक अर्थ में निबंध एक ऐसी विधा है जिसमें लेखक के व्यक्तित्व का विशेष महत्व होता है।

9.2.1 निबंध विधा का सामान्य परिचय

प्रिय छात्रो! यह माना जाता है कि निबंध में लेखक का अपना व्यक्तित्व साफ झलकना चाहिए। उसके अपने दृष्टिकोण, शैली, भाषा पर अधिकार, विचार शक्ति, तर्कशक्ति आदि का

पूरा परिचय निबंध से मिल जाता है। हिंदी साहित्य कोश में यह माना गया है कि- "(निबंध) लेखक बिना किसी संकोच के अपने पाठकों को अपने जीवन अनुभव सुनाता है और उन्हें आत्मीयता के साथ उनमें भाग लेने के लिए आमंत्रित करता है। उसकी यह घनिष्ठता जितनी सच्ची और सघन होगी, उसका निबंध पाठकों पर उतना ही सीधा और तीव्र असर करेगा। किसी आत्मीयता के फलस्वरूप निबंध लेखक पाठकों को अपने पांडित्य से अभिभूत नहीं करना चाहता।"

बोधप्रश्न

- निबंध से लेखक के बारे में क्या जानकारी मिलनी चाहिए?
- निबंधकार पाठक को किस बात के लिए आमंत्रित करता है?

9.2.2 निबंध : अर्थ एवं परिभाषाएँ

'नि' का अर्थ है निशेषेण और 'बंध' का अर्थ है बंधन। 'नि' उपसर्ग है। 'बंध' धातु बांधने के अर्थ में है। 'निबंध' शब्द का अर्थ किसी चीज को किसी के साथ जोड़ने, बांधने या लगाने की क्रिया या भाव है। इस प्रकार समग्र रूप में हम कह सकते हैं कि भावों का समग्र विशेष बंधन ही निबंध है। मूलरूप में अर्थ निबंध का अर्थ है बांधना।

निबंध में एक विशेष प्रकार की चेतना और जीवंतता होती है। इसमें भावना के साथ विचारों को एक साथ संकलित किया जाता है। वास्तव में निबंध को गद्य की केंद्रीय विधा माना जाना चाहिए। निबंध आजकल साहित्यिक क्षेत्र में वह विचारपूर्ण, विवरणात्मक एवं विस्तृत लेख है जिसमें किसी विषय के सभी अंगो का मौलिक एवं स्वतंत्र रूप से विवेचन किया गया हो। निबंध का पूर्व रूप संदर्भ, रचना, प्रस्ताव, लेख है। विचारों के बिखराव को रोकना या व्यवस्थित रूप से बांधकर विशिष्ट रूप देना निबंध कहलाता है। निबंध में उस व्यवस्था पर विशेष बल दिया जाता है जहाँ विचार व्यव्स्थित रूप से प्रस्तुत हो जाते हैं। जॉनसन ने निबंध में नियमबद्धता को अस्वीकार किया है। यह अंग्रेजी के 'एस्से' का पर्याय है। भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों ने निबंध की अलग-अलग परिभाषाएँ दी हैं। जैसे -

पाश्चात्य परिभाषाएँ

1. मौंतेन के अनुसार इच्छित विषय के निरूपण के प्रयास का नाम निबंध है।
2. बेकन के अनुसार विच्छिन्न चिंतन को लिखित रूप में निबंध कहते हैं।
3. जॉनसन के अनुसार निबंध स्वच्छंद मन की वह तरंग है, जिसमें सुसंगठन न होकर

प्रधानतया विशृंखलता ही रहती है।

भारतीय परिभाषाएँ

1. आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार गद्य रचना यदि कवियों या लेखकों की कसौटी है तो, निबंध गद्य की कसौटी है।
2. बाबू गुलाब राय के अनुसार निबंध उस गद्य रचना को कहते हैं जिसमें सीमित आकार के भीतर किसी विषय का वर्णन या प्रतिपादन एक विशेष निजीपन, स्वच्छंदता, सौष्ठव और सजीवता तथा आवश्यक संगति और सभ्यता के साथ किया गया हो।

बोध प्रश्न

- आचार्य रामचंद्र शुक्ल निबंध के विषय में क्या कहते हैं?
- बेकन ने निबंध के बारे में क्या कहा है?

9.2.3 निबंध के तत्व, प्रकार और शैली

निबंध एक ऐसी विधा है जिसमें व्यक्ति अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व, निजीपन, अपने दृष्टिकोण का प्रतिपादन किसी भी विषय की ओट में स्वच्छंदतापूर्वक कर सकता है। प्रायः सभी विद्वानों ने निबंध के निम्नलिखित तत्व माने हैं- 1. उपयुक्त विषय का चयन, 2. सरलता, 3. सुबोधता, 4. प्रसादन क्षमता, 5. वैयक्तिकता, 6. उद्देश्य, 7. बुद्धि तत्व, 8. भाव तत्व, 9. कल्पनातत्व, 10. संक्षिप्तता, 11. शैली आदि।

उल्लेखनीय है कि एक विषय पर अनेक निबंध लिखे जा सकते हैं। इसकी तात्विक विशेषता यह होगी विषय को कितने मौलिक ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। विषय का चयन, मौलिक ढंग से उसका प्रस्तुतीकरण, आकार-प्रकार की मर्यादा का निर्धारण और उस मर्यादा की रक्षा - इसी में निबंधकार की कुशलता मानी जाती है। अनावश्यक विस्तार विषय को अधिक जटिल बना सकता है। निबंध एक सीमित आकार वाली रचना है, लेकिन वह अधूरी या अपूर्ण प्रतीत नहीं होनी चाहिए। बल्कि अपने आप में पूर्ण प्रतीत होनी चाहिए। निबंध को पढ़ने के पश्चात पाठक के सामने वर्ण्य विषय उभर कर आए। निबंध रचना का ढंग भी पाठक को रचना से बांधकर रख सकता है। निबंध पढ़ने के बाद लेखक की रुचियाँ, प्रवृत्तियाँ स्पष्ट हो जाएँ। बिना रोचकता के निबंध शुष्क और नीरस न हो जाए इस ओर भी ध्यान देना आवश्यक है।

निबंधों का वर्गीकरण कई प्रकार से किया जा सकता है। जैसे - स्वरूप के आधार पर,

वर्ण्य विषय के आधार पर, अभिव्यक्ति पक्ष या शैली के आधार पर। इस तरह निबंधों को विचारात्मक निबंध, भावात्मक निबंध, आत्मपरक निबंध, वर्णनात्मक निबंध, विवरणात्मक निबंध और ललित निबंध के वर्गीकृत रूप में देखा जा सकता है। निबंधकार का व्यक्तित्व, उसकी प्रवृतियाँ आदि शैली के द्वारा प्रकट होती हैं। निबंधों में अनेक प्रकार की शैलियां देखने को मिलती हैं जैसे समास शैली, व्यास शैली, प्रवाह शैली, चित्र शैली, अलंकरण शैली, धारा एवं तरंग शैली, हास्य और व्यंग्य शैली आदि।

बोध प्रश्न

- निबंधकार की कुशलता किस में है?
- निबंधों के वर्गिकरण के क्या क्या आधार हैं?
- निबंध की 3 शैलियाँ बताइए।

9.2.4 हिंदी निबंध : उद्भव और विकास

हिंदी खड़ी बोली गद्य के विकास को कई चरणों में बाँटा गया है। भारतेंदु पूर्व युग (तेरहवीं शताब्दी के मध्य से 1868ई. तक), भारतेंदु युग (सन 1868 से 1900 ई. तक), द्विवेदी युग (सन 1900 से 1918 ई. तक), शुक्ल युग या छायावादी युग (सन 1919 से 1938 तक), शुक्लोत्तर युग या छायावादोत्तर युग (सन 1938 से 1947 ई. तक), स्वातंत्र्योत्तर युग (सन 1947 से आज तक)।

हिंदी की अन्य गद्य विधाओं की तरह आधुनिक निबंध का विकास भी भारतेंदु युग से माना जाता है और भारतेंदु को हिंदी निबंध का जनक माना जाता है। स्मरणीय है कि यूरोप में निबंध साहित्य का जनक फ्रेंच साहित्यकार मौंतेन को माना अजाता है।

निबंध परंपरा के विकास को ध्यान में रखते हुए इसे भारतेंदु युग, द्विवेदी युग, शुक्ल युग और शुक्लोत्तर युग में बांटकर देखा जा सकता है। पत्र-पत्रिकाओं के विकास से निबंध के विकास को बल मिला। यह स्पष्ट दिखाई देता है कि भारतेन्दु युग के अधिकतर निबंधकार किसी न किसी पत्रिका के संपादन से अवश्य जुड़े रहे। इस काल के निबंधकारों ने साधारण से साधारण तथा गंभीर से गंभीर विषयों को लेकर निबंध लिखे। निबंधों के लेखन में विषयों की विविधता दिखाई देती है। इस युग के निबंधकार प्रायः मनमौजी स्वभाव के व्यक्ति थे। अतः उनके निबंधों में स्वच्छंदता और उन्मुक्तता पाई जाती है। इस समय व्याकरण संबंधी लापरवाही और अशुद्धियाँ भी दिखाई देती हैं। स्थानीय शब्दों का प्रयोग हुआ है। शैली के विविध रूप और विचराओन की

स्वतंत्रता दृष्टिगत होती है। समाज सुधार, देशभक्ति, पराधीनता के प्रति रोष, देश के उत्थान की कामना, हिंदी के सम्मान की रक्षा भावना, पर्व और त्योहारों के लिए उत्साह तथा नवीन विचारों का स्वागत आदि विषयों पर इस समय अनेक निबंध लिखे गए। इसी के साथ-साथ कई ऐसी रचनाएं भी लिखी गयीं जिनमें स्वप्न के बहाने राजनैतिक अधिकार पाने, समाज सुधार और धर्म संस्कारों का संदेश भी दिया गया, जैसे भारतेंदु का निबंध - 'एक अद्भुत अपूर्व स्वप्न', शिवप्रसाद 'सितारेहिंद' का 'राजा भोज का सपना', राधा प्रसाद गोस्वामी का 'यमपुर की यात्रा' आदि। भारतेंदु युग के प्रसिद्ध निबंधकारों में शिवप्रसाद 'सितारे हिंद' (राजा भोज का सपना), सदासुख लाल (सुरासुर निर्णय), भारतेंदु हरिश्चंद्र (सुलोचना, लीलावती, काशी, मणिकर्णिका, कालचक्र, संगीत सार), चंद्रधर शर्मा गुलेरी (कछुआ धर्म), प्रताप नारायण मिश्र (नवनीत, खुशामद, धोखा, वृद्ध, नारी, समझदार की मौत), पद्मसिंह शर्मा (पद्म पराग), बालकृष्ण भट्ट (साहित्य सुमन, राजा और प्रजा), लाला श्रीनिवास दास (सदाचरण), बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' (नेशनल कांग्रेस की दुर्दशा) आदि सम्मिलित हैं।

द्विवेदी युग भाषा के परिष्कार और संस्कार का युग है। इस काल के प्रसिद्ध निबंधकारों में महावीर प्रसाद द्विवेदी (रसज्ञ रंजन, कालिदास और उनकी कविता, अतीत स्मृति, बेकन विचार रचनावली, भाषा और व्याकरण, नाट्यशास्त्र, उपन्यास रहस्य), अध्यापक पूर्ण सिंह (मजदूरी और प्रेम, सच्ची वीरता, हिटमैन, आचरण की सभ्यता, कन्यादान), बाबू श्यामसुंदर दास (गद्य कुसुमावली, रूपक रहस्य, समाज और साहित्य, भारतीय साहित्य की विशेषताएं), चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' (कछुआ धर्म, गोबर गणेश कथा, काशी), बालमुकुंद गुप्त (शिव शंभू के चिट्ठे, गोविंद नारायण मिश्र-कवि और चित्रकार), पद्म सिंह शर्मा (पद्म पराग, प्रबंध मंजरी), मिश्र बंधु(पुष्पांजलि) आदि प्रमुख हैं।

जहाँ एक ओर भारतेंदु युग गद्य साहित्य के बचपन का युग था, वहीं दूसरी ओर द्विवेदी युग में भाषा प्रौढ़ हुई, परंतु यह युग भारतेंदु युग के निबंध साहित्य के समान संपन्न नहीं हो सका। द्विवेदी जी ने सभी प्रकार के निबंध लिखे। इस काल के निबंधकारों ने भाषा की प्रौढ़ता में विशेष योगदान दिया। भाषा की लाक्षणिकता इस काल के निबंधों की विशेषता रही। विभिन्न प्रकारा के विषयों को लेकर निबंध लिखे गए। शैली बड़ी ही गंभीर, प्रभावशाली और तर्कपूर्ण दिखाई देती है।

शुक्ल युग या छायावादी युग हिंदी निबंध साहित्य का स्वर्ण काल है। इस काल के प्रसिद्ध निबंधकारों में आचार्य रामचंद्र शुक्ल (चिंतामणि भाग 1 और भाग 2), पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी (पंच पात्र, कुछ और कुछ), बाबू गुलाब राय (मेरे निबंध, फिर निराशा क्यों, मन की बातें, जीवन रश्मियाँ), चतुरसेन शास्त्री (अंतस्तल), राय कृष्णदास (पथ की खोज, पागल पथिक), संपूर्णानंद (शिक्षा का उद्देश्य, आर्यों का आदि देश, अधूरी क्रांति), पांडेय बेचन शर्मा उग्र (बुढ़ापा, गाली), सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' (प्रबंध पद्म, प्रबंध प्रतिमा), जयशंकर प्रसाद (काव्य कला तथा अन्य निबंध, रंगमंच, रहस्यवाद), महादेवी वर्मा (शृंखला की कड़ियाँ, छायावाद, रहस्यवाद, काव्य कला, साहित्य और साहित्यकार), शांतिप्रिय द्विवेदी (जीवन यात्रा, कवि और काव्य, परिक्रमा, युग और साहित्य) आदि सम्मिलित हैं।

निबंध क्षेत्र में आचार्य रामचंद्र शुक्ल के आगमन से निबंध साहित्य को नया जीवन मिला। वास्तव में निबंध के क्षेत्र में सबसे अधिक प्रभावशाली व्यक्तित्व आचार्य रामचंद्र शुक्ल का माना जाता है। इस समय गंभीर और विचार प्रधान निबंधों की रचना हुई। इस काल के निबंधों में भाषा की प्रौढ़ता और शैली की विविधता दिखाई देती है।

शुक्लोत्तर युग या छायावादोत्तर युग में हिंदी निबंध बहुआयामी विकास हुआ। इस काल के प्रमुख निबंधकार और उनकी कृतियों का विवरण निम्नलिखित है –

नंददुलारे वाजपेई (आधुनिक साहित्य, बीसवीं शताब्दी, नई कविता, रस सिद्धांत, रीति और शैली), सियारामशरण गुप्त (झूठ सच), रामवृक्ष बेनीपुरी (गेहूं और गुलाब, लाल तारा), इलाचंद्र जोशी (साहित्य सर्जना, विवेचना, साहित्य चिंतन), यशपाल (चक्कर क्लब, गांधीवाद की शवपरीक्षा), जैनेंद्र (मंथन, जड़ की बात, सोच विचार, साहित्य और संस्कृति), हजारी प्रसाद द्विवेदी (अशोक के फूल, कुटज, कल्प लता, नाखून क्यों बढ़ते हैं, प्राचीन भारत के कलात्मक विनोद), रामधारी सिंह 'दिनकर' (आधुनिकता बोध, शुद्ध कविता की खोज, मिट्टी की ओर, रेती के फूल, पन्त), मैथिलीशरण गुप्त (धर्म नैतिकता और विज्ञान), हरिवंश राय बच्चन (नए पुराने झरोखे, टूटी छूटी कड़ियाँ), देवेंद्र सत्यार्थी (धरती माता गाती है, रेखाएं बोल उठी), भगवतशरण उपाध्याय (इतिहास साक्षी है), भदंत आनंद कौसल्यायन (रेल का टिकट), धीरेंद्र वर्मा (विचारधारा), परशुराम चतुर्वेदी (मध्यकालीन प्रेम साधना), वियोगी हरि (यों भी भी तो देखिए), माखनलाल चतुर्वेदी (साहित्य देवता, गरीब देवता), कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' (माटी हो गई सोना, नई पीढ़ी नए विचार), अज्ञेय (त्रिशंकु, आत्मनेपद), रामविलास शर्मा (प्रगति

और परंपरा, परंपरा का मूल्यांकन, संस्कृति और साहित्य), भगीरथ मिश्र (साहित्य साधना और समाज), विजयेंद्र स्नातक (चिंतन के क्षण, विचार के क्षण), नगेंद्र (आस्था के चरण, विचार और अनुभूति), प्रभाकर माचवे (खरगोश के सींग, संतुलन), अमृतराय (बाइस्कोप), केशवचंद्र वर्मा (अफलातूनों का शहर, बरसाने लाल चतुर्वेदी, मिस्टर चोखेलाल, अफवाह), बनारसीदास चतुर्वेदी (साहित्य और जीवन), उपेंद्रनाथ अश्क (मंटो : मेरा दुश्मन), गजानन माधव मुक्तिबोध (नई कविता का आत्म संघर्ष तथा अन्य निबंध, समीक्षा की समस्याएं) आदि।

छायावादोत्तर काल के निबंधों में विचारों की मौलिकता और शैली की रोचकता के दर्शन होते हैं। दार्शनिक और सामाजिक विषयों पर भी निबंधों की रचना हुई। डॉ.नगेंद्र ने मुख्यतः साहित्यिक विषयों पर निबंध लिखे।

समकालीन निबंधकारों में विद्यानिवास मिश्र (तुम चंदन हम पानी, मेरे राम का मुकुट भीग रहा है), विष्णु प्रभाकर (हम जिनके ऋणी हैं), रघुवीर सहाय (दिल्ली मेरा प्रदेश, वह और होंगे जो मारे जाएंगे), धर्मवीर भारती (ठेले पर हिमालय), शिवप्रसाद सिंह (शिखरों के सेतु, कस्तूरी मृग, मानसी गंगा, किस किसको नमन करूं), हरिशंकर परसाई (पगडंडियों का जमाना), कुबेरनाथ राय (विषाद योग, कामधेनु, निषाद बांसुरी), नामवर सिंह (इतिहास और आलोचना, वाद-विवाद संवाद), निर्मल वर्मा (शब्द और स्मृति, कला का जोखिम), लक्ष्मीकांत वर्मा (नए प्रतिमान : पुराने निकष), विजयदेव नारायण साही (लघु मानव के बहाने हिंदी कविता पर बहस, राजनीति में साहित्यकार), रामदरश मिश्र (कितने बजे हैं, घर परिवेश), श्रीलाल शुक्ल (अंगद के पांव, यहाँ से वहाँ, उस जमीन पर कुछ हवा में, अगली शताब्दी का शहर), शरद जोशी(हम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे), मनोहर श्याम जोशी(नेता जी कहिन), हरिमोहन झा (खट्टर काका), विवेकी राय (वन तुलसी की गंध, किसानों का देश, गांवों की दुनिया, रमेश कुंतल मेघ (क्योंकि समय एक शब्द है), अशोक वाजपेयी (पाव भर जीरे में ब्रह्मभोज), मलयज (हंसते हुए मेरा अकेलापन), कुंवर नारायण (आज और आज से पहले), पुरुषोत्तम अग्रवाल (विचार का अनंत), विश्वनाथ त्रिपाठी (देश के इस दौर में) , रमेशचंद्र शाह (भूलने के विरुद्ध) आदि हैं।

बोध प्रश्न

- हिंदी निबंध का उद्भव किस युग में हुआ?

- द्विवेदी युग में किस बात पर विशेष बल दिया गया?
- चार समकालीन निबंधकारों के नाम बताइए।

9.2.5 प्रमुख निबंधकारों की गद्यशैली

छात्रो! आप जानते ही हैं कि निबंध गद्य की आधुनिक विधा है। वर्तमान समय में भी निबंध लेखन लगातार चल रहा है। भारतेंदु युग से लेकर आज तक की लंबी अवधि में अनेक निबंधकार आते हैं जिनमें से कुछ प्रसिद्ध निबंधकार इस प्रकार हैं - भारतेंदु हरिश्चंद्र, प्रताप नारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट, बालमुकुंद गुप्त, सरदार पूर्ण सिंह, बद्रीनारायण चौधरी, अंबिकादत्त व्यास, राधाचरण गोस्वामी, महावीर प्रसाद द्विवेदी, पद्मसिंह शर्मा, बनारसी दास चतुर्वेदी, मिश्र बंधु, चंद्रधर शर्मा गुलेरी, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, डॉ श्याम सुंदर दास, पीतांबर दत्त बड़थ्वाल, संपूर्णानंद, गुलाब राय, हजारी प्रसाद द्विवेदी, जैनेंद्र कुमार, महादेवी वर्मा, डॉ नगेंद्र, कुबेरनाथ राय, विद्यानिवास मिश्र, नन्ददुलारे वाजपेयी, रामविलास शर्मा, अमृतराय, धर्मवीर भारती। इसके साथ ही श्री शिवदान सिंह चौहान,कन्हैयालाल मिश्र, प्रभाकर माचवे आदि अनेकानेक निबंधकारों ने निबंध लेखन की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया। कुछ निबंधकारों की चर्चा के साथ निबंध के विकास में रामचंद्र शुक्ल का विशेष योगदान अविस्मरणीय है।

भारतेंदु हरिश्चंद्र ने कई प्रकार की विषय वस्तुओं को केंद्र में रखते हुए निबंधों की रचना की। इनके अधिकतर निबंध भारतेंदु मैगजीन, हरिश्चंद्र चंद्रिका, बालबोधिनी आदि पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए। इनकी भाषा शैली वर्णनात्मक, प्रवाह पूर्ण और अलंकारिक है। मुहावरों की बंदिश और चमत्कार की प्रवृत्ति इनके निबंधों की विशेषताएं हैं।

पंडित बालकृष्ण भट्ट हिंदी प्रदीप के संपादक रहे। उन्होंने वर्णनात्मक, विचारात्मक, भावात्मक निबंधों की रचना की। मेला-ठेला, सहानुभूति, वकील, आशा, मुछंदर, खटका साथ-साथ जैसे अनेक निबंध लिखे।

प्रताप नारायण ब्राह्मण पत्रिका के संपादक तथा छोटे-छोटे विषयों को लेकर निबंध लिखने वाले निबंधकार रहे। इन्होंने नास्तिक, मूर्ति पूजा, सोने का डंडा, मनोवेग, नाक, पेट, भौं, दांत आदि में हास्य और व्यंग भाषा शैली का प्रयोग किया। इनके निबंधों में व्यक्तित्व की सर्वाधिक झलक दिखाई पड़ती है।

बालमुकुंद गुप्त ने 'शिव शंभू' उपनाम से निबंध लिखे जो 'शिव शंभू का चिट्ठा' नाम से

प्रसिद्ध हैं। इसी प्रकार चौधरी बद्रीनारायण प्रेमघन ने हिंदी भाषा का विकास, उत्साह, परिपूर्ण प्रवास जैसे निबंध लिखे जो इनके प्रतिनिधि निबंध माने जाते हैं। ये व्यंग्य प्रधान हैं। महावीर प्रसाद द्विवेदी के निबंध भावाभिव्यंजक शक्ति, संस्कृत एवं व्याकरणसम्मत भाषा से भरपूर हैं। इस समय समसामयिकता, राजनीति, संस्कृति, समाज आदि सभी विषयों को ध्यान में रखकर निबंध लिखे गए। द्विवेदी जी ने बेकन के निबंधों का अनुवाद किया और उनके आदर्श को सामने रखकर - कवि और कविता, उपन्यास, नाटक, कवि कर्तव्य, कवियों की उर्मिला विषयक उदासीनता जैसे निबंध लिखे।

पंडित माधव प्रसाद मिश्र ने धर्म व संस्कृति को लेकर निबंधों की रचना की। इनकी भाषा संस्कृतगर्भित, सशक्त और प्रौढ़ है। बाबू श्याम सुंदर दास ने साहित्यिक विषयों पर अधिकतर निबंध लिखे हैं।

पद्मसिंह शर्मा के दो निबंध संग्रह पद्म पराग तथा प्रबंध मंजरी हैं। इनकी शैली में वैयक्तिकता और सरसता है। पूर्ण सिंह लाक्षणिक तथा व्यंग शैली को अपनाकर निबंध लिखने वाले माने जाते हैं। इन दोनों निबंध कारों को शैलीकार अधिक माना जाता है, निबंधकार कम। पंडित चंद्रधर शर्मा गुलेरी की भाषा परिष्कृत एवं व्याकरण के नियमों से बंधी है।

हिंदी निबंध के इतिहास में आचार्य रामचंद्र शुक्ल अपना अलग स्थान रखते हैं। रामचंद्र शुक्ल ने निबंध, हिंदी साहित्य के इतिहास और समालोचना के क्षेत्र में गंभीर लेखन किया। उन्होंने मनोविकारों पर हिंदी में पहली बार निबंध लेखन किया। साहित्य समीक्षा से संबंधित निबंधों की भी रचना की। उनके निबंधों में भाव और विचार अर्थात बुद्धि और हृदय दोनों का समन्वय है। जायसी, तुलसी, सूरदास पर लिखी गई उनकी आलोचनाओं ने भावी आलोचकों का मार्गदर्शन किया। हिंदी में पाठ आधारित वैज्ञानिक आलोचना का सूत्रपात इन्हीं के द्वारा हुआ। हिंदी निबंध के क्षेत्र में शुक्ल जी का महत्वपूर्ण योगदान है। शुक्ल जी ने इतिहास लेखन में रचनाकार के जीवन और पाठ को समान महत्व दिया। उन्होंने प्रासंगिकता के दृष्टिकोण से साहित्यिक प्रत्ययों एवं रस आदि की पुनर्व्याख्या की। शुक्ल जी की मौलिक कृतियां तीन प्रकार की मिलती हैं - आलोचनात्मक ग्रंथ में सूर, तुलसी, जायसी आदि पर आलोचनाएं, काव्य में रहस्यवाद, काव्य में अभिव्यंजनावाद, रस मीमांसा। निबंधात्मक ग्रंथ- चिंतामणि निबंध संग्रह दो भागों में प्रकाशित जिनमें विभिन्न विषयों पर लिखे गए निबंध संग्रह हैं और ऐतिहासिक ग्रंथ - हिंदी साहित्य का इतिहास। शुक्ल जी की अनूदित कृतियां, संपादित कृतियां भी हैं। इन्होंने प्रायः साहित्य और मनोवैज्ञानिक निबंध लिखे हैं। इनके निबंध साहित्य की भाषा खड़ी बोली है जिसके प्रायः दो रूप मिलते हैं - क्लिष्ट और जटिल, सरल और व्यावहारिक। दोनों प्रकार की

भाषाओं पर इनका पूर्ण अधिकार था। शब्द मोतियों की भांति वाक्यों के सूत्र में बंधे हुए हैं। एक भी शब्द निरर्थक नहीं। प्रत्येक शब्द का अपना पूर्ण महत्व है। शुक्ल जी की शैली अत्यंत मौलिक है। उनकी शैली पर उनके व्यक्तित्व की पूरी छाप दिखाई देती है। उसमें गागर में सागर पूर्ण रूप से विद्यमान है। उनके निबंधों में आलोचनात्मक शैली, गवेषणात्मक शैली और भावात्मक शैली दिखाई देती है। शुक्ल जी हिंदी के पहले समीक्षक हैं जिन्होंने वैविध्यपूर्ण जीवन के ताने-बाने में गुंफित काव्य के गहरे और व्यापक लक्ष्यों का साक्षात्कार करने का वास्तविक प्रयत्न किया। उन्होंने भाव या रस को काव्य की आत्मा माना है। शुक्ल जी काव्य द्वारा जीवन के समग्र बोध पर बल देते हैं। इनकी स्थापनाएँ मौलिक हैं। इन्होंने अपनी लोक भावना और मनोवैज्ञानिक दृष्टि से काव्यशास्त्र का संस्कार किया। इस दृष्टि से वे आचार्य की कोटि में आते हैं। अपनी समीक्षाओं के द्वारा शुक्ल जी ने व्यावहारिक आलोचना का उच्च प्रतिमान प्रस्तुत किया। इनके मनोविकार संबंधी निबंध अद्वितीय हैं। समाज का संगठन और उन्नयन करने वाले आदर्शों में आस्था इन रचनाओं का मूल स्वर है। शुक्ल का 'हिंदी साहित्य का इतिहास' हिंदी का गौरव ग्रंथ है। निबंधों में इनकी सूक्तियां अर्थगर्भित होती हैं। आलोचना और निबंध के क्षेत्र में इनकी प्रतिष्ठा युग प्रवर्तक की है। अपनी प्रदेयता के कारण ही शुक्ल जी निबंध परंपरा में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं।

शुक्ल युग में बाबू गुलाब राय ने हास्य एवं व्यंगय से परिपूर्ण निबंध लिखे हैं। पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी ने उत्सव, समाज सेवा आदि निबंधों में मौलिक विचारों और नूतन शैली का आदर्श उपस्थित किया है।

शुक्ल युग के पश्चात ऐसे कई नाम हैं जो उच्च कोटि के निबंधकार माने जाते हैं। हजारी प्रसाद द्विवेदी ने भारतीय संस्कृति और इतिहास को लेकर निबंध लिखे। इनके सभी निबंधों में रचनात्मक प्रतिभा, गंभीर अध्ययन, प्रगाढ़ पांडित्य को देखा जा सकता है। जैनेंद्र के निबंधों में दार्शनिकता, नगेंद्र के निबंधों में आचार्य शुक्ल के समान मौलिकता, हजारी प्रसाद द्विवेदी के समान रोचकता, गुलाब राय के समान स्पष्टता और सरलता दिखाई देती है। महादेवी वर्मा के निबंध संस्मरणात्मक हैं। रामविलास शर्मा, शिवदान सिंह चौहान और अमृत राय के निबंधों पर प्रगतिवादी विचारधारा की छाप स्पष्ट दिखाई देती है। साहित्यिक निबंधों के लेखन में नंददुलारे वाजपेयी का नाम प्रमुख है। शांतिप्रिय द्विवेदी के निबंध वर्णनात्मक निबंध हैं। और भी अनेक निबंधकार हैं जिन्होंने हिंदी निबंध के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

बोध प्रश्न

- रामचंद्र शुक्ल के निबंधों की विशेषता क्या है?
- हजारीप्रसाद द्विवेदी ने मुख्य रूप से किन विषयों पर निबंध लिखे?

- प्रगतिवादी विचारधारा के निबंधकारों के नाम बताइए।

9.3 पाठसार

हिंदी साहित्य के आधुनिक युग में भारतेंदु और उनके सहयोगियों से निबंध लिखने की परंपरा का आरंभ होता है। निबंध ही नहीं गद्य की कई विधाओं का प्रचलन भारतेंदु युग से हुआ। यह इस बात का प्रमाण है कि गद्य और उसकी अनेकानेक विधाएं आधुनिक मनुष्य के स्वाधीन व्यक्तित्व के अधिक अनुकूल हैं। मोटे तौर पर स्वाधीनता, आधुनिक मनुष्य का केंद्रीय भाव है। इस भाव के कारण परंपरा की रूढ़ियां दिखाई पड़ती हैं। सामयिक परिस्थितियों का दबाव अनुभव होता है। भविष्य की संभावनाएं खुलती हुई जान पड़ती हैं। इसी को इतिहास बोध कहा जाता है। भारतीय साहित्य इतिहास बोध के कारण आधुनिक माना जाता है।

हिंदी साहित्य की अन्य गद्य विधाओं की तरह निबंध लेखन भी भारतेंदु युग से शुरू हुआ। हर युग के निबंध लेखन की अपनी अलग अलग विशेषताएं रहीं। निबंध परंपरा में यह अवश्य देखा जा सकता है किजितने भी निबंधकार हुए उन्होंने किसी भी प्रकार के दबाव को ना स्वीकार करते हुएमुक्त ढंग से चिंतन करते हुए अपने निबंधों की रचना की। बहुत से निबंधकारों ने ललित निबंधों की रचना की। निबंधों का एक प्रकार ललित निबंध हैं। ललित निबंध विधा की उपस्थिति का आभास आधुनिक काल और गद्य विधा के आरंभ के सतह ही मिलने लगता है। भारतेंदु हरिश्चंद्र, प्रताप नारायण मिश्र, सरदार पूर्ण सिंह, चंद्रधर शर्मा गुलेरी, बालमुकुंद गुप्त, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी आदि के निबंधों में इस विधा के पूर्वाभास दिखाई देते हैं लेकिन एक व्यवस्थित और महत्वपूर्ण विधा के रूप में इसकी पहचान पहले पहल आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के निबंधों में दिखाई पड़ती है। अशोक के फूल, कुटज जैसे संकलनों के निबंध पहले-पहल इस विधा के उदाहरण बन सकते हैं। आगे चलकर कुबेरनाथ राय, विद्यानिवास मिश्र, विवेकी राय आदि निबंधकारों ने ललित निबंध परंपरा को समृद्ध किया।

9.4 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष उपलब्ध हुए हैं:

1. भारतीय साहित्य में निबंध का अस्तित्व पुराने समय से रहा है।
2. आधुनिक गद्य विधा के रूप में निबंध अँग्रेजी के 'एस्से' का वाचक है।
3. लेखक का व्यक्तित्व और विचारों का स्वतंत्र प्रवाह आधुनिक निबंध की पहचान है।

4. आधुनिक काल में भारतेन्दु को निबंध का जनक माना जाता है।
5. रामचंद्र शुक्ल ने हिंदी निबंध को एक ऐसी ऊंचाई पर पहुंचाया जिसे लांघना दुष्कर है।
6. हिंदी का निबंध साहित्य अत्यंत समृद्ध है।
7. ललित निबंध को लोकप्रिय बनाने का श्रेय आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी को जाता हैं।

9.5 शब्द संपदा

1. अति व्याप्ति	=	सीमा या नियम से अधिक
2. उत्पन्न करना	=	पैदा करना
3. उद्भव	=	जन्म
4. चयनित	=	चुने हुए
5. तुच्छ से तुच्छ	=	छोटी से छोटी
6. प्रक्रिया	=	विधि
7. रूढ़ियां	=	पुरानी परंपरायें
8. स्वाध्याय	=	स्वयं अध्ययन करना

9.6 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. निबंध का अर्थ बताते हुए उसके प्रकारों की विस्तार से चर्चा कीजिए।
2. निबंध की विभिन्न परिभाषाएँ देते हुए उसके स्वरूप की चर्चा कीजिए।
3. निबंध परंपरा में आचार्य रामचंद्र शुक्ल का स्थान निर्धारित कीजिए।
4. निबंध का महत्व बताते हुए गद्य साहित्य में उसका स्थान निर्धारित कीजिए ।
5. भारतेंदु युग के निबंधकारों की चर्चा कीजिए।

खंड (ब)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. निबंध की विशेषताएं लिखिए।
2. निबंध के विभिन्न तत्वों पर चर्चा कीजिए?
3. द्विवेदी युग के निबंधो की चर्चा कीजिए।
4. शूकलोत्तर काल के निबंधकारों के योगदान पर प्रकाश डालिए।

खंड (स)

I सही विकल्प चुनिए

1. हिंदी निबंध के जनक हैं - ( )

(अ) रामप्रसाद निरंजनी (ब) भारतेन्दु हरिश्चंद्र (स) रामचंद्र शुक्ल (ड़) बाबू गुलाब राय

2. कुटज के निबंधकार हैं - ( )

(अ) रामचंद्र शुक्ल (ब) हजारी प्रसाद द्विवेदी (स) बालकृष्ण भट्ट (ड़) नगेंद्र

3. सरदार पूर्णसिंह किस युग के निबंधकार हैं - ( )

(अ) द्विवेदी युग (ब) शुक्ल युग (स) भारतेंदु युग (ड़) शूकलोत्तर युग

4. विचारात्मक निबंध की विशेषता क्या है? ( )

(अ) भावना की प्रधानता (ब) विचार की प्रधानता

(स) लालित्य की प्रधानता (ड़) शैली कि प्रधानता

II रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए

1. हिंदी साहित्य के आधुनिक युग में .... से निबंध लिखने की परंपरा आरंभ हुई।
2. निबंध विधा में रचनाकार का .... प्रमुख होता है।
3. मनोविकारों पर निबंध .... ने लिखे।
4. ललित निबंध के विकास का श्रेय .... को है।
5. आचरण की सभ्यता के लेखक .... हैं।

III सुमेल कीजिए

i) शृंखला की कड़ियां	(अ) शिव प्रसाद सितारेहिंद
ii) चिंतामणि	(ब) हजारी प्रसाद द्विवेदी
iii) राजाभोज का सपना	(स) आचार्य रामचंद्र शुक्ल
iv) अशोक के फूल	(द) महादेवी वर्मा

9.7 पठनीय पुस्तकें

1. गद्य यात्रा. श्रीराम शर्मा.

2. हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास. रामकुमार वर्मा.

3. हिंदी साहित्य का इतिहास. रामचंद्र शुक्ल.

4. हिंदी साहित्य: उद्भव और विकास. हजारी प्रसाद द्विवेदी.

इकाई 10 : होली और ओणम (डॉ. एन. ई. विश्वनाथ अय्यर) : एक विश्लेषण

इकाई की रूपरेखा

10.0 प्रस्तावना

10.1 उद्देश्य

10.2 मूल पाठ : होली और ओणम : एक विश्लेषण

10.2.1 डॉ. एन. ई. विश्वनाथ अय्यर का परिचय

10.2.2 'होली और ओणम' का तात्विक विश्लेषण

10.2.2.1 विषय और आकार में अन्विति

10.2.2.2 स्वाधीन चिंतन

10.2.2.3 निजी अनुभव

10.2.2.4 व्यक्तित्व की अभिव्यंजना

10.2.2.5 भाषा शैली

10.3 पाठसार

10.4 पाठ की उपलब्धियाँ

10.5 शब्द संपदा

10.6 परीक्षार्थ प्रश्न

10.7 पठनीय पुस्तकें

10.0 प्रस्तावना

हिंदी साहित्य में ही नहीं अपितु विश्व की सभी भाषाओं में निबंध को सृजनात्मक विधा के रूप में मान्यता मिली है। आधुनिक युग में मध्ययुगीन धार्मिक-सामाजिक रूढ़ियों से मुक्ति का द्वार दिखाई पड़ा। इस मुक्ति से निबंध का गहरा संबंध है। निबंध में निबंधकार की स्वच्छन्दता का विशेष महत्व है। इसके संबंध में आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने लिखा है कि "निबंध लेखक अपने मन की प्रवृत्ति के अनुसार स्वच्छंद गति से इधर-उधर फूटी हुई सूत्र शाखाओं पर विचरता चलता है।"

भारत त्योहारों का देश है। यहाँ हर महीने कोई न कोई त्योहार मनाया जाता है। समय-समय पर अनेक साहित्यकारों ने भारत में मनाए जाने वाले त्योहारों को लेकर कहानियाँ,

निबंध आदि लिखे हैं। दक्षिण भारत के केरल प्रांत में रहने वाले विद्वान एन. ई. विश्वनाथ अय्यर ने होली और ओणम जैसे दो त्योहारों को लेकर बड़े विस्तार से इनकी चर्चा की है। ये दोनों त्योहार अपनी-अपनी सांस्कृतिक परंपराओं के कारण विशेष महत्व रखते हैं। ये दोनों त्योहार पौराणिक कथाओं से जुड़े हुए हैं। विषय वस्तु के रूप में इन दोनों त्योहारों को लेते हुए लेखक बड़े विस्तार से उत्तर और दक्षिण की सांस्कृतिक परंपराओं का विश्लेषण किया गया है।

10.1 उद्देश्य

प्रिय छात्रो! इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप -

- निबंध की रचना प्रक्रिया को समझ सकेंगे।
- डॉ. एन. ई. विश्वनाथ अय्यर के साहित्यिक योगदान से परिचित हो सकेंगे।
- विवेच्य निबंध की विषय वस्तु का विश्लेषण कर सकेंगे।
- निबंध के तत्वों को समझकर इनका उल्लेख कर सकेंगे।
- निबंध के भाषिक सौंदर्य से अवगत हो सकेंगे।
- होली के सांस्कृतिक और पौराणिक संदर्भ को जान सकेंगे।

10.2 मूल पाठ : होली और ओणम (एन. ई. विश्वनाथ अय्यर) : एक विश्लेषण

प्राचीन काल के संस्कृत निबंधों में धर्मशास्त्रीय सिद्धांतों की तार्किक व्याख्या की जाती थी, परंतु समय के साथ उनका स्वरूप बदला और बाद में जो निबंध लिखे जाने लगे उनमें व्यक्तित्व या व्यक्ति का गुण प्रधान होने लगा। निबंध की विधा का संबंध इतिहास बोध से है। इतिहास बोध परंपरा की रूढ़ियों से मनुष्य के व्यक्तित्व को मुक्त करता है। निबंध, लेखक के व्यक्तित्व को प्रकाशित करने वाली ललित गद्य रचना है। किसी भी प्रकार के छोटे से छोटे विषय को भी निबंध लेखन की विषयवस्तु बनाया जा सकता है। निबंध के दो विशेष गुण होते हैं - व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति और सहभागिता का आत्मिक या अनौपचारिक स्तर। निबंध लेखन में शैली को विशेष महत्व दिया जाता है।

हिंदी साहित्य में निबंध लेखन की लंबी परंपरा है। भारतेंदु युग से लेकर आज तक अनेक प्रकार के निबंधों की रचना हुई। भारतेंदु हरिश्चंद्र, प्रताप नारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट, महावीर प्रसाद द्विवेदी, हजारी प्रसाद द्विवेदी, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, कुबेर नाथ राय, विद्यानिवास मिश्र, धर्मवीर भारती आदि अनेक निबंधकारों ने अपनी-अपनी शैलियों को

अपनाकर निबंधों की रचना की तथा विषयपरक और व्यक्तिपरक दोनों प्रकार के निबंध लिखे जाते रहे हैं।

'निबंध' मूलतः संस्कृत भाषा का शब्द है। अंग्रेजी में इसके लिए 'एस्से' शब्द का प्रयोग किया जाता है। अलग-अलग विद्वानों ने निबंध के अलग-अलग तत्व माने हैं। डॉ. दशरथ ओझा ने निबंध के छह तत्व माने हैं - गद्य रचना, व्यक्तित्व, एकसूत्रता, रोचकता, भाव का पुट और औपचारिकता का अभाव। इसी प्रकार दान बहादुर पाठक ने निबंध के सात तत्व बताएं हैं- व्यक्तित्व, विचारों की स्वतंत्रता, लघु आकार, एक सूत्रता, निजी अनुभूति, सजीव भाषा शैली, प्रभावोत्पादकता। द्वारिका प्रसाद सक्सेना ने निबंध के पांच तत्व माने हैं - बुद्धि तत्व, अनुभूति तत्व, कल्पना तत्व, अहम तत्व, शैली तत्व। इस तरह मोटे तौर पर निबंध साहित्य साहित्य का विश्लेषण करने के लिए निम्न पाँच तत्वों को कसौटी बनाया जा सकता है-

1. विषय और आकार में अन्विति
2. स्वाधीन चिंतन
3. निजी अनुभूतियाँ
4. व्यक्तित्व की अभिव्यंजना
5. भाषा-शैली

बोध प्रश्न

- निबंध के दो विशेष गुण क्या माने गए हैं?
- दशरथ ओझा ने निबंध के कौन कौन से तत्व माने हैं?

10.2.1 डॉ. एन. ई. विश्वनाथ अय्यर का परिचय

प्रिय छात्रो! प्रस्तुत इकाई के अंतर्गत हम डॉ. एन. ई. विश्वनाथ अय्यर के निबंध 'होली और ओणम' पर गहन चर्चा करेंगे।

डॉ. एन. ई. विश्वनाथ अय्यर केरल के निवासी और हिंदी के प्रसिद्ध लेखक हैं। आपकी मातृभाषा मलयालम है। आपने मद्रास विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम.ए. और काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से हिंदी में एम.ए. किया। पीएच.डी. की उपाधि सागर से प्राप्त की। इन्होंने केरल के विभिन्न महाविद्यालयों में अध्यापन का कार्य किया और फिर केरल विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में प्राध्यापक रहे तथा विभागाध्यक्ष बने। इसके पश्चात कोचीन विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के प्रथम आचार्य और भाषा संकाय के डीन नियुक्त किए गए। आप दक्षिण के अनेक विश्वविद्यालयों के साथ-साथ उत्तर भारत के कई विश्वविद्यालयों से बराबर जुड़े रहे और कई अखिल भारतीय समितियों के सदस्य रहे। आपने साहित्य को जो योगदान दिया उस को ध्यान

में रखते हुए आपको राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। अनुवाद में आपकी विशेष रुचि रही है। मलयालम, तमिल, हिंदी और अंग्रेजी साहित्य का परस्पर अनुवाद किया तथा अनुवाद के सैद्धांतिक और व्यावहारिक पक्ष पर अध्यापन के साथ-साथ चिंतन करते रहे। आपकी पुस्तक 'अनुवाद कला' ने बहुत ख्याति अर्जित की। इनकी प्रसिद्ध रचनाओं में 'शहर सो रहा है', 'उठता चांद डूबता सूरज', 'फूल और कांटे', ललित निबंध संग्रह हैं। 'आधुनिक हिंदी काव्य' तथा 'मलयालम काव्य' काव्य संकलन हैं। 'जड़ें' और 'आधी घड़ी' मलयालम से अनूदित उपन्यास हैं। 'तुकाराम' अंग्रेजी से मलयालम में अनूदित है। 'अनुवाद कला' तथा 'अनुवाद: भाषाएं-समस्याएं', 'कार्यालय : विधि और पत्राचार' आदि अन्य पुस्तकें हैं।

प्रो. एन. ई. विश्वनाथ अय्यर दक्षिण के प्रतिष्ठित ललित निबंधकार हैं। आपको याद रखना चाहिए कि डॉ. अय्यर ने लंबे समय तक हिंदी भाषी क्षेत्र में रहकर साहित्यिक हिंदी के साथ-साथ बोलचाल की हिंदी पर भी अपनी मातृभाषा मलयालम जैसा ही अधिकार प्राप्त किया tha। वे हिंदी भाषा के काशी और सागर जैसे दो गढ़ो में हिंदी के अपने समय के उद्भट आचार्यों के संपर्क में आए तथा साहित्य की विवध विधाओं में पारंगत हुए। खास बात यह है कि काशी में उन्हें पंडित हजारी प्रसाद द्विवेदी का स्नेहपूर्ण सान्निध्य मिला। आपको पता ही है कि द्विवेदी जी हिंदी में ललित निबंध विधा के संस्थापक आचार्य हैं। दक्षिण में प्रो. एन.ई. विश्वनाथ अय्यर ने उन्हीं की परंपरा को अपने ढंग से आगे बढ़ाया। प्रो. अय्यर के ललित निबंधों में प्रकृति, संस्कृति और लेखकीय व्यक्तित्व का सुंदर मेल दिखाई देता है। 'होली और ओणम' आप का प्रसिद्ध निबंध है।

बोध प्रश्न

- डॉ. एन.ई.विश्वनाथ अय्यर ने कहाँ कहाँ अध्ययन किया?
- डॉ. एन.ई.विश्वनाथ अय्यर के तीन ललित निबंध संग्रहों के नाम बताइए।

10.2.2 'होली और ओणम' का तात्विक विश्लेषण

इस निबंध में काव्य के समान रमणीयता, भावुकता और सरसता दिखाई देती है। इसमें कहानी के समान विनोदपूर्ण बातों का रस और नाटक के समान गतिशीलता है। संस्मरण के समान विवरणात्मकता और मार्मिकता तथा निजता इस निबंध की विशेषताएँ हैं। इसमें रेखाचित्र की तरह चित्रात्मकता के साथ-साथ तर्क का बल और पारस्परिक वार्तालाप का आनंद भी समाहित है।

मोटे तौर पर निबंध की पांच कसौटियाँ मानी जाती हैं - विषय और आकार में अन्विति, स्वाधीनता, निजी अनुभूतियाँ, व्यक्तित्व की अभिव्यंजना, भाषा-शैली। आगे इन्हीं तत्वों के आधार पर 'होली और ओणम' निबंध का विवेचन किया जा रहा है।

बोध प्रश्न

- 'होली और ओणम' निबंध की दो विशेषताएँ बताइए।

10.2.2.1 विषय और आकार में अन्विति

दुनिया का कोई भी विषय निबंध रचना का आधार बन सकता है। निबंधकार किसी विषय विशेष का विस्तृत विश्लेषण या अनुशीलन नहीं करता, बल्कि वह उस विषय के अपने मन पर पड़ने वाले संवेदनात्मक प्रभाव को प्रस्तुत कर रहा होता है। इसीलिए निबंध संक्षिप्त होते हैं। यह जीवन की किसी वस्तु या समग्र जीवन के प्रति किसी एक व्यक्ति का दृष्टिकोण है। जब कोई निबंध लिखा जाता है तो उसके विषय और आकार में अन्विति बनी रहनी चाहिए। अर्थात न तो निबंध अत्यंत छोटा हो और न ही अत्यधिक बड़ा हो, बल्कि विषय और आकार में एक अनुपात होना चाहिए, जो निबंध की विशेषताओं को उभारे। 'होली और ओणम' निबंध विषय और आकार की दृष्टि से संतुलित निबंध है क्योंकि, इसमें दोनों त्योहारों को एक साथ लेते हुए सैद्धांतिक और व्यावहारिक दृष्टि से पाठकों के साथ जोड़ा गया है। वैसे तो होली भारत के अलावा अन्य कई देशों जैसे नेपाल, त्रिनिदाद, फ़िजी, सूरीनाम, गुयाना, मॉरीशस और फिलीपींस में भी मनाई जाती है, किंतु निबंधकार ने केवल उत्तर भारत में मनाई जाने वाली होली और केरल में मनाए जाने वाले ओणम को केंद्र में रखते हुए दोनों के सांस्कृतिक महत्व को अनेक उदाहरण देते हुए समझाया है। होली प्रायः मार्च महीने में मनाई जाती है और ओणम सितंबर माह में। दोनों ही त्योहार खेती से प्राप्त अच्छी उपज के हर्ष के परिणाम हैं। दोनों ही त्योहारों पर स्थानीय प्रभाव को देखा जा सकता है। होली और ओणम से जुड़ी अनेक सांस्कृतिक परम्पराओं को निबंधकार ने संतुलित रूप से इस प्रकार जोड़ा है कि विषय और निबंध का आकार दोनों में संतुलन दिखाई देता है।

बोध प्रश्न

- विषय और आकार की अन्विति से क्या अभिप्राय है?

10.2.2.2 स्वाधीन चिंतन

निबंध को मूल रूप से विचार तत्व की रचना माना गया है क्योंकि, निबंध में विचार तत्व विषय और विवेचन दोनों ही दृष्टियों से अपेक्षित होता है। निबंध की विषय वस्तु का मूल बिंदु विचार है। उसकी रचना में विचार तत्व अन्य विधाओं से पृथक चिंतन स्वरूप में विद्यमान होता है। प्रत्येक निबंधकार अपने ही विचार को अपनी निबंध रचना में निरूपित करता है। किसी दूसरे का विचार उसके निबंध का मूल आधार नहीं बनता। निबंधकार का चिंतन स्वाधीन होता है। निजी विचार, तर्क-वितर्क, जीवन-दर्शन, व्याख्या-परीक्षा आदि से युक्त मौलिक विचारधारा के साथ लेखक विश्वनाथ अय्यर ने अपना दृष्टिकोण इस निबंध में प्रस्तुत किया है। इस निबंध में विचारों और भावों का गुण दिखाई देता है, लेकिन प्रधानता विचार तत्व को ही दी गई है। निबंधकार का मानना है कि होलिका के रूप में प्रतिवर्ष असत्य और बुराई को जलाया जाता है, वहीं दूसरी ओर ओणम के दिन असुरराज महाबलि का स्मरण किया जाता है। यदि होली और ओणम त्योहारों को लेकर लेखक का अपना स्वतंत्र चिंतन न होता तो यह निबंध लिखा ही नहीं जाता। उनके इस चिंतन को निम्नलिखित उदाहरणों में देखा जा सकता है -

- “उत्सवों को व्यावसायिक बनाने से उनकी गरिमा नष्ट हो जाती है।”
- “संभव है अपने गलत काम की बात सोचते-सोचते वे स्वयं सिमटकर वामन हो गए हों।”

बोध प्रश्न

- विचार तत्व से क्या अभहीपराय है?

10.2.2.3 निजी अनुभव

निबंध में बुद्धि तत्व को भाव तत्व में उतरना पड़ता है, इसलिए विचारों की प्रधानता होते हुए भी निबंधों में निजी अनुभव और अनुभूतियों की प्रमुख भूमिका होती है। अनुभूति का संबंध हृदय से है। जीवन की वास्तविकता से गृहीत दृश्य, द्रष्टा को कोई न कोई अनुभव दे जाता है। इस अनुभव को जब वह अपनी कल्पना द्वारा रचनात्मक रूप देता है तो यह व्यापक होकर अनुभूति बन जाती है। लेखक की जीवन विषयक दृष्टियाँ एवं भाव ही निबंध में प्रकट होते हैं। कल्पना और भावना का तत्व निकाल देने से तो निबंध लेख बन जाता है। निबंधकार की रागात्मकता, भावुकता निबंध को सरस, सजीव और काव्यात्मक बनाती है। निजी अनुभूति के कारण ही निबंध वैचारिक शुष्कता से बच पाता है। प्रस्तुत निबंध में लेखक का व्यक्तित्व छिप नहीं सका है। उन्होंने अपने निजी अनुभवों को और निजी दृष्टिकोण को इस निबंध में प्रस्तुत किया है। वे वाराणसी में रहे हैं और वहाँ रहते हुए उन्होंने होली के उल्लास को निजी तौर पर देखा और अनुभव किया। तभी वे होलिका को संबोधित करते हुए कहते है -

“तुम इतनी अभागिनी रहीं कि अब तक तुम्हारी बदनामी खत्म नहीं हुई। अब भी

प्रतिवर्ष बच्चे, जवान, औरतें और बूढ़े तुम्हारी मूरत बनाकर उसे गाली से, थूक से और जाने क्या-क्या से अभिषेक करते हैं-उसे जलाते हैं, चारों तरफ चक्कर लगा-लगाकर अट्टहास करते हैं।"

उत्तर भारत में गली-गली में यह होली कांड चलता है। इसी तरह ओणम के व्यवसायीकरण पर भी लेखक लेखक क्षुब्ध होते हैं। यथा -

> "मगर आजकल इन पर्वों की वाणिज्यिक संभावनाओं पर विचार चल रहा है। ओणम को पर्यटक उत्सव बना कर अधिकाधिक पर्यटकों को केरल निमंत्रित किया जा रहा है।"

इस तरह इस निबंध में अनेक स्थानों पर निबंधकार ने अपने निजी अनुभव और विचार दिए हैं।

बोध प्रश्न

- निबंध में भावतत्व का समावेश कैसे होता है?
- लेखक ने होलिका को संबोधित करते हुए क्या कहा है?
- ओणम के व्यवसायीकरण पर लेखक ने क्या कहा है?

10.2.2.4 व्यक्तित्व की अभिव्यंजना

निबंध में निबंधकार के व्यक्तित्व की अभिव्यंजना महत्वपूर्ण होती है। प्रस्तुत निबंध में विषय, चिंतन, अनुभूति और अभिव्यक्ति में लेखक के निजी व्यक्तित्व की छाप दिखाई देती है। जैसे किसी एक विषय पर अलग-अलग विद्वानों के अलग-अलग विचार होते हैं, वैसे ही इस निबंध में होली और ओणम पर लेखक के अपने विचार हैं। यही उनकी व्यक्तिगत विशेषता का मूल आधार है। लेखक का व्यक्तित्व तीन बातों पर निर्भर होता है- बुद्धि तत्व, भाव तत्व और सौंदर्य की अनुभूति। अंग्रेजी के प्रसिद्ध निबंधकार हडसन ने यह माना है कि व्यक्तित्व प्रधान निबंध को ही अच्छा निबंध माना जा सकता है।

बोध प्रश्न

- हडसन ने अच्छा निबंध किसे माना है?

प्रस्तुत निबंध को पढ़ते समय पाठक लेखक के बुद्धि तत्व, भाव तत्व और सौन्दर्य तत्व की अनुभूति से तादात्म्य स्थापित कर लेता है। जैसे भाव तत्व के लिए इस उदाहरण को देखा जा सकता है, जहाँ लेखक ने राजा बलि और इन्द्र की तुलना करते हुए कहा है कि - "सुरराज को

फिलहाल संपत्ति जरूर मिली। पर वह हमेशा के लिए तुम्हारी तुलना में कायर एवं अवगुणी निकला। समय के जौहरी ने तुम्हारी कीर्ति को चिरंतन कर दिया। तुम आदर्श रंजनकारी राजा के रूप में अमर हो गए। तुम्हारे शासन का युग समता और संतोष का, न्याय और निश्छलता का, आनंद और उल्लास का आदर्श युग रहा था। इसीलिए तुम प्रतिवर्ष अब ओणम पर हम लोगों को दर्शन देने केरल आते हो, तब तुम्हारी गाथा पुनः जीवंत हो उठती है।"

बोध प्रश्न

- लेखक का व्यक्तित्व किन तीन बातों पर निर्भर होता है?
- लेखक ने राजा बलि की तुलना किससे की है?
- लेखक ने 'कायर' किसे कहा है?

इस निबंध में अनेक स्थानों पर पाठक को सौंदर्य की अनुभूति होती है। एक उदाहरण देखा जा सकता है - "दोनों त्योहारों की प्राकृतिक भूमिका समान है। भारत के अधिकांश पुत्र धरती के लाल हैं। धरती के आनंद और उल्लास के समय वे भी आमोद-उल्लास मनाते हैं। हहराती शीत लहरी के थमने के बाद बसंत की प्यारी झलक आम के बौरों में, अशोक के फूलों में और प्रायः सभी पुलकित तरुओं में दिखाई देती है। नए वर्ष में मन की उदासी की जगह उमंग आती है। ऋतुओं के परिवर्तन की यह छटा उत्तर भारत में जिस प्रकार सुलभ है, उस प्रकार दक्षिण में-खासकर केरल में नहीं मिलती। यहाँ तो वर्षाकाल, मद्धिम काल और ग्रीष्मकाल - तीन ही मौसम हैं। कटकमास केरल में वर्षा का वरदान लाता है, पर यह वरदान बढ़-बढ़कर अभिशाप होता है और लोग सिंहमास की उत्सुक प्रतीक्षा में अधीर रहते हैं। नया केरलीय वर्ष सिंहमास में प्रारंभ होता है। सुहाना मौसम, सुनहरी धान की बालियों से भरा घर-बार, साग-सब्जी की झांकी हर दिशा में-किसान और खेत का मालिक-सबकी तिजोरी में चांदी होती है, ओंठों पर मोती भी।"

बोध प्रश्न

- उत्तर भारत और दक्षिण भारत में ऋतुओं में क्या अंतर पाया जाता है।

10.2.2.5 भाषा-शैली

निबंधकार अपने ज्ञान, भाव और कल्पना के द्वारा अपनी अभिव्यंजना को पूर्णता प्रदान करके निबंध की रचना करते हैं। परिष्कृत भाषा और शैली निबंध की अपनी विशेषता होती है। अनुभूति और अभिव्यक्ति की क्षमता एक निबंधकार को दूसरे निबंधकार से अलग करती है।

किसी भी निबंधकार के लिए परिमार्जन और प्रौढ़ता में निपुण होना जरूरी होता है। हर एक निबंधकार का अपना अलग व्यक्तित्व होता है। उसकी प्रवृत्तियाँ, रुचियाँ एवं आशाएँ अलग-अलग होती हैं। यही अलग होने का भाव उसके अभिव्यक्ति पक्ष में भी झलकता है। निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि निबंधकार ने व्यक्तिगत अनुभूतियों और अनुभव के आधार पर अपनी अभिव्यक्तियाँ दी हैं। निबंध के दो भेद होते हैं- व्यक्ति प्रधान, विषय प्रधान।

प्रस्तुत निबंध में निबंधकार की निजी भावनाओं - हर्ष, विषाद, वेदना, सुख, दुख आदि का वर्णन हुआ है। होली और ओणम को विषय बनाकर निबंधकार ने गंभीर चिंतन मनन करते हुए विषय को रोचक और विचारोत्तेजक बना दिया है। प्रतीकात्मक भाषा, आलंकारिक भाषा, मुहावरेदार भाषा, लाक्षणिक भाषा, सौंदर्यपरक भाषा जैसे भाषा के कई रूप इस निबंध को और भी संप्रेषणीय बनाते हैं।

बोध प्रश्न

- निबंध के दो प्रकार बताइए।
- प्रस्तुत निबंध में किस किस प्रकार की भाषा मिलती है?

सौंदर्यपरक भाषा का एक उदाहरण देख सकते हैं - “होली और ओणम के पर्वों पर लोकमानस की प्रतिक्रिया एक-सी रहती है-मन में मस्ती, कंठ में सरगम, पैरों में पायल की रुनझुन और भुजा में फडकन।”

लाक्षणिक भाषा का उदाहरण- “समय का जौहरी तो सबको परखता है और उचित न्याय करता है।”

इस निबंध में होली और ओणम का वर्णन है जिसके लिए अनेक विवरण प्रस्तुत किए गए हैं। इस निबंध में भावात्मक, वर्णनात्मक, विचारात्मक और कहीं-कहीं हास्य और व्यंग्य शैली का प्रयोग करते हुए विषय को संप्रेषण युक्त बनाया गया है। प्रसाद शैली का सहारा लेते हुए भाषा में माधुर्य और सरलता का समावेश किया गया है। निबंधकार ने प्रवाह शैली को भी अपनाया है, जिसके द्वारा उनके भाव प्रतिबिंबित होते हैं। इस प्रकार इस निबंध में निबंधकार ने अपने अनुभवों को अलग अलग शैली अपना कर व्यक्त किया है। निबंध न तो अधिक बड़ा है और न ही छोटा है, बल्कि विषय के अनुरूप उस का गठन किया गया है। इस निबंध में निबंधकार का स्वाधीन चिंतन दिखाई देता है। निजी विचार, तर्क-वितर्क, जीवन-दर्शनआदि से युक्त यह निबंध बड़ा ही सुंदर बन पड़ा है और इसमें लेखक का अपना दृष्टिकोण भी यत्र-तत्र दिखाई देता है।

बोध प्रश्न

- एक निबंधकार को दूसरे से अलग करने वाली विशेषता क्या होती है?
- होली और ओणम पर लोक मानस की प्रतिक्रिया कैसी होती है?
- इस निबंध में यत्र-तत्र क्या दिखाई देता है?
- निबंधकार ने किस शैली को अपनाया है?

10.3 पाठ सार

हिंदी साहित्य के इतिहास में गद्य का विकास समय की मांग के अनुरूप हुआ। इसी गद्य परंपरा में निबंध साहित्य अपना विशेष महत्व रखता है। 'होली और ओणम' निबंध में लेखक ने उत्तर और दक्षिण के दो महत्वपूर्ण त्योहारों के पौराणिक आधार तथा उनके मनाए जाने के स्वरूप पर प्रकाश डाला है। होली के त्योहार के पीछे यदि होलिका के भाई की ममता के कारण उसके शत्रु का यशगान करने वाले बालक प्रह्लाद को जलाने के प्रयास में स्वयं जलने की कथा है, तो होलिका के रूप में प्रति वर्ष असत्य और बुराई को जलाया जाता है। इसी प्रकार ओणम के पीछे असुरराज महाबलि द्वारा वामन रूप रखकर आने वाले भगवान विष्णु के द्वारा नापे गए तीन कदम धरती के दान की कथा है, जिसमें वामन ने छल से तीन लोप नाप लिए थे। केरलवासी मानते हैं कि इस दिन महाबलि पधारते हैं। इन दोनों त्योहारों पर स्थानीय रंग, प्रकृति तथा लोक रीतियों का प्रभाव दिखाई देता है। इन दोनों त्योहारों पर स्थानीय प्रभाव की महत्वपूर्ण भूमिका दिखाई देती है। दोनों उत्सव मिलन के उत्सव हैं। खेती से प्राप्त अच्छी उपज के हर्ष के परिणाम स्वरूप इन्हें मनाया जाता है। ओणम में भू के स्वामी तथा किसानों के बीच मधुर संबंधों की स्मृतियाँ हैं और इस निबंध के द्वारा यह संदेश भी दिया गया है कि यदि उत्सव को व्यावसायिक बनाया जाए तो उसकी गरिमा नष्ट हो जाती है।

लेखक का मानना है कि भाग्य बड़ा बलवान और विलक्षण होता है। संसार में कई बार बलिदान करने पर भी किसी-किसी को याद नहीं किया जाता और कई बार यदि कोई किसी की भलाई करता है तो ईर्ष्यावश उसका सर्वनाश कर दिया जाता है। आज भी संसार में बहुत से ऐसे लोग मिल जाएंगे। जिस प्रकार एक जौहरी हीरे की परख करता है, उसी प्रकार समय भी सबकी परीक्षा लेता है और उचित न्याय करता है। होलिका अपने भाई हिरण्यकश्यप से अटूट स्नेह करती थी, इसी कारण अपने भाई के पुत्र प्रह्लाद का नाश करने के लिए उसे अग्नि में लेकर प्रवेश कर जाती है, किंतु भाग्य की लीला अपरंपार होती है क्योंकि वह जल जाती है और

प्रह्लाद बच जाता है। बात यहीं पर खत्म नहीं होती। आज भी होलिका को प्रतिवर्ष जलाया जाता है और उत्तर भारत में होली का त्योहार मनाया जाता है।

इसके विपरीत असुरराज महाबलि ने किसी का अहित नहीं किया था, किंतु उनके यश के प्रति ईर्ष्या रखने वाले देवताओं की प्रार्थना पर भगवान महाविष्णु ने कपट लीला करते हुए वामन वेश धारण किया और महाबलि से तीन पग जमीन मांगी। महाबलि ने हंसकर उनकी याचना स्वीकार की। तब वामन ने एक पग से धरती, दूसरे पग से आकाश नाप लिया और तीसरा पग उन्होंने महाबलि के सिर पर रखा और पाताल नाप लिया। सब कुछ जानते हुए भी महाबलि ने अपना सब कुछ शत्रु को दे दिया। समय के जौहरी ने महाबलि की कीर्ति को अमर कर दिया।

होली और ओणम दोनों ही त्योहार पुराण कथाओं से जुड़े हैं। एक त्योहार में असुर की धूर्तता की गाथा है तो दूसरे त्योहार में आदर्श बलिदान की कथा है। अंतर इतना है कि महाबलि की पूजा असुर के रूप में न करके आदर्श महादानी सम्राट के रूप में की जाती है। ये दोनों कथाएं मानव प्रकृति के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डालती हैं। उत्तर भारत में बहुत से त्योहार होते हैं, फिर भी होली विशेष रूप से उल्लेखनीय है। बुजुर्गों से होली की कथा सुन-सुनकर सब परिचित होते रहते हैं और ज्यादातर लोग यही समझते हैं कि रंग खेलना, नए कपड़े पहनना और मिठाइयाँ खाना ही होली का त्योहार है; जबकि ऐसा नहीं है। यह रंगों का त्योहार है और यह त्योहार आपस में शत्रुता का नाश कर प्रेम का विकास करता है।

दूसरी तरफ ओणम महाबलि के पधारने का दिन माना जाता है। यह त्योहार दस दिनों तक मनाया जाता है। घर को लीपा-पोता जाता है तथा गांव के देवता को प्रतिष्ठित किया जाता है। उनके स्वागत-सत्कार के उपलक्ष्य में दस दिनों तक रंगोली सजाई जाती है। पहले दिन फूलों की एक छोटी सी रंगोली बनाई जाती है। हर दिन यह रंगोली बढ़ती जाती है। इन दस दिनों में यह रंगोली काफी बड़ी हो जाती है। इन दिनों सब एक दूसरे से मिलते हैं। ऐसा माना जाता है कि केरल में जब भूस्वामी होते थे, तब वह किसानों को नए वस्त्र देते थे और किसान भी भूस्वामी को साग-सब्जियाँ, फल आदि उपहार स्वरूप देते थे, लेकिन धीरे-धीरे इस त्योहार को मनाने की परंपरा बदलती गई। वास्तव में ये दोनों त्योहार मिलन के त्योहार हैं। आज हम देखते हैं कि संयुक्त परिवार धीरे-धीरे टूटकर एकल होते जा रहे है। तब ऐसे त्योहार परिवार के सदस्यों को आपस में मिलने का अच्छा मौका देते हैं।

होली में नाच-गाना आदि होता है, रंग खेले जाते हैं। बरसाने की होली अत्यंत प्रसिद्ध है, किंतु ओणम का पूरा भी उल्लास गांवभर दिखाई देता है और ओणम के लोकगीत बहुत ही प्रसिद्ध हैं। इस दिन नाव की दौड़ प्रतियोगिता होती है। केरल की महिलाएं एक विशेष प्रकार का

लोक नृत्य करती हैं। जैसे होली मनाने की परंपरा अब धीरे-धीरे बदल रही है, उसी प्रकार ओणम का रूप भी धीरे-धीरे कई स्थानों पर बदल रहा है। केरल में कुंजुरामन नायर ओणम के कवि माने जाते हैं। ये दोनों ही त्योहार हमारी परंपरा की स्मृतियों को ताजा बनाए हुए हैं।

धीरे-धीरे ओणम को पर्यटक उत्सव बना दिया गया है और पर्यटकों को लुभाने के लिए विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम आयोजित होते हैं। सितंबर के दूसरे सप्ताह में केरल आने वाले कला प्रेमी यात्रियों को यहाँ यह उत्सव देखने को मिलता है। यदि यह कहा जाए कि इस उत्सव को व्यावसायिक बना दिया गया है तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। किसी भी त्योहार को व्यावसायिक बना देना उचित नहीं होता क्योंकि इससे सांस्कृतिक परंपराएं प्रभावित होती हैं और त्योहारों के पीछे जो श्रद्धा और गरिमा होती है, वह भी नष्ट होने लगती है। इस तरह से इस निबंध में लेखक ने उत्तर भारत और केरल प्रांत की सांस्कृतिक परंपराओं को बड़े ही सुंदर ढंग से अभिव्यक्ति दी है।

10.4 पाठ की उपलब्धियाँ

छात्रो! इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिकखित निष्कर्ष उपलब्ध हुए हैं -

1. हिंदी निबंध के विकास में हिंदीतर भाषी हिंदी लेखक डॉ. एन. ई. विश्वनाथ अय्यर का योगदान अविस्मरणीय है।
2. 'होली और ओणम' शीर्षक निबंध में ललित निबंध की सभी विशेषताएँ देखी जा सकती हैं।
3. विवेच्य निबंध उत्तर और दक्षिण भारत के बीच सांस्कृतिक सेतु का निर्माण करने में समर्थ है।
4. होली और ओणम दोनों ही पर्व पौराणिक मान्यताओं से जुड़े हैं।
5. होली और ओणम दोनों ही पर्वों का संबंध ऋतु परिवर्तन और नई फसल से है।
6. होली और ओणम दोनों ही भारतीय लोक मानस की उत्सव प्रियता के प्रतीक हैं।

10.5 शब्द संपदा

1. अधीश्वर	=	स्वामी
2. असुरेश्वर	=	असुरों के स्वामी
3. अहित	=	नुकसान
4. उल्लास	=	आनंद या प्रसन्नता

5. उल्लेखनीय	=	अनूठा उल्लेख करने योग्य
6. कपटलीला	=	छलपूर्ण व्यवहार
7. कलावंतों	=	कलाकारों
8. चिरंतन	=	पुरातन
9. जान निछावर करना	=	बलिदान करना
10. जीवंत	=	सजीव
11. धरती के लाल	=	किसान
12. धूर्तता	=	पाखंड
13. नखलिस्तान	=	रेगिस्तानी इलाके का हरा भरा स्थान
14. निश्छलता	=	निष्कपट या शुद्ध हृदय वाला
15. पुलकित	=	प्रसन्न
16. प्रजारंजन	=	प्रजा को प्रसन्न करने वाले
17. फूलते-फलते	=	सुख-सौभाग्ययुक्त होना
18. बटु	=	बौना
19. बहुमत	=	बहुत लोगों का मत
20. भस्मसात	=	जला देना या नष्ट कर देना
21. भुवन	=	संसार
22. महिमा	=	बड़ाई या शोभा
23. मिट्टी में मिला देना	=	नष्ट कर देना
24. वामन-वेश	=	बौने का वेश
25. विख्यात	=	प्रसिद्ध
26. विलक्षण	=	अनोखा
27. श्लाघनीय	=	प्रशंसनीय
28. संकल्पना	=	धारणा या अवधारणा
29. सुरराज	=	देवताओं का राजा
30. सूक्ष्म	=	बारीक

31. स्तुति = प्रार्थना

10.6 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. एन. इ. विश्वनाथ अय्यर के व्यक्तित्व की विशेषताएं लिखते हुए उनके कृतित्व पर प्रकाश डालिए।

2. होली का सांस्कृतिक महत्व बताइए।

3. ओणम का सांस्कृतिक महत्व बताते हुए उसकी विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

4. होली और ओणम में क्या समानता है? पठित पाठ के आधार पर चर्चा कीजिए।

खंड (ब)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. होली से जुड़ी पौराणिक कथा क्या है?

2. ओणम से जुड़ी पौराणिक कथा क्या है?

3. होली कैसे मनाई जाती है?

4. ओणम का पर्व कैसे मनाया जाता है?

खंड (स)

I सही विकल्प चुनिए

1. हिरण्यकश्यप की बहन थी - ( )

(अ) पूतना (ब) होलिका (स) शूर्पणखा (ड़) मंथरा

2. होली को कहा जाता है - ( )

(अ) रंगो का त्योहार (ब) फूलो का त्योहार

(स) प्रकाश का त्योहार (ड़) झंडों का त्योहार

3. एन. ई. विश्वनाथ अय्यर की मातृभाषा है - ( )

(अ) तेलुगु (ब) तमिल (स) मलयालम (ड़) कन्नड़

II रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए

1. होली प्रायः .... माह में मनाई जाती है।

2. निबंध में विषय और आकार की ....होनी चाहिए।

3. निबंध को मूलरूप से .... तत्व की रचना माना गया है।
4. ओणम........... माह में मनाया जाता है।

III सुमेल कीजिए

i) असुरराज	(अ) होलिका
ii) अभागिनी	(ब) प्रह्लाद
iii) सुरराज	(स) महाबलि
iv) भक्त	(ड़) कायर

10.7 पठनीय पुस्तकें

1. हिंदी निबंध साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन. बाबूराम.
2. हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास. रामकुमार वर्मा
3. निबंध निलय. सत्येंद्र.
4. हिंदी साहित्य का इतिहास. रामचंद्र शुक्ल.
5. निबंध निकेत. विश्वनाथ प्रसाद.

इकाई 11 : एकांकी : विधागत स्वरूप

इकाई की रूपरेखा

11.0 प्रस्तावना

11.1 उद्देश्य

11.2 मूल पाठ : एकांकी : विधागत स्वरूप

11.2.1 एकांकी का अर्थ

11.2.2 एकांकी की परिभाषा

11.2.3 एकांकी के तत्व

11.2.4 एकांकी का ऐतिहासिक विकास-क्रम

11.3 पाठसार

11.4 पाठ की उपलब्धियां

11.5 शब्द संपदा

11.6 परीक्षार्थ प्रश्न

11.7 पठनीय पुस्तकें

11.0 प्रस्तावना

हिंदी साहित्य की विविध गद्य विधाओं का विकास भारतेंदुकाल में हुआ। इसी काल में विविध गद्य विधाओं के लघु रूप भी विकसित हुए, उनमें 'एकांकी' का महत्त्वपूर्ण स्थान है। जबकि ऐतिहासिक दृष्टि से एकांकी का उद्भव उन्नीसवीं सदी के अंत में माना जाता है। एकांकी के संवादात्मक स्वरूप एवं नाट्य विधा के विकास की दृष्टि से विचार करें तो हम पाएंगे कि प्राचीन समय में भी एकांकी का अस्तित्व था। कभी कभी यह भ्रम होता है कि एकांकी पूर्ण आकार के नाटक का एक अंक होता है, लेकिन यह सही नहीं है। साहित्यिक विधा के रूप में एकांकी और नाटक दो अलग अलग विधाएँ हैं। नाटक में किसी भी पात्र या चरित्र का विकास क्रमिक रूप से होता है। इसके विपरीत एकांकी में वह तीव्रता से पूर्णता प्राप्त करता है। इसके अलावा नाटक के कथानक में फैलाव और विस्तार अधिक होता है। इसकी तुलना में एकांकी के कथानक में घनत्व या गहराई अधिक होती है। नाटक में आधिकारिक कथावस्तु के साथ

प्रासंगिक या सहायक कथाएँ भी होती हैं, किंतु एकांकी में एक ही कथा का वर्णन होता है, उसमें प्रासंगिक कथाओं के लिए स्थान नहीं होता।

इस इकाई में आप हिंदी एकांकी के विधागत स्वरूप का अध्ययन करेंगे।

11.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप -

- एकांकी के अर्थ तथा परिभाषा को समझ सकेंगे।
- एकांकी के तत्वों एवं विधागत स्वरूप को जान सकेंगे।
- एकांकी के ऐतिहासिक विकास से अवगत हो सकेंगे।
- प्रमुख एकांकीकारों से परिचित हो सकेंगे।

11.2 मूल पाठ : एकांकी : विधागत स्वरूप

विज्ञान के विकास के फलस्वरूप मानव के जीवन में उसके समय और शक्ति की बचत हुई है। इसके बाद भी उसका जीवन सरल, सुखमय होने के स्थान पर जीवन की आपा धापी बढ़ती गयी। ऐसे में उसके पास इतना समय भी नहीं बचा कि वह बड़े-बड़े नाटकों, उपन्यासों, महाकाव्यों आदि का पूर्णतः आनंद ले सके। फलतः गीत, कहानी, एकांकी आदि साहित्य के लघुरूपों का विकास हुआ।

11.2.1 एकांकी का अर्थ

'एकांकी' एक अंक वाला नाटक होता है। लेकिन जिस प्रकार उपन्यास का लघु रूप कहानी नहीं हो सकता है, ठीक उसी प्रकार नाटक का लघु रूप एकांकी नहीं होता। एकांकी एक ऐसा दृश्य काव्य है, जिसमें एक अंक में अलग-अलग दृश्यों के माध्यम से कथानक गढ़ा जाता है। भरत मुनि द्वारा गिनाए गए रूपक के दस भेदों में से एकांकी को प्रहसन के अंतर्गत रखा गया है। एकांकी शब्द को 'साहित्यदर्पण' में 'एकांक' शब्द के रूप में प्रयुक्त किया गया है। वर्तमान संदर्भ में, यह अंग्रेजी के 'वन एक्ट प्ले' का हिंदी रूपांतरण है। दूसरे शब्दों में आधुनिक हिंदी एकांकी विधा का विकास पश्चिम के 'वन एक्ट प्ले' के आधार पर हुआ है।

अपने आरंभिक रूप में एकांकी 'कर्टेन रेज़र' अथवा पटोन्नायक के रूप में रंगमंच पर दिखाया जाता था। यह मुख्य नाटक से पूर्व आम दर्शकों के लिए कोई विषय लेकर दो या तीन

पात्रों द्वारा मंचित किया जाता था। धीरे-धीरे इसे दर्शकों तथा महान लेखकों जैसे - चेखव, गोर्की, आस्कर वाइल्ड, इलियट, मिलर आदि के द्वारा खूब प्रोत्साहन मिला। इस तरह यह एक अंक वाली विधा के रूप में विकसित होने लगा।

बोध प्रश्न

- एकांकी का अर्थ बताइए।

11.2.2 एकांकी की परिभाषा

एकांकी की परिभाषा देने से पहले, इस भ्रम का निवारण आवश्यक है कि एकांकी का प्रचालन मुख्य रूप से समय के आभाव के कारण हुआ। इस बारे में डॉ.भोलानाथ तिवारी का यह कथन विचारणीय है कि - “यह नहीं कहा जा सकता कि चूंकि हमारे पास बड़ी-बड़ी साहित्यिक रचनाओं को पढ़ने के लिए समय नहीं हैं, इसलिए हम गीत, कहानी, एकांकी आदि पढ़ते हैं। बात यह है कि हम जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाओं और समस्याओं आदि को क्रमबद्ध एवं समग्र रूप से भी अभिव्यक्त देखना चाहते हैं और उन अभिव्यक्तियों का स्वागत करते हैं, मगर साथ ही साथ किसी एक महत्त्वपूर्ण भावना, किसी एक उद्दीप्त क्षण, किसी एक असाधारण एवं प्रभावशाली घटना या घटनांश की अभिव्यक्ति का भी स्वागत करते हैं। हम कभी अनगिन फूलों से सुसज्जित सलोनी वाटिका पसन्द करते हैं और कभी भीनी सुगन्ध देने वाली खिलने को तैयार नन्हीं सी कली। दोनों बातें हैं, दो रुचियाँ हैं, दो पृथक किन्तु समान रूप से महत्त्वपूर्ण दृष्टिकोण हैं, समय के अभाव या अधिकता की इसमें कोई बात नहीं।”

सेठ गोविन्ददास के अनुसार “एकांकी जीवन से सम्बंधित किसी एक ही मूल भाव या विचार की एकांत अभिव्यक्ति होती है।”

बोध प्रश्न

- किसके अनुसार एकांकी एक कली के समान है?
- डॉ. भोलानाथ तिवारी ने एकांकी की क्या विशेषताएँ बताई हैं?
- अपने शब्दों में एकांकी को पारिभाषित कीजिए।

11.2.3 एकांकी के तत्व

एकांकी के तत्व निम्नलिखित हैं -

1. कथानक : कथानक में जीवन की किसी एक घटना, भाव, समस्या का विन्यास किया जाता है। एकांकी की कथा में यथार्थ, आदर्श, धर्म, राजनीति, समाज, परिवार आदि सभी समाहित हो सकते हैं। इसमें स्थान, समय, कार्य - एकता की विशिष्ट भूमिका होती है। कथानक की पांच अवस्थाएं हैं - प्रारंभ, नाटकीय स्थल, द्वंद्व, चरम सीमा तथा परिणति।

2. पात्र तथा चरित्र-चित्रण : एकांकी में एक मुख्य पात्र के साथ कुछ सहायक पात्र होने चाहिए। ये यथार्थ जगत के सजीव पात्रों के माध्यम से कथानक को गतिशीलता प्रदान करने वाले होने चाहिए।

3. द्वंद्व : एकांकी में द्वंद्व अथवा संघर्ष से सहज, सरल तीव्रता का समावेश किया जाता है। द्वंद्व के द्वारा वह जीवन यथार्थ का प्रतीक बन जाता है।

4. संवाद अथवा कथोपकथन : संवाद ही किसी कथानक को उद्देश्यपरक बनाने में सहायक होते हैं। देश, काल, वातावरण को समझने में सहायक छोटे-छोटे संवाद पात्रों के चरित्र को जीवंत बनाते हैं।

5. भाषा-शैली : एकांकी की भाषा पात्रानुकूल सहज, सरल एवं स्पष्ट होनी चाहिए, ताकि पाठकों को सरलता से समझ में आ जाय।

6. प्रभाव-ऐक्य : एकांकी के मूल भाव, विचार, पात्र, चरित्र तथा भाषा-शैली की पूर्ण अभिव्यक्ति प्रभाव ऐक्य के माध्यम से ही संभव है। जिसे देखकर प्रेक्षक के मन-मस्तिष्क में समग्रता का भाव उत्पन्न होता है।

7. अभिनेयता : एकांकी का मंचीयता के गुणों के साथ लेखन किया जाता है। यही कारण है कि लेखक भाव-विचार, स्थिति के अनुसार रंग निर्देश दिया करते हैं।

यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि, “कलेवर की दृष्टि से एकांकी एक अंक का नाटक है, किंतु दृश्य-विधान के अनुसार इसके दो भेद किए जा सकते हैं – पहला, एक दृश्य का एकांकी; दूसरा, अनेक दृश्यों का एकांकी। पहली श्रेणी के एकांकी में कथा किसी घटित घटना के मार्मिक स्थल से आरंभ होती है और भावी घटनाओं के अवरोध से जिज्ञासा तथा कुतूहल की वृद्धि करती हुई तीव्र गति से विस्मयपूर्ण संक्रमण-विंदु तक पहुँच जाती है। इसमें कथा का प्रवाह उस निर्झर के समान होता है, जो किसी पहाड़ी से अकस्मात फूटता है, कुछ दूर तक दिखाई पड़ता है और शीघ्र ही आँखों से ओझल हो जाता है। इस प्रकार के नाटकों में एक ही स्थान पर, एक ही समय में कार्य संपन्न हो जाता है।” (हिंदी साहित्य कोश: भाग 1, पृष्ठ 145)

बोध प्रश्न

- एकांकी के कितने तत्व होते हैं?
- एकांकी में अभिव्यक्ति प्रभाव कैसे संभव होता है?
- कलेवर और दृश्य-विधान की दृष्टि से एकांकी कितने प्रकार के होते हैं?

11.2.4 एकांकी का ऐतिहासिक विकास-क्रम

ऐतिहासिक विकास-क्रम की दृष्टि से हिंदी-एकांकी को निम्नलिखित चरणों में विभाजित किया जाता है :

1. भारतेन्दु-द्विवेदी युग (1875-1928)
2. प्रसाद-युग (1929-37)
3. प्रसादोत्तर-युग (1938-47)
4. स्वातंत्र्योत्तर-युग (1948 से अब तक)

11.2.4.1 भारतेन्दु-द्विवेदी युग

भारतेन्दु हरिश्चंद्र रचित 'प्रेमयोगिनी' (1875 ई.) से हिंदी एकांकी का प्रारम्भ माना जा सकता है। भारतेंदु युग में विषयगत दृष्टिकोण के आधार पर सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक विषयों के साथ देश के विकास में बाधक रीति-रिवाजों, रूढ़ियों, सदियों से चली आ रही सड़ी-गली परम्पराओं को दूर करने का प्रयास सामाजिक समस्या-प्रधान एकांकियों में किया गया है। भारतेन्दुयुगीन एकांकीकारों ने सामाजिक कुरीतियों पर हास्य-व्यंग्यपूर्ण शैली में एकांकियों का प्रणयन करते हुए समाज को प्रेरित एवं सजग बनाया। इन एकांकियों में पात्रों के संवादों द्वारा भारतीय सभ्य समाज में व्याप्त पाखण्ड एवं व्याभिचार का पर्दाफाश किया गया है। कुछ उल्लेखनीय एकांकियों में भारतेन्दु कृत 'भारत-दुर्दशा', प्रतापनारायण मिश्र कृत 'कलि कौतुक रूपक', किशोरीलाल गोस्वामी कृत 'चौपट चपेट', राधाचरण गोस्वामी कृत 'भारत में यवन लोक', 'बूढ़े मुँह मुँहासे' आदि हैं। इनमें धार्मिक पाखण्ड, सामाजिक रूढ़ियों एवं कुरीतियों पर तीखे व्यंग्य किये गए हैं। देवकीनन्दन त्रिपाठी का 'कलियुगी जनेऊ', 'कलियुग विवाह', काशीनाथ खत्री का 'बाल विधवा', राधाकृष्णदास का 'दुःखिनी बाला' आदि में नारी के त्रासद वैवाहिक जीवन का यथार्थ चित्रण किया गया हैं। जिसके परिणामस्वरूप पाठकों के मन में भारतीय जन मानस में व्याप्त रूढ़ियों एवं परम्पराओं के विरुद्ध विद्रोह की भावना भर उठी, और वे उन्हें दूर करने हेतु कृतसंकल्प हो गए। एकांकीकारों ने विगत की आत्मगौरवपूर्ण स्मृतियों की नींव पर देश के सुंदर भविष्य का सपना

बुनने का सार्थक प्रयास किया है। भारतेन्दु-कालीन एकांकियों में धार्मिक, पौराणिक कथानकों में भारतीय संस्कृति का आदर्श स्थापित करने का प्रयत्न देखा जा सकता है। यथा - भारतेन्दु कृत 'सत्य हरिश्चन्द्र' और 'धनंजय', बदरीनारायण प्रेमघन कृत 'प्रयाग राज-गमन', राधाचरण गोस्वामी कृत 'श्रीदामा' और 'सती चंद्रावली', बालकृष्ण भट्ट कृत 'दमयन्ती स्वयंवर', कार्तिक प्रसाद कृत 'गंगोत्री', 'ऊषाहरण', 'द्रौपदी चीर हरण' और 'निस्सहाय हिन्दू' आदि इस काल के उल्लेखनीय एकांकी हैं।

इस युग के एकांकीकारों ने संस्कृत, अंग्रेजी, बंगला, पारसी तथा लोक नाट्य परंपरा को एकांकी सृजन की शैली में प्रयुक्त किया। भारतेंदु-द्विवेदी युगीन एकांकियों का लक्ष्य समाज-सुधार तथा देश प्रेम की धारा को जन-जन में प्रवाहित करना था।

बोध प्रश्न

- एकांकीकारों ने समाज को प्रेरित करने के लिए कैसे एकांकी लिखे?
- भारतेन्दु युगीन एकांकियों का लक्ष्य क्या है?
- भारतेन्दु युगीन प्रमुख एकांकीकारों का नाम बताइए।

11.2.4.2 प्रसाद-युग

हिंदी एकांकी का द्वितीय युग नाटक सम्राट जयशंकर प्रसाद के नाम पर प्रसाद युग के नाम से जाना जाता है। हिंदी साहित्य के आधुनिक एकांकी-साहित्य की प्रथम मौलिक कृति के रूप में 1929 में प्रकाशित प्रसाद कृत 'एक घूँट' को माना जाता है। इसका कारण यह है कि भारतेन्दु-द्विवेदी युगीन एकांकी शास्त्रीय दृष्टि से परिपूर्ण एकांकी नहीं थे। प्रसाद युग में एकांकी के शिल्प में कई परिवर्तन हुए, जैसे - एकांकियों में संगीत का प्रयोग, संस्कृत नाट्य प्रणाली में प्रयुक्त विदूषक की व्यवस्था, स्वगत कथन आदि। एकांकियों में प्रभाव ऐक्य को प्रतिष्ठित करते हुए प्राचीन परम्पराओं के साथ ही स्थल की एकता, पात्रों का मनोवैज्ञानिक चरित्र-चित्रण, गतिशील कथानक आदि सभी विशेषताओं को 'एक घूंट' में देखा जा सकता है। इस प्रकार, भारतेन्दु हरिश्चंद्र द्वारा रोपित एकांकी के पौधे को पल्लवित और पुष्पित करने का श्रेय प्रसाद जी को ही दिया जा सकता है।

बोध प्रश्न

- हिंदी में नाटक सम्राट किसे कहा जाता है?

हिंदी एकांकी में आधुनिकता का प्रवेश द्वार प्रसाद युग में ही खुलता है। प्रसादयुगीन एकांकीकारों ने पाश्चात्य एकांकी विधा के आधार पर नूतन शैली में हिंदी एकांकी का प्रणयन

आरम्भ किया। इस युग के एकांकी नाटकों पर पाश्चात्य नाटककारों हैनरिक, इब्सन, गाल्सवर्दी तथा बर्नार्ड शॉ आदि का प्रभाव दिखाई देता है। भारतेन्दु युग में हिंदी एकांकी संस्कृत नाटक - प्रहसन के आधार पर सृजित होता था, प्रसाद युग में वह नव्य रूप में विकसित हुआ। इस युग में ऐसे एकांकियों की रचना अधिक हुई जो मानव जीवन से सीधे जुड़े हुए थे। इससे पूर्व के एकांकियों का बनावटीपन छोडकर अब सामाजिक, पारिवारिक एवं दैनिक समस्याओं से जुड़कर लिखा जाने लगा, जिससे ये सामाजिक यथार्थ के निकटतर प्रतीत होने लगे। प्राचीन एकांकियों की कृत्रिमता, काव्यमय कथोपकथन, रंगमंच एवं अस्वाभाविकता को पूर्णतः त्यागते हुए समकालीन समस्याओं, विचारधाराओं एवं शिष्ट गद्य के साथ परिमार्जित भाषा में एकांकियों की रचना प्रसाद युग के एकांकियों की विशेषता बन गई।

प्रसाद युग हिंदी गद्य की नाटक एकांकी विधा के लिए स्वर्णिम युग सिद्ध हुआ। अभिनेयता और संवादों में सजीवता, संक्षिप्तता एवं मार्मिकता की ओर विशेष ध्यान देते हुए प्रहसन, फैंटेसी, गीति-नाट्य, ओपेरा, रेडियो प्ले, झांकी तथा मोनोड्रामा आदि एकांकी के नवीन रूपों का विकास किया गया।

बोध प्रश्न

- प्रसाद युग के एकांकी किस विषय से अधिक जुड़े हुए थे?
- प्रसाद युग हिंदी गद्य की नाटक एकांकी विधा के लिए स्वर्णिम युग क्यों हैं?

प्रसाद युग के अनेक एकांकीकारों ने सामाजिक जीवन की विविध समस्याओं को अपनी लेखनी के माध्यम से उजागर करने का प्रयत्न किया। समाज को दीमक की तरह खोखला बनाने वाली जर्जर परम्पराओं जैसे - बाल-विवाह, विधवा समस्या, जातीयता, अस्पृश्यता की समस्या, मद्यपान, जुआ आदि पर भारतेन्दुकालीन एकांकीकारों ने भी खूब कुठाराघात किया था, किन्तु किसी समस्या को कबीर की शैली में फटकारने से समाप्त नहीं किया जा सकता। इन समस्याओं के समूल विनाश का स्वप्न लिए प्रसाद युग के एकांकीकार पूर्णतः तत्पर थे। सदियों से चली आ रही इन सामाजिक समस्याओं को एक ही यत्न में तो नहीं हटाया जा सकता, किन्तु समस्याओं को कम अवश्य किया जा सकता है।

बोध प्रश्न

- प्रसाद युग में लेखकों द्वारा किस समस्या को कम करने का यत्न किया गया?

तत्कालीन समाज की उघाड़ने वाले अनेक एकांकियों की रचना इस युग में की गयी।

सुधारवादी दृष्टिकोण के आधार पर जीवानन्द शर्मा ने 'बाला का विवाह' एकांकी का प्रणयन किया। सुधारात्मक एकांकीकारों में प्रेमचन्द का महत्वपूर्ण स्थान है, उन्होंने 'प्रेम की देवी में' अन्तर्जातीय विवाह को प्रोत्साहित किये जाने पर विशेष बल दिया। अनमेल विवाह एवं दहेज समस्या को लेकर हरिकृष्ण शर्मा ने 'बुढ़ऊ का ब्याह' तथा डॉ सत्येन्द्र ने 'बलिदान' नामक एकांकी लिखा। इसी तरह वृद्धों की अनियंत्रित काम वासना जैसे विषय को लेकर जी. पी. श्रीवास्तव ने 'गड़बड़झाला' एकांकी में समाज का वीभत्स रूप चित्रित किया है। स्त्रियों को पतिव्रत धर्म की शिक्षा देने हेतु रामसिंह वर्मा ने 'रेशमी रुमाल' का प्रणयन किया। आधुनिक शिक्षित वर्ग की रोमांस वृत्ति को लेकर बदरीनाथ भट्ट ने 'विवाह विज्ञापन' एकांकी में कटाक्ष किया है। विधवा विवाह का समर्थन करते हुए जी. पी. श्रीवास्तव ने 'भूलचूक' तथा 'अच्छा उर्फ अक्ल की मरम्मत' में शिक्षित पति एवं अशिक्षित पत्नी के बीच उत्पन्न कटुता को दिखाया है। अछूत समस्या पर इन्होंने 'अछूतोद्धार' तथा अन्य विषयों को लेकर 'बंटाधार', 'दुमदार आदमी', 'कुर्सीमैन', 'पत्र पत्रिका सम्मेलन', 'न घर का न घाट का', 'चोर के घर मोर' आदि की रचना की। 'विनाश लीला' एकांकी के माध्यम से चण्डीप्रसाद हृदयेश ने नारी के जन्म से मृत्यु तक की करुणकहानी कही है। सामाजिक अस्पृश्यता को हरिशंकर शर्मा ने 'बिरादरी विभ्राट', 'पाखण्ड प्रदर्शन', तथा 'स्वर्ग की सीधी सड़क' आदि एकांकियों की रचना की। 'जब आँखें खुलती हैं' एकांकी के माध्यम से सुदर्शन ने वेश्या के हृदय-परिवर्तन के फलस्वरूप उसे देश की आज़ादी में सक्रिय होते हुए चित्रित किया है। रामनरेश त्रिपाठी के 'सीजन डल है', 'समानाधिकार', ' 'स्त्रियों की काउन्सिल', पांडेय बेचन शर्मा उग्र के 'चार बेचारे', 'बेचारा सम्पादक', 'बेचारा सुधारक', रामदास के 'नाक में दम', 'लबड़ धौं धौं', 'जोरू का गुलाम', 'करेन्सी नोट', आदि को पाठक जगत में खूब सराहा गया।

बोध प्रश्न

- 'चार बेचारे' एकांकी के लेखक कौन हैं?
- 'बाला का विवाह' एकांकी के लेखक कौन हैं?

प्रसाद यूगीन एकांकियों में राष्ट्रीय विचारधारा को लेकर स्वतंत्रता आन्दोलन, विदेशी शासन के प्रति आक्रोश एवं घृणा और स्वतंत्रता की भावना आदि को व्यक्त किया गया। यथा - सुदर्शन के 'प्रताप प्रतिज्ञा', 'राजपूत की हार', तथा 'जब आंखें खुलती हैं', मंगल प्रसाद विश्वकर्मा के 'शेरसिंह', ब्रजलाल शास्त्री के 'दुर्गावती', 'पन्ना धाय', बदरीनाथ भट्ट के 'बापू का स्वर्ग

समारोह', वृन्दावन लाल वर्मा के 'दुरंगी', सेठ गोविन्द दास के 'अपरिग्रह की पराकाष्ठा' आदि एकांकियों में स्वतंत्रता संग्राम के विविध चित्रों की झलक मिल जाती है। भारतीय जनता में राष्ट्र प्रेम और राष्ट्र भक्ति की भावधारा के उन्नयन के लिए इन एकांकीकारों देशप्रेम से ओतप्रोत एकांकियों की भी रचना की। इनके द्वारा प्रणीत एकांकियों में स्वाभाविकता एवं प्रभावोत्पादकता की प्रचुरता देखी जा सकती है।

प्रसाद-युगीन एकांकीकारों ने अपने ऐतिहासिक एकांकियों के माध्यम से भारतीय जनता की निराश वृत्ति में आत्म गौरव एवं स्वाभिमान की भावना को पल्लवित किया। अंग्रेज सरकार की कड़ी दृष्टि के भय से अपनी भावनाओं को इतिहास, धर्म, पुराण के पात्रों के माध्यम से एकांकीकारों ने अप्रत्यक्ष रूप से प्रस्तुत किया। एकांकी द्वारा देश के लिए सर्वस्व त्याग एवं बलिदान की भावना जैसे उच्च आदर्शों की परिकल्पना को विविध एकांकियों में चित्रित किया गया है। यथा - आनन्दी प्रसाद श्रीवास्तव के 'नूरजहाँ', 'चाणक्य और चंद्रगुप्त', 'शिवाजी और भारत राजलक्ष्मी', ब्रजलाल शास्त्री के 'दुर्गावती', 'पन्ना', 'तारा', 'किरण देवी', सुदर्शन के 'राजपूत की हार', 'प्रताप प्रतिज्ञा', गोविन्द वल्लभ पंत के 'विषकन्या', 'भस्म रेखा' आदि उल्लेखनीय एकांकियों के माध्यम से भारत के स्वर्णिम गौरव की प्स्थापना का महान कार्य किया गया।

बोध प्रश्न

- प्रसाद युगीन एकांकीकार किससे भयभीत थे?

प्रसाद-युगीन एकांकीकारों ने धार्मिक-पौराणिक एकांकी के माध्यम से जनता की अंधश्रद्धा पर चोट की। यथा - राधेश्याम कथावाचक के 'कृष्ण-सुदामा', 'शान्ति के दूत भगवान', जयदेव शर्मा के 'न्याय और अन्याय', चतुरसेन शास्त्री के 'सीताराम', 'राधा-कृष्ण', 'हरिश्चन्द्र शैव्या' आदि के माध्यम से ऐतिहासिक-पौराणिक पात्रों को नवीन रूप में चित्रित किया गया। एकांकीकारों ने विविध क्षेत्रों से जुड़े एकांकियों की मौलिक रचना के साथ-साथ अन्य भाषाओं की एकांकियों का हिंदी अनुवाद भी प्रस्तुत किया।

समग्रतः इस युग के एकांकीकारों ने भावी एकांकीकारों के लिए पुष्ट आधारभूमि तैयार की, जिसके आधार पर आधुनिक एकांकी साहित्य का पूर्ण विकास हुआ।

11.2.4.3 प्रसादोत्तर-युग

हिंदी एकांकी के विकास-क्रम का तीसरा पड़ाव प्रसादोत्तर युग है, जिसका पहला चरण 1938 ई. से 1940 ई. तक तथा दूसरा चरण 1941 ई. से 1947 ई. तक माना जाता है। प्रथम

चरण में हिंदी एकांकी में विभिन्न समस्याओं एवं परिस्थितियों पर आधारित रचनाएँ की गईं। विलियम, आर्चर, बर्नार्ड शॉ, इब्सन आदि प्रसिद्ध पश्चिमी लेखकों का प्रभाव इस युग के हिंदी एकांकीकारों पर खूब पड़ा। फलतः एकांकियों का रुख आदर्शवाद के घेरे से निकल कर यथार्थवाद की ओर हुआ। द्वितीय चरण में वैश्विक युद्ध की विभीषिकाएं, बंगाल का अकाल, आजादी की हुंकार, विदेशी शासकों के अमानवीय अत्याचार आदि ने भारतीय चिन्तन एवं कला को अत्यधिक प्रभावित किया। ऐसे में एकांकियों में बनावटीपन के बजाय यथार्थ और सहज जीवन को चित्रित किया जाने लगा। इस युग के एकांकियों में शिल्पगत दुरूहता, आडम्बर के स्थान पर सहजता, सरलता, स्वाभाविकता एवं यथार्थ के दर्शन होने लगे। एकांकियों में संकलन त्रय को प्रमुखता देते हुए रंगमंच की स्थापना को प्रोत्साहित किया जाने लगा। 'हंस' तथा 'विश्वमित्र' आदि पत्रिकाओं में एकांकी अपनी शिल्पगत विशेषताओं के साथ 'एकांकी नाटक' के नाम से प्रकाशित होने प्रारम्भ हो गए, तथा इनकी प्रारंभिक भूमिकाओं में एकांकी के शिल्प आदि पर विचार प्रस्तुत किये जाने लगे। जिस प्रकार भारतेन्दु-युग और प्रसाद-युग में हिंदी एकांकी की विविध प्रवृत्तियाँ उभरी थीं, उसी प्रकार प्रसादोत्तर युग में भी हिंदी एकांकी की विविध प्रवृत्तियां दिखाई देती हैं। वास्तव में प्रसादोत्तर युग में भी पूर्वयुगीन प्रवृत्तियों को ही आधार बनाकर एकांकियों की रचना हुई, किन्तु उनको आदर्शवाद के स्थान पर यथार्थवादी आधारभूमि पर निर्मित किया गया।

बोध प्रश्न

- एकांकी प्रकाशित करने वाली दो पत्रिकाओं के नाम बताइये।
- प्रसादोत्तर युगीन एकांकी की प्रमुख प्रवृत्तियाँ क्या हैं?

प्रसादोत्तर युग में सामाजिक एवं धार्मिक विषयों से जुड़े एकांकी अधिक लिखे गए। डॉ.रामकुमार वर्मा ने 'एक तोले अफीम की कीमत', 'अठारह जुलाई की शाम', 'दस मिनट', 'स्वर्ग का कमरा', 'जवानी की डिब्बी', 'आंखों का आकाश', 'रंगीन स्वप्न' आदि में विविध सामाजिक समस्याओं को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त किया है। उपेन्द्रनाथ ने 'चरवाहे', 'चिलमन', 'लक्ष्मी का स्वागत', 'अन्धी गली' आदि में समसामयिक सामाजिक रूढ़ियों, परम्पराओं, विद्रूपताओं एवं विकृतियों का सशक्त चित्रण किया है। भुवनेश्वर ने 'श्यामा - एक वैवाहिक विडम्बना', 'स्ट्राइक', 'एक साम्यहीन साम्यवादी' तथा 'प्रतिमा का विवाह' आदि में मानव जीवन के सामाजिक दिखावों, स्त्री-पुरुष सम्बन्ध, पिछड़ी सामाजिक मान्यताओं का चित्रण

किया है। जगदीश चंद्र माथुर ने 'ओ मेरे सपने', 'मेरी बाँसुरी', 'खिड़की की राह', 'कबूतर खाना', 'भोर का तारा', 'खंडहर' आदि एकांकियों में समाज सापेक्ष समस्याओं को जीवंत प्रस्तुति दी है। इनकी एकांकियों में सामाजिक बन्धनों के विरुद्ध विद्रोही भावना प्रकट हुई है। शम्भुदयाल सक्सेना ने 'कन्यादान', 'नेहर के बाद', 'मुर्दो का व्यापार', 'नया समाज', 'सगाई', 'मृत्युदान' आदि एकांकियों में गाँधीवादी, मानवतावादी विचारधारा को अभिव्यक्त किया है। हरिकृष्ण प्रेमी ने 'बादलों के पार', 'वाणी मन्दिर', 'सेवा मन्दिर', 'घर या होटल', 'निष्ठुर न्याय' आदि एकांकियों में वंचितों के पक्ष में आवाज़ उठाई है। भगवतीचरण वर्मा ने 'मैं और केवल मैं', 'चौपाल में' तथा 'बुझता दीपक' आदि में पीड़ित मानव की अन्तर्वेदना को अभिव्यक्त किया है। रामवृक्ष बेनीपुरी के नया समाज, अमर ज्योति तथा गाँव का देवता, सद्गुरुशरण अवस्थी के हाँ में नहीं का रहस्य, खद्दर, वे दोनों, चंद्रगुप्त विद्यालंकार के प्यास तथा दीनू, एस.सी.खत्री के बन्दर की खोपड़ी, प्यारे सपने आदि एकांकियों में सामाजिक जीवन की विविध समस्याओं को समग्रता के साथ प्रस्तुत किया गया है। धार्मिक विषयों से सम्बंधित एकांकियों में शम्भुदयाल सक्सेना के सीताहरण, शिला का उद्धार, उतराई, सोने की मूर्ति, विदा, वनपथ, तापसी, पंचवटी, प्रो. सद्गुरुशरण अवस्थी के कैकेयी, सुदामा, शम्बूक, त्रिशंकु, लक्ष्मीनारायण मिश्र के अशोक वन आदि उल्लेखनीय हैं।

बोध प्रश्न

- 'नया समाज' एकांकी के लेखक कौन हैं?
- 'भोर का तारा' किसकी एकांकी है?
- भगवतीचरण वर्मा द्वारा रचित एकांकियों के नामा बताइए।

1.2.4.4 स्वातंत्र्योत्तर युग

स्वातंत्र्योत्तर युग में हिंदी एकांकी का कलेवर रेडियो नाटकों से अत्यधिक प्रभावित हुआ। इस संदर्भ में डॉ. दशरथ ओझा का वक्तव्य उल्लेखनीय है - 'हिंदी के जितने-नाटक आज रेडियो स्टेशनों पर अभिनीत होते हैं उतने सिनेमा की प्रयोगशालाओं में भी नहीं होते होंगे। अतः नाट्यकला का भविष्य रेडियो-रूपक के रचयिताओं के हाथ में है।'

स्वातंत्रयोत्तर हिंदी एकांकी में परंपरागत शैली को न छोड़ते हुए राष्ट्रीय भावना प्रधान एकांकियों का लेखन हुआ। इसी समय में लेखकों का ध्यान ध्वनि नाट्य तथा गीति नाट्य की ओर भी गया। जिसमें प्रगतिशील विचारधाराओं के साथ सामाजिक, राजनीतिक, मानवतावादी

तथा यथार्थवादी विचारधाराओं के एकांकियों की रचना की गई। पूँजीवाद का विरोध, वर्ग संघर्ष, पुरानी रूढ़ियों के प्रति अनास्था, मानव अन्तर्मन की सूक्ष्म भावनाओं का विश्लेषण, भ्रष्टाचार उन्मूलन, कृषक एवं मजदूर की दयनीय स्थितियों की सजीव प्रस्तुति इनकी विषय वस्तु है। यथा- विनोद रस्तोगी के 'बहू की विदा', कणाद ऋषि भटनागर के 'लांछन', 'नया रास्ता', 'अपना घर', विष्णु प्रभाकर के 'बन्धन मुक्त', 'पाप', 'साहस', 'प्रतिशोध', 'इंसान', 'वीर पूजा', 'किरण और कुहासा', 'स्वतंत्रता का अर्थ', 'काम', सर्वोदय, 'समाज सेवा', 'नया काश्मीर', देवीलाल सागर के 'परित्यक्त' आदि उल्लेखनीय सामाजिक संवेदनाओं से परीपूर्ण एकांकी हैं।

बोध प्रश्न

- स्वातंत्र्योत्तर युग के एकांकियों का कलेवर किससे प्रभावित है?
- स्वातंत्र्योत्तर हिंदी एकांकी की विशेषताएँ बताइए।

11.3 पाठ सार

ऐतिहासिक दृष्टि से हिंदी एकांकी का उद्भव उन्नीसवीं सदी के अंत में माना जाता। एकांकी एक ऐसा दृश्य काव्य है, जिसमें एक अंक में अलग-अलग दृश्यों के माध्यम से कथानक गढ़ा जाता है। यह कहना गलत नहीं होगा कि एकांकी नाटक-साहित्य का वह नाट्य-प्रधान रूप है जिसके माध्यम से मानव जीवन के किसी एक पक्ष, एक चरित्र, एक कार्य, एक पहलू, एक समस्या या एक भाव की ऐसी कलात्मक प्रस्तुति की जाती है कि ये एक अविकल भाव से अनेक की सहानुभूति और आत्मीयता प्राप्त कर लेते हैं। हिंदी साहित्य कोश के अनुसार एकांकी में केवल आधिकारिक कथा होती है। इसमें प्रासंगिक कथाएँ नहीं होतीं। आधिकारिक कथा ही आरंभ से अंत की ओर तीव्र गति से विकास करती है। इसलिए एकांकी में जटिलता नहीं होती। "उसमें प्रायः एक मुख्य घटना अनेक लघु घटनाओं के सहारे आगे बढ़ती है और कौतूहल के नए नए स्थल उपस्थित करती जाती है। उसमें कम से कम पात्र होते हैं जो किसी न किसी प्रकार कथा से निकट का संबंध रखते हैं।" (हिंदी साहित्य कोश, भाग 1)।

एकांकी के कथानक की पाँच अवस्थाएँ हैं - प्रारंभ, नाटकीय स्थल, द्वंद्व, चरम सीमा तथा परिणति। एकांकी का आकार यथासंभव इतना ही होना चाहिए कि उसे 30 से 40 मिनट में पढ़ा जा सके। एकांकी में संकलनत्रय का ध्यान अवश्य रखा जाना चाहिए। एकांकी का विषय कोई भी हो किन्तु घटना को बिजली की कौंध लिए हुए चित्रित किया जाना चाहिए। एकांकी में

जीवन के जिस क्षण को भी उल्लेखित किया जा रहा हो, उसमें पात्र, कथोपकथन, वातावरण की एकता का पूर्णतः ध्यान रखा जाना चाहिए।

हिंदी एकांकी के ऐतिहासिक विकास क्रम को भारतेंदु युग, प्रसाद युग, प्रसादोत्तर युग, स्वातंत्र्योत्तर युग के रूप में देखा जा सकता है। भारतेन्दु-कालीन एकांकियों में धार्मिक, पौराणिक कथानकों में भारतीय संस्कृति का आदर्श स्थापित करने का प्रयत्न देखा जा सकता है। जबकि प्रसादयुगीन एकांकीकारों ने पाश्चात्य एकांकी विधा के आधार पर नूतन शैली में हिंदी एकांकी का प्रणयन आरम्भ किया। हिंदी एकांकी के विकास क्रम का तीसरा पड़ाव प्रसादोत्तर युग है, इसके प्रथम चरण में हिंदी एकांकी में विभिन्न समस्याओं एवं परिस्थितियों पर आधारित रचनाएँ की गयी है तथा द्वितीय चरण में वैश्विक युद्ध की विभीषिकाएं, बंगाल का अकाल, आजादी की हुंकार, विदेशी शासकों के अमानवीय अत्याचार आदि ने भारतीय चिन्तन एवं कला को अत्यधिक प्रभावित किया। स्वातंत्र्योत्तर युग में हिंदी एकांकी का कलेवर रेडियो नाटकों से अत्यधिक प्रभावित हुआ।

11.4 पाठ की उपलब्धियाँ

हिंदी एकांकी के विधागत स्वरूप पर केन्द्रित इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष उपलाभ हुए हैं -

1. एकांकी आधुनिक युग की नाट्य विधा है जो भरतमुनि द्वारा प्रतिपादित प्रहसन के एक भेद के निकट है।
2. हिंदी एकांकी विधा अंग्रेज़ी के 'वन एक्ट प्ले' के अनुकरण पर विकसित हुई है।
3. भारतेन्दु-द्विवेदी युग में एकांकी लिखे जाने लगे थे लेकिन उनका स्वरूप प्राचीन नाटक विधा से प्रभावित था।
4. आधुनिक दृष्टि से युक्त एकांकी के प्रारम्भ का श्रेय जयशंकर प्रसाद के एकांकी 'एक घूंट' को जाता है।
5. आज़ादी के बाद आधुनिक संचार माध्यम और तकनीकी प्रयोगों के कारण एकांकी के रूप में क्रांतिकारी परिवर्तन आया।

11.5 शब्द संपदा

1. अस्तित्व = मौजूदगी

2. उद्दीप्त = उत्तेजित करना

3. उद्भव = जन्म, उद्गम

4. एकांकी = एक ही अंक में पूरा होने वाला दृश्य काव्य या नाटक

5. कटाक्ष = व्यंग्य

6. क्षोभ = पछतावा, व्याकुलता

7. रूपक = जिसका कोई आकार या रूप हो; नाटक

8. वितृष्णा = विरक्ति, अरुचि

11.6 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. एकांकी का ऐतिहासिक विकास क्रम बताइए।

2. एकांकी के तत्वों पर विस्तार से प्रकाश डालिए।

3. एकांकी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए प्रसाद युग के सामाजिक एकांकियों का उल्लेख कीजिए।

खंड (ब)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1.एकांकी शब्द के उद्भव पर प्रकाश डालिए।

2.एकांकी की परिभाषा लिखिए।

3.भारतेन्दुकालीन एकांकियों की विशेषता बताइए।

4. प्रसादोत्तर एकांकियों की प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए

5. स्वातंत्र्योत्तर युगीन हिंदी एकांकियों की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

खंड (स)

I सही विकल्प चुनिए

1. 'वन एक्ट प्ले' किस विधा के लिए प्रयुक्त होता है? ( )

अ) उपन्यास आ) नाटक इ) संस्मरण ई) एकांकी

2. इनमें से भारतेन्दु-द्विवेदी युग का रचना-काल कौन सा है? ( )

अ) 1875-1928 आ) 1865 -1900 इ) 1885 - 1907

3. एकांकी का स्वर्णिम काल किसे माना जाता है? ( )

अ) भारतेंदु युग आ) द्विवेदी युग

इ) प्रसाद युग -प्रसादोत्तर युग ई) स्वातंत्र्योत्तर युग

II रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए

1. भरत मुनि ने एकांकी को ....का एक रूप माना है।
2. एकांकी रचना का स्वातंत्र्योत्तर-युग सन्................से आरम्भ हुआ।
3. कर्टेन रेज़र में ……………. पात्र होते थे।
4. कथानक की ....अवस्थाएं हैं।
5. आधुनिक दृष्टि से युक्त एकांकी के प्रारम्भ का श्रेय जयशंकर प्रसाद के एकांकी ……… को जाता है।

III सुमेल कीजिए

i. भारतेन्दु अ) किरण और कुहासा

ii. विष्णुप्रभाकर आ) सत्य हरिश्चन्द्र

iii. हरिकृष्ण प्रेमी इ) मछली के आंसू

iv. कृष्ण किशोर श्रीवास्तव ई) राष्ट्र मन्दिर

11.7 पठनीय पुस्तकें

1. हिंदी एकांकी. सत्येन्द्र.
2. आठ एकांकी नाटक. रामकुमार वर्मा.
3. हिंदी एकांकी : उद्भव और विकास. रामचरन महेंद्र.
4. एकांकी नाटक. अमरकांत गुप्त.

इकाई 12 : भोर का तारा (जगदीश चंद्र माथुर) : एक विश्लेषण

इकाई की रूपरेखा

12.0 प्रस्तावना

12.1 उद्देश्य

12.2 मूल पाठ : भोर का तारा (जगदीश चंद्र माथुर) : एक विश्लेषण

12.2.1 जगदीशचंद्र माथुर : व्यक्तित्व और कृतित्व

12.2.2 'भोर का तारा' : तात्विक विवेचना

12.2.3 'भोर का तारा' एकांकी के मुख्य पात्र

12.2.4 'भोर का तारा' एकांकी का वैशिष्ट्य

12.3 पाठ सार

12.4 पाठ की उपलब्धियाँ

12.5 शब्द संपदा

12.6 परीक्षार्थ प्रश्न

12.7 पठनीय पुस्तकें

12.0 प्रस्तावना

एकांकी आधुनिक हिंदी गद्य की अत्यंत लोकप्रिय विधा के रूप में स्वीकृत है। पश्चिम में एकांकी की रूपरेखा दसवीं सदी के 'मिरेकल्स' और 'मोरालिटीज़' जैसे नाटक-रूपों में मिलती है, जिनमें धर्म-प्रचार के लिए ईसाई संतों के चरित्र की किसी एक आकर्षक कहानी को चुना जाता था, या उनके धर्म-कार्य संबंधी नैतिक उपदेश प्रधान किसी एक विषय को ग्रहण किया जाता था। इसके पश्चात जनता के मनोरंजन के लिए लिखे गए 'विनोदपूर्ण इंटरल्यूड्स' में इसका विकसित रूप मिलता है, जिनमें अधिक से अधिक तीन पात्रों को द्वारा किसी एक भावना के प्रदर्शन की प्रवृत्ति दिखाई देती है। इन्हीं से आगे चलकर लघुमंचीय आंदोलनों का विकास होने पर 'कर्टेन रेज़र' के रूप में एकांकी का प्रचलन हुआ। हिंदी में भारतेंदु युग में ही एकांकी की रचना आरंभ हुई। इस दृष्टि से भारतेंदु हरिश्चंद्र का 'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति' हिंदी का प्रथम एकांकी है। लेकिन उन्होंने एकांकी की नाटक से पृथक सत्ता स्वीकार नहीं की। आगे चलकर

छायावाद युग में 1929 में जयशंकर प्रसाद के 'एक घूंट' के प्रकाशन से एकांकी के विकास की दूसरी अवस्था आरंभ हुई। छायावादोत्तर काल में जिन साहित्यकारों ने एकांकी विधा का विकास किया उनमें जगदीश चंद्र माथुर का महत्वपूर्ण स्थान है। जगदीशचंद्र माथुर मुख्यतः ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, सामाजिक पृष्ठभूमि को आधार बनाकर लिखने वाले एकांकीकार हैं। 'भोर का तारा' एकांकी के माध्यम से उन्होने ऐतिहासिक-मनोवैज्ञानिक विषयों का सूक्ष्म विश्लेषण किया है। 'भोर का तारा' एक ऐतिहासिक एकांकी है। इसके माध्यम से लेखक ने देशप्रेम को व्यक्तिगत प्रेम से श्रेष्ट सिद्ध किया है। एकांकी के माध्यम से गुप्त साम्राज्य की रक्षा में रत शेखर जैसे महान राजकवि के उज्ज्वल गुणों को प्रस्तुत करते हुए लेखक ने पाठकों के समक्ष आदर्श की प्रतिष्ठा की है।

12.1 उद्देश्य

प्रिय छात्रो ! इस इकाई के अध्ययन के उपरांत आप -

- एकांकी नाटककार जगदीशचंद्र माथुर के जीवन और रचनाओं के बारे में जान सकेंगे।
- 'भोर का तारा' एकांकी की विषयवस्तु से परिचित हो सकेंगे।
- एकांकी के तत्वों के आधार पर 'भोर का तारा' की विवेचना कर सकेंगे।
- विवेच्य एकांकी के मुख्य पात्रों के चरित्र का विवेचन कर सकेंगे।
- विवेच्य एकांकी में प्रस्तुत परिवेश से अवगत हो सकेंगे।
- 'भोर का तारा' एकांकी की उपादेयता को समझ करेंगे।

12.2 मूल पाठ : भोर का तारा (जगदीशचंद्र माथुर) : एक विश्लेषण

हिंदी साहित्य में एकांकी विधा का विकास मुख्य रूप से जयशंकर प्रसाद के बाद के समय तीव्र गति से हुआ। इस अवधि में एकांकी रचना के विषयक्षेत्र में बहुआयामी विस्तार दिखाई देता है। सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, ऐतिहासिक, राष्ट्रीय और सांस्कृतिक चेतना सम्पन्न लेखन के इस काल में जगदीशचंद्र माथुर का योगदान अ विस्मरणीय है।

12.2.1 जगदीशचंद्र माथुर : व्यक्तित्व और कृतित्व

हिंदी के प्रसिद्ध एकांकीकार जगदीशचंद्र माथुर का जन्म 16 जुलाई, 1917 ई. में उत्तर प्रदेश के जिला बुलंदशहर में खुर्जा नामक स्थान पर हुआ था। आरंभिक शिक्षा खुर्जा से प्राप्त करते हुए उच्च शिक्षा हेतु वे इलाहाबाद चले गए। 1941 में इंडियन सिविल सर्विस में नियुक्ति मिलने के पश्चात भारत सरकार के शिक्षा सचिव तथा आकाशवाणी के महासंचालक आदि पदों पर कार्य करने के बाद सन् 1963 - 64 ई. में हार्वर्ड विश्वविद्यालय अमेरिका में अतिथि व्याख्याता के रूप में चले गए। सरकारी गतिविधियों में व्यस्त रहने के साथ ही उन्होंने भारतीय इतिहास और संस्कृति को वर्तमान संदर्भ में व्याख्यायित करने का सफल प्रयास किया।

जगदीशचंद्र माथुर ने अपने विद्यार्थी जीवन से ही साहित्य सृजन आरंभ कर दिया था। नाट्य क्षेत्र में उनके विशेष लेखन का एक कारण यह भी है कि आरंभ से ही उनकी रुचि अभिनय में थी। अपने छात्र जीवन में उन्होंने प्रयाग विश्वविद्यालय में अनेक नाटकों में भाग लिया। 1930 ई. में उन्होंने तीन छोटे नाटकों की रचना की। आरंभ से ही उनके नाटक प्रयाग से प्रकाशित होने वाली 'चाँद' और 'रूपाभ' जैसी उच्चकोटि की साहित्यिक पत्रिकाओं में प्रकाशित होने लगे थे।

'भोर का तारा' नामक संग्रह की सारी रचनाएँ उन्होंने प्रयाग में ही लिखीं। यह नाम प्रतीक रूप में शिल्प और संवेदना दोनों ही दृष्टियों से उनके रचनात्मक व्यक्तित्व के भोर का तारा ही है। इसके बाद उनकी रचनाओं में समकालीनता और परंपरा दोनों का सुंदर निर्वाह बढ़ता गया। आईसीएस अधिकारी होने के कारण उन्हें देशभर में अनेक स्थानों पर जाने का अवसर मिला। इसने भी उनकी रचनाओं को व्यापक कथाभूमि प्रदान की।

उन्होंने आधुनिक समाज की विभिन्न विसंगतियों और बेमेल स्थितियों को अपने एकांकी नाटक के माध्यम से विडंबनात्मक संवेदनात्मक अभिव्यक्ति प्रदान की। जगदीशचंद्र माथुर के एकांकी बड़ी सीमा तक छायावादी सौंदर्यबोध से प्रभावित प्रतीत होते हैं। उनकी राष्ट्रिय और सांस्कृतिक चेतना भी अत्यंत पुष्ट है। उनका निधन 16 मई, 1979 ई. को हुआ।

जगदीश चंद्र माथुर ने अपने एकांकी नाटकों में जीवन की विविध विषमताओं, रूढ़ियों तथा पीढ़ियों के अंतराल को अत्यंत सूक्ष्मता के साथ प्रस्तुत किया है। 'कोणार्क', 'भोर का तारा', 'ओ मेरे सपने', 'पहला राजा', 'शारदीया', 'जिन्होंने जीना जाना', 'रीढ़ की हड्डी', 'कलिंग विजय', 'मकड़ी का जाला' आदि एकांकियों के माध्यम से अतीत की प्रासंगिकता को अपनी सटीक शैली में प्रस्तुत किया है।

बोध प्रश्न

- जगदीशचंद्र माथुर के एकांकी साहित्य की एक विशेषता बताइए।

12.2.2 'भोर का तारा' : तात्विक विवेचना

'भोर का तारा' एकांकी में व्यक्तिगत प्रेम के स्थान पर देशप्रेम को प्रमुखता दी गई है। एकांकी के प्रमुख तत्वों को समाहित करते हुए लेखक ने इसकी रचना की है। पूरे एकांकी का कथानक कम से कम पात्रों के माध्यम से एकांकी के सभी गुणों के साथ प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया गया है। आगे एकांकी के तत्वों के आधार पर 'भोर का तारा' एकांकी का समग्र विवेचन किया जा रहा है-

1. **शृंखलाबद्ध कथानक :** 'भोर का तारा' एकांकी के कथानक की सुघड़ शृंखलाबध्द्ता उसे सशक्त रूप प्रदान करती है। एकांकी में कोई भी क्रम, घटना, पात्र ऐसा नहीं जो उसे अस्त - व्यस्त बनाए। 'भोर का तारा' एकांकी सुसंबद्ध, सुगठित कथा विन्यास के गुणों से युक्त है।

2. **विकास क्रम :** 'भोर का तारा' एकांकी के कथा विन्यास को लेखक ने बड़े ही स्वाभाविक ढंग से बुना है। आरंभ में माधव के प्रवेश के साथ ही शेखर के कवि होने की सूचना पाठकों को मिलती है। इसके बाद शेखर की प्रेयसी तथा भावी पत्नी छाया का प्रवेश होता है। कथा-विन्यास का अगला पड़ाव छाया तथा शेखर के प्रेम के प्रतीक स्वरूप 'भोर का तारा' काव्य के पूर्ण होने के उत्साह से संबन्धित है। इसके बाद कथानक में माधव के पुनः आगमन के पश्चात एकांकी 'चरम स्थिति' में पहुंचता है। फलस्वरूप शेखर द्वारा 'भोर का तारा' काव्य को गुप्त साम्राज्य पर हूणों के आक्रमण की सूचना मिलते ही अग्नि को समर्पित किया जाना, कथा के मार्मिक किन्तु उदात्त स्वरूप को व्यक्त करता है।

बोध प्रश्न

- प्रस्तुत एकांकी में में किस प्रेम का महत्व दिखाया गया है?
- 'भोर का तारा' के कथानक की एक विशेषता बताइए।
- 'भोर का तारा' किसका प्रतीक है?
- प्रस्तुत एकांकी में गुप्त साम्राज्य पर किसने आक्रमण किया?

3. **संकलन त्रय :** संकलन त्रय तीन चीजों के संकलन को कहते हैं परन्तु साहित्य में यह विशेष अर्थ में प्रयोग होता है जिसमें देश यानी स्थान जैसे दिल्ली, कोलकाता आदि। दूसरा है काल जिसका अर्थ है समय; यानी कोई घटना किस समय की है जैसे विभाजन की त्रासदी का समय, स्वतन्त्रता के बाद का समय आदि। तीसरा है वातावरण यानि वहाँ

पर कैसा वातावरण या परिवेश है, उस समय लोग कैसी भाषा बोलते हैं, कैसे वस्त्र पहनते हैं आदि। इन तीनों को मिला कर साहित्य में संकलन त्रय कहते हैं। संकलन त्रय नाटक और एकांकी के क्षेत्र में तीन नाट्य-अन्वितियों काल, स्थान तथा कार्य के लिए प्रयुक्त पारिभाषिक शब्द है। कथावस्तु, चरित्र-चित्रण, संवाद, देश-काल, भाषा-शैली, उद्देश्य, अभिनेयता एवं संकलन त्रय - एकांकी नाटक के प्रमुख तत्त्व हैं। इनमें संकलन त्रय का निर्वाह एकांकी और नाटक के लिए अनिवार्य है।

एकांकी के मात्र दो दृश्यों में जीवन के सभी पक्षों को स्पर्श करने की चेष्टा की गई है। संकलन-त्रय की विशेषताओं के साथ सहज रूप में लेखक ने इसकी सर्जना की है। काल, स्थान तथा कार्य की एकता के कारण एकांकी में प्रवाह और प्रभाव दोनों का सहज समावेश हो गया है।

4. **रोचकता, जिज्ञासा एवं संक्षिप्तता :** 'भोर का तारा' एकांकी का कथानक अत्यंत ही रोचक शैली में बुना गया है, जो पात्रों के माध्यम से जिज्ञासा और कुतूहल बढ़ाता है। माधव का संक्षिप्त चरित्र चित्रण ही जिज्ञासा और कुतुहल की सर्जना करने के लिए पर्याप्त है। कथानक संक्षिप्त होने के साथ ही प्रभावी है।

बोध प्रश्न

- प्रस्तुत एकांकी में कितने दृश्य हैं?
- 'भोर का तारा' एकांकी में 'चरम स्थिति' कब आती है?

12.2.3 'भोर का तारा' एकांकी के मुख्य पात्र

'भोर का तारा' एकांकी के प्रमुख पात्रों के चरित्र चित्रण द्वारा एकांकी के कथानक को गति मिलती है। एकांकी के पात्रों का चरित्र चित्रण निमन्वत द्रष्टव्य है -

शेखर : 'भोर का तारा' एकांकी के नायक शेखर में कई ऐसे गुण हैं, जो उसे एक उदात्त नायक सिद्ध करते हैं। शेखर के चरित्र को हम इन बिंदुओं के आधार पर समझ सकते हैं -

- **सहृदय व्यक्तित्व** : शेखर एक अत्यंत सहज और सहृदय व्यक्तित्व का स्वामी है। वह एक भावुक और संवेदनशील कवि है। वह प्रकृति के हर रूप में कविता का आस्वादन करता है। जब उसके द्वारा लिखे गए गीत को छाया राज दरबार में गाती है, तो सम्राट उस गीत को सुनकर इतने प्रभावित होते हैं कि उसे लिखने वाले कवि शेखर को राजकवि घोषित कर देते हैं। शेखर को राह पर चलती हुई वृदधा भिखारिन में भी कविता के और कला के दर्शन होते हैं।

- **आत्मिक प्रेमी :** शेखर के चरित्र का अगला पक्ष उसके छाया के प्रति आत्मिक प्रेम से व्यक्त होता है। वह एक अत्यंत निर्धन परिवार का प्रतिभाशाली कवि है। वह अपनी प्रेयसी के जीवन स्तर को जानता है। वह उसे प्रेम तो करता है किंतु उसे पाने की चाह नहीं रखता। वह अपनी सीमाओं का सदैव ध्यान रखता है। छाया के प्रति उसके प्रेम की पराकाष्ठा 'भोर का तारा' काव्य रचना के रूप में फलीभूत होती है।
- **संवेदनशील कवि :** शेखर एक बहुत ही संवेदनशील व्यक्ति है। वह भावनाओं में आकंठ डूबा रहता है, किंतु कर्तव्य से विमुख नहीं होता है। शेखर अपने मित्र माधव के द्वारा छाया का नाम लिए जाने पर झेंप जाता है। वह प्रकृति के कण-कण के प्रति संवेदनशील है।
- **देशभक्त कवि :** जब सम्राट द्वारा शेखर को राजकवि नियुक्त किया जाता है, तो वह राजा को अपने कवि कर्म से प्रसन्न करते हुए उसके लिए कविताएँ रचता है। यहाँ तक कि वह अपने प्रेम के प्रतीक 'भोर का तारा' काव्य ग्रन्थ को भी राजा को भेंट करने का निश्चय करता है। किंतु जब उसे देश पर विदेशी हूणों के आक्रमण का पता चलता है, तो वह अपनी रचना 'भोर का तारा' को अग्नि को समर्पित करके देश के लिए भैरवी राग गाने चल पड़ता है।
- **कर्तव्य परायण एवं बलिदानी :** शेखर को अपने कर्तव्य का पूर्ण ज्ञान है। वह देश के प्रति अपने कर्तव्य को इतनी वरीयता देता है कि जब वह छाया को अपनी अनुपम कृति 'भोर का तारा' संभाल कर रखने का वचन दे रहा था, तो उसी समय माधव के मुख से देश पर आई विपत्ति को सुनकर वही कृति अग्नि को समर्पित करते हुए स्वयं की प्रेम भावनाओं की बलि दे देता है।

बोध प्रश्न

- शेखर के चरित्र की चार विशेषताएँ बताइए।

छाया : 'भोर का तारा' एकांकी के नायक शेखर की प्रेरणा का स्रोत उसकी प्रेयसी छाया है। उसके चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएं उसे विशिष्ट बनाती है।

- **सुंदरता और उदात्तता की प्रतिमूर्ति** : लेखक ने छाया के चरित्र का निर्माण इस प्रकार किया है कि जहाँ एक ओर वह सुंदरता की प्रतिमूर्ति प्रतीत होती है, वहीं दूसरी ओर चित्त की उदारता उसे और भी आकर्षक बना देती है। वह भारतीय कुलीन नारी के श्रेष्ठ गुणों से युक्त है। चंचलता के साथ गंभीरता को धारण करने वाली एक सुघड़ स्त्री है।

- **प्रेममयी नारी :** छाया प्रेम की भावना में आकंठ डूबी भावुक स्त्री है। वह प्रकृति के हर रूप में प्रेम को देखती है। यही कारण है कि शेखर जैसा भावुक कवि उसके हृदय पर राज करने लगता है।
- **स्त्रीत्व का गौरव :** छाया स्त्रीत्व को प्रकृति की अनुपम कृति मानती है। वह स्त्री-पुरुष को एक-दूसरे का पूरक तत्व मानते हुए स्त्रीत्व पर गौरव करती हुई स्त्री को पुरुष के लिए प्रेरणा का अवलंब मानती है।
- **सरल एवं बुद्धिमती :** छाया का स्वभाव अत्यंत सरल है। वह एक बुद्धिमान स्त्री है। शेखर के द्वारा एक कवि, गायिका और राजा की कहानी सुनकर सहज ही पहचान लेती है कि राजा सम्राट स्कंदगुप्त है, कवि शेखर तथा गायिका स्वयं छाया है।
- **कुतूहलप्रिय भीरु स्वभाव :** छाया का सरल मन प्रकृति के प्रति कुतूहल से भरा हुआ है। किंतु स्त्री हृदय का सहज ही भयभीत होना उसके स्वभाव को भीरु बनाता है। शेखर द्वारा 'भोर का तारा' काव्य पूरा होने पर वह अत्यंत प्रसन्न होती है। किंतु उसी क्षण उस ग्रंथ की सुरक्षा के लिए चिंतित हो उठती है।
- **सहनशील उदारमना नारी :** छाया एक उदार हृदया नारी है। स्वयं राजकुल से जुड़ी होने पर भी एक साधारण कवि शेखर के प्रेम में डूबी हुई उसकी प्रेरणा बनी रहती है। जब हूणों के साथ युद्ध करते हुए देश की रक्षा के लिए छाया का भाई देवदत्त वीरगति को प्राप्त होता है तो वह अपने भाई को वीरांगना की तरह श्रद्धांजलि देती है। अपने प्रेमी शेखर द्वारा देश के सैनिकों को जगाने के लिए 'भोर का तारा' ग्रंथ जलाए जाने पर अंत में मौन धारण करते हुए इस दुख को सहन करती है।

बोध प्रश्न

- छाया के चरित्र की तीन विशेषताएँ बताइए।

12.2.4 'भोर का तारा' एकांकी का वैशिष्ट्य

'भोर का तारा' जगदीश चंद्र माथुर की अनुपम कृति है। इस एकांकी की रचना उन्होनें अपने प्रयाग प्रवास के दौरान की। इस एकांकी में लेखक की शिल्प एवं संवेदना की गहराई द्रष्टव्य है। देश की बदलती परिस्थिति तथा छात्र जीवन से ही नाटकों में भाग लेते रहने के कारण माथुर जी समकालीनता से गहरे जुड़े हुए थे। भारत के महान स्वतंत्रता सेनानियों तथा घटनाओं ने उनकी लेखनी को ओजस्विता प्रदान की। भारत के इतिहास पर गौरवपूर्ण दृष्टि एवं पकड़ होने के कारण उनकी रचनाओं में एक विशेष प्रकार की जीवंतता के दर्शन होते हैं। माथुर

जी के लेखन में एक विशेष प्रकार का कौतूहल एवं प्रेम की भावाकुलता लक्षित की जा सकती है।

'भोर का तारा' एकांकी में कवि प्रकृति के परिवेश में ऐसा रचा बसा है कि इसमें निहित छायावादी संवेदना को पाठक सहज ही देख पाते हैं। लेखक का यथार्थ के प्रति अनुराग ही उसकी भावाकुलता को गति प्रदान करता है। जगदीशचंद्र माथुर कृत 'भोर का तारा' एकांकी एक राष्ट्रीय भावना युक्त एकांकी है। एकांकी में जब कथानायक शेखर कविता को ओजस्विता के साथ गाता है तो प्रेम भाव वाले कवि के मुख से भैरवी राग सुनकर दर्शक को शृंगार एवं वीर रस के चरम उत्कर्ष की अनुभूति होती है। लेखक ने कथानक की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का निर्माण इस प्रकार किया है कि तत्कालीन परिस्थिति में साधारण जन को प्रेरित किया जा सके। शेखर उज्जयिनी प्रांत का भावना प्रधान प्रतिभाशाली कवि है। उसका मित्र माधव गुप्त साम्राज्य का एक वरिष्ठ कर्मचारी है। लेखक ने इसी देशकाल के अनुरूप चरित्रों और घटनाओं का सृजन किया है।

बोध प्रश्न

- लेखक ने ऐतिहासिक पृष्ठभूमि क्यों चुनी?

एकांकी की प्रेरणा बिंदु छाया गुप्त सम्राट स्कंदगुप्त के मंत्री देवदत्त की बहन है। शेखर और छाया एक - दूसरे से अत्यंत प्रेम करते हैं। अतः देवदत्त अपनी बहन छाया का विवाह शेखर से कर देता है। शेखर अपनी पत्नी छाया की प्रेरणा से 'भोर का तारा' जैसे मधुर काव्य की रचना करता है। 'भोर का तारा' कृति को छाया अपने और शेखर के प्रेम का प्रतीक मानती है। देवदत्त तक्षशिला के क्षत्रप वीरभद्र के विद्रोह को दबाने के लिए जाता है, तक्षशिला जाते समय वह छाया - शेखर को परिणय सूत्र में बांध जाता है। तक्षशिला से आकार माधव छाया और शेखर को बताता है कि देशद्रोही वीरभद्र के हूणों का साथ देने के कारण युद्ध में छाया का भाई देवदत्त वीरगति को प्राप्त हो गया है। देवदत्त ने अपने अंतिम क्षणों में माधव से यह कहा कि वह पूरे देश से हूणों के विरुद्ध सहायता की याचना करे। इसके लिए माधव शेखर और छाया से सहायता मांगता है। जिस समय माधव शेखर से यह प्रार्थना करने आता है, उसी समय शेखर अपने और छाया के प्रेम के प्रतीक 'भोर का तारा' काव्य के पूर्ण होने की सूचना छाया को देता है। शेखर और छाया की प्रसन्नता को माधव की इस बात से झटका लगता है कि शेखर गुप्त साम्राज्य का राजकवि है, अतः राष्ट्र पर आए संकट के बादल को हटाने के लिए उसे राष्ट्र की सोई हुई जनता को जगाने हेतु प्रेम काव्य के स्थान पर देशप्रेम से परिपूर्ण काव्य की रचना करनी चाहिए। माधव का मानना है कि जनता में ओजस्विता रूपी प्राण फूँकते ही हूण देश छोड़कर भाग जाएँगे।

बोध प्रश्न

- एकांकी में छाया कौन है?
- देवदत्त तक्षशिला क्यों जाता है?

- देवदत्त ने माधव से क्या कहा?
- माधव की क्या मान्यता है?

माधव की पुकार को सुनकर शेखर अपने शृंगार काव्य 'भोर का तारा' को अग्नि को भेंट करते हुए अपने भैरव घोष से राष्ट्र की आत्मा को जगाने के लिए चल पड़ता है। अब वह 'भोर का तारा' नहीं, प्रभात का सूर्य बनने हेतु निकल पड़ता है। एकांकी में छाया जब अपने भाई की वीरगति तथा शेखर द्वारा 'भोर का तारा' काव्य ग्रन्थ जलाए जाने पर विक्षिप्त सी हो जाती है, तो माधव छाया को ऐसी हालत में देखकर घर की खिड़की खोल देता है। एकांकी में इस दृश्य का नाट्य प्रस्तुतीकरण होता है। जहाँ माधव के खिड़की खोलने पर छाया को शेखर अपने भैरव राग से जन मन को जगाने का यत्न करता हुआ दिखाई देता है।

बोध प्रश्न

- माधव की पुकार सुनकर शेखर क्या करता है?
- छाया विक्षिप्त सी क्यों हो जाती है?

जगदीशचंद्र माथुर के एकांकी नाटक 'भोर का तारा' को अभिनेयता की दृष्टि से भी मील का पत्थर माना जाता है। । एकांकी में दो विपरीत रसों - शृंगार और वीर - की सर्जना की गई है जो विरूद्धों के सामांजस्य का सुंदर उदाहरण है। आलोचकों के अनुसार इस एकांकी की एक सीमा भी है। वह यह कि इसमें गुप्तकालीन देशकाल अधिक प्रभावशाली रूप में सामने नहीं आ सका है। यह इसके परिवेश चित्रण की कमज़ोरी मानी जा सकती है। संवाद की काव्यात्मकता पाठकों को खूब आकर्षित करती है। देशभक्ति जैसे उच्च आदर्श निश्चय ही प्रेरणार्थक बन पड़े हैं।

बोध प्रश्न

- एकांकी में दो मुख्य रस कौन से हैं?
- आलोचकों के अनुसार इस एकांकी की क्या सीमा है?

जगदीश चंद्र माथुर की यह कृति निश्चय ही एकांकी साहित्य की गरिमा में वृद्धि करने वाली है। एकांकी के पात्र शेखर, माधव और छाया की संवादात्मक भूमिका तथा गुप्त सम्राट स्कंदगुप्त विक्रमादित्य एवं देवदत्त, वीरभद्र, तोरमाड हूण के चरित्र को शेखर अथवा माधव के संवादों माध्यम से बताया गया है। शेखर का उज्ज्वल चरित्र ही एकांकी का प्राण है। शेखर एक राष्ट्रीय चेतना युक्त कवि है। कवि राष्ट्रीयता की कसौटी पर शत-प्रतिशत खरा उतरता है। 'भोर का तारा' एकांकी के माध्यम से लेखक ने मानो अपनी समस्त भावनाएं उड़ेल कर रख दी है।

लेखक द्वारा ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को लेकर जिस तरह से राष्ट्रीय जीवन की झांकी प्रस्तुत की गई है, निश्चय ही तत्कालीन संदर्भ में प्रासंगिक एकांकी कही जा सकती है। मानव जीवन में शांति के क्षणों में प्रेम और शृंगार रस का पान करने वाला कवि शेखर जब देश पर विपत्ति आती है तो एक क्षण की भी देर नहीं किए बिना भैरवी राग छेड़ने को उद्यत हो जाता है।

बोध प्रश्न

- शेखर की राष्ट्रिय चेतना कैसे प्रकट होती है?

शीर्षक का औचित्य

प्रायः किसी भी कृति की रचना के पीछे रचनाकार की विशेष दृष्टि निहित होती है। लेखक की रचना का उद्देश्य मात्र मनोरंजन भी हो सकता है अथवा वह किसी विशेष आशय को लेकर लिखता है तो आरंभ में उसे स्पष्ट कर देता है। जगदीशचंद्र माथुर ने अपने आधुनिक समाज के यथार्थ को विशेष महत्व देते हुए सामान्य समस्याओं को लेकर कई एकांकियों की रचना की है। सामाजिक विषमता हो या जीवन यात्रा के विविध पड़ावों की विषमता, पारंपरिक रूढ़ियों तथा नए-पुराने मूल्यों के बीच टकराव के फलस्वरूप होने वाले परिवर्तनों को उन्होंने अपने एकांकी का विषय बनाया है। लेखक ने बहुत ही संजीदगी के साथ एकांकी इस का नाम 'भोर का तारा' रखा है, क्योंकि 'भोर का तारा' जीवन को नए ढंग से जीने की प्रेरणा देता है। स्कंदगुप्त जैसे महाप्रतापी राजा ने बहुत सोच-समझकर शेखर जैसे साधारण पारिवारिक पृष्ठभूमि के प्रतिभाशाली व्यक्ति को राजकवि के पद पर नियुक्त किया। जिस समय लेखक ने इस एकांकी की रचना की उस समय में भारत में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध स्वतन्त्रता आंदोलन चल रहा था, और भारतीय जनता विदेशियों के खिलाफ कमर कसे खड़ी थी। यही स्थिति तोरमाड हूण के भारत पर आक्रमण के समय थी, उस समय भी जनता अपने सम्राट के साथ खड़ी हुई देखी गई। देश पर विपत्ति आने पर आम जन द्वारा किसी भी प्रकार का प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष सक्रिय सहयोग देश के सम्मान की रक्षा के काम आता है। 'भोर का तारा' एकांकी का राजनीतिज्ञ माधव लोक मन को राजनीति सिखाने के लिए शेखर से देश के लिए उसकी ओजस्वी वाणी माँगता है। कोमल हृदय कवि शेखर एक ओर अपनी प्रेयसी को रजनी बाला के प्रभात मिलन की कहानी सुना रहा होता है, तो उसी समय दूसरी ओर रजनी बाला के जाने के बाद उसकी एकटक राह देखने वाला अकेला भोर का तारा अपने प्रिय की राह देखता है। छाया भी एकांकी में शेखर के प्रयाण के बाद भोर का तारा बनी उसकी राह देखती रहती है।

बोध प्रश्न

- कथानायक शेखर की कहानी में भोर का तारा किसकी राह देखता है?

भावुकता बनाम यथार्थ

प्रस्तुत एकांकी में परिस्थित्यों के बदलाव के कारण भावुकता और यथार्थ का द्वंद्व अच्छी तरह उभरकर सामने आता है।

माधव को राजनीति से जुड़ने के बाद भी शेखर की संगति बहुत प्रिय लगती है। वह जब शेखर को उसकी कल्पना की दुनिया से यथार्थ की भाव भूमि पर लाता है तो कहता है, तुम्हारी परियों और तारों की दुनिया में मैं मनुष्य की दुनिया लेकर आ गया। शेखर को तो राजपथ पर बैठी भिखारिन में भी कविता झलकती है। जब माधव उसे भिखारिन को भीख देने की बात पर दयालुता का उल्लेख करता है तो, शेखर भावुक होकर कहता है - “नहीं, यह तो ईश्वरीय कृति की एक अनुपम कला है।”

लेखक ने दर्शाया है कि राजा का मंत्री देवदत्त है तो, मंत्री की बहन राज्योत्सव की गायिका छाया है। छाया एक साधारण से कवि की भावना प्रधान हृदय की बंदिनी है और वह कवि अपने यथार्थ से पूर्णतया परिचित है कि छाया और वह नदी के दो किनारों की भाँति हैं, जो कभी नहीं मिल सकते। इतिहास गवाह है कि भारत को विदेशों से हानि जयचंद, वीरभद्र जैसे नागरिकों ने ही हमेशा पहुंचाई है। वीरभद्र के विद्रोह को दबाने के प्रयास में देवदत्त जैसे महान देशभक्तों की बलि चढ़ती रही है।

किस्सागोई का समावेश

विवेच्य एकांकी में कथा प्रवाह के बीच-बीच में एकांकीकार ने किस्सागोई का प्रयोग किया है। जैसे शेखर राजकवि बनने के बाद छाया को एक दिन राज दरबार की बातें कहानियों के माध्यम से सुनाता है। वह छाया से कहता है कि एक राजा के दरबार में एक कवि था, जो नित्य प्रतिदिन एक कविताएं सुनाकर राजा को प्रसन्न करता था किंतु एक बार राजा के द्वारा यह पूछे जाने पर कि वह केवल प्रातः ही कविताएं क्यों करता है? किसी और समय क्यों नहीं? तो कवि जवाब नहीं दे पाता है। राजा अपनी जिज्ञासा शांत करने हेतु वेश बदलकर उस कवि के घर के पास पहुंच जाता है। वह देखता है कि जैसे ही भोर होती है एक स्त्री की बहुत ही मधुर ध्वनि सुनकर कवि की लेखनी स्वतः चलने लगती है। राजा भी उस ध्वनि को सुनकर आत्मविभोर हो जाता है। इसके बाद राजा उस कवि से कोई प्रश्न नहीं करता है। इस प्रकार लेखक एकांकी में रोचकता का समावेश करते हैं। इस प्रकार देखा जाए तो लेखक की दृष्टि से एकांकी को चिरकालिक कृति बनाने का हरसंभव प्रयत्न किया गया है। ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, कलात्मक संवाद एवं शृंगार रस का एक साथ ही परिपाक किया गया है। यह एकांकी को सर्वकालिक बनाने के लिए पर्याप्त है।

12.3 पाठ सार

'भोर का तारा' हिंदी एकांकी-साहित्य में अत्यंत प्रतिष्ठित नाटककार जगदीश चंद्र माथुर की प्रसिद्ध रचना है। यह एक भावना प्रधान राष्ट्रीय एकांकी है, जिसकी रचना ऐतिहासिक वातावरण के फलक पर की गई है। इसमें यह प्रतिपादित किया गया है कि वही साहित्य सार्थक है जिसमें राष्ट्रीय जीवन की आत्मा झलकती हो।

'भोर का तारा' एकांकी की कथावस्तु का चयन गुप्तकालीन ऐतिहासिक वातावरण से किया गया है। कथानायक शेखर उज्जयिनी का एक प्रतिभाशाली कवि है। गुप्त साम्राज्य का उच्च पदासीन कर्मचारी माधव शेखर का अभिन्न मित्र है। छाया कथानायिका है तथा वह गुप्त सम्राट स्कंदगुप्त के मंत्री देवदत्त की प्रिय बहन तथा शेखर की प्रेयसी भी है। जब गुप्त साम्राज्य काल में तोरमाड हूण अपने सैनिकों के साथ चढ़ाई करता है तो देवदत्त उसको रोकने के लिए सेना की टुकड़ी लेकर जाता है। देवदत्त माधव के साथ जाने लगता है तो शेखर और छाया को परिणय सूत्र में बांधते हुए आगे बढ़ता हैं। तक्षशिला के क्षत्रप वीरभद्र का ऐसे समय में विद्रोह देश की स्थिति को और भी नाजुक बना देता है, वह स्थिति को और अधिक बिगाड़ देता है। वीरभद्र न केवल गुप्त साम्राज्य के विरुद्ध विद्रोह करता है अपितु विदेशी आक्रांता का साथ देकर स्थिति को हाथ से बाहर कर देता है। देवदत्त अपने सैनिकों के प्राणों की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति दे देता है।

एकांकी में एक पक्ष प्रेम का है तो, दूसरा पक्ष युद्ध का है। प्रेम का पक्ष भी कुछ ऐसा कि दोनों ओर प्रेम पलता है। छाया प्रेयसी से पत्नी बनकर शेखर की कवि प्रतिभा का प्रेरणास्रोत बनती है। उसकी प्रेरणा से शेखर 'भोर का तारा' काव्य ग्रंथ की रचना करता है। शेखर छाया की प्रेरणा है और भावना भी है। वह शेखर की कविता को कुंदन की भांति बनाने की प्रेरणा देती है और उसकी सुषुप्त शक्तियों को जगाते हुए अद्‌भुत कृति लिखवा लेती है। शेखर अपने समस्त प्रेममयी उद्गार को उड़ेल कर 'भोर का तारा' काव्य ग्रंथ छाया से छुपाकर पूरी करता है और जिस दिन उसका 'भोर का तारा' काव्य ग्रंथ पूरा होता है, उसी दिन उसका विपरीत अंत भी घटित होता है। क्योंकि जिस समय शेखर काव्य ग्रंथ के पूरा होने की खुशी छाया से बांट रहा था, उसी समय शेखर के मित्र माधव का प्रवेश होता है। वह तक्षशिला में हूणों की बर्बरता देख कर आया था। वह देश की रक्षा के लिए हर संभव प्रयत्न में जुट गया था। वह राष्ट्र की सोई हुई शक्तियों को जगाने के लिए शेखर से प्रार्थना करता है। शेखर अपने मित्र माधव की प्रेरणा से इस नए कर्तव्य की ओर प्रेरित होता है। वह वर्षों से प्रेम पूर्ण यत्नों से लिखे अपने काव्य को बेझिझक अग्नि में समर्पित कर देता है। इसके पश्चात बड़ी ही स्वाभाविक गति से बाहर निकलता है और जनता जनार्दन को जगाने के लिए भैरवी राग छेड़ देता है। व्यक्तिगत प्रेम के समक्ष देशप्रेम के

इस तरह के उदाहरण को प्रस्तुत करने में लेखक की कोई उपमा नहीं दी जा सकती है। निश्चय ही यह एकांकी एक ऐतिहासिक एवं मानवीय धरोहर के रूप में प्रासंगिक है।

12.4 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष उपलब्ध हुए हैं -

1. जगदीशचंद्र माथुर छायावादी सौंदर्यबोध से प्रभावित एकांकीकार हैं।
2. 'भोर का तारा' में सुंदर और उद्दात का मोहक संयोग दिखाई देता है।
3. इस एकांकी में शृंगार और वीररस का समावेश विरूद्धों के सामंजस्य का सुंदर उदाहरण है।
4. जगदीशचंद्र माथुर ने काल, स्थान और कार्य रूपी संकलनत्रय का सफल निर्वाह किया है।
5. 'भोर का तारा' यों तो गुप्त काल की पृष्ठभूमि में स्थित है, लेकिन ब्रिटिश राज के विरुद्ध स्वतन्त्रता आंदोलन भी इसमें अभिव्यंजित है।

12.5 शब्द सम्पदा

1. आकंठ	=	भरपूर, पूरी तरह से
2. आसक्ति	=	प्रेम, अनुराग
3. उदात्त	=	ऊँचा, महान
4. कुतुहल	=	उत्सुकता, आश्चर्य
5. चेष्टा	=	कोशिश, प्रयत्न
6. तत्कालीन	=	उस युग का
7. तत्पर	=	तैयार, उद्यत
8. दायित्व	=	जिम्मेदारी
9. पराकाष्ठा	=	सीमांत, चरम सीमा
10. प्रेयसी	=	प्रेमिका
11. भीरु	=	कायर, डरा हुआ
12. लक्षित	=	निशाना, उद्देश्य
13. वरिष्ठ	=	श्रेष्ठ, महान

14. विन्यास = जमाकर रखना, संवारना

15. विमुख = विरत, प्रतिकूल

16. शृंखलाबद्ध = व्यवस्थित, कतार से

17. संवेदनशील = भावुक, सहृदय

18. सर्जना = रचना, निर्माण

19. सुघड़ = क्षमता, पात्रता

20. प्रभंजन = प्रचंड वायु

12.6 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. एकांकी के तत्वों के आधार पर 'भोर का तारा' एकांकी की विवेचना कीजिए।
2. 'भोर का तारा' के आधार पर जगदीशचंद्र माथुर की एकांकी दृष्टि पर प्रकाश डालिए।
3. 'भोर का तारा' एकांकी के महत्वपूर्ण पात्रों का विश्लेषणात्मक परिचय दीजिए।
4. 'भोर का तारा' के आधार पर वैयक्तिक प्रेम पर राष्ट्रप्रेम की सर्वोच्चता को सिद्ध कीजिए।

खंड (ब)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. एकांकी के पात्र शेखर का चरित्र चित्रण कीजिए।
2. छाया के चरित्र की विशेषताएँ बताइए।
3. 'भोर का तारा' के शीर्षक का औचित्य सिद्ध कीजिए।
4. 'भोर का तारा' एकांकी की कथावस्तु को संक्षेप में प्रस्तुत कीजिए।
5. 'भोर का तारा' एकांकी की ऐतिहासिकता का विवेचन कीजिए।

खंड (स)

I सही विकल्प चुनिए

1. एकांकीकार जगदीश चंद्र माथुर का जन्म कब हुआ? ( )
   अ) सन् 1917 ई. में आ) सन् 1913 ई. में इ) सन् 1919 ई. में

2. गुप्त वंश के सम्राट इनमें से कौन है? ( )
   अ) चंद्रगुप्त आ) स्कंदगुप्त इ) देवदत्त

3. शेखर की प्रेयसी इनमें से कौन है? ( )
   अ) माया आ) छाया इ) उषा

4. तक्षशिला के क्षत्रप इनमें से कौन हैं? ( )
   अ) माधव आ) शेखर इ) वीरभद्र

II रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए

1. शेखर को राजकवि सम्राट ....ने नियुक्त किया।
2. माधव देश की रक्षा के लिए ....से अनुरोध करता है।
3. गुप्त काल में भारत पर ....ने आक्रमण किया।
4. हूणों का साथ देश के विरुद्ध ....ने दिया।

III सुमेल कीजिए

i) शेखर	क) नायिका
ii) देवदत्त	ख) कवि
iii) छाया	ग) देशद्रोही
iv) वीरभद्र	घ) मंत्री

12.7 पठनीय पुस्तकें

1. जगदीशचंद्र माथुर रचनावली. खंड 2. (सं) अवस्थी सुरेश.
2. हिंदी साहित्य कोष. भाग 2. (सं) धीरेन्द्र वर्मा.
3. हिंदी भाषा एवं साहित्य. सुरेन्द्र शर्मा.

खंड – IV : रेखाचित्र और संस्मरण

इकाई 13 : रेखाचित्र : विधागत स्वरूप

इकाई की रूपरेखा

13.0 प्रस्तावना

13.1 उद्देश्य

13.2 मूल पाठ : रेखाचित्र : विधागत स्वरूप

- 13.2.1 रेखाचित्र : परिचय और परिभाषा
- 13.2.2 रेखाचित्र पर महादेवी वर्मा का चिंतन
- 13.2.3 रेखाचित्र की विधागत विशेषताएँ
- 13.2.4 रेखाचित्र और कहानी में अंतर
- 13.2.5 रेखाचित्र, जीवनी और संस्मरण में अंतर
- 13.2.6 रेखाचित्र और व्यंग्य चित्र में अंतर
- 13.2.7 रेखाचित्रों का वर्गीकरण और विश्लेषण
- 13.2.8 कुछ प्रमुख रेखाचित्र लेखक

13.3 पाठ सार

13.4 पाठ की उपलब्धियाँ

13.5 शब्द संपदा

13.6 परीक्षार्थ प्रश्न

13.7 पठनीय पुस्तकें

13.0 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो! इस इकाई के अंतर्गत आप रेखाचित्र के विधागत स्वरूप का अध्ययन करेंगे। वास्तव में विधा (फ्रेंच - जीनर / अँग्रेजी - Genre) का सामान्य अर्थ प्रकार, किस्म, वर्ग या श्रेणी है। इस पारिभाषिक शब्द का प्रयोग विविध प्रकार की रचनाओं को वर्ग या श्रेणी में बांधने

के लिए किया जाता है। यह भी आप जानते हैं कि विधाओं की उपविधाएं भी होती हैं। गद्य और पद्य दो प्रमुख साहित्यिक विधाएँ हैं और निबंध आदि गद्य की विविध विधाएँ हैं। यह भी जान लेना होगा कि विधाएँ अस्पष्ट श्रेणियाँ हैं । इनकी कोई निश्चित सीमा-रेखा नहीं होती। रेखाचित्र भी एक विधा है। प्रायः रेखाचित्र गद्य में लिखे जाते रहे हैं। रेखाचित्र जैसी ही एक दूसरी विधा संस्मरण भी है। किन्तु रेखाचित्र और संस्मरण में अंतर भी है और समानता भी। रेखाचित्र आधुनिक युग की अकाल्पनिक विधा है। रेखाचित्र किसी व्यक्ति पर ही नहीं, वस्तु और पशु-पक्षी आदि पर भी लिखे जा सकते हैं। जीवन के यथार्थ अनुभवों का सहारा लेकर बनाए गए शब्द चित्र विधा के रूप में रेखाचित्र कहे जाते हैं। रेखाचित्र में यथार्थ की अनेक अंतरंगताओं को रेखांकित किया जाता है। इस इकाई में आप रेखाचित्र के विषय में विस्तारपूर्वक ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

13.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत आप -

- रेखाचित्र के अर्थ और परिभाषा से अवगत हो सकेंगे।
- रेखाचित्र का विधागत स्वरूप जान सकेंगे।
- रेखाचित्र के विविध तत्वों का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- रेखाचित्र का विश्लेषण करने के आधारों से परिचित हो सकेंगे।
- हिंदी साहित्य के प्रमुख रेखाचित्र-लेखकों और उनकी रचनाओं का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे ।
- रेखाचित्र और कहानी के अंतर और समानता को पहचान सकेंगे ।
- रेखाचित्र और संस्मरण के अंतर और समानता के प्रमुख बिन्दुओं को समझ सकेंगे ।
- रेखाचित्र की प्रमुख विशेषताओं का अंकन करते हुए उसके विधागत स्वरूप का बोध प्राप्त कर सकेंगे।

13.2 मूल पाठ : रेखाचित्र : विधागत स्वरूप

रेखाचित्र गद्य की एक नवीन विधा है। अपनी व्यापक संवेदनशीलता और सुंदर कलात्मक शैली के कारण यह एक लोकप्रिय विधा बन गई है। आगे हम इसके अर्थ, पर्याय, परिभाषा, अवधारणा आदि की चर्चा करेंगे। साथ ही यह भी देखेंगे कि हिंदी साहित्य में इस विधा का उद्भव कब और कैसे हुआ तथा किन साहित्यकारों ने इस विधा का आगे विकास किया।

13.2.1 रेखाचित्र : परिचय और परिभाषा

रेखाचित्र शब्द 'रेखा' और 'चित्र' के मेल से बना है । इसका अर्थ है - रेखाओं से बना हुआ चित्र। 'रेखाचित्र' के अतिरिक्त हिंदी में 'शब्दचित्र' का प्रयोग भी मिलता है। रामवृक्ष बेनीपुरी ने 'शब्दचित्र' और महादेवी वर्मा ने 'स्मृतिचित्र' शब्द का प्रयोग किया है। फिर भी 'रेखाचित्र' शब्द ही अधिक प्रचलित और मान्य है। यह शब्द ही अधिक पारदर्शी प्रतीत होता है क्योंकि रेखाचित्र के समान ही इन शब्द चित्रों में विशेषता दृष्टिगोचर होती है। इसलिए इस विधा के लिए 'रेखाचित्र' नामकरण ही सर्वाधिक प्रचलित और स्वकृत है।

हिंदी साहित्यकोश के अनुसार - "रेखाचित्र किसी व्यक्ति, वस्तु, घटना या भाव का कम से कम शब्दों में मर्मस्पर्शी, भावपूर्ण एवं सजीव अंकन है।"

हिंदी में रेखाचित्र शब्द अँग्रेजी के 'स्केच' शब्द की नाप-तोल पर गढ़ा गया है। 'स्केच' चित्रकला का अंग है। इसमें चित्रकार कुछ इनी-गिनी रेखाओं द्वारा किसी वस्तु, व्यक्ति या दृश्य को अंकित कर देता है। स्केच रेखाओं की बहुलता और रंगों की विविधता में अंकित कोई चित्र नहीं है, न वह एक फ़ोटो ही है, जिसमें नन्हीं से नन्हीं और साधारण से साधारण वस्तु भी खिंच आती है। साहित्य में जिसे रेखाचित्र कहते हैं, उसमें भी कम से कम शब्दों में कलात्मक ढंग से किसी वस्तु, व्यक्ति या दृश्य का अंकन किया जाता है। इसमें साधन शब्द हैं, रेखाएँ नहीं। इसीलिए इसे 'शब्दचित्र' भी कहते हैं। कहीं-कहीं इसका अंग्रेज़ी नाम 'स्केच' भी व्यवहृत होता है। विद्वानों के अनुसार रेखाचित्र की कुछ परिभाषाएँ इस प्रकार हैं-

रेखाचित्र किसी एक व्यक्ति, स्थान, घटना, दृश्य या उपादान का ऐसा वस्तुगत वर्णन होता है, जो संक्षेप में उसकी बाह्य विशेषताओं को प्रस्तुत करता है। बाह्य विशेषताओं के भीतर ही उसकी आंतरिक विशेषताओं का समाहार होता है। - डॉ. हरबंश लाल

रेखाचित्र ऐसी रचना के लिए प्रयुक्त होने लगा जिसमें रेखाएँ हों, पर मूर्त रूप अर्थात् उतार-चढ़ाव दूसरे शब्दों में, कथानक का उतार-चढ़ाव आदि न हो, तथ्य का उद्घाटन मात्र हो। - डॉ. नगेन्द्र

रेखाचित्र चित्रकला और साहित्य के सुन्दर सुहाग से उद्भूत एक अभिनव कला रूप है। रेखाचित्रकार साहित्यकार के साथ ही साथ चित्रकार भी होता है। रेखाचित्रकार मनः पटल परव विशृंखल रूप में बिखरी हुई शत-शत स्मृति रेखाओं में अपनी अंकित कला की तूलिका से

सहानुभूति के रंग में रंजित कर जीते जागते शब्दचित्र में परिणत कर देता है। - डॉ. गोविंद त्रिगुणायत

संपर्क में आए किसी विलक्षण व्यक्तित्व अथवा संवेदना को जगानेवाली सामान्य विशेषताओं से युक्त किसी प्रतिनिधि चरित्र के मर्मस्पर्शी स्वरूप को, देखी-सुनी या संकलित घटनाओं की पृष्ठभूमि में इस प्रकार उभारकर रखना कि उसका हमारे हृदय में एक निश्चित प्रभाव अंकित हो जाए रेखाचित्र या शब्दचित्र कहलाता है। - डॉ. भगीरथ मिश्र

इन परिभाषाओं का अवलोकन करने से इन में निम्नलिखित बिन्दु समान रूप से मिलते हैं-

1. रेखाचित्र का विषय या केंद्र कोई व्यक्ति, वस्तु, संदर्भ, पशु-पक्षी, घटना या भाव हो सकता है।
2. रेखाचित्र में चित्रात्मकता के माध्यम से व्यक्ति के बाह्य तथा आंतरिक व्यक्तित्व को उभरा जाता है।
3. तटस्थता के अभाव में रेखाचित्र की स्पष्ट छवि नहीं बनती।
4. रेखाचित्र में शब्द प्रयोग में सावधानी बरती जाती है, कम शब्दों में अधिक लिखा जाता है।
5. भाषा की जीवंतता और मुहावरेदानी रेखाचित्र के लिए अनिवार्य है।

रेखाचित्र में उपर्युक्त लक्षण भी निर्धारित किए जा सकते हैं। किन्तु यह आवश्यक नहीं कि प्रत्येक रेखाचित्र-लेखक इन सबका प्रयोग करे।

बोध प्रश्न

- रेखाचित्र की एक परिभाषा लिखिए।
- रेखाचित्र के दूसरे नाम क्या है? रेखाचित्र के चार प्रमुख लक्षण गिनाइए।

13.2.2 'रेखाचित्र' पर महादेवी वर्मा का चिंतन

प्रख्यात छायावादी कवयित्री और रेखाचित्र लेखिका महादेवी वर्मा ने 'रेखाचित्र' पुस्तक की भूमिका में रेखाचित्र को इस प्रकार से प्रस्तुत किया है -

"रेखाचित्र शब्द चित्रकला से साहित्य में आया है, परंतु अब वह शब्दचित्र के स्थान में रूढ़ हो गया है। चित्रकार अपने सामने रखी वस्तु या व्यक्ति का रंगहीन चित्र जब कुछ रेखाओं में इस प्रकार आंक देता है कि उसकी विशेष मुद्रा पहचानी जा सके, तब हम उसे रेखाचित्र की संज्ञा देते हैं। साहित्य में साहित्यकार कुछ शब्दों में ऐसा चित्र अंकित कर देता है जो उस व्यक्ति

या वस्तु का परिचय दे सके, परंतु दोनों में अंतर है। चित्रकार चाक्षुष प्रत्यक्ष के आलोक में बैठे हुए व्यक्ति का रेखाचित्र आंक सकता है, कभी कहीं देखे हुए व्यक्ति का रेखाचित्र नहीं अंकित हो पाता और दीर्घकाल के उपरांत अनुमान से भी ऐसे चित्र नहीं आँके जाते। इसके विपरीत साहित्यकार अपना शब्दचित्र दीर्घकाल के अंतराल के उपरांत भी अंकित कर सकता है। उसने जिसे कभी नहीं देखा हो उसकी आकृति मुखमुद्रा आदि को शब्दों में बांध देना कठिन नहीं होता। शब्द के लिए जो सहज है, वह रेखाओं के लिए कठिन है। 'रेखाचित्र' वस्तुतः अँग्रेजी के 'पोर्टरेट पेंटिंग' के समान है। पर साहित्य में आकर इस शब्द ने बिम्ब और संस्मरण दोनों का कार्य सरल कर दिया है।"

बोध प्रश्न

- महादेवी वर्मा के 'रेखाचित्र' संबंधी उपर्युक्त विचारों का सार अपने शब्दों में लिखिए।
- चित्रकार और साहित्यकार के रेखाचित्र में क्या अंतर होता है?

13.2.3 रेखाचित्र की विधागत विशेषताएँ

रेखाचित्र की सर्वप्रथम विशेषता है कि इसके लेखन में 'विस्तार' के स्थान पर 'संक्षेप' होता है। रेखाचित्र के लिए विषय का बंधन नहीं रहता, सब प्रकार के विषयों का इसमें समावेश हो सकता है। रेखाचित्र की विशेषता विस्तार में नहीं, बल्कि 'तीव्रता' में होती है। रेखाचित्र पूर्ण चित्र नहीं है केवल रूपरेखा है। वह व्यक्ति, वस्तु, घटना, आदि का एक निश्चित दृष्टिबिन्दु में प्रस्तुत किया गया प्रतिबिम्ब है, जिसमें विवरण की न्यूनता के साथ-साथ तीव्र संवेदनशीलता वर्तमान रहती हैं।

रेखाचित्र के लिए उपयुक्त विषय का चुनाव भी बहुत महत्वपूर्ण है - इसकी विषय वस्तु ऐसी होती है, जिसे विस्तृत वर्णन और रंगों की अपेक्षा न हो और जो कुछ ही रेखाओं के प्रयोग से चमक उठे। चाँदनी रात में ताजमहल की शोभा को रेखाचित्र में बांधा जा सकता है। पर शाहजहाँ और मुमताज़ महल की प्रेमकथा को सीमा में बांध सकना कठिन काम है।

रेखाचित्र की स्मृति में पीड़ा का बोध होता है। इस पीड़ा में बिछुड़ने की संवेदना होती है। रेखाचित्रकार जिसका वर्णन कर रहा होता है उससे अलग होने की पीड़ा और दर्द ही उसे लेखन के रूप में इस विधा को अपनाने के लिये प्रेरित करता है।

बोध प्रश्न

- उपर्युक्त विवेचन के आधार पर रेखाचित्र की चार विशेषताएँ बताइए।

13.2.4 रेखाचित्र और कहानी में अंतर

प्रिय छात्रो! अब तक की चर्चा से आप की समझ में यह आ गया होगा कि रेखाचित्र एक ऐसी विधा है जो अपने स्वरूप में कई दूसरी गद्य विधाओं के गुणों को समेटे हुए है। रेखाचित्र में विभिन्न विधाओं के जो गुण मिलते हैं वे इस प्रकार है -

1. कहानी के कथानक की संवेदनशीलता

2. चित्रकला के रंग और रेखाओं की सूक्ष्मता और सांकेतिकता

3. संस्मरण का स्मृति तत्व।

इन सब के मिश्रण से रेखाचित्र का स्वरूप निर्मित होता है। इसीलिए कई बार ऐसा भी प्रतीत होता है कि रेखाचित्र कहानी से मिलता-जुलता साहित्य रूप है। कहानी से इसका बहुत अधिक साम्य है। जैसे -

- दोनों में क्षण, घटना या भाव विशेष पर ध्यान रहता है
- दोनों की रूपरेखा संक्षिप्त रहती है।
- दोनों में कथाकार के विवरण और पात्रों के संवादों का प्रसंगानुसार उपयोग किया जाता है।

रेखाचित्र और कहानी के साम्य के कारण अनेक कहानियों को भी रेखाचित्र कह दिया जाता है। इसके ठीक विपरीत अनेक रेखाचित्रों को कहानी भी कह देते हैं। अभिप्राय यह है कि कहानी और रेखाचित्र में अंतर करना सरल नहीं है। इसलिए शिप्ले नामक पाश्चात्य विद्वान ने विश्व साहित्य कोश में कहा है कि -

> "रेखाचित्र में कहानी की गहराई का अभाव रहता है। यही नहीं कहानी में किसी न किसी मात्रा में कथात्मकता अपेक्षित रहती है, पर रेखाचित्र में नहीं।" (शिप्ले)

रेखाचित्र में कम से कम शब्दों में कलात्मक ढंग से किसी वस्तु, व्यक्ति या दृश्य का अंकन किया जाता है। दूसरे शब्दों में, रेखाचित्र किसी व्यक्ति, वस्तु, घटना या भाव का कम से कम शब्दों में भाव पूर्ण एवं सजीव अंकन है। कहानी से रेखाचित्र की निकटता है। महादेवी वर्मा ने रामा, घीसा आदि पर जो रेखाचित्र लिखे हैं उन्हें कहानी भी समझ लिया जाता है। किन्तु रेखाचित्र में कहानी जैसी गहराई नहीं होती। महादेवी वर्मा ने अपने रेखाचित्रों के संग्रह का नाम ही 'अतीत के चलचित्र' रखा है। इसमें अतीत के प्रति मोह झलकता है। वास्तव में महादेवी वर्मा द्वारा लिखित अनेक रेखाचित्रों को पढ़कर ही हिंदी पाठक समाज और विद्वानों का ध्यान इस विधा की ओर गया। समाज के दमित और दलित लोगों के प्रति महादेवी की करुणा और

सहानुभूति इन रेखाचित्रों को सदा के लिए अमर बना देती है। इन अभावग्रस्त प्राणियों के प्रति हमारी सहानुभूति बनी रहती है।

बोध प्रश्न

- रेखाचित्र और कहानी का अंतर बताइए।
- महादेवी वर्मा के रेखाचित्र की दो विशेषताएँ बताइए।

13.2.5 रेखाचित्र, जीवनी और संस्मरण में अंतर

रेखाचित्र और जीवनी का संबंध इसलिए है क्योंकि एक प्रकार से रेखाचित्र जीवन-चरित्र का आंशिक रूप है। ये दोनों व्यक्तिकेन्द्रित और यथार्थ पर आधारित विधाएँ हैं। व्यक्तियों के जीवन पर आधारित रेखाचित्र लिखे जाते हैं, पर रेखाचित्र जीवन चरित्र नहीं है। जीवन चरित्र के लिए यथातथ्यता एवं वस्तुनिष्ठता अनिवार्य हैं। लेकिन इस दृष्टि से ये दोनों विधाएँ समान प्रतीत होती हैं कि दोनों में ही कल्पना के लिए स्थान नहीं रहता। रेखाचित्र में लेखक अपनी भावना एवं स्मृति के आधार पर विभिन्न चित्र अंकित करता है। जीवन चरित्र में समग्रता का भी आग्रह रहता है, इसमें सामान्य और महत्वपूर्ण सब प्रकार की घटनाओं के चित्रण का प्रयत्न रहता है। लेकिन रेखाचित्रकार गिनी-चुनी रेखाओं, गिनी-चुनी महत्वपूर्ण घटनाओं का ही उपयोग करता है। इन बातों से यह भी स्पष्ट है कि रेखाचित्र आत्मकथा और संस्मरण से भी भिन्न अस्तित्व रखता है।

रेखाचित्र और संस्मरण को कभी कभी अलग करके देखना कठिन हो जाता है। किन्तु रेखाचित्र में व्यक्ति के व्यक्तित्व का समग्र विकास देखा जा सकता है। इसमें रेखाचित्र के बहाने बाह्य के साथ आंतरिक भावों की प्रस्तुति होती चलती है। रेखाचित्रकार को तिथिक्रम या घटनाओं की क्रमबद्धता पर ध्यान नहीं देना पड़ता। प्रतिष्ठित-अप्रतिष्ठित, नामी-अनाम, धनी-निर्धन, पंडित-अज्ञानी, किसी भी वर्ग के व्यक्ति को केंद्र में रखकर रेखाचित्र लिखे जाते रहे हैं। संस्मरण में चित्रात्मकता की आवश्यकता नहीं, किन्तु रेखाचित्र की तो यह जान है। संस्मरण में विवरण की प्रधानता होती है, विवरणात्मकता का रेखाचित्र के लिए कोई खास महत्व नहीं है। जहाँ संस्मरण विवरणात्मक होते हैं, वहीं रेखाचित्र रेखात्मक। इसीलिए कहा जाता है कि प्रायः प्रत्येक संस्मरण लेखक रेखाचित्र लेखक भी है और प्रत्येक रेखाचित्र लेखक संस्मरण लेखक भी।

डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी ने अपने ग्रंथ 'हिंदी गद्य : विन्यास और विकास' में इन विधाओं के अंतरसंबंध पर प्रकाश डालते हुए लिखा है - "जीवनी-आत्मकथा से जुड़े, यद्यपि कि अपने में स्वतंत्र, माध्यम संस्मरण-रेखाचित्र के हैं। संस्मरण वर्णित चरित्र का गत्यात्मक चित्रण करता है

देश तथा काल दोनों में, जबकि रेखाचित्र अपेक्षाकृत स्थिर अंकन है। चित्रकला में जैसा अंतर 'स्टिल लाइफ' और सामान्य दृश्यालेख में होता है कुछ वैसा अंतर रेखाचित्र और संस्मरण के बीच समझा जा सकता है। इसी के अनुरूप एक फ़र्क यह भी होगा कि रेखाचित्र अधिकतर सामान्य या कम प्रसिद्ध व्यक्तियों के बनते हैं - महादेवी की रचनासृष्टि में तो पशु-पक्षी तक सम्मिलित हैं (मेरा परिवार) - संस्मरणों के नायक प्रायः ख्यात व्यक्ति होंगे।"

बोध प्रश्न

- रेखाचित्र जीवनचरित्र नहीं हैं। कैसे?
- रेखाचित्र और संस्मरण में क्या समानता-असमानता है।
- रेखाचित्र के संदर्भ में रामस्वरूप चतुर्वेदी का कथन स्पष्ट करें।

13.2.6 रेखाचित्र और व्यंग्य चित्र में अंतर

किसी विशेष दृष्टिबिन्दु (फोकस) से प्रस्तुत किया प्रतिबिंब रेखाचित्र का सबसे महत्वपूर्ण उपकरण है। इस प्रतिबिंब में विवरण बहुत कम होता है लेकिन न्यूनता संवेदनशीलता बहुत तीव्र रहती है। इसीलिए रेखाचित्र लेखन में दृष्टिबिन्दु का निर्धारण सबसे अधिक महत्व रखता है। यह वह बिन्दु होता है जहाँ से लेखक अपने वर्ण्य-विषय का अवलोकन कर उसका अंकन करता है। इस दृष्टि से रेखाचित्र लिखने की कला काफी हद तक व्यंग्य चित्र अंकित करने के समान है। दोनों में दृष्टि की सूक्ष्मता तथा कम से कम स्थान में अधिक से अधिक विषय को अभिव्यक्त करने की तत्परता दिखाई देती है। रेखाचित्र के लिए संकेत सामर्थ्य भी बहुत अवश्य है। रेखाचित्रकार शब्दों और वाक्यों से परे भी बहुत कुछ कहने की क्षमता रखता है।

बोध प्रश्न

- रेखाचित्र का सबसे महत्वपूर्ण उपकरण क्या है?

13.2.7 रेखाचित्रों का वर्गीकरण और विश्लेषण

रेखाचित्र के छह तत्व होते हैं -

1. व्यक्ति चित्रण, 2. संवेदनशीलता, 3. संतुलन एवं तटस्थता, 4. सूक्ष्म निरीक्षण, 5. यथार्थ की अनुभूति और 6. उद्देश्य ।

मूल चेतना के आधार पर रेखाचित्रों को अनेक वर्गों या प्रकारों में रखा जा सकता है। जैसे -

1. मनोवैज्ञानिक रेखाचित्र,

2. ऐतिहासिक रेखाचित्र,

3. तथ्य एवं घटना प्रधान रेखाचित्र,

4. वातावरण प्रधान रेखाचित्र,

5. प्रभाववादी रेखाचित्र,

6. व्यंग्य प्रधान रेखाचित्र,

7. व्यक्ति प्रधान रेखाचित्र और

8. आत्मपरक रेखाचित्र।

अब तक की चर्चा से यह स्पष्ट हो चुका है कि गद्य की नई विधा के रूप में स्थापित होने के साथ ही रेखाचित्र अन्य अनेक विधाओं से संबंध भी है और अलग अस्तित्व भी। रेखाचित्र को अलग पहचान देने में उसकी निम्नलिखित प्रवृत्तियों का महत्वपूर्ण योगदान है -

1. चित्रात्मकता

रेखाचित्रकार रेखाचित्र के माध्यम से किसी व्यक्ति या वस्तु के व्यक्तित्व के एक अंश का चित्र भाषा के द्वारा प्रस्तुत करता है। भाषा के द्वारा ही लेखक अपनी रचनात्मक क्षमता के शीर्ष तक जा पहुंचता है। बाह्य चित्रण के समान ही यह व्यक्ति का आंतरिक चित्र प्रस्तुत करने में भी समर्थ है।

2. गतिशीलता

सामान्यतः चित्र द्विआयामी होता है किन्तु रेखाचित्र बहुआयामी होता है। इस कारण रेखाचित्र गतिशील प्रतीत होता है। रेखाचित्रों में इस कारण 'लंबाई', 'चौड़ाई' के साथ ही 'गहराई' की प्रतीति भी होती है। यही बहुमुखी प्रवृत्ति है। इसके द्वारा चित्र अधिक जीवंत हो जाता है और पाठक के मन पर उसका प्रभाव स्थिर हो जाता है। एक सफल रेखाचित्र में यह प्रवृत्ति आरोपित नहीं होती बल्कि यह एक सहज भाव है।

3. तटस्थता

रचनाकार में तटस्थता का भाव आवश्यक ही नहीं अनिवार्य है। रेखाचित्र में व्यक्ति और उसका जीवन और उसकी पीड़ा आदि का चित्रण करते समय लेखक को अपनी भावनाओं को नियंत्रण में रखना होगा। यह तटस्थता केवल लेखकीय दृष्टि में ही व्यंजित नहीं होती बल्कि शब्द प्रयोग में भी होती है। चित्रित व्यक्तियों के साथ लेखक का निकट संबंध होने के बावजूद उनके व्यक्तित्व के अच्छे-बुरे सभी पहलुओं का तटस्थ भाव से चित्रण करना अभिप्रेत होता है जिससे वे चित्रित व्यक्तियों के स्पष्ट और सहज चित्र पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर सकें।

4. व्यक्तिकेंद्रिकता

रेखाचित्र सामान्यतः व्यक्तिकेंद्रित होते हैं। उस व्यक्ति के जीवन और चरित्र के किसी एक पक्ष पर उसकी जीवन-रेखा के किसी संदर्भ को विस्तार से प्रस्तुत करते समय व्यक्तिकेन्द्रित प्रवृत्ति से मुक्त होकर या उससे अलग होकर रेखाचित्रकार उसके जीवन का विवरण प्रस्तुत करता है। दूसरे शब्दों में रेखाचित्रों में व्यक्ति प्रायः एक व्यक्ति-विशेष का सूचक होते हुए भी जीवन के एक विशिष्ट परिप्रेक्ष्य का भी सूचक है।

5. यथार्थता

यह भी स्पष्ट है कि रेखाचित्र यथार्थ पर आधारित एक अकाल्पनिक गद्य विधा है। काल्पनिक पात्रों को लेकर रेखाचित्र प्रस्तुत नहीं किए जाते। कहानी और उपन्यास आदि के पात्र काल्पनिक होते हैं। वे रचनाकार की कल्पना से जन्म लेते हैं, रेखाचित्र के पात्र हाड़-मांस के लोग होते हैं। रेखाचित्र में न पात्र और न घटनाएँ काल्पनिक होती हैं।

बोध प्रश्न

- रेखाचित्र के तत्वों के नाम लिखो ।
- रेखाचित्र को प्रायः किन वर्गों में रखा जा सकता है?
- रेखाचित्र की किसी एक प्रवृत्ति का वर्णन कीजिए ।
- चित्रात्मकता से आप क्या समझते हैं?
- व्यक्तिकेन्द्रितता का क्या अर्थ है?
- रेखाचित्र और यथार्थ का क्या संबंध है?

13.2.8 कुछ प्रमुख रेखाचित्र लेखक

हिंदी में रेखाचित्र विधा के इतिहास को दो युगों में बाँटा जाता है – 1. आरंभिक युग और 2. उत्कर्ष युग। उल्लेखनीय है कि रेखाचित्र को स्वतंत्र विधा के रूप में स्थापित करने का गौरव सर्वप्रथम पद्म सिंह शर्मा द्वारा रचित 'पद्मपराग' (1929) को प्राप्त है। इस पुस्तक में लेखक ने अपने समकालीन महत्वपूर्ण लोगों को विषय बनाया है। इनसे प्रभावित होकर श्रीराम शर्मा, हरिशंकर शर्मा और बनारसीदास चतुर्वेदी ने रेखाचित्र लिखने शुरू किए। बनारसीदास चतुर्वेदी ने रेखाचित्र के स्वरूप पर भी महत्वपूर्ण विचार व्यक्त किए हैं। वे मानते थे कि, "जिस प्रकार एक अच्छा चित्र खींचने के लिए कैमरे का लेंस अच्छा होना चाहिए और फिल्म भी काफी कोमल या सेंसिटिव, उसी प्रकार साफ चित्रण के लिए रेखाचित्रकार में विश्लेषणात्मक बुद्धि तथा

भावुकतापूर्ण हृदय दोनों का सामंजस्य होना चाहिए। पर-दुख-कातरता, संवेदनशीलता, विवेक और संतुलन इन सब गुणों की आवश्यकता है।"

उत्कर्ष युग के रेखाचित्रकारों में रामवृक्ष बेनीपुरी का नाम सबसे पहले आता है। इनके रेखाचित्रों में सरल भाषाशैली में सिद्धहस्त कलाकारी देखी जा सकती है। इन्होंने समाज के उपेक्षित पात्रों को अपने रेखाचित्रों द्वारा नायक का दर्जा प्रदान किया। भावना प्रधान भाषा के कारण रामवृक्ष बेनीपुरी के रेखाचित्र गद्य काव्य जैसा आनंद देते हैं।

रामवृक्ष बेनीपुरी के बाद रेखाचित्र को उत्कर्ष पर पहुंचाने वालों में महादेवी वर्मा का नाम अविस्मरणीय है। उन्होंने संस्मरणात्मक रेखाचित्र अधिक रचे, जिनमें साहित्य और सामाजिक क्षेत्र की विभूतियाँ तो शामिल हैं ही, समाज के शोषित और उपेक्षित पात्र तथा मानवेतर प्राणी भी शामिल हैं। इनके अतिरिक्त कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, प्रकाशचन्द्र गुप्त और विष्णु प्रभाकर का भी रेखाचित्र विधा को लोकप्रिय बनाने में महत्वपूर्ण योगदान है।

प्रमुख रेखाचित्र संग्रह

हिंदी के कुछ प्रमुख रेखाचित्रकार और उनकी रचनाएँ इस प्रकार हैं - बनारसी दास चतुर्वेदी (रेखाचित्र), महादेवी वर्मा (अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएँ, मेरा परिवार), श्रीराम शर्मा (बोलती प्रतिमा), विनयमोहन शर्मा (रेखा और रंग), रामवृक्ष बेनीपुरी (माटी की मूरतें, तथा गेहूँ और गुलाब), प्रकाश चंद्र गुप्त (पुरानी स्मृतियाँ, और नए स्केच तथा रेखाचित्र), कन्हैया लाल मिश्र 'प्रभाकर' (भूले हुए चेहरे), विष्णु प्रभाकर (जाने अनजाने), रामविलास शर्मा (पंचरत्न), देवेंद्र सत्यार्थी (रेखाएँ बोल उठीं), नगेंद्र (चेतना के बिम्ब), अजित कुमार (दूर वन में, निकट मन में)।

बोध प्रश्न

- हिंदी के चार प्रमुख रेखाचित्रकारों और उनकी एक एक प्रमुख रचना का नाम बताइए।

13.3 पाठ सार

आधुनिक काल में जब छापाखाने की सुविधा प्राप्त हुई, तो हिंदी में कविता से आगे बढ़कर गद्य की विभिन्न विधाओं का विकास हुआ। ये विधाएँ मुख्यतः दो प्रकार की हैं। एक तो वे जिनमें लेखक कल्पना से निर्मित कथासूत्र का विकास करता है। इस वर्ग की विधाओं के अंतर्गत नाटक, एकांकी, उपन्यास, कहानी और लघुकथा आते हैं। इन्हें 'काल्पनिक गद्यविधा' कहा गया

है। दूसरा वर्ग 'अकाल्पनिक गद्यविधा' का है। इसमें लेखक को काल्पनिक विषय के प्रतिपादन की छूट नहीं होती। इसके अंतर्गत एक ओर तो निबंध और ललित निबंध आते हैं तथा दूसरी ओर वे नई विधाएँ आती हैं, जो किसी न किसी रूप में 'स्मृति' पर आधारित हैं। इन स्मृति-आधारित अकाल्पनिक गद्य विधाओं में मुख्यरूप से शामिल हैं– आत्मकथा, जीवनी, रेखाचित्र, संस्मरण, यात्रावृत्त, डायरी और साक्षात्कार। इनमें रेखाचित्र का महत्व इसलिए अधिक है कि किसी पात्र, स्थान, घटना अथवा प्रतिक्रिया का शाब्दिक चित्र प्रस्तुत करने के रूप में यह विधा दूसरी तमाम विधाओं के अंग के समान भी शामिल हैं। हिंदी में महादेवी वर्मा ने इसे स्वतंत्र आधुनिक गद्य विधा के रूप में स्थापित किया।

रेखाचित्र मूलतः चित्रकला का शब्द है। हिंदी में यह शब्द अंग्रेज़ी 'स्केच' के समानार्थी के रूप में स्वीकृत है। चित्रकला में 'स्केच' का अर्थ है- ऐसा चित्र जो रेखाओं से निर्मित हो। चित्रकला की इसी अवधारणा को स्वीकार करते हुए यह कहा जा सकता है कि किसी व्यक्ति, वस्तु, घटना अथवा मनोभाव का साक्षात्कार कराने के लिए जब लेखक बहुत थोड़े से शब्दों द्वारा उसका चित्र अंकित करता है, तो ऐसी रचना को रेखाचित्र कहा जाता है। अर्थात, जिस विधा में क्रमबद्धता का ध्यान न रखकर किसी वास्तविक पात्र की आकृति, चालढाल या स्वभाव की विशेषताओं का शब्दों द्वारा सजीव चित्रण किया जाता है, उसे रेखाचित्र कहते हैं। जिस प्रकार कोई चित्रकार केवल कुछ रेखाओं से सजीव चित्र बनाकर लोगों को आश्चर्यचकित कर देता है, उसी प्रकार थोड़े से शब्दों में किसी वस्तु अथवा घटना का चित्रण करना रेखाचित्र कहा जाता है। महादेवी वर्मा के शब्दों में "रेखाचित्र शब्द चित्रकला से साहित्य में आया है, परंतु अब वह शब्दचित्र के स्थान में रूढ़ हो गया है। चित्रकार अपने सामने रखी वस्तु या व्यक्ति का रंगीन चित्र जब कुछ रेखाओं में इस प्रकार आंक देता है कि उसके विशेष मुद्रा पहचानी जा सके, तब उसे हम रेखाचित्र की संज्ञा देते हैं। साहित्य में भी साहित्यकार कुछ शब्दों में ऐसा चित्र अंकित कर देता है जो उस व्यक्ति या वस्तु का परिचय दे सके।" रेखाचित्रकार का प्रमुख उद्देश्य अपनी शब्द-रेखाओं के द्वारा पाठक में संवेदना जागृत करना होता है। इसमें अनुभूत जीवन का सत्य व्यक्त होता है। रेखाचित्र में एक ही वस्तु, घटना या चरित्र प्रधान होता है, जिससे संबन्धित प्रमुख विशेषताओं को उभारा जाता है। रेखाचित्र और गद्य की अन्य विधाओं में संबंध है और संस्मरण से तो इसका सीधा संबंध है ही। किन्तु जहाँ रेखाचित्र वस्तुनिष्ठ है, वहीं संस्मरण व्यक्तिनिष्ठ। यथार्थ अनुभूति, संवेदनशील दृष्टि, तटस्थता तथा सूक्ष्म निरीक्षण रेखाचित्रकार के

प्रमुख गुण हैं। हिंदी में 1929 में प्रकाशित पंडित पद्म सिंह शर्मा के 'पद्म पराग' को पहला रेखाचित्र माना जाता है। महादेवी वर्मा को रेखाचित्रकार और संस्मरण लेखिका दोनों माना जाता है, छायावाद की प्रमुख कवयित्री तो वे हैं ही।

13.4 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष उपलब्ध होते हैं -

1. आधुनिक काल में गद्य का विकास होने पर कहानी और उपन्यास जैसी काल्पनिक गद्य विधाओं के साथ कई सारी अकाल्पनिक गद्य विधाओं का भी विकास हुआ।
2. इन अकाल्पनिक गद्य विधाओं में स्मृति पर आधारित विधाओं का महत्वपूर्ण स्थान है।
3. स्मृति पर आधारित गद्य विधाओं में आत्मकथा और संस्मरण के अलावा रेखाचित्र अत्यंत महत्वपूर्ण है।
4. हिंदी में 1929 में प्रकाशित पद्म सिंह शर्मा के 'पद्म पराग' को प्रथम रेखाचित्र होने का गौरव प्राप्त है।
5. महादेवी वर्मा ने साधारण व्यक्तियों और पालतू पशु पक्षियों के रेखाचित्र लिखकर इस विधा को नया आयाम प्रदान किया।

13.5 शब्द संपदा

1. अपेक्षित	=	जिसकी चाह या आशा हो
2. प्रतिबिंब	=	परछाईं, छाया, अक्स
3. बहुआयामी	=	अनेक आयामों वाला
4. मर्मस्पर्शी	=	मन (दिल) को छूने वाली
5. यथातथ्यता	=	वास्तविकता, जैसा है वैसा ही
6. वस्तुनिष्ठता	=	किसी से भी प्रभावित न होकर किसी तथ्य या घटना का उसके वास्तविक रूप में ही विश्लेषण करना

7. विधा = रीति, ढंग, प्रकार, किस्म, वर्ग, श्रेणी

8. व्यंग्य = गूढ़ार्थ

9. संवेदना = अनुभूति

10. समावेश = शामिल होना, व्याप्त होना

13.6 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. रेखाचित्र की एक परिभाषा लेकर उसका विश्लेषण कीजिए ।

2. 'रेखाचित्र' के विधागत स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।

3. रेखाचित्र और संस्मरण के बीच विभाजक रेखा खीचना कठिन है।' स्पष्ट कीजिए।

4. 'रेखाचित्र' विधा का प्रवृत्तिगत विश्लेषण कीजिए ।

खंड (ब)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. रेखाचित्र और कहानी में समानता और अंतर स्पष्ट कीजिए

2. साहित्यिक विधा के रूप में रेखाचित्र की विशेषताएँ बताइए ।

3. महादेवी वर्मा के 'रेखाचित्र' विषयक विचारों पर टिप्पणी लेखिए।

खंड (स)

I सही विकल्प चुनिए

1. 'अतीत के चलचित्र' रेखाचित्र के रचनाकार हैं। ( )

अ) महादेवी वर्मा (आ) रामवृक्ष बेनीपुरी (इ) शिव पूजन सहाय (ई) विष्णु प्रभाकर

2. इनमें से कौनसी प्रवृत्ति रेखाचित्र की नहीं है? ( )

(अ) चित्रात्मकता (आ) तटस्थता (इ) काल्पनिकता (ई) यथार्थता

3. रेखाचित्र के लिए यह पद प्रयोग नहीं होता। ( )

(अ) शब्दचित्र (आ) स्मृतिचित्र (इ) स्केच (ई) चलचित्र

II रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए

1. रेखाचित्र में .... के माध्यम से व्यक्तित्व को उभारा जाता है।

2. 'स्मृति की रेखाएँ' में ....के लिखे रेखाचित्र सम्मिलित हैं।

3. रेखाचित्र .... गद्य विधा है।

4. रेखाचित्र में कहानी के कथानक की .... मिलती है।

5. 'चेतना के बिम्ब' के लेखक का नाम ....है।

III सुमेल कीजिए

i) महादेवी वर्मा (क) दूर वन में

ii) श्रीराम शर्मा (ख) रेखाएँ बोल उठी

iii) देवेंद्र सत्यार्थी (ग) मेरा परिवार

iv) अजित कुमार (घ) बोलती प्रतिमा

13.7 पठनीय पुस्तकें

---

1. हिंदी साहित्य कोश. (सं) धीरेन्द्र वर्मा.

2. रेखाचित्र. महादेवी वर्मा.

इकाई 14 : भाभी (महादेवी वर्मा) : एक विश्लेषण

इकाई की रूपरेखा

14.0 प्रस्तावना

14.1 उद्देश्य

14.2 मूल पाठ : भाभी (महादेवी वर्मा) : एक विश्लेषण

14.2.1 महादेवी वर्मा : जीवन और रचनाएं

14.2.2 'भाभी' : एक परिचय

14.2.3 'भाभी' : तात्विक विवेचन

14.3 पाठ सार

14.4 पाठ की उपलब्धियां

14.5 शब्द संपदा

14.6 परीक्षार्थ प्रश्न

14.7 पठनीय पुस्तकें

14.0 प्रस्तावना

आप जानते हैं कि छायावाद की प्रमुख कवयित्री के रूप में महादेवी वर्मा की प्रतिष्ठा है। रहस्यवादी कवि, यथार्थवादी गद्यकार तथा समन्वयवादी आलोचक होने के साथ साथ वे अद्वितीय रेखाचित्रकार, संस्मरण-लेखिका, सामाजिक एवं ललित निबंधकार, उच्चकोटि की चित्रकार, और अग्रणी प्रबुद्ध समाज तथा राष्ट्र-सेविका भी हैं। उन्होंने एक ओर काव्य रचना की तो दूसरी ओर सामाजिक यथार्थ को प्रस्तुत करने के लिए गद्य का सहारा लिया। उन्होंने अपने रेखाचित्रों, संस्मरणों, निबंधों और आलोचनाओं के माध्यम से समाज के उपेक्षित वर्ग विशेषतः स्त्रियों के प्रति अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। इस कारण आधुनिक युग की मीरा, वेदना और पीड़ा की छायावादी कवयित्री महादेवी वर्मा का गद्यलेखन भी बहुत प्रशंसित रहा है। गद्य में उनके सामाजिक सरोकार भी अधिक स्पष्ट हुए हैं। उन्होंने संस्मरण और रेखाचित्र जैसी आधुनिक गद्य विधाओं को अत्यंत मार्मिक लेखन द्वारा समृद्ध किया। इस इकाई में आप उनके एक प्रसिद्ध रेखाचित्र 'भाभी' का अध्ययन करेंगे। 'स्मृति की सुरक्षित सीमा' से बाहर आकर भाभी का यह रेखाचित्र पढ़कर आप सोचने पर मजबूर हो जाएंगे कि ऐसी एक स्त्री को आपने

भी कभी और कहीं देखा है।

14.1 उद्देश्य

प्रिय छात्रो! इस इकाई में आप महादेवी वर्मा के रेखाचित्र 'भाभी' का अध्ययन करने जा रहे हैं। इसके अध्ययन से आप -

- महादेवी वर्मा के जीवन और कृतित्व से परिचित हो सकेंगे।
- महादेवी वर्मा के गद्य लेखन के बारे में जान सकेंगे।
- महादेवी वर्मा के रेखाचित्र 'भाभी' की विषयवस्तु से परिचित हो सकेंगे।
- महादेवी वर्मा के रेखाचित्र लेखन की विशेषताओं को समझ सकेंगे ।
- राष्ट्रीय चेतना और स्त्री-सशक्तीकरण और उनकी दशा में सुधार के परिप्रेक्ष्य में महादेवी वर्मा की रचनाओं का मूल्यांकन कर सकेंगे।
- रेखाचित्र के तत्वों के आधार पर 'भाभी' का विश्लेषण कर सकेंगे।

14.2 मूल पाठ : भाभी (महादेवी वर्मा) : एक विश्लेषण

अपने रेखाचित्रों में महादेवी वर्मा ने मातृत्व की ममता, बहन का स्नेह, और नारीत्व की विविध अनुभूतियों की सुंदर अभिव्यक्ति की है। 'अतीत के चलचित्र', 'स्मृति की रेखाएँ', और 'पथ के साथी' महादेवी वर्मा के प्रमुख संस्मरण और रेखाचित्र संग्रह हैं। 'अतीत के चलचित्र' में अनेक सामाजिक विसंगतियों की मार झेल रही स्त्रियों की करुण कथाएँ भी है। ये स्त्रियाँ महादेवी वर्मा की 'अक्षय ममता के पात्र' हैं। इन रेखाचित्रों के चरित्रों में उनके माध्यम से स्वयं महादेवी का जीवन भी आ गया है। इन अधूरी रेखाओं और धुंधले रत्नों की समष्टि में से एक रत्न 'भाभी' भी है। यह भी उल्लेखनीय है कि यह रेखाचित्र 11 अक्टूबर, 1933 को लिखा गया था, फिर भी इसकी ताजगी आज तक बरकरार है।

सूर्य प्रसाद दीक्षित ने 'अतीत के चलचित्र' की विषयवस्तु पर टिप्पणी करते हुए लिखा है - "इन चलचित्रों में समाज के सर्वहारा वर्ग की झांकी है। उनके दुख दैन्य की कहानी है, कुँजड़ा, काछी, कुम्हार, आदि पात्रों के उपेक्षित जीवन की गाथा है, अभागी, वेश्या, विधवा और विकलांग नारियों के जीवन की विडम्बना का स्वर है, पतित जारज वर्ण संकर, तथाकथित नीच नराधम संतानों का लेखा जोखा है और दरिद्रनारायण की कथा है।"

प्रिय छात्रो, आइए, महादेवी वर्मा के रेखाचित्र 'भाभी' पर विस्तृत चर्चा करने से पहले उनके व्यक्तित्व और कृतित्व के बारे में जान लें।

14.2.1 महादेवी वर्मा : जीवन और रचनाएँ

महादेवी वर्मा का जन्म 26 मार्च, 1907 और निधन 11 सितंबर, 1987 को हुआ। उन्हें हिंदी साहित्य में छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों में से एक माना जाता है। आधुनिक हिंदी की सबसे सशक्त कवयित्रियों में से एक होने के कारण उन्हें आधुनिक मीरा के नाम से भी जाना जाता है। कवि निराला ने उन्हें "हिंदी के विशाल मन्दिर की सरस्वती" भी कहा है। वे महात्मा गांधी से प्रभावित थीं और उन्हीं के कहने पर उन्होंने स्वयं को स्त्रियों की शिक्षा और सशक्तीकरण के लिए समर्पित कर दिया।

महादेवी वर्मा ने खड़ी बोली हिंदी की कविता में उस कोमल शब्दावली का विकास किया जो अभी तक केवल ब्रजभाषा में ही संभव मानी जाती थी। इसके लिए उन्होंने खड़ी बोली हिंदी में अपने समय के अनुकूल संस्कृत और बांग्ला के कोमल शब्दों को चुनकर सम्मिलित किया। उन्होंने अध्यापन से अपने कार्यजीवन की शुरूआत की और अन्तिम समय तक वे प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्रधानाचार्या बनी रहीं।

उन्हें हिंदी साहित्य के अनेक महत्त्वपूर्ण पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। उन्हें 1982 में 'दीपशिखा' नामक गीतसंग्रह के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किया गया।

प्रमुख कविता संग्रह

नीहार (1930), रश्मि (1932), नीरजा (1934), सांध्यगीत (1936), दीपशिखा (1942), सप्तपर्णा (अनूदित-1959), प्रथम आयाम (1974), अग्निरेखा (1990)।

प्रमुख गद्य साहित्य

रेखाचित्र : अतीत के चलचित्र (1941), स्मृति की रेखाएं (1943) और मेरा परिवार (1972)।

संस्मरण : पथ के साथी (1956) और संस्मरण (1983)।

चुने हुए भाषणों का संकलन : संभाषण (1974)।

निबंध : शृंखला की कड़ियाँ (1942), विवेचनात्मक गद्य (1942), साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबंध (1962), संकल्पिता (1969)।

ललित निबंध : क्षणदा (1956)

बोध प्रश्न

- महादेवी का संबंध आधुनिक युग के किस काल खंड से है?

- महादेवी वर्मा को आधुनिक मीरा क्यों कहा जाता है?
- महादेवी वर्मा की भाषा की क्या विशेषता है?
- महादेवी वर्मा की प्रमुख गद्य रचनाएँ कौनसी हैं?

महादेवी वर्मा को जितनी प्रसिद्धि उनके छायावादी गीतों के लिए मिली, उतनी ही प्रतिष्ठा उन्होंने अपने विशिष्ट प्रकार के गद्य लेखन द्वारा भी अर्जित की। उनके चिंतन पूर्ण गद्य लेखन में 'शृंखला की कड़ियाँ' का सबसे महत्वपूर्ण स्थान है। इसे आधुनिक हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श की गीता के रूप में जाना जाता है। इसके अलावा महादेवी ने अपने रेखाचित्रों और संस्मरणों के द्वारा हिंदी के स्मृति-आधारित लेखन को एकदम नई दिशा प्रदान की। उन्होंने अपने घर-परिवार और परिवेश से ऐसे व्यक्तियों और प्राणियों को चुनकर रेखाचित्र और संस्मरण रचे, जो प्रथम दृष्टि में इतने साधारण और छोटे लगते हैं कि वे साहित्य रचना का आधार भी नहीं बन सकते। गिलहरी और हिरणी से लेकर घरेलू नौकर और नौकरानी तक पर रचित अपने रेखाचित्रों के माध्यम से महादेवी ने 'साधारण' को 'असाधारण' बना दिया। उन्होंने जीवन के हाशिये पर स्थित उपेक्षित पात्रों का चित्रण इतनी गहरी आत्मीयता और संवेदनशीलता के साथ किया है कि उन पात्रों को साहित्य में कालजयी 'नायकत्व' प्राप्त हो गया है।

बोध प्रश्न

- 'शृंखला की कड़ियाँ' का क्या महत्व है?
- महादेवी के रेखाचित्रों की मुख्य विशेषता क्या है?

14.2.2 'भाभी' : एक परिचय

महादेवी वर्मा ने इस रेखाचित्र में एक बाल विधवा का चित्र प्रस्तुत किया है, जिन्हें वे भाभी कहती थी। लेखिका ने उसके बारे में बताया है कि छोटे गोल मुख की तुलना में कुछ अधिक चौड़ा लगने वाला पर दो काली रूखी लटों से सीमित ललाट, बचपन और प्रौढ़ता को एक साथ अपने भीतर बंद कर लेने का प्रयास-सा करती हुई, लंबी बरौनियोंवाली भारी पलकें और उनकी छाया में डबडबाती हुई-सी आँखें, उस छोटे मुख के लिए भी कुछ छोटी सीधी-सी नाक और मानो अपने ऊपर छपी हुई हँसी से विस्मित होकर कुछ खुले रहने वाले ओठ, समय के प्रवाह से फीके भर हो सकते हैं, धुल नहीं सकते।

बोध प्रश्न

- इस अनुच्छेद में वर्णित 'करुण कोमल मुख' किसका है?

- 'भाभी' की आँखें और नाक कैसी थीं?

'भाभी' का रूप वर्णन करते हुए लेखिका ने आगे लिखा है - घर के सब उजले-मैले, सहज-कठिन कामों के कारण, मलिन रेखा जाल से गुथी और अपनी शेष लाली को कहीं छिपा रखने का प्रयत्न-सा करती हुई कहीं कोमल, कहीं कठोर हथेलियाँ, काली रेखाओं में जड़े कांतिहीन नखों से कुछ भारी जान पड़ने वाली पतली उँगलियाँ, हाथों का बोझ संभालने में भी असमर्थ दुर्बल, रूखी पर गौर बाहें और मारवाड़ी लहंगे के भारी घेर से थकित से, एक सहज सुकुमारता का आभास देते हुए, कुछ लंबी उँगलियों वाले दो छोटे छोटे पैर, जिनकी एड़ियों में आँगन की मिट्टी की रेखा मटमैले महावर सी लगती थी, भुलाए भी कैसे जा सकते हैं !

लेखिका याद करती है कि उन हाथों ने न जाने बचपन में कितनी बार, मेरे उलझे बाल सुलझाकर बड़ी कोमलता से बांध दिये थे। वे पैर न जाने कितनी बार, अपनी सीखी हुई गंभीरता भूलकर मेरे लिए द्वार खोलने आँगन में एक ओर से दूसरी ओर दौड़े थे। किस तरह मेरी अबोध अष्टवर्षीय बुद्धि ने उससे भाभी का संबंध जोड़ लिया था, अब यह बताना कठिन है।

लेखिका ने यह भी बताया है कि अपनी सहेलियों की भाभियों को देखकर उन्होंने इस मारवाड़ी विधवा वधू को भाभी कहना शुरू किया था।

बोध प्रश्न

- मारवाड़ी विधवा बहू से लेखिका के संबंध का आधार क्या रहा?
- 'भाभी' के पैरों का वर्णन लेखिका ने किस प्रकार किया है?

महादेवी वर्मा बताती है कि 'भाभी' अनाथ थी। यह उसका दुर्भाग्य था कि बूढ़े सेठ सब के मना करते-करते भी इसे अपने इकलौते लड़के से ब्याह लाए और उसी साल लड़का बिना बीमारी के ही मर गया। अब सेठ जी का इसकी चंचलता के मारे नाक में दम है। न इसे कहीं जाने देते हैं न किसी को अपने घर आने। केवल अमावस, पूनो एक ब्राह्नी आती है जिसे वे अपने आप सीध दिलवाकर विदा कर देते हैं। वे बेचारे तो जाति बिरादरी में भी इसके लिए बुरे बन गए हैं और इसकी निर्लज्जता देखो - ससुर दूकान गए नहीं कि यह पर्दे से लगी नहीं। घर में कोई देखनेवाला है ही नहीं। एक ननद है जो शहर में ससुराल होने के कारण जब-तब आ जाती है और तब इसकी खूब ठुकाई होती है। इत्यादि इत्यादि सूचनाएँ कल्लू की माँ की विशेष शब्दावली और विचित्र भाव भंगिमाओं के साथ मुझे स्कूल तक मिलती रहती थी। परंतु उस समय वे सूचनाएँ मेरे निकट उतना ही महत्व रखती थीं, जितना नानी से सुनी हुई बेला रानी की कहानी।

'भाभी' से पहली मुलाकात के बारे में लेखिका ने बताया है कि एक दिन स्कूल से लौटते हुए गीली सड़क पर उनका पैर भाभी के घर के सामने फिसल गया तो भाभी ने उन्हें अपने घर में पनाह दी। उस दिन से वह घर, जिसमें न एक भी झरोखा था न रौशनदान, न एक भी नौकर दिखाई देता था, न अतिथि और न एक भी पशु रहता था न पक्षी, लेखिका के लिए एक आकर्षण बन गया।

बोध प्रश्न

- भाभी का क्या दुर्भाग्य था?
- लेखिका से भाभी कि मुलाकात कैसे हुई?

महादेवी वर्मा ने इस बाल विधवा(भाभी) की दिनचर्या के बारे में तथा उनके स्वभाव के बारे में भी बताया है - उस अभागी का दिन द्रौपदी के चीर से होड़ लेता था। सवेरे स्नान, तुलसी पूजा आदि में कुछ समय बिताकर ही वह अंधेरे रसोईघर में पहुँचती थी। परंतु दस बजते बजते ससुर को खिला पिलाकर, उसी टाट के पर्दे से मुझे शाम को आने का निमंत्रण देने के लिए स्वतंत्र हो जाती थी। उसके बाद चौका बर्तन, कूटना-पीसना भी समाप्त हो जाता, परंतु तब भी दिन का अधिक नहीं तो एक प्रहर शेष रह ही जाता था। दूकान की ओर जाने का निषेध होने के कारण वह अवकाश का समय उसी टाट के पर्दे के पास बिता देती थी, जहाँ से कुछ मकानों के पिछवाड़े और एक दो आते-जाते व्यक्ति ही दिख सकते थे, परंतु इतना ही उसकी चंचलता हा ढिंढोरा पीटने के लिए पर्याप्त था।

बोध प्रश्न

- भाभी की दिनचर्या क्या थी?

अनेक वर्षों बाद अपने बचपन की उन घटनाओं को लेखिका ने इस प्रकार याद किया है - उस 19 वर्ष की युवती की दयनीयता आज समझ पाती हूँ जिसके जीवन के सुनहरे स्वप्न गुड़ियों के घरौंदे के समान दुर्दिन की वर्षा में केवल बह ही नहीं गए, वरन उसे इतना एकाकी छोड़ गए कि उन स्वप्नों की कथा कहना भी संभव न हो सका। ऐसी दशा में उसने आठ वर्ष की बालिका (लेखिका) को ही अपने संगीहीन हृदय की सारी ममता सोंप दी; परंतु वह बालिका तो उस संसार में प्रवेश करने में असमर्थ थी, इसीसे उसने उसी के गुड़ियोंवाले संसार को अपनाया। भाभी के लिए कला अक्षर भैंस बराबर था। उस पर मेरी विद्वत्ता की धाक भी सहज ही जम गई थी। वृद्ध भी अपनी बहू के लिए ऐसा निर्दोष साथी पाकर इतने प्रसन्न हुए कि स्वयं ही बड़े आदर

यत्न से मुझे बुलाने-पहुँचाने लगे।

बोध प्रश्न

- अभागी भाभी और अबोध बालिका के संबंध का आधार क्या था?
- बालिका महादेवी ने अपनी विद्वत्ता की धाक भाभी पर कैसे जमाई?

महादेवी आगे बताती हैं कि उन्हीं दिनों स्कूल में कशीदा काढ़ना सीखकर मैंने अपनी धानी रंग की साड़ी में बड़े-बड़े नीले फूल काढ़े। भाभी को रंगीन कपड़े बहुत भाते थे इसीसे उसे देखकर वह ऐसी विस्मय विमुग्ध रह गई मानो कोई सुंदर चित्र देख रही हो। मैंने क्यों माँ से हठ करके वैसा ही कपड़ा मंगवाया और क्यों किसी को बिना बताए हुए छिपा- छिपाकर उस ओढ़नी पर नीले फूल काढ़ना आरंभ किया, यह आज तक समझ नहीं आता। उस दिन की बात तो मेरी स्मृति में गर्म लोहे से लिखी जान पड़ती है, जब उस ओढ़नी को छुपाकर मैं भाभी को आश्चर्य में डालने गई। उसके उपरांत जो हुआ वह तो स्मृति के लिए भी अधिक करुण है। क्रूरता का वैसा प्रदर्शन मैंने फिर कभी नहीं देखा। उस एक घटना से बालिका प्रौढ़ हो गई थी और युवती वृद्धा। आज भी जब कोई मेरी रंगीन कपड़ों के प्रति विरक्ति के संबंध में कौतुक-भरा प्रश्न कर बैठता है तो वह अतीत वर्तमान होने लगता है। आज भी जब कोई मेरी रंगीन कपड़ों के प्रति विरक्ति के संबंध में कौतुक भरा प्रश्न कर बैठता है तो वह अतीत फिर वर्तमान होने लगता है। कोई किस प्रकार समझे कि रंगीन कपड़ों में जो मुख धीरे धीरे स्पष्ट होने लगता है वह कितना मुरझाया हुआ है। कभी कभी तो वह मुख मेरे सामने आने वाले सभी करुण क्लांत मुखों में प्रतिबिम्बित होकर मुझे उनके साथ एक अटूट बंधन में बांध देता है।

बोध प्रश्न

- भाभी के लिए रंगीन वस्त्र अभिशाप क्यों थे?
- बालिका(लेखिका) पर इस प्रसंग का क्या असर पड़ा?

लेखिका ने बाल विधवा भाभी पर ससुर और ननद के अत्याचार का दिल हिला देने वाला वर्णन किया है। वे लिखती हैं - क्रूरता का वैसा प्रदर्शन मैंने फिर कभी नहीं देखा। बचाने का कोई उपाय न देखकर कदाचित मैंने ज़ोर-ज़ोर से रोना आरंभ किया, परंतु बच तो वह तब न सकी, जब मन से ही नहीं, शरीर से भी बेसुध हो गई। परंतु बहुत दिनों के बाद जब मैंने फिर उसे देखा, तब उन बचपन भरी आँखों में विषाद का गाढ़ा रंग चढ़ चुका था और वे होठ, जिन पर किसी दिन हँसी छिपी सी जान पड़ती थी, ऐसे काँपते थे, मानो भीतर का क्रंदन रोकने के प्रयास से थक गए हो। उस घटना से बालिका प्रौढ़ हो गई थी और युवती वृद्धा।

बोध प्रश्न

- भाभी के प्रति अत्याचार की घटना का बालिका पर क्या प्रभाव पड़ा?
- भाभी के प्रति अत्याचार की घटना का भाभी पर क्या प्रभाव पड़ा?

प्रिय छात्रो! महादेवी वर्मा आमतौर पर सफ़ेद सूती धोती पहनती थीं। उन्हें रंगीन कपड़े पहनना पसंद नहीं था। इसका कारण स्पष्ट करते हुए उन्होंने लिखा है - आज भी जब कोई मेरी रंगीन कपड़ों के प्रति विरक्ति के संबंध में कौतुक-भरा प्रश्न कर बैठता है तो वह अतीत फिर वर्तमान होने लगता है। कोई किस प्रकार समझे कि रंगीन कपड़ों में जो मुख धीरे धीरे स्पष्ट होने लगता है वह कितना करुण और मुर्झाया हुआ है। कभी कभी तो यह मुख मेरे सामने आने वाले सभी करुण क्लांत मुखों में प्रतिबिम्बित होकर मुझे उनके साथ एक अटूट बंधन में बांध देता है। प्रायः सोचती हूँ - जब वृद्ध ने कभी न खोलने के लिए आंखे मूँद ली होंगी तब वह, जिसे उन्होंने संसार की ओर देखने का अधिकार ही नहीं दिया था, कहाँ गई होगी!

बोध प्रश्न

- महादेवी वर्मा को रंगीन कपड़े पसंद क्यों नहीं थे?

14.2.3 'भाभी' : तात्विक विवेचन

1. परिचित विषयवस्तु

महादेवी वर्मा के 'भाभी' रेखाचित्र को संस्मरणात्मक-रेखाचित्र भी कहा जा सकता है। इस रेखाचित्र का विषय 'भाभी' नाम से पुकारी गई एक विधवा युवा स्त्री है जो उनसे तब मिली थी जब महादेवी बालिका थीं। वर्षों बाद वे अपनी स्मृति के आधार पर उसके जीवन का विवरण प्रस्तुत करती हैं- "उन हाथों ने बचपन में न जाने कितनी बार मेरे उलझे बाल सुलझा कर बड़ी कोमलता से बाँध दिये थे । वे पैर न जाने कितनी बार, अपनी सीखी हुई गंभीरता भूल कर मेरे लिये द्वार खोलने, आँगन में एक ओर से दूसरी ओर दौड़े थे । किस तरह मेरी अबोध अष्टवर्षीय बुद्धि ने उससे भाभी का संबंध जोड़ लिया था, यह अब बताना कठिन है । मेरी अनेक सहपाठिनियों के बहुत अच्छी भाभियाँ थीं; कदाचित् उन्हीं की चर्चा सुन-सुनकर मेरे मन ने, जिसने अपनी तो क्या दूर के संबंध की भी कोई भाभी ने देखी थी, एक ऐसे अभाव की सृष्टि कर ली, जिसको वह मारवाड़ी विधवा वधू दूर कर सकी।"

2. चित्रात्मकता

स्मृति पर आधारित होने के बावजूद महादेवी वर्मा ने इस रेखाचित्र में भाभी के शरीर-सौष्ठव व व्यक्तित्व का सुंदर चित्र प्रस्तुत किया है। उदाहरण के लिए - "छोटे गोल मुख की

तुलना में कुछ अधिक चौड़ा लगने वाला पर दो काली रूखी लटों से सीमित ललाट, बचपन और प्रौढ़ता को एक साथ अपने भीतर बंद कर लेने का प्रयास-सा करती हुई, लंबी बरौनियोंवाली भारी पलकें और उनकी छाया में डबडबाती हुई-सी आँखें।" भाभी के इस रूप वर्णन से महादेवी वर्मा के चित्रकार होने का बोध भी सहज ही हो जाता है। इससे पता चलता है कि लेखिका की किसी व्यक्ति को देखने की दृष्टि अत्यंत सूक्ष्म है। इसे पढ़ते हुए पाठक की आँखों के समक्ष भाभी का छोटा गोल चेहरा उभर आता है। उस बालिका का चेहरे की तुलना में चौड़ा मस्तक तथा शृंगारहीन काली रूखी लटें देर तक पाठक को याद रहती हैं। लेखिका ने इस आरंभिक रूप परिचय में ही भाभी की लटों के रूखेपन का उल्लेख इसलिए भी किया है कि आगे चलकर इन लटों को सँवारने के कारण ही उसके जीवन में एक बड़ा तूफान आने वाला है। इससे एक रेखाचित्रकार के रूप में लेखिका की पैनी नज़र का पता चलता है।

3. तटस्थता

यूं तो 'भाभी' परिचिता हैं किन्तु महादेवी जी का ध्येय यहाँ भी शोषित दीन-हीन नारियों का संवेदनात्मक चित्रण करना है। उन्हें महिमा-मंडित करने के स्थान पर उनकी दशा का लेखिका ने यथातथ्य वर्णन किया है। संवेदनात्मक चित्रण में कवित्वपूर्ण शैली अनायास ही आ गई है। तटस्थता का उदाहरण देखें - "प्रायः सोचती हूँ - जब वृद्ध ने कभी न खोलने के लिए आंखे मूँद ली होंगी तब वह, जिसे उन्होंने संसार की ओर देखने का अधिकार ही नहीं दिया था, कहाँ गई होगी!"

4. भाषा की जीवंतता

व्यंग्य-विनोद से पुष्ट मुहावरेदार भाषा में लिखित इस रेखाचित्र में चित्रात्मकता का गुण भाषा के जीवंत प्रयोग से आया है। भाभी की हथेलियों के वर्णन का उदाहरण देखें - "घर के सब उजले- मैले, सहज-कठिन कामों के कारण, मलिन रेखा जाल से गुथी और अपनी शेष लाली को कहीं छिपा रखने का प्रयत्न-सा करती हुई कहीं कोमल, कहीं कठोर हथेलियाँ, काली रेखाओं में जड़े कान्तिहीन नखों से कुछ भारी जान पड़ने वाली पतली उँगलियाँ, हाथों का बोझ संभालने में भी असमर्थ-सी दुर्बल, रूखी पर गौर बाँहें और मारवाड़ी लहँगे के भारी घेर से थकित-से, एक सहज सुकुमारता का आभास देते हुए-कुछ लंबी उँगलियों वाले दो छोटे-छोटे पैर, जिनकी एड़ियों में आँगन की मिट्टी की रेखा मटमैले महावर-सी लगती थी, भुलाए भी कैसे जा सकते हैं!"

बोध प्रश्न

- महादेवी वर्मा के रेखाचित्र 'भाभी' को क्या कहा जा सकता है?
- 'भाभी' रेखाचित्र में महादेवी वर्मा का ध्येय क्या था?

14 .3 पाठ सार

भारतीय समाज में सदा से नारी की स्थिति शोचनीय रही है। स्त्री युगों से सामाजिक शृंखलाओं में जकड़ी रही है। महादेवी वर्मा ने बड़ी संवेदनशीलता से स्त्री के जीवन और उसकी विडम्बना का चित्रण किया है। नारी के इन विविध रेखाचित्रों में हमें दरिद्रता की चक्की में पिसती, रात दिन घर-गृहस्थी के कार्यों में खटती, पुरस्कार में पुरुषों से दंडित होती और अन्य स्त्रियों द्वारा अपमानित होती नारी की असहाय अवस्था के करुण चित्र मिलते हैं। नारी की इस दीन दशा के लिए एक ओर तो स्वार्थी, दंभी और क्रूर पुरुषवर्ग उत्तरदायी है दूसरी ओर हमारे समाज में न जाने कब से चली आ रहीं परम्पराएँ और कुरीतियाँ भी बेशक इसके लिए जिम्मेदार हैं। बाल-विवाह, अनमेल विवाह, स्त्री के लिए पुनर्विवाह का निषेध, पुरुष का बहुपत्नी रखने का का अधिकार ये सब मिलकर समाज में स्त्री की स्थिति को बदतर बनाते हैं। महादेवी वर्मा ने अपने जीवन में भी पुरुष के दंभ को भोगा था और समाज को सदा से स्त्री को डराते-धमकाते पाया था। पुरुष ने नारी को सदा से पराधीन बना रखा है और वह इसे स्वीकार भी नहीं करता। हमारे देश में नारी के सम्मान के लिए बड़ी बड़ी बातें की जाती हैं और उन्हें 'देवी का स्थान दिया जाता है किन्तु वास्तविकता यह है कि वह स्त्री को कोई सुविधा देना ही नहीं चाहता। नारी को मनोवैज्ञानिक रूप से तोड़ कर रखा जाता है, उसके हँसने को बेशर्मी समझा जाता है। महादेवी ने नारी की गंभीर से गंभीर समस्याओं को अपनी लेखनी के प्रभाव से और रेखाचित्रों तथा संस्मरणों के माध्यम से समाज के सम्मुख विचारार्थ प्रस्तुत किया। साहित्य का एक उद्देश्य 'शिक्षा' भी है और महादेवी शिक्षा देने के लिए भी रेखाचित्र का प्रयोग करती हैं।

अनेक भारतीय समाज सुधारकों - स्वामी दयानंद, राजा राम मोहन राय, महात्मा गांधी आदि ने अनेक वर्षों तक हिन्दू स्त्री की दीन दशा को सुधारने के लिए सामाजिक आंदोलन किए और समाज को नई दिशा दिखाई। विधवा विवाह के पक्ष में बोले और बाल विवाह का विरोध किया। कन्या को बोझ तो माना ही जाता है, उसके विवाह करने की जल्दी भी रहती है। उसे पराया धन कहा जाता है और यदि बाल-विवाह के पश्चात उसके पति की दुर्योग से मृत्यु हो जाती है तो न तो उसके पुनर्विवाह की सोची जाती और न उसके कल्याण की कोई बात की जाती है। उसे वयोवृद्ध के पल्ले बांध दिया जाता है। रूढ़िवादी समाज में बाल-विधवा और बालिका-वधू से यह आशा की जाती है कि वह अपनी सारी चंचलता और कोमल भावनाओं को

भूलकर दासी के समान घर के काम करे और पूजा पाठ में दिन बिताए। पति के चले जाने पर उसका कोई अस्तित्व नहीं रहता और बालिका वधू होने के कारण उसे पग पग पर प्रताड़णा और पति का कोप भाजन बनना पड़ता है।

भारतीय समाज में वैधव्य एक अभिशाप से कम नहीं । धर्म और शास्त्रों में भी उनके लिए संयम और कठोर जीवन ही लिखा है। किन्तु कम आयु की बालिकाओं के लिए संयम की साधना कठिन होती है। महादेवी वर्मा ने अपने रेखाचित्रों के माध्यम से विधवा जीवन की समस्याओं को भी उजागर किया है। उन्होंने हिन्दू परिवारों की विधवाओं की दुर्दशा, उनके साथ होने वाले अमानवीय व्यवहार और प्रताड़ना का हृदयविदारक चित्र प्रस्तुत किया है। 'अतीत के चलचित्र' नामक पुस्तक में अनेक रेखाचित्र हैं जिनमें स्त्री पर होने वाले अत्याचार का चित्रण किया गया है। 'भाभी' एक ऐसा ही प्रमुख रेखाचित्र है। वह मारवाड़ी सेठ की बहू है जिसे बूढ़े सेठ सब के मना करने पर भी अपने इकलोते पुत्र के लिए ब्याह लाते हैं। उनका पुत्र उसी वर्ष काल कवलित हो जाता है और विधवा होते ही उसे अनेक यातनाओं और बंधनों का सामना करना पड़ता है। बाहर का जीवन और संसार उसके लिए बंद हो जाता है। हर दिन कोई न कोई प्रतिबंध उसे जकड़ने लगता है। उसे एक खंडहर जैसे विशाल भवन में एकाकी और निरुपाय सा रह जाना पड़ता है। बिना किसी संगी साथी, बिना किसी आमोद- प्रमोद के रहते हुए उसे निरंतर वृदधा होने की साधना में लीन रहना पड़ता है। उन्नीस वर्ष की आयु में ही वह किशोरी से मन और तन से बूढ़ी होते चले जाने के लिए मजबूर थी। कला अक्षर भैंस बराबर अर्थात अनपढ़ होने के कारण भाभी को शिक्षा के संस्कार का सहारा भी न था।

“इतने वर्ष बीत जाने पर भी मेरी स्मृति, अतीत के दिन-प्रतिदिन गाढ़े होने वाले धुंधलेपन में एक-एक रेखा खींचकर उस करुण-कोमल मुख को मेरे सामने अंकित ही नहीं सजीव भी कर देती है।” विधवा 'भाभी' का महादेवी ने ऐसा चित्रण किया है जो हिन्दू समाज की एक रूढ़ि और कुरीति रही है। आज जब ऐसे उदाहरण कम हो रहे हैं फिर भी यह भावना कहीं न कहीं है अवश्य। 'भाभी' के जीवन के सुनहरे स्वप्न गुड़ियों के घरोंदे के समान दुर्दिन की वर्षा में केवल बह ही नहीं गए बल्कि उसे एकाकी भी छोड़ गए। कोई उसकी करुण कथा सुनने वाला भी न था और बालिका महादेवी ने जब यह देखा कि भाभी रंगीन कपड़ों को चाहकर भी न पहन सकती थी तो उन्हे बहुत बुरा लगा। विधवा होने के कारण भाभी को सुबह से शाम तक घर का सारा काम करना होता था। विधवा का संमयित जीवन बिताने के कारण न वह भर पेट भोजन कर सकती थी और न रंग-बिरंगे कपड़े पहन सकती थी। उसके साथ दुर्व्यवहार की हद थी। उसे शारीरिक यातना भी झेलनी पड़ती थी। परिवार के अत्याचार के साथ ही बाहरवालों की जली-कटी सुनना उसकी दिनचर्या का अंग था। समाज उसे कुलटा, चंचल और मनचली आदि कहता था। अत्याचार सहते सहते भाभी की दशा बहुत खराब हो गयी थी। उसका जीवन जीने के

लायक न था। बहुत दिनों के बाद महादेवी ने उसको देखा तो वे देखती ही रह गई। विषाद ने भाभी को जकड़ लिया था और फिर भी वे अपने दुख को दबाये रखना सीख गई थीं। उनके इस व्यवहार को देखकर बालिका महादेवी को भी सारा मामला समझ में आने लगा और वे समझ गईं कि क्यों वे यह अत्याचार चुपचाप सहते चले जाने को विवश हैं।

समाज के उपेक्षित वर्ग तथा नारी समुदाय पर सदा से होते रहे अत्याचार पर प्रहार करते हुए महादेवी ने सामाजिक रूढ़ियों और अंधविश्वाशों को भी निशाना बनाया है। उनके विचार प्रगतिशील थे और वे प्राचीनता और नवीनता दोनों को परखकर आगे बढ़ने की सलाह देती हैं। समाज में परिवर्तन लाना उनका लक्ष्य है। यदि हम 'अतीत के चलचित्र' के एक ही रेखाचित्र 'भाभी' पर केन्द्रित होकर अपनी बात कहते हैं तो स्पष्ट हो जाता है कि विधवा के इस रेखाचित्र में करुणा, दया और बेबसी का दारुण दृश्य तो है ही, पाठक के लिए चिंतन के कुछ अबूझ प्रश्न भी हैं। सेठ के पुत्र से ब्याही गई यह किशोरी बाल-विधवा अपना अभिशप्त जीवन बिताने के लिए मजबूर है। इसके जीवन की पीड़ा बालपन से इस रेखाचित्र के लेखन तक भी महादेवी भूल न पाई थीं। उन्होंने एक एक हृदय स्पर्शी घटना का वर्णन इस प्रकार किया है कि आज भी जब हम इस रेखाचित्र को पढ़ते हैं तो मन तिक्त हो जाता है। उदाहरण के लिए एक बार सावन की तीज के अवसर पर वे मेहंदी लगाए, ओढनी पहने उसके पास जाती है और कौतूहलवश ओढनी उस पर डाल देती है। 'वह क्षण भर के लिए अपनी उस स्थिति को भूल गई जिसमें ऐसे रंगीन वस्त्र वर्जित थे और नए खिलौनों से प्रसन्न बालिका के समान बेसुध मन में उसे औढ़े, मेरी ठुड्डी पकड़कर खिलखिला उठी।'

14.4 पाठ की उपलब्धियां

महादेवी वर्मा के रेखाचित्र 'भाभी' पर केंद्रित इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं -

- महादेवी वर्मा जितनी उच्च कोटि कि कवयित्री हैं, उतनी उत्कृष्ट गद्यकार भी हैं।
- महादेवी वर्मा ने विरह और वेदना से भरे गीतों के अलावा सामाजिक सरोकारों से भरे गद्य का भी लेखन किया है।
- महादेवी वर्मा के गद्य लेखन में यों तो निबंध और आलोचना भी शामिल है, लेकिन उनका अकाल्पनिक गद्य अधिक मार्मिक है।
- महादेवी वर्मा ने अकाल्पनिक गद्य की दो महत्वपूर्ण विधाओं संस्मरण और रेखाचित्र को विशेष रूप से समृद्ध किया।

- बड़ी सीमा तक उनके संस्मरणों में रेखाचित्र के तथा रेखाचित्रों में संस्मरण के गुण भी पाए जाते हैं। इसीलिए इन्हें 'संस्मरणात्मक रेखाचित्र' कहना उचित है।
- महादेवी वर्मा का रेखाचित्र 'भाभी' बाल विवाह की कुप्रथा पर चोट करता है।

14 .5 शब्द संपदा

1. अभिशप्त	=	जिसे शाप दिया गया हो, शापित, शापग्रस्त।
2. आभासित	=	आलोकित, प्रकाशमान।
3. उपेक्षित	=	तिरस्कृत।
4. कौतूहल	=	जानने की इच्छा होना, उत्सुकता।
5. क्लांत	=	मुरझाया हुआ, दुखी, थका हुआ
6. जारज	=	अवैध, गैर-कानूनी, नाजायज।
7. तिक्त	=	तीता, चरपरा।
8. दंभ	=	मिथ्या अभिमान।
9. महीयसी	=	महिमाशाली स्त्री।
10. विडम्बना	=	असंगति।
11. विरक्ति	=	वैराग्य।

14 .6 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. महादेवी वर्मा के रेखाचित्र 'भाभी' का तात्विक विवेचन कीजिए।
2. भाभी की दयनीय जीवन-चर्या का वर्णन कीजिए।
3. 'उस घटना से बालिका प्रौढ़ हो गई थी और युवती वृद्धा।' इस कथन की पृष्ठभूमि का विवरण दीजिए।
4. महादेवी वर्मा के 'भाभी' रेखाचित्र के आधार पर भाभी के व्यक्तित्व की विशेषताएं बताइए।

5. 'भाभी'की करुण-कथा लिखने का उद्देश्य क्या रहा होगा? आज के समय में इसकी सार्थकता पर विचार कीजिए।

खंड (ब)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. 'भाभी' रेखाचित्र की बालिका की दृष्टि में रंगीन कपड़ों का जीवन में क्या महत्व है?
2. महादेवी वर्मा के गद्य की कुछ विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
3. 'भाभी का जीवन संघर्ष और सामाजिक उपेक्षा का आख्यान है।' विवेचना कीजिए ।
4. 'भाभी के अबला जीवन में दुख होने का कारण उनका अपने आपको भाग्य पर छोड़ देना भी है।' इस कथन पर विचार कीजिए।

खंड (स)

I सही विकल्प चुनिए

1. महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों में समाज के किस वर्ग का चित्र अधिक हुआ है? ( )
   (अ) अभिजात्य वर्ग (आ) पीड़ित नारी (इ) पुरुष वर्ग (ई) सामंत वर्ग
2. निम्नलिखित में से कौनसी पुस्तक रेखाचित्र नहीं है? ( )
   (अ) अतीत के चलचित्र (आ) स्मृति की रेखाएँ (इ) शृंखला की कड़ियाँ (ई) पथ के साथी
3. रेखाचित्र 'भाभी' में भाभी क्या नहीं है? ( )
   (अ) भाग्यवादी (आ) संघर्षशील (इ) निरुपाय (ई) सहनशील
4. रेखाचित्र 'भाभी' में निम्नलिखित गौण पात्र नहीं हैं। ( )
   (अ) भाभी (आ) भाभी की ननद (इ) भाभी के ससुर (ई) भाभी के पति

II रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए

1. महादेवी के .... उनके कवि रूप से कम महत्वपूर्ण नहीं है।
2. .... अनाथिनी भी थी और अभागी भी।
3. .... की दुर्दशा के लिए क्रूर पुरुष वर्ग उत्तरदायी है।
4. 'भाभी' रेखाचित्र पढ़कर अतीत फिर से .... होने लगता है।

III सुमेल कीजिए

i) भाभी	(क) खुली तलवार सी कठोर
ii) भाभी की सखी	(ख) हतबुद्धि
iii) भाभी के ससुर	(ग) अबोध अष्ट वर्षीय
iv) भाभी की ननद	(घ) दुर्बल पर सुकुमार बालिका जैसी स्त्री
v) भाभी के परिजन	

14.7 पठनीय पुस्तकें

1. अतीत के चलचित्र. महादेवी वर्मा.
2. महादेवी का गद्य. सूर्य प्रसाद दीक्षित.
3. महादेवी : चिंतन व कला. (सं) इन्द्रनाथ मदान.
4. महादेवी रचना संचयन. (सं) विश्वनाथ प्रसाद तिवारी.

इकाई 15 : संस्मरण : विधागत स्वरूप

इकाई की रूपरेखा

15.0 प्रस्तावना

15.1 उद्देश्य

15.2 मूल पाठ : संस्मरण : विधागत स्वरूप

- 15.2.1 संस्मरण : अवधारणा और अर्थ
- 15.2.2 संस्मरण की परिभाषा
- 15.2.3 संस्मरण और अन्य विधाएँ
- 15.2.4 संस्मरण और रेखाचित्र में अंतर
- 15.2.5 संस्मरण की प्रकृति
- 15.2.6 संस्मरण और ईमानदारी
- 15.2.7 प्रमुख संस्मरण लेखक

15.3 पाठ सार

15.4 पाठ की उपलब्धियां

15.5 शब्द संपदा

15.6 परीक्षार्थ प्रश्न

15.7 पठनीय पुस्तकें

15.0 प्रस्तावना

भारतेन्दु हरिश्चंद्र के समय से हिंदी नई चाल में ढली। इसके परिणाम स्वरूप जो साहित्य निर्माण हुआ उसके कारण हिंदी गद्य ने अपना एक निजी स्थान बना लिया था। स्वतन्त्रता के पूर्व से हिंदी गद्य में विभिन्न विधाओं में भी लेखन होने लगा। हिंदी के नाटक, उपन्यास, कहानी, निबंध, जीवनी, समालोचना, संस्मरण, रेखाचित्र आदि गद्य साहित्य के अंग हैं। संस्मरण और रेखाचित्र आदि नई विधाओं में निजी अनुभवों की प्रामाणिक और विश्वसनीय अभिव्यक्ति की जाती है। संस्मरण में लेखक का अपना जीवन होता है और चाहे उसका ऐतिहासिक महत्व हो या न हो परंतु वे भी हमारी साहित्यिक अनुभूतियों के अंग हैं। संवेदना के स्पर्श के कारण ये व्यक्तिगत अनुभूतियाँ भी साहित्य की सृजनात्मक विधाओं के रूप में प्रस्तुत होने लगीं है।

संस्मरण क्योंकि वैयक्तिक लेखन है इसलिए इसमें कोई प्रवृत्तिगत रुझान नहीं दिखाई देता। व्यापक अर्थ में सृष्टिमात्र के किसी अंश अथवा सम्पूर्ण स्वरूप से सम्बद्ध अपने अनुभव की प्रस्तुति या अभिव्यक्ति का नाम ही संस्मरण है। दूसरे शब्दों में संस्मरण स्मृति की सुगठित अभिव्यक्ति है। आत्मीयता इसका प्रधान गुण है और अनुभूति तत्व की प्रधानता होने के कारण इसकी उपादेयता असंदिग्ध है। कवि नरेश मेहता ने सही कहा है कि संस्मरण और अनुभूति इतने पैरेलल (समानान्तर) हैं कि साहित्य को स्व- अनुभूति से काटा नहीं जा सकता, जब वह वैयक्तिक होगा तो संस्मरण ही होगा और सार्वकालिक होकर वही मूल्यवान बन जाएगा। प्रत्येक लेखक और रचनाकार अपनी अभिव्यक्ति के लिए स्वतंत्र है। इसलिए संस्मरण का ऐतिहासिक अध्ययन नहीं हो सकता।

स्मृति के आधार पर किसी विषय पर अथवा किसी व्यक्ति पर लिखित आलेख संस्मरण कहलाता है। यात्रा साहित्य भी इसके अन्तर्गत आता है। संस्मरण को साहित्यिक निबन्ध की एक प्रवृत्ति भी माना जा सकता है। ऐसी रचनाओं को संस्मरणात्मक निबंध कहा जा सकता है। व्यापक रूप से संस्मरण आत्मचरित के अन्तर्गत लिया जा सकता है। किन्तु संस्मरण और आत्मचरित के दृष्टिकोण में मौलिक अन्तर है। आत्मचरित के लेखक का मुख्य उद्देश्य अपनी जीवनकथा का वर्णन करना होता है। इसमें कथा का प्रमुख पात्र स्वयं लेखक होता है। संस्मरण लेखक का दृष्टिकोण भिन्न रहता है। संस्मरण में लेखक जो कुछ स्वयं देखता है और स्वयं अनुभव करता है उसी का चित्रण करता है। लेखक की स्वयं की अनुभूतियाँ तथा संवेदनायें संस्मरण में अन्तर्निहित रहती हैं। इस दृष्टि से संस्मरण का लेखक निबन्धकार के अधिक निकट है। वह अपने चारों ओर के जीवन का वर्णन करता है। इतिहासकार के समान वह केवल यथातथ्य विवरण प्रस्तुत नहीं करता है।

15.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत आप -

- हिंदी गद्य के अंतर्गत संस्मरण के विकास को समझ सकेंगे।
- संस्मरण के विधागत स्वरूप का सामाजिक परिवर्तन के परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन कर सकेंगे।
- संस्मरण और अन्य विधाओं के अंतर को रेखांकित कर सकेंगे।
- संस्मरण के स्वरूप में आए हुए परिवर्तनों से परिचित हो सकेंगे।
- कुछ प्रमुख संस्मरणकारों और उनकी रचनाओं का ज्ञान प्राप्त करेंगे।

15.2 मूल पाठ : संस्मरण : विधागत स्वरूप

15.3.1 संस्मरण : अवधारणा और अर्थ

स्मृति के आधार पर किसी विषय पर अथवा किसी व्यक्ति पर लिखित आलेख संस्मरण (सम्यक स्मरण) कहलाता है। संस्मरण शब्द की व्युत्पत्ति सम+स्मृ+ल्युट (अण) से हुई है, जिसका अर्थ है सम्यक स्मरण। सम्यक का अर्थ है - आत्मीयतापूर्वक तथा अधिक गंभीरतापूर्वक। स्मरण शब्द में अधिक आत्मपरकता निहित है। यह विधा स्मृतियुक्त है इसलिए कई बार इसे हिंदी काव्य के स्मरण अलंकार से जोड़कर देखा जाता है। स्मृति पहचान ही नहीं देती बल्कि अतीत और वर्तमान के बीच पुल का काम भी करती है।

संस्मरण मूलतः आधुनिक युग की विधा है। इसे पश्चिम की देन माना जाता है। गद्य की यह विधा कभी जीवनी, कभी रेखाचित्र, कभी रिपोर्ताज और कभी निबंध मान ली जाती है, किन्तु इन सबमें सूक्ष्म अंतर है। संस्मरण लेखक व्यक्तिगत अनुभव को इस आत्मीयता के साथ प्रस्तुत करता है कि उसका चित्र पाठक के मन-मस्तिष्क पर अंकित होता चला जाता है। अनुभव काल्पनिक नहीं होता इसलिए इसमें सत्य-कथा जैसा आभास होता है। संस्मरण की सत्यात्मकता (ज्यों का त्यों प्रस्तुति) असंदिग्ध रहती है। संस्मरण चूंकि स्मृति के आधार पर लिखा जाता है, इसलिए इसे आत्मकथा और जीवनी साहित्य से जोड़कर देखा जाता है। लेखक जो कुछ देख सुनकर अनुभव करता है, संस्मरण में उसी की एक संवेदनात्मक अनुभूति होती है। इसमें लेखक के जीवन की कुछ अविस्मरणीय एवं उल्लेखनीय घटनाओं का ललित शैली में लेखा-जोखा होता है - विशिष्ट क्षणों की रोचक एवं कौतूहलपूर्ण अभिव्यक्ति प्रस्तुत की जाती है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि संस्मरण जीवनी-परक साहित्य का एक छोटा परंतु कौशलयुक्त मार्मिक तथा मनोरंजक रूप है।

15.2.2 संस्मरण की परिभाषा

संस्मरण की कुछ परिभाषाएँ निम्नवत हैं -

स्मृति-वर्णन के रूप में - 'आत्मकथा के रूप में लिखे गए स्मृति लेख, इसमें आत्मकथा की भांति लेखक के व्यक्तिगत जीवन का पूरा विवरण नहीं होता, बल्कि किसी घटना की चाहे लेखक का उसमें नाममात्र का संबंध हो, याद का विवरण होता है।' - पारिभाषिक शब्दकोश

"भावुक कलाकार जब अतीत की अनंत स्मृतियों में से कुछ रमणीय अनुभूतियों को अपनी कोमल कल्पना से अतिरंजित कर व्यंजनामूलक संकेत शैली में अपने उद्गार व्यक्त कर देता है तब उसे संस्मरण कहते हैं।" - डॉ गोविंद त्रिगुणायत

"संस्मरणों में केवल कुछ चुने हुए लोगों के जीवन की कुछ घटनाओं का वर्णन होता है। ये घटनाएँ वे ही होती हैं जिनसे लेखक प्रभावित होता है।" - डॉ सत्येन्द्र

"अनुभूति की कलात्मक अभिव्यक्ति कला के माध्यम से संस्मरण में होती है। संस्मरण यथार्थ होता है। इसमें संस्मरणकार के वे क्षण होते हैं जो उसने स्वयं जिये हैं। प्रभाव की एकता संस्मरण की विशेषता है।" - डॉ कृष्ण कुमार शर्मा

"तथ्यात्मक या इतिवृत्तात्मक पद्धति को छोड़कर किसी व्यक्ति की चारित्रिक विशेषताओं को प्रकट करने वाली रोचक घटनाओं या परिस्थितियों का वैयक्तिक संपर्क के आधार पर जिस रचना में लेखा जोखा प्रस्तुत किया जाता है वह संस्मरण होता है।" - डॉ पद्म सिंह शर्मा 'कमलेश'

अतीत की स्मृति, आत्मीय सम्बन्धों का लेखन, प्रामाणिकता, वैयक्तिकता, जीवनी के संक्षिप्त भाग का चित्रण, चित्रात्मकता, कथात्मकता, तटस्थता आदि संस्मरण की विशेषताएँ हैं।

बोध प्रश्न

- संस्मरण की परिभाषा प्रस्तुत कीजिए।
- संस्मरण की दो विशेषताएँ बताइए।

15.2.3 संस्मरण और अन्य विधाएँ

अरुण प्रकाश (सं. समकालीन साहित्य) के शब्दों में संस्मरण इतनी तरल विधा है कि अपने बारे में लिखो तो आत्मकथा लगे, दूसरों के बारे में लिखो तो रेखाचित्र या निबंध दिखे और जगहों, यात्राओं के बारे में लिखा जाए तो यात्रा वृत्तान्त। इसलिए इनके अंतर पर विचार कर लेना चाहिए। संस्मरण का कथा साहित्य, उपन्यास, जीवनी, रेखाचित्र, यात्रा साहित्य एवं आत्मकथा और जीवनी में प्रवाह बना रहता है क्योंकि इन साहित्यिक विधाओं में रचनाकार जिस भी विषयवस्तु को प्रस्तुत करना चाहता है उसमें अनायास ही संस्मरण का प्रवाह आ ही जाता है। अन्य विधाओं से तुलना करने से पहले यहाँ संस्मरण और इतिहास का अंतर समझ लेना ज़रूरी है। संस्मरण के लेखक के लिए यह बेहद ज़रूरी है कि लेखक ने उस व्यक्ति या वस्तु का साक्षात्कार किया हो, जिसका वह संस्मरण लिख रहा है। वह अपने समय के इतिहास को समेटता तो है, परंतु वह इतिहासकार की भाँति विवरण प्रस्तुत नहीं करता। इतिहासकार के वस्तुपरक दृष्टिकोण से संस्मरण के लेखक का दृष्टिकोण बिल्कुल अलग है। संस्मरण में जीवन के कुछ महत्वपूर्ण क्षणों या घटनाओं की स्मृति पर आधारित रोचक अभिव्यक्ति होती है। यथार्थ जीवन से संबंधित संक्षिप्त, रोचक, चित्रात्मक, भावुकतापूर्ण तथा लेखक के व्यक्तित्व के आभा से पूर्ण युक्त लिखित घटना संस्मरण कहलाती है।

संस्मरण और आत्मकथा / आत्मचरित

आत्मकथा में संस्मरण का समावेश होता है क्योंकि इसमें लेखक अपने आप का वृत्तान्त लिखकर प्रस्तुत करता है। आत्मकथा में अपनत्वपूर्ण लगाव और आत्मीयता का भाव होता है। इसलिए यह कह दिया जाता है कि आत्मकथा में संस्मरण के सभी अनिवार्य तत्व हैं और आत्मकथा और संस्मरण एक दूसरे से अभिन्न हैं। संस्मरण आत्मकथा का एक अंग भी हो सकता है और उसका लघु रूप भी। व्यापक रूप से संस्मरण आत्मचरित के अंतर्गत आ जाता है। परंतु दोनों के दृष्टिकोण में मौलिक अंतर है। आत्मचरित के लेखक का मुख्य उद्देश्य अपनी जीवन-कथा का वर्णन करना रहता है। शैली की दृष्टि से संस्मरण आत्मकथा के समान है, स्पष्टता, रोचकता, स्वाभाविकता आदि गुण दोनों में समान हैं। दोनों के लेखक ख्याति-प्राप्त होते हैं। उद्देश्य भी समान होता है। किन्तु आत्मकथा का लेखक अपनी बात अधिक करता है, संस्मरण लेखक दूसरों की बात अधिक करता है। इस प्रकार संस्मरण आत्मकथा का अंग बन कर आ सकता है, किन्तु ये एक दूसरे का स्थान नहीं ले सकते। आत्मनिष्ठता की दृष्टि से आत्मकथा में व्यक्ति प्रधान होता है, संस्मरण में घटना।

आत्मकथा में कथा का प्रमुख पात्र स्वयं लेखक होता है और अन्य इतिहास की घटनाओं तथा परिस्थितियों का केवल वही रूप उसमें आता है, जो उसके जीवन क्रम को प्रभावित संचालित या नियंत्रित करता है अथवा जो उससे प्रभावित होता है। इसके विपरीत संस्मरण का दृष्टिकोण अलग है। इसमें लेखक अपने समय के इतिहास को लिखना चाहता है। परंतु इतिहासकार के वस्तुपरक रूप से वह बिलकुल अलग है।

संस्मरण और निबंध

निबंध एक ऐसी सीमित गद्य रचना है जिसमें कार्य-कारण की शृंखला के साथ विचार निबद्ध(गुथे हुए) होते हैं और उन विचारों में व्यक्तित्व की छाप स्पष्ट होती है। इस परिभाषा से निबंध और संस्मरण एक ही प्रतीत होते हैं। वर्णनात्मक निबंध में संस्मरण आ जाता है। संस्मरण लेखक जो स्वयं देखता है, जिसका वह स्वयं अनुभव करता है उसी का वर्णन करता है। उसके वर्णन में उसकी अपनी अनुभूतियाँ, संवेदनाएं भी रहती हैं। इस दृष्टि से शैली में वह निबंधकार के समीप है। कभी कभी संस्मरण को निबंध की एक प्रवृत्ति माना जाता है। ऐसी रचनाओं को संस्मरणात्मक निबंध कहा जाता है जैसे बाबू गुलाब राय द्वारा लिखित पुस्तक 'मेरी असफलताएँ' उनके संस्मरणात्मक निबंधों का संग्रह है। किन्तु इनमें जो अंतर है वह यह है कि संस्मरण अतीत से जुड़ी किसी विशिष्ट घटना या व्यक्ति के प्रति शाब्दिक प्रतिक्रिया है। निबंध में कल्पना का समावेश भी होता है। निबंध में बुद्धि और तर्क की प्रधानता है, संस्मरण में हृदय और मन की।

संस्मरण और जीवनी

जीवनी में संस्मरण का प्रवाह उसके विषय को वास्तविकता प्रदान करता है। संस्मरण यदि आत्मकथा का अनिवार्य अंग है तो वह जीवनी का भी आवश्यक अंश है। संस्मरण लेखक वास्तव में अपने चतुर्दिक के जीवन का सर्जन करता है, सम्पूर्ण भावना और जीवन के साथ। इतिहासकार के समान वह विवरण प्रस्तुत करने वाला नहीं है। संस्मरण लेखक यदि अपने संबंध में लिखे तो उसकी रचना आत्मकथा के निकट होगी। यदि अन्य व्यक्तियों के विषय में लिखे तो जीवनी के निकट। इन दो प्रकार के संस्मरणों को अँग्रेजी में क्रमशः 'रेमिनिसेंसेज़' और 'मेम्वायर्स' कहते हैं।

संस्मरण और यात्रा साहित्य

यात्रा साहित्य भी एक प्रकार से संस्मरण साहित्य ही है। यात्री जो कुछ भ्रमण में देखता है या भोगता है वह दूसरों के लिए संस्मरण के रूप में ही तो प्रस्तुत करता है। कहना न होगा कि जीवन भी एक प्रकार की यात्रा ही तो है। यात्रा-वृत्त और संस्मरण की विधाओं को मिलाकर यात्रा-संस्मरण की नई परिकल्पना का एक उत्तम उदाहरण अज्ञेय की 'अरे यायावर, रहेगा याद?' और 'एक बूंद सहसा उछली' है।

संस्मरण और कहानी

कहानी और संस्मरण दोनों में आकार की संक्षिप्तता तो समान है, किन्तु कहानी में कल्पना और संस्मरण में सत्य-घटना असमान है। कहानी में तारतम्यता होती है, संस्मरण में स्फुट घटनाओं का संकलन होता है। संस्मरणात्मक कहानी भी हो सकती है किन्तु संस्मरण केवल अतीत की महत्वपूर्ण एवं मनोरंजक घटनाओं को रोचक ढंग से प्रस्तुत करने की ही एक कला है। संस्मरण का प्रवाह कहानी की अपेक्षा शिथिल होता है। कहानी में लेखक अपनी रंगीन कल्पना के ताने बुनकर विषय को बहुरंगा और रुचिकर बना देता है, जबकि संस्मरण में सत्य, यथार्थ और स्वाभाविकता के प्रति बहुत आग्रह रहता है। इस प्रकार कहानी और संस्मरण अलग-अलग दो विधाएँ हैं।

बोध प्रश्न

- संस्मरण और आत्मचरित में समानता और अंतर को स्पष्ट कीजिए।
- 'शैली में निबंध और संस्मरण एक से हो जाते हैं।' कैसे?
- यात्रा साहित्य और संस्मरण में समानता को रेखांकित कीजिए।
- संस्मरण को किस अवस्था में निबंध मान लिया जाता है?

15.2.4 संस्मरण और रेखाचित्र में अंतर

परस्पर घनिष्ठ संबंध होते हुए भी विषय और शैली की दृष्टि से संस्मरण और रेखाचित्र के विधागत स्वरूप में अंतर है। रेखाचित्र चारित्रिक चित्र होता है किन्तु संस्मरण केवल बाहरी एवं आंतरिक चरित्र का विश्लेषण और प्रस्तुतिकरण करता है। संस्मरण और रेखाचित्र में बहुत ही सूक्ष्म अंतर है। यदि लेखक व्यक्तित्व के चित्रण तक ही स्मृति को सीमित रखता है तो वह रचना रेखाचित्र कहलाएगी। यदि लेखक स्मृतियों के प्रसंग को उभारने का कार्य करता है तो वह रचना संस्मरण कहलाएगी। संस्मरण में कथा का ताना बाना सच्ची घटनाओं से बनता है। संस्मरण अतीत की किसी घटना का शब्दांकन है। बहुत समय तक रिपोर्ताज, रेखाचित्र तथा जीवनी को संस्मरण ही समझा जाता था। उदाहरण के लिए महादेवी वर्मा की पुस्तक 'स्मृति की रेखाएँ' को 'स्मृति' शब्द के आधार पर संस्मरण कहा जा सकता है, तो 'रेखाएँ' के आधार पर इसे रेखाचित्र घोषित किया जा सकता है।

संस्मरण और रेखाचित्र के अंतर को निम्नवत प्रस्तुत किया जा सकता है-

1. संस्मरण केवल अतीत का होता है, जबकि रेखाचित्र वर्तमान का भी हो सकता है और समर्थ लेखक भविष्य का चित्र भी प्रस्तुत कर सकता है।
2. रेखाचित्र लिखते समय लेखक अतिरंजना का आश्रय भी ले सकता है, जबकि संस्मरण में इसका अवकाश नहीं होता।
3. रेखाचित्र बाहरी विशेषताओं का वर्णन करता है किन्तु संस्मरण-लेखक की दृष्टि आंतरिक विशेषताओं पर केन्द्रित रहती है।
4. रेखाचित्र कल्पनाप्रधान होता है, संस्मरण सत्यानुमोदित।
5. रेखाचित्र में एक प्रकार की तटस्थता का भाव होता है जबकि संस्मरण में नहीं।

बोध प्रश्न

- 'संस्मरण और रेखाचित्र में सूक्ष्म अंतर है।' स्पष्ट कीजिए।
- संस्मरण के दो लक्षण लिखिए।

महादेवी वर्मा ने अपनी एक पुस्तक में आत्मकथ्य के बहाने संस्मरण के विषय में निम्नलिखित वक्तव्य दिया है-

'संस्मरण' को मैं रेखा चित्र से भिन्न साहित्यिक विधा मानती हूँ। मेरे विचार में यह अन्तर अधिक न होने पर भी इतना अवश्य है कि हम दोनों को पहचान सकें। 'रेखाचित्र' एक बार देखे हुए व्यक्ति का भी हो सकता है जिसमें व्यक्तित्व की क्षणिक झलक मात्र मिल सकती है।

इसके अतिरिक्त इसमें लेखक तटस्थ भी रह सकेंगे। यह प्रकरण हमारी स्मृति में खो भी सकता है, परन्तु 'संस्मरण' हमारी स्थायी स्मृति से सम्बन्ध रखने के कारण संस्मरण के पात्र से हमारे घनिष्ठ परिचय की अपेक्षा रखता है, जिसमें हमारी अनुभूति के क्षणों का योगदान भी रहता है। इसी कारण स्मृति में ऐसे क्षणों का प्रत्यावर्तन भी सहज हो जाता है और हमारा आत्मकथ्य भी आ जाता है। यदि हम किसी से प्रगाढ़ और आत्मीय परिचय रखते हैं, तो उस व्यक्ति को अनेक मनोवृत्तियों तथा उनके अनुसार आचरण करते देखना भी सहज हो जाता है और अपनी प्रतिक्रिया की स्मृति रखना भी स्वाभाविक हो जाता है। इन्हीं क्षणों का सुखद या दुःखद प्रत्यावर्तन 'संस्मरण' कहा जा सकता है।

बोध प्रश्न

- महादेवी वर्मा के अनुसार संस्मरण और रेखाचित्र में क्या अंतर है?
- महादेवी वर्मा ने संस्मरण विधा के स्वरूप को किस प्रकार समझाया है?

15.2.5 संस्मरण की प्रकृति

हिंदी में संस्मरण साहित्य लगभग 100 वर्ष का है और इस दृष्टि से यह गद्य साहित्य की नवीनतम उपलब्धियों में से एक है। जीवन का यथार्थ चित्रण होने से साहित्य में इसके कई रूप मिलते हैं जैसे, लेखक के आधार पर अथवा वर्ण्य विषय के आधार पर।

कथानायक के विविध क्षेत्रों से संबन्धित होने के आधार पर भी संस्मरणों के भेद किए जा सकते हैं जैसे, आत्म संस्मरण। कई बार कोई लेखक खुद को केंद्र में रखकर अपने संस्मरण लिखता है, तो उन्हें आत्म संस्मरण कहा जा सकता है। आत्म संस्मरण आत्मकथा के काफी नजदीक होता है। बाबू गुलाब राय कृत 'मेरी असफलताएँ' इसी श्रेणी का संस्मरण है। समाज के अनेक वर्गों से संबन्धित विशिष्ट व्यक्ति जैसे राजनेता, समाज सुधारक और अन्य भी संस्मरण लिखते रहे हैं।

यात्रा संबंधी संस्मरण भी लिखे जाते हैं। मानवीय गुणों से सम्पन्न पशु पक्षियों पर आधारित संस्मरण लिखकर महादेवी वर्मा ने ध्यान आकृष्ट किया था।

हास्य व्यंग्यात्मक संस्मरण में लेखक प्रतीक योजना और कल्पना का सहारा लेकर घटना और व्यक्ति को इस प्रकार प्रस्तुत करता है कि जिससे व्यंग्य व्यंजित हो जाए। राम वृक्ष बेनीपुरी का 'गेहूं और गुलाब' इसी श्रेणी में रखा जा सकता है।

शैली के आधार पर भी संस्मरणों को देखा जा सकता है जैसे डायरी शैली, पत्रात्मक

शैली, आत्मकथात्मक शैली, निबंधात्मक शैली आदि।

बोध प्रश्न

- आत्म संस्मरण से आप क्या समझते हैं।

15.2.6 संस्मरण और ईमानदारी

कहा जाता है कि संस्मरण और आत्मकथा दो ऐसी एक दूसरे से मिलती जुलती विधाएँ हैं जिनमें लेखक की सत्यनिष्ठा और ईमानदारी के बिना उनकी रचना की विश्वनीयता पर प्रश्न खड़े हो जाते हैं। संस्मरण लेखक जिन लोगों पर अपने संस्मरण लिख रहा होता है वे प्रायः जीवित नहीं होते। इसलिए उनकी प्रामाणिकता का ज्ञान लेखक को ही होता है। पाठक उन पर विश्वास करके पढ़ता है और यदि उसे लगे कि कुछ बेईमानी हुई है तो वह ठगा सा अनुभव करेगा। पाब्लो नेरुदा के संस्मरण 'मेम्वायर्स' में नेरुदा की स्पष्टता और 'कुल्ली भाट' तथा 'बिल्लेसुर बकरिहा' में निराला की आत्मस्वीकृति में लेखकीय ईमानदारी पाठक को पसंद आती है। संस्मरण को दूसरों की निंदा या उनके चरित्र हनन का साधन बनाकर प्रस्तुत करने वाले लेखक भी चाहे किसी को बदनाम करना चाहें, पर ऐसा होता नहीं। उनकी ही विश्वसनीयता समाप्त हो जाती है। संस्मरण लेखक को अपने प्रति अतिशय उदार और वर्णित लोगों के प्रति अनुदार और अत्यधिक आलोचनात्मक भी नहीं होना चाहिए।

हिंदी संस्मरण विधा में लेखन कहानी, उपन्यास, कविता आदि के समान अभी बहुत आगे नहीं पहुँच पाया है क्योंकि अभी शिवरानी देवी की संस्मरणात्मक कृति 'प्रेमचंद घर में' जैसी बेबाक और ईमानदार पुस्तकें कम हैं। संस्मरण एक व्यक्ति का लघु इतिहास और इसी बहाने मूल्यांकन भी है, इसलिए इसके लेखकों और पाठकों को कुछ अधिक गंभीरता दिखानी पड़ती है। परनिंदा और आत्मप्रदर्शन दो ऐसे अवगुण हैं जिनसे संस्मरणकार को बचना चाहिए और सत्यनिष्ठा तथा ईमानदारी दो ऐसे गुण हैं जो संस्मरण को चिरस्मरणीय बनाते हैं। विष्णु प्रभाकर ने इसी को लक्ष्य करते हुए एक बार कहा था कि पनघट की डगर से भी अधिक कठिन वह डगर है जो आपको उस व्यक्ति के पास पहुंचाती है जिसके बारे में आप लिखना चाहते हैं। संस्मरण लेखन भी कठिन है और उसके पाठक भी विरल हैं।

बोध प्रश्न

- संस्मरण को चिरस्मरणीय बनानेवाले दो गुण कौन से हैं?
- संस्मरण लेखक को किन अवगुणों से बचना चाहिए?

15.2.7 प्रमुख संस्मरण लेखक

हिंदी साहित्य में संस्मरण विधा का प्रचलन आधुनिक काल में पश्चिमी प्रभाव से हुआ।

संस्मरण आधुनिक गद्य विधा है। हिंदी में संस्मरण साहित्य का प्रारम्भ द्विवेदी युग से होता है। 'सरस्वती' पत्रिका में कुछ संस्मरण प्रकाशित हुए। हिंदी में पहला उल्लेखनीय संस्मरण 1907 में बाल मुकुन्द गुप्त द्वारा प्रताप नारायण मिश्र पर लिखा गया था, उसके कुछ दिन पश्चात गुप्त जी द्वारा लिखित 'हरिऔध जी के संस्मरण' पुस्तक आई। सन 1928 में राम दास गौड़ ने श्रीधर पाठक और देवीप्रसाद 'पूर्ण' जैसे साहित्यकारों के संस्मरण लिखे। हिंदी के प्रारंभिक संस्मरण लेखकों में पद्म सिंह शर्मा प्रमुख हैं। बनारसी दास चतुर्वेदी (संस्मरण, हमारे अपराध), महादेवी वर्मा (अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएँ), रामवृक्ष बेनीपुरी (माटी की मूरतें, ज़ंजीरें और दीवारें) आदि प्रमुख संस्मरण लेखक हैं। देवेन्द्र सत्यार्थी ने देश भर के लोकगीतों का संग्रह करते हुए बड़े सुंदर संस्मरण भी लिखे। जैसे - क्या गोरी क्या सांवरी, रेखाएँ बोल उठीं। भदंत आनंद कौसल्यायन के संस्मरण 'जो न भूल सका'। संस्मरण लेखन के क्षेत्र में कुछ अन्य नाम हैं - उपेंद्रनाथ 'अश्क' (मंटो मेरा दुश्मन), यशपाल (सिंहावलोकन), जैनेन्द्र कुमार (ये और वे), शिवरानी प्रेमचंद (प्रेमचंद : घर में), मोहनलाल महतो 'वियोगी', काका कालेलकर, विष्णु प्रभाकर, शांतिप्रिय द्विवेदी तथा प्रभाकर माचवे।

बोध प्रश्न

- प्रताप नारायण मिश्र ने किस साहित्यकार पर संस्मरण लिखा है?
- हिंदी के चार प्रमुख संस्मरण लेखकों के नाम लिखिए।

संस्मरण आज बहुतायत में लिखे जा रहे हैं। डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी द्वारा नामवर सिंह पर लिखित संस्मरण 'हक अदा न हुआ' ने इस विधा को नई ताजगी से भर दिया, और इससे प्रभावित होकर कई नए और पुराने लेखक इस ओर मुड़े। वर्तमान समय के संस्मरण लेखकों में काशीनाथ सिंह, कांतिकुमार जैन, राजेंद्र यादव, रवीन्द्र कालिया, ममता कालिया और अखिलेश का नाम ले सकते हैं। जीवनियाँ और संस्मरण लिखने में आचार्य शिवपूजन सहाय का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। इनके लिखे संस्मरण चर्चित व्यक्ति को जीवंत रूप में पाठक के सम्मुख प्रस्तुत कर देते हैं। जीवनियाँ भी मनोरंजक और रोचक शैली में हैं। उनके संस्मरण और जीवनियों को देखकर विस्मय होता है कि तीन सौ से अधिक व्यक्तियों के विषय में लिखना कैसे संभव हो पाया! ये जीवनियाँ पौराणिक, ऐतिहासिक और वर्तमान के विशिष्ट व्यक्तियों की हैं और संस्मरण तो आप एक दूसरी इकाई में पढ़ ही रहे हैं।

बोध प्रश्न

- आचार्य शिवपूजन सहाय के योगदान पर दो वाक्य लिखिए।

15.3 पाठ सार

वास्तव में, साहित्य रचना और सर्जनात्मक लेखन में संस्मरण एक प्रमुख तत्व के रूप में विद्यमान रहता है। लेकिन आधुनिक युग में इसे स्वतंत्र विधा के रूप में मान्यता प्राप्त हुई। इस प्रकार इस विधा को नई से नई और पुरानी से पुरानी दोनों माना जा सकता है। इसका आरंभिक रूप संस्कृत साहित्य की आख्यायिकाओं में भी देखा जा सकता है और इसे पश्चिम से आयातित नई विधा भी कहा जा सकता है। यह निर्विवाद है कि आधुक गद्य की प्रमुख विधा के रूप में इसका अस्तित्व सर्वज्ञात है। संस्मरण यथार्थ जीवन से सम्बद्ध, संक्षिप्त, रोचक, चित्ताकर्षक, भावुकतापूर्ण, लेखक के व्यक्तित्व की आभा से युक्त, चरित्र की गरिमा से मंडित, सांकेतिक एवं प्रभावपूर्ण ढंग से लिखित अविस्मरणीय घटना होने से साहित्य की एक स्वतंत्र विधा है। इसे जीवनी का दूसरा रूप भी कहा जा सकता है। जिस प्रकार आत्मकथा में लेखक स्वयं अपने जीवन-वृत्तान्त को लिखता है, उसी प्रकार संस्मरण-लेखक दूसरों के साथ बिताए गए उल्लेखनीय पलों को लिपिबद्ध करके प्रस्तुत करता है। आत्मकथा और जीवनी दोनों में सम्पूर्ण जीवन का विवरण प्रस्तुत किया जाता है, परंतु संस्मरण में सम्पूर्ण जीवन के कुछ विशिष्ट अंशों पर प्रकाश डाला जाता है। संस्मरण में उन्ही घटनाओं का उल्लेख होता है जिनका लेखक के जीवन से कोई संबंध होता है।

यह कहना गलत न होगा कि संस्मरण एक हद तक आत्मचरित ही होता है। लेकिन इन दोनों के प्रस्तुतीकरण का दृष्टिकोण इन्हें एक-दूसरे से अलग करता है। डॉ. रघुवंश ने माना है कि आत्मचरित के लेखक का मुख्य उद्देश्य अपनी जीवनकथा का वर्णन करना रहता है। उसमें कथा का प्रमुख पात्र लेखक स्वयं होता है और अन्य इतिहास की घटनाओं तथा परिस्थितियों का केवल वही रूप उसमें आता है जो उसके जीवन क्रम को प्रभावित, संचालित या नियंत्रित करता है अथवा जो उससे प्रभावित होता है। इसके विपरीत संस्मरण का दृष्टिकोण अलग है। संस्मरण में लेखक अपने समय के इतिहास को लिखना चाहता है। परंतु इतिहासकार के वस्तुपरक रूप से वह बिलकुल अलग है। संस्मरण लेखक जो स्वयं देखता है, जिसका वह स्वयं अनुभव करता है, उसी का वर्णन करता है। उसके वर्णन में उसकी अपनी अनुभूतियाँ और संवेदनाएँ भी रहती हैं। वह वास्तव में अपने चारों तरफ के जीवन का सर्जन करता है, संपूर्ण भावना और जीवन के साथ। (द्रष्टव्य : हिंदी साहित्यकोश, भाग 1, पृष्ठ 870)।

उल्लेखनीय है कि हिंदी में पहले से चला आ रहा एक अलंकार है - स्मरण अलंकार। परंतु वह संस्मरण से भिन्न है। आधुनिक युग में संस्मरण हिंदी गद्य साहित्य की स्वतंत्र विधा बनकर आगे आया है। इसकी अपनी अलग विशेषताएँ हैं। संस्मरण और रेखाचित्र एक से प्रतीत होते हैं

किन्तु इनमें अंतर है। रेखाचित्र चारित्रिक और आंगिक शब्द चित्र है, जबकि संस्मरण केवल चित्र न होकर चरित्र का दर्पण भी होता है। इसमें लेखक सम्पूर्ण परिस्थिति का सद्भावपूर्वक वर्णन करता है। इसमें विचार भी है, स्मरण भी और साथ ही किसी विशिष्ट घटना का प्रभावपूर्ण विवरण भी। इसे लेखक स्मृति के आधार पर प्रस्तुत करता है और इसकी सत्यता का आधार वही होता है।

संस्मरण और जीवनी में भी बड़ा साम्य है क्योंकि दोनों ही अतीत या बीत गए जीवन को यथार्थ रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास करते हैं। किन्तु दोनों ही अपनी तरह से यह कार्य करते हैं। संस्मरण लेखक पहले साहित्यकार होता है, और इतिहासकार बाद में। उसमें कलाकार के भावमय चित्रों की प्रधानता होती है। निबंध की तुलना में संस्मरण जीवन की किसी घटना, व्यक्ति, वस्तु के प्रति लेखक की भावात्मक प्रतिक्रिया का प्रकाशन होता है। संस्मरण और कहानी में यह अंतर है कि कहानी एक निश्चित वैधानिक संगठन का अनुसरण करती है किन्तु संस्मरण में इस प्रकार का कोई नियंत्रण नहीं होता। संक्षेप में संस्मरण की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं -

1. संस्मरण लेखक के जीवन के अनुभूत सत्यों पर आधारित होता है।
2. संस्मरण में किसी स्मरणीय व्यक्ति, पशु-पक्षी, वस्तु, दृश्य या घटना का भावनात्मक एवं कथात्मक वर्णन होता है जिससे उसमें कहानी का गुण दिखाई पड़ने लगता है।
3. संस्मरण में लेखक वर्ण्य-वस्तु के साथ-साथ अपने विषय में या अपनी मनोदशा और अपने ऊपर पड़े प्रभाव का भी वर्णन करता है।
4. संस्मरण में संस्मरणीय व्यक्ति या वस्तु का स्वरूप-वर्णन या चित्रांकन भी होता है, किन्तु वह चित्रांकन रेखाचित्र से भिन्न कोटि का होता है।

15.4 पाठ की उपलब्धियां

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष उपलब्ध होते हैं -

1. हिंदी गद्य के अंतर्गत संस्मरण विधा का विकास आधुनिक युग में हुआ।
2. हिंदी का संस्मरण साहित्य कई प्रकार का है। जैसे, लेखकों के आत्मसंस्मरण, स्मरणीय व्यक्ति, वस्तु, और स्थान के बारे में संस्मरण तथा यात्रा संस्मरण।
3. संस्मरण मूलतः स्मृति आधारित विधा है। इसमें कल्पना के लिए गुंजाइश नहीं होती। इसलिए यह कहानी, उपन्यास और निबंध जैसी कल्पना आधारित विधाओं से भिन्न है।

4. संस्मरण बड़ी हद तक आत्मकथा, रेखाचित्र, जीवनी और यात्रावृत्त के नजदीक है क्योंकि ये विधाएँ भी स्मृति पर आधारित हैं।

15.5 शब्द संपदा

1. अतिरंजना	=	बढ़ा चढ़ा कर कही गई बात
2. अनुभूति	=	अनुभव से प्राप्त
3. असंदिग्ध	=	निश्चय ही, पक्का
4. आत्मीय	=	आपसी प्रेमपूर्ण संबंध
5. इतिवृत्तात्मकता	=	वस्तु वर्णन या आख्यान की प्रधानता
6. तटस्थ	=	निरपेक्ष, निष्पक्ष, गुटबंदी से अलग
7. प्रगाढ़	=	गहरा
8. प्रत्यावर्तन	=	लौट कर आना, वापसी, बहाली
9. मनोवृत्ति	=	आदत
10. वस्तुपरक	=	वस्तु पर आधारित, ऑबजेक्टिव, वास्तविक
11. संवेदना	=	मन से अनुभव की गई

15.6 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. संस्मरण विधा की परिभाषा देते हुए उसके विधागत स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।

2. संस्मरण और रेखाचित्र के अंतर को उदाहरण सहित बताइए।

3. 'संस्मरण' विधा का परिचय देते हुए उसकी कुछ विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

4. संस्मरण की प्रकृति और स्वरूप को स्पष्ट करते हुए उसकी सीमा निर्धारित कीजिए।

5. संस्मरण लेखक के गुण- अवगुणों पर सारगर्भित विश्लेषण प्रस्तुत कीजिए।

खंड (ब)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. आत्मकथा और जीवनी से संस्मरण का अंतर स्पष्ट कीजिये।

2. हिंदी में संस्मरण विधा के विकास पर उदाहरण सहित चर्चा कीजिए

3. 'संस्मरण स्मृति पर आधारित है' व्याख्या कीजिए।

4. महादेवी वर्मा के 'संस्मरण' विधा पर प्रकट किए गए विचारों की तार्किक समीक्षा कीजिए।

खंड (स)

I सही विकल्प चुनिए

1. संस्मरण क्या नहीं है? ( )

    i) वैयक्तिक लेखन ii) ऐतिहासिक अध्ययन

    iii) स्मृति की अभिव्यक्ति iv) साहित्यिक विधा

2. संस्मरण क्या है? ( )

    i) ललित निबंध ii) जीवन चरित्र

    iii) कौतूहलपूर्ण इतिहास iv) अतीत का आत्मीयतापूर्ण वर्णन

3. हिंदी में इस अलंकार से संस्मरण विधा को जोड़ा जाता है। ( )

    i) यमक अलंकार ii) स्मरण अलंकार

    iii) संदेह अलंकार iv) श्लेष अलंकार

4. संस्मरण के प्रमुख शैली रूप हैं – ( )

    i) डायरी शैली ii) पत्रात्मक शैली

    iii) आत्मकथात्मक शैली iv) ये सभी शैली रूप

II रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए

1. संस्मरण में …………….अधिक होती है, रेखाचित्र में नहीं।

2. संस्मरण का संबंध .... काल से हैं, रेखाचित्र किसी भी काल का हो सकता है।

3. संस्मरण प्रायः किसी .... व्यक्ति का लिखा जाता है, रेखाचित्र किसी भी व्यक्ति का हो सकता है।

III सुमेल कीजिए

i) संस्मरण	क) कल्पनाप्रधान
ii) रेखाचित्र	ख) अतीत की आत्मीयतापूर्ण प्रस्तुति
iii) रामवृक्ष बेनीपुरी	ग) अतीत के चलचित्र
iv) महादेवी वर्मा	घ) माटी की मूरतें

15.7 पठनीय पुस्तकें

1. हिंदी साहित्य कोश. (सं) धीरेन्द्र वर्मा.

2. हिंदी भाषा और साहित्य.परमानंद श्रीवास्तव.

3. हिंदी गद्य : विन्यास और विकास. रामस्वरूप चतुर्वेदी.

इकाई 16 : त्यागमूर्ति निराला (शिवपूजन सहाय) : एक विश्लेषण

इकाई की रूपरेखा

16.0 प्रस्तावना

16.1 उद्देश्य

16.2 मूल पाठ : त्यागमूर्ति निराला (शिवपूजन सहाय) : एक विश्लेषण

16.2.1 शिवपूजन सहाय : व्यक्तित्व और कृतित्व

16.2.2 'त्यागमूर्ति निराला' संस्मरण का परिचय

16.2.3 'त्यागमूर्ति निराला' संस्मरण का विश्लेषण

16.3 पाठ सार

16.4 पाठ की उपलब्धियाँ

16.5 शब्द संपदा

16.6 परीक्षार्थ प्रश्न

16.7 पठनीय पुस्तकें

16.0 प्रस्तावना

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की कवि-प्रतिभा को सबसे पहले पहचानने वालों में आचार्य शिवपूजन सहाय (1893-1963) महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने निराला जी की प्रतिभा को ही नहीं पहचाना था, बल्कि उनके जीते-जी उन्हें महाकवि के रूप में प्रतिष्ठित भी किया। यही कारण है कि डॉ. रामविलास शर्मा ने 'निराला की साहित्य साधना' नामक पुस्तक शिवपूजन जी को समर्पित की थी। आज जो हिंदी साहित्य लिखा और पढ़ा जा रहा है, उसकी आधारशिला का निर्माण करने वालों में आचार्य शिवपूजन सहाय जैसे साहित्यकारों का महत्वपूर्ण योगदान है। प्रेमचंद के उपन्यास 'रंगभूमि' के समय से ही 'देहाती दुनिया' जैसा आंचलिक उपन्यास लिखने वाले शिवपूजन जी ने हिंदी में आंचलिकता की शुरूआत की, जो बाद में फणीश्वरनाथ रेणु द्वारा पल्लवित हुई। हिंदी नवजागरण के वाहक आचार्य शिवपूजन सहाय एक उत्कृष्ट कहानीकार, उपन्यासकार, हिंदी सेवी, प्रखर पत्रकार और महान स्वतन्त्रता सेनानी थे। महाप्राण निराला के लिए वे हिंदी भूषण थे और बच्चन जी के लिए साहित्यिक पिता और साहित्य निर्माता। रामवृक्ष

बेनीपुरी के लिए वे साहित्यिक अभिभावक थे। जीवनियाँ और संस्मरण लिखने में शिवपूजन बाबू सिद्धहस्त थे। इनके लिखे संस्मरण चर्चित व्यक्ति को जीवंत रूप में पाठक के सम्मुख प्रस्तुत कर देते हैं। जीवनियाँ भी मनोरंजक और रोचक शैली में हैं। संस्मरण और जीवनियों को देखकर विस्मय होता है कि तीन सौ से अधिक व्यक्तियों के विषय में लिखना कैसे संभव हो पाया! ये जीवनियाँ पौराणिक, ऐतिहासिक और वर्तमान के विशिष्ट व्यक्तियों की हैं। इस इकाई में आप उनके लिखे संस्मरण 'त्यागमूर्ति निराला' का अध्ययन करेंगे।

16.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत आप-

- संस्मरण-लेखक आचार्य शिवपूजन सहाय के व्यक्तित्व से परिचित हो सकेंगे।
- हिंदी साहित्य में आचार्य शिवपूजन सहाय के महत्व को समझ सकेंगे।
- हिंदी के यशस्वी कवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के जीवन पर आधारित एक संस्मरण का बोध करेंगे।
- निराला की दानशीलता, त्याग और निर्धनों के प्रति निश्छल प्रेम को जान सकेंगे।
- निराला की त्यागभावना के कुछ उदाहरणों के द्वारा उनके चरित्र की विशेषताओं से परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- उनके इस व्यवहार पर लोक मत को जानकर उसका विवेचन कर सकेंगे।
- संस्मरण विधा के रूप में इस पाठ की रोचकता और पठनीयता पर विचार व्यक्त कर सकेंगे।

16.2 मूल पाठ : त्यागमूर्ति निराला (शिवपूजन सहाय) : एक विश्लेषण

शिवपूजन सहाय द्वारा लिखित संस्मरण 'त्यागमूर्ति निराला' हिंदी के प्रमुख छायावादी कवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' (1896-1961) के बारे में है। इसमें उस समय का वर्णन है जब वे 'मतवाला' नामक साहित्यिक पत्र के सम्पादन से जुड़े थे और अपने स्वभाव के अनुसार अपनी सारी कमाई गरीब लोगों पर लुटा देते थे। उनकी इस दानशीलता और त्यागवृत्ति के कारण ही उन्हें 'त्यागमूर्ति' कहा गया है, 'महाप्राण' तो वे हैं ही।

16.2.1 शिवपूजन सहाय : व्यक्तित्व और कृतित्व

शिवपूजन सहाय का जन्म अगस्त 1893 में शाहाबाद (बिहार) में हुआ। उनके बचपन का नाम भोलानाथ था। उनकी शिक्षा-दीक्षा आरा (बिहार) और कोलकाता में हुई। उन्होंने बनारस की अदालत में नकल नवीस की नौकरी की। बाद में वे हिंदी अध्यापक बन गए। यह वह समय था जब भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए महात्मा गांधी के नेतृत्व में असहयोग आंदोलन चल रहा था। शिवपूजन सहाय ने इस आंदोलन के संपर्क में आने पर सरकारी नौकरी से इस्तीफा दे दिया। इसके बाद उन्होंने आजीविका के लिए पत्रकारिता को चुना। आगे चलकर उन्होंने कई प्रतिष्ठित पत्रिकाओं का सम्पादन किया तथा हिंदी जगत में अप्रतिम लोकप्रियता और सम्मान अर्जित किया। 1923 में वे कोलकाता में 'मतवाला' के सम्पादन से जुड़े। 1924 में उन्हें 'माधुरी' के संपादकीय विभाग में शामिल होने के लिए लखनऊ जाना पड़ा। वहाँ उन्हें कथासम्राट प्रेमचंद के साथ काम करने का मौका मिला। यही नहीं उन्होंने प्रेमचंद के उपन्यास 'रंगभूमि' और कुछ कहानियों का सम्पादन भी किया। 1926 से 1933 तक काशी में प्रवास और पत्रकारिता तथा लेखन में व्यस्त रहे। 1931 में कुछ अवधि के लिए उन्होंने भागलपुर के पास सुल्तानगंज से निकलने वाली पत्रिका 'गंगा' का सम्पादन किया। 1932 में वे वाराणसी आ गए, यहाँ उन्हें 'जगतारण' को संपादित करने के लिए नियुक्त किया गया। जगतारण प्रसिद्ध छायावादी साहित्यकार जयशंकर प्रसाद और उनकी मित्र मंडली द्वारा प्रकाशित एक पाक्षिक था।

1934 से 1939 तक पुस्तक भंडार, लहेरिया सराय में सम्पादन-कार्य के बाद 1939 से 1949 तक राजेंद्र कॉलेज, छपरा में हिंदी के प्राध्यापक के रूप में कार्य किया। 1950 से 1959 तक पटना में बिहार राष्ट्रभाषा परिषद के निदेशक रहे। उन्हें साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में सन 1960 में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था। 1962 में भागलपुर विश्वविद्यालय ने उन्हें डीलिट की मानद उपाधि प्रदान की। आचार्य शिवपूजन सहाय का निधन 21 जनवरी, 1963 को पटना में हुआ।

बोध प्रश्न

- निराला को 'त्यागमूर्ति' क्यों कहा गया है?
- शिवपूजन सहाय किस-किस पत्रिका के संपादक रहे?

आचार्य शिवपूजन सहाय को हिंदी के प्रसिद्ध उपन्यासकार, कहानीकार, सम्पादक और पत्रकार के रूप में ख्याति प्राप्त है। आपको यह जानकारी रोचक प्रतीत होगी कि हिंदी में साहित्यकारों की सारस्वत साधना से कई परंपराएँ चली हैं। इनमें सबसे लोकप्रिय और महत्वपूर्ण है- आचार्य परंपरा। यहाँ आचार्य का अभिप्राय किसी विश्वविद्यालय के प्रोफेसर से

नहीं है, बल्कि हिंदी साहित्यकारों को दी गई उस उपाधि से है जो उन्हें उनकी साहित्य सेवा के आधार पर व्यापक हिंदी जगत द्वारा दी जाती थीं। शिवपूजन सहाय हिंदी के ऐसे ही प्रतिष्ठित और लोकप्रिय साहित्यकार हैं जिन्हें हिंदी जगत ने 'आचार्य' की प्रतिष्ठा प्रदान की। क्योंकि उन्होंने संपादक के रूप में हिंदी के अनेक साहित्यकारों की रचनाओं के परिमार्जन का महत कार्य किया।

इनके लिखे हुए प्रारंभिक लेख 'लक्ष्मी', 'मनोरंजन' तथा 'पाटलीपुत्र' आदि पत्रिकाओं में प्रकाशित होते थे। उन्होंने 1934 ई. में 'लहेरिया सराय' (दरभंगा) जाकर मासिक पत्र 'बालक' का सम्पादन किया। उनकी प्रमुख रचनाएं हैं -

वे दिन वे लोग (1965), बिम्ब-प्रतिबिम्ब (1967), मेरा जीवन (1985), स्मृतिशेष (1994), हिंदी भाषा और साहित्य (1996), ग्राम सुधार (2007), देहाती दुनिया (1926), विभूति (1935), शिवपूजन रचनावली (4 खंड 1956- 59), शिवपूजन सहाय साहित्य समग्र (10 खंड 2011)।

हिंदी गद्य साहित्य में आचार्य शिवपूजन सहाय का स्थान अतिविशिष्ट है। उनकी भाषा बड़ी सहज है। उन्होंने उर्दू के शब्दों का प्रयोग भी धड्डले से किया है। साथ ही प्रचलित मुहावरों के संतुलित उपयोग द्वारा लोक रुचि का स्पर्श करने की चेष्टा की है। उनके संस्मरणों की भाषा-शैली अनेक स्थलों पर काव्यात्मक भी हो जाती है। अलंकार प्रधान, अनुप्रास युक्त भाषा के सहारे वे गद्य में पद्य की सी छटा लाने में भी सफल हुए हैं। भाषा के इस पद्यात्मक स्वरूप के बावजूद उनके गद्य लेखन में गंभीरता का अभाव नहीं है। शिवपूजन सहाय की गद्यशैली ओज गुण सम्पन्न है। उसमें बड़ी हद तक वक्तृत्व कला की विशेषताएँ भी देखी जा सकती हैं।

बोध प्रश्न

- शिवपूजन सहाय के प्रारंभिक लेख किन पत्रिकाओं में प्रकाशित होते थे?
- शिवपूजन सहाय की प्रमुख रचनाओं के नाम बताइए।
- शिवपूजन सहाय के संस्मरणों की भाषा कैसी है?

16.2.2 'त्यागमूर्ति निराला' संस्मरण का परिचय

हिंदी संसार में महाकवि निराला के समान त्यागवृत्ति का कोई साहित्य सेवी अब तक देखने में नहीं आया। उनकी त्याग-भावना इतनी प्रबल थी कि जीवन भर काफी पैसे कमाकर भी फक्कड़ ही बने रहे। उन्हें अपने त्याग-बल से ही ऐसी शांति प्राप्त हो गई थी कि सब तरह की कठिनाइ यों और असुविधाओं को अविचल धैर्य और संतोष के साथ झेलते चले गए। प्रकाशकों

या पत्र-पत्रिकाओं से उनका मानदेय मिले या पुरस्कार, सुबह-शाम में उड़ जाता था। पर उनका एक पैसा भी फालतू खर्च में नहीं जाता था। आरंभ से ही उनकी यह दशा थी। जब पहले-पहल घर घर से रामकृष्ण-मिशन की सेवा में कोलकाता आए, लगभग डेढ़-दो साल तक न अपने परिवार को कुछ भेजा और न किसी सगे-संबंधी को। उनका कुटुंब तो हर जगह था। विवेकानंद-सोसाइटी से हर महीने ठीक समय पर वेतन मिल जाता था। 'मतवाला' संपादक महादेव प्रसाद सेठ हर घड़ी उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सजग रहते थे। पुस्तक लेखन से भी पैसे मिल ही जाते थे। किन्तु 'वसुधैव कुटुंबकम' के सिद्धांतों के लिए कुबेर का भंडार भी पर्याप्त न था।

बोध प्रश्न

- निराला कोलकाता में क्या-क्या कार्य करते थे?
- निराला को धन की प्राप्ति वेतन के अतिरिक्त और कैसे होती थी?
- निराला अपने परिवार को कुछ भी धन क्यों नहीं भेज पाते थे?
- मतवाला के संपादक कौन थे?

निराला जी महादेव प्रसाद सेठ के साथ बाज़ार जाते थे, तो सेठ जी केवल उन्हीं के लिए फल और मिठाई खरीद लाते थे, पर वहरास्ते में मिलने वाले कंगालों को बाँटते हुए घर पहुँचते थे। अपने हाथ का सामान चुक जाने पर सेठ जी के हाथ से भी ले लेते थे। सेठ जी भी उनके ऐसे अनन्य पुजारी थे कि उनका मुँह ताककर चुप रह जाते या कभी कभी चिढ़ कर कहते कि मेरे हाथ का सब सामान आप ही ढो ले चलिए। प्रायः खरीदते समय मुंशी नवजादिकलाल श्रीवास्तव स्मरण करा देते थे कि नाहक इतने पैसे का सामान खरीद रहे हैं, आखिर निराला जी सारी राह खैरात ही बाँटते चलेंगे और खाली हाथ ही घर पहुँचना होगा। तब भी सेठ जी निराला का मन तोड़ना नहीं चाहते थे। निराला की प्रसन्नता के सामने सेठ जी पैसे को कोई महत्व नहीं देते थे। मुंशी जी प्रायः मज़ाक में कहते कि आप (सेठ जी) ही निराला के बहके मन को शह दे-देकर बिगाड़ते जा रहे हैं। पर यह बात तो अवांछनीय रूप में रास्ता-भर पैसे लुटाने के ख्याल से कही-सुनी जाती थी, निराला पर इसका कोई असर नहीं होता था। वह कभी कुछ खरीदने का आग्रह नहीं करते थे। उनके लिए सेठ जी के मन में जो स्वाभाविक प्यार-दुलार था, उसी को चरितार्थ करने के लिए सेठ जी अपना हाथ रोक नहीं सकते थे। सेठ जी जान-बूझकर प्यार का अत्याचार सहते थे- यदि सचमुच इसे कोई प्यार का अत्याचार कहे तो। सेठजी के प्यार पर यह निराला का अत्याचार नहीं था और न सेठ जी के प्यार-दुलार की यह अग्नि परीक्षा ही थी। यह तो निराला के स्वच्छंद मन की मौज थी, जिसको सदैव तरंगित देखते रहने में ही सेठ

जी संतोष अनुभव करते थे और कभी झुँझलाते भी थे, तो निर्विकार हँसी के साथ निराला को भी हँसाते हुए ही।

बोध प्रश्न

- सेठजी निराला का मन क्यों नहीं तोड़ना चाहते थे?
- 'प्यार का अत्याचार' कौन किस पर करता था, कैसे करता था और क्यों?

निरालाजी वास्तव में निराला ही थे। अंगूर का गुच्छा या मस्कट के मीठे खजूर की पुड़िया किसी भिखारी के हाथ में देते समय हँसकर कह भी देते थे कि इसे मेरे सामने चखकर देखो तो कैसा है। जब मुंशी जी टोकते कि उसे भरपेट चना-चबेना खाने को नकद पैसे ही क्यों नहीं दे देते महाराज, तब एक-दो संतरे उसके हाथ पर और रख देते थे, चाहे वे बेशकीमती नागपुरिया हों या सिलहट के। एक दिन एक कंगले को लाल सेव देकर उसे सीख देने लगे कि इसे तू खाएगा तो तेरा चेहरा ऐसा ही सुर्ख बन जाएगा, जिस पर उसने दीनतापूर्वक हँसकर कहा कि एक दिन आपकी मर्ज़ी से यह खाने को मिल ही गया तो क्या इतने से ही मेरे सूखे बदन में खून आ जाएगा, मालिक! यह सुनकर निराला ने सेठ जी से कहा कि इसे दो रुपए दे दीजिए, यह और भी खरीदकर खाएगा। सेठ जी ने भी बिना हिचक वैसा ही किया और जब मुंशी जी ने ठहाके के साथ यह कह दिया कि इतने पैसे से भी वह नया खून लाने-भर सेव नहीं खा सकता, तब अपनी जेब से झट निकालकर एक रुपया फिर दे दिया। तब तो इधर-उधर से दौड़े आते हुए मंगतों को देख सेठ जी उन्हें साथ खींचकर आगे बढ़ चले।

बोध प्रश्न

- कंगले को सेव देने से जुड़ा प्रसंग अपने शब्दों में लिखिए?
- सेठजी ने निराला को मंगतों से अलग क्यों कर दिया?

मुंशी जी पटना सिटी के सेठ किशोरी लाल चौधरी के साबुन-तेल-फुलेल के कारखाने के मैनेजर थे और सेठ जी के पुराने मित्र भी। एक बार निराला उनके कारखाने में गए तो मुंशी जी ने उन्हें वहाँ की बनी चीज़ें उपहार स्वरूप दीं। किन्तु 'मतवाला' मण्डल में पहुँचते पहुँचते सुगंधित भूतनाथ तेल की एक शीशी ही बच पाई, साबुन की टिकिया भिखमंगों के गंदे कपड़े साफ करने के लिए रास्ते में ही बँट गईं। उन्हें भिखमंगे पहचान गए थे। निराला ने मैले- कुचैले कपड़ों वाले भिखारी से पूछा कि तुझे साबुन दे दूँ तो अपने कपड़े तू खुद साफ कर लेगा। तो कई भिखारी निराला के आगे आ गए और दनादन सब पर एक एक टिकिया चू पड़ी। इतना ही नहीं, मसालेदार तेल की बोतल भी खुलकर एक-एक की चाँद पर बरसने लगी। तारीफ यह कि तेल

ढालकर वह सुंदर बोतल भी एक के हवाले कर दी। इतने में तिलकुट बेचने वाला अपना खोमचा लिए उधर ही आ निकला और निराला ने अपनी जेब के सब पैसों से तिल की मीठी टिकड़ियाँ खरीदकर उन भुक्खड़ों में बिखेरना शुरू कर दिया। मज़ा यह कि सब चूक जाने पर उन बेचारों की गिड़गिड़ाहट सुनकर यह वादा भी किया कि अब दूसरे किसी दिन फिर आकर तुम लोगों को प्याजी पकौड़ियाँ खिलाऊंगा, जिसे सुनते ही सब के सब एक स्वर से उन्हें असीसने लगे।

बोध प्रश्न

- मुंशी जी ने निराला को क्या दिया और क्यों दिया?
- निराला ने उसका क्या किया?

निराला की ये कहानियाँ आज के युग में उपन्यास की तरह भले ही मनगढ़ंत बातें समझी जाएँ, पर आज जो निराला की पूजा-प्रतिष्ठा हो रही है, उससे इनकी सच्चाई स्वतः सिद्ध हो रही है। पुण्य बल के बिना कीर्ति-प्रसार कदापि नहीं होता। निस्पृह त्याग से बढ़कर कोई पुण्य भी नहीं। निराला अपने त्याग का प्रदर्शन नहीं करते थे। कभी किसी से उसकी चर्चा तक न करते थे। यह तो उनकी सहज़ प्रकृति का मूलाधार था। कोई उनके सामने इस गुण की प्रशंसा भी चलाता था तो वह मौन ही रहते थे। वह आत्म-प्रशंसा सुनने के अभ्यासी न थे। कभी-कभी तो कहीं ऐसा प्रसंग छिड़ने पर वहाँ से उठकर अलग चले जाते थे। मानव की महत्ता को परखने में उसके प्रतिदिन के जीवन की छोटी से छोटी बातें विशेष सहायक होती हैं। ‘मतवाला’ की प्रेस का मशीनमैन अचानक बहुत घायल हो गया। ट्रेडिल में उसका समूचा आधा हाथ ही पिस गया। सेठ जी ने दो कम्पोजिटरों के साथ उसे अस्पताल भेजा। लाख मना करने पर भी निराला उस कम्पोज़ीटर के साथ उसके घर गए, केवल इसीलिए कि उसके घर की गरीबी अपनी आँखों देख आएं। जब तक वह अस्पताल में रहा निराला उसे फूलकटरा से गुलदस्ता खरीदकर दे आते थे और बीड़ी के बदले सिगरेट भी। उसके घरवालों को सेठ जी से अतिरिक्त सहायता और पेशगी की रकम भी दिलवाई। उस आदमी ने लौटकर बतलाया कि निराला जी ने उसके बूढ़े बाप और बीवी-बच्चों के लिए अन्न-वस्त्र की मासिक व्यवस्था भी की थी। उनके परोपकार-कर्म सात्विक होते थे, क्योंकि सदा निष्काम भाव से किए जाते थे।

बोध प्रश्न

- निराला गरीबों और दीन दुखियों की सहायता क्यों करते थे?

निराला अपने जीते-जी ठीक-ठीक परखे ही नहीं गए। उनकी दीनबंधुता को दुनिया ने विक्षिप्तता की संज्ञा दे डाली। उनका त्याग भी स्वार्थी समाज में उनका पागलपन ही समझा

गया। निराला स्वयं हलाहल के घूंट पीकर दूसरों को अमृत पिलाते रहे। समाज में त्यागी और साहित्य में बागी इस युग में दूसरा ऐसा हुआ ही कौन?

बोध प्रश्न

- निराला की त्यागभावना को लोगों ने क्या समझा?

16.2.3 'त्यागमूर्ति निराला' संस्मरण का विश्लेषण

छात्रो! आपने विधा के रूप में 'संस्मरण' की कुछ विशेषताओं का अध्ययन पिछली इकाई में किया है। अब इस संस्मरण को उन विशेषताओं के आधार पर कसौटी पर कस कर देखते हैं।

16.2.3.1 वस्तु-व्यक्ति का स्वरूप वर्णन

प्रस्तुत संस्मरण में लेखक ने निराला के 'त्यागमूर्ति' विशेषण की सार्थकता का वर्णन किया है। निराला का अविचल धैर्य और संतोष तथा गरीबों की सहायता करने की भावना का यहाँ प्रसंग सहित वर्णन है। स्वयं अकिंचन होकर भी दूसरों की मदद करना, सबको अपना परिवार समझना और यथाशक्ति तन, मन, धन से सहायता करना निराला के बहुमुखी व्यक्तित्व के अंग हैं। कवि निराला की दानवीरता, त्याग-वृत्ति और दयाभाव के संस्मरण प्रसंगों को शिव पूजन सहाय ने इस प्रकार प्रस्तुत किया है कि निराला के प्रति पाठक का मन श्रद्धा से भर जाता है।

16.2.3.2 भावनात्मक और कथात्मक वर्णन

आचार्य शिवपूजन सहाय ने प्रत्यक्षदर्शी होकर निराला के कलकत्ता प्रवास में उनकी दानशीलता को देखा था। वे इस संस्मरण का ताना-बाना इस प्रकार बुनते हैं कि घटनाक्रम एक के बाद एक जुड़ता जाता है। साथ ही वर्णन में पाठक की उत्सुकता बनी रहती है। निराला के प्रभाव से अन्य लोग भी उनकी अच्छाइयों को देखकर उनका अनुसरण करने लग जाते हैं, अनुमोदन करते हैं। पाठक इन प्रसंगों को सदा याद रखेगा।

16.2.3.3 लेखक पर वर्ण्य वस्तु-व्यक्ति के प्रभाव का वर्णन

कोई लेखक संस्मरण तभी लिखता है जब उसे लगता है कि उसके पाठक इसमें उसकी तरह ही रुचि लेंगे। निराला के कवित्व व फक्कड़पन से स्वयं लेखक प्रभावित हुआ और उसने उनके साथ बिताए एक-एक घटनाक्रम को इस प्रकार लिखा है कि पाठक भी स्वयं को वहाँ मौजूद पाता है।

लेखक ने अपने चरित नायक निराला को 'समाज में त्यागी और साहित्य में बागी' के रूप में चित्रित किया है। संस्मरण लेखक इस तथ्य की ओर पाठक का ध्यान आकृष्ट करना चाहते है कि निराला जी ने न केवल दीन दुखी, गरीब, किसान, मजदूर और पीड़ित की सहायता की बल्कि उनको अपनी लेखनी से चित्रित भी किया। निराला की कुछ कविताएँ जैसे 'भिक्षुक' और 'वह तोड़ती पत्थर' में समाज के इस वर्ग का चित्रण है। निराला ने हिंदी के विष को पिया और उसके बदले में अपनी रचनाओं का अमृत उसे प्रदान किया। 1923 में जब कलकत्ता से 'मतवाला' का प्रकाशन हुआ तो उसके कवर पेज़ के लिए निराला ने दो पंक्तियाँ लिखी थीं।

अमिय गरल शशि सीकर रविकर राग-विराग भरा प्याला।

पीते हैं, जो साधक उनका प्यारा है यह मतवाला॥

निराला की कविता में यह गुण है। निराला की जीवनी पढ़ें तो पता चलता है कि दुख ही उनके जीवन की कथा रही। छायावादी युग में रहकर भी वे काफी हद तक गांधी के प्रभाव से मुक्त रहे और अपनी कहानियों और गद्य लेखन में क्रातिकारी विचारों को अभिव्यक्त किया। 'अलका', 'चतुरी चमार' और 'बिल्लेसुर बकरिहा' आदि रचनाओं में निराला के बागी स्वर दिखाई देते हैं। उन्होंने सामाजिक रूढ़ियों और अंधविश्वासों का विरोध किया और हिन्दू-मुस्लिम एकता का समर्थन किया।

बोध प्रश्न

- कोई लेखक संस्मरण क्यों लिखता है?

16.2.3.4 जीवन के अनुभूत सत्यों की अभिव्यक्ति

त्याग, दया, करुणा, दान आदि मानव मूल्य मनुष्य को मानवीय गुणयुक्त बनाते हैं। इस संस्मरण में कवि निराला के जीवन और व्यक्तित्व में दीन-दुखियों, गरीबों, लाचारों और दुर्घटना-ग्रस्त रोगियों के प्रति दया ही नहीं सहायता और सहयोग का भाव दिखाई देता है। निराला की दृष्टि में नि:स्वार्थ भाव से सेवा ही धर्म है। उनकी करुणा के पात्र निर्धन भिखारियों से लेकर सहकर्मी तक हैं।

बोध प्रश्न

- मनुष्य को मानवीय गुणयुक्त बनाने के लिए किन मूल्यों की आवश्यकता है?
- इस संस्मरण में निराला किन गुणों से आप परिचित हुए?

16.3 पाठ सार

'त्यागमूर्ति निराला' शीर्षक संस्मरण के रचनाकार आचार्य शिवपूजन सहाय हैं। उनका जन्म 1893 ई. में और मृत्यु 1963 ई. में हुई। वे अपने समय के लेखकों में बहुत लोकप्रिय और सम्मानित विद्वान थे। उन्होंने 'जागरण', 'हिमालय', 'माधुरी', 'बालक' आदि कई प्रतिष्ठित पत्रिकाओं का संपादन किया। उन्हें सजग और सहज भाषा-प्रयोग के लिए खासतौर पर जाना जाता है। हिंदी की संस्मरण विधा को मजबूती प्रदान करने में उनकी पुस्तक 'वे दिन वे लोग' का महत्वपूर्ण स्थान है।

हिंदी भाषा और साहित्य के प्रमुख कवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के समान त्यागी दूसरा कोई साहित्यकार हिंदी में नहीं हुआ। निराला को उनकी उदारता के लिए 'त्यागमूर्ति' कहा गया है। त्याग और दूसरों के लिए कष्ट सहना और उन्हें खुश होते देख खुश होना निराला का स्वभाव था। उन्होंने जीवन में जो कुछ भी धन कमाया उसे उसी समय गरीबों में बाँट दिया। पुरस्कार से मिला धन हो या पुस्तक प्रकाशन से प्राप्त धनराशि, वे सब पैसा कंगलों और निर्धनों में बाँट देते थे। कलकत्ता (कोलकाता) में जब वे 'मतवाला' पत्र में काम करते थे तो अपने परिवार को अपना मासिक वेतन मिलने पर भी उसमें से कुछ रुपया नहीं भेजते थे, बल्कि उसको भी गरीबों में तकसीम कर देते थे। 'मतवाला' के संपादक महादेव प्रसाद सेठ उनका बहुत सम्मान करते थे और सदा उनका ख्याल रखते थे।

निराला सारे संसार को अपना परिवार समझकर उस पर अपना प्यार लुटाते थे। उनकी कमाई गरीबों के लिए थी, यह सब जान गए थे। उनकी उदारता के अनेक किस्से कहे जाते हैं। कलकत्ता में ही जब वे सेठ जी के साथ बाज़ार जाते और सेठ उनके लिए मिठाई और फल खरीदते तो वे वहीं से राह चलते भिखारियों को फल और मिठाइयाँ देना शुरू कर देते। वे घर पहुँचते-पहुँचते सारी मिठाई और फल बाँट चुके होते। निराला की इस उदारता पर सेठ बाहर से गुस्सा दिखाते थे, पर मन से वे निराला की भावना का सम्मान करते थे। कभी कभी तो वे भी उन्हें इस प्रकार के दान-धर्म के लिए उकसाते भी थे।

निराला के लिए किसी वस्तु की कोई कीमत न थी - चाहे वह विदेशी खजूर हो या संतरे, सेब, अंगूर, अनार जैसे महंगे फल। गरीबों को देने में उन्हें अपार सुख मिलता था। एक बार उन्हें सेठ जी के एक पुराने धनी मित्र ने साबुन, तेल, फुलेल (इत्र) आदि भेंट में दिए। किन्तु निराला ने लौटते समय वे सब चीजें गरीब भिखारियों में बाँट दी। इसमें ही उन्हें सुख मिलता था। आज के जमाने में ऐसी कहानियों को सुनकर कोई इन्हें झूठी कहेगा। पर ये सब कहानियाँ

सच्ची हैं। निराला ऐसे ही थे। दानशीलता उनका स्वभाव था। वे यह भी नहीं चाहते थे कि लोग इसके लिए उनकी तारीफ करें। एक बार 'मतवाला' प्रेस का एक गरीब मशीनमैन बुरी तरह घायल हो गया। निराला ने उसकी बड़ी मदद की। वे उसके घर रोज जाते थे। उसे खरीदकर गुलदस्ता दे आते, बीड़ी थमा आते और उसके परिवार को छिपाकर पैसे दे देते। पता नहीं ऐसी कितनी उदारतापूर्ण मदद हैं जो उन्होंने दुनिया से छिपकर गरीबों के लिए कीं। उनकी उदारता और गरीबों की मदद करने की आदत कभी न छूटी। वे सही अर्थों में त्याग की मूर्ति थे और उनकी यह भावना सदा रही। लोगों ने चाहे कितनी भी इसकी आलोचना की, पर उन्होंने दयाभाव न त्यागा। पर यह उनकी इस भावना की तारीफ करने के स्थान पर उन्हें इसके लिए तरह तरह से अपमानित करती रही। पागल कहकर उनका उपहास किया गया। उन्होंने अपमान का कड़वा घूंट पीकर सदा दूसरों को प्रेम और उदारता का अमृत प्रदान किया। ऐसा त्याग-मूर्ति हिंदी में कोई दूसरा न हुआ।

16.4 पाठ की उपलब्धियाँ

शिवपूजन सहाय द्वारा लिखित संस्मरण 'त्यागमूर्ति निराला' पर केंद्रित इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष उपलब्ध हुए-

1. आधुनिक युग के अनेक रचनाकारों को प्रेरित करने और सँवारने में आचार्य शिवपूजन सहाय का योगदान अविस्मरणीय है।

2. आचार्य शिवपूजन सहाय ने लगभग 300 संस्मरण लिख कर हिंदी में इस विधा को स्थापित किया।

3. निराला की दानशीलता, त्याग और निर्धनों के प्रति निश्छल प्रेम अद्वितीय है।

4. निराला की त्यागभावना से जुड़ी घटनाएँ उनके उदात्त गुणों की परिचायक हैं।

16.5 शब्द संपदा

1. अग्नि परीक्षा	=	कठोर परीक्षा जिसमें सफल होने के लिए जोखिम भरा कार्य करना पड़े
2. अयाचित	=	जिसकी याचना(इच्छा, प्रार्थना, अभिलाषा)न की गई हो।
3. अवांछनीय	=	न चाहने योग्य
4. अविचल	=	दृढ़, अडिग, टस से मस न होने वाला

5. असीसना	=	आशीष देना, आशीर्वाद देना
6. कंगाल	=	गरीब, भिखमंगा, निर्धन
7. कुबेर	=	धन के देवता
8. खैरात	=	दान
9. चरितार्थ	=	जिसका अभिप्राय पूरा हो गया हो, कृतकार्य, कृतार्थ
10. चू पड़ना	=	टपकना, गिरना
11. नाहक	=	बेकार में
12. निर्विकार	=	दोष रहित, जिसमें कोई दोष न हो
13. निष्काम	=	फल की इच्छा से रहित
14. पेशगी	=	अग्रिम वेतन
15. प्रणयन	=	लिखना, साहित्यिक काव्य ग्रंथ आदि का लेखन ई
16. फक्कड़	=	ऐसा गरीब व्यक्ति जो फ़ाकों या उपवासों के बाद भी खुश और मस्त रहता हो।
17. मंगते	=	भिखारी, मांगने वाले
18. मानदेय	=	लेखन के प्रतिदान के रूप में मिलने वाली धनराशि
19. वसुधैव कुटुम्बकम्	=	संपूर्ण धरती को एक परिवार मानना
20. विक्षिप्तता	=	पागलपन, उन्माद
21. शह देकर	=	भड़काकर, उकसाकर, प्रेरित करके

16.6 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. दिए गए विशेषणों के आधार पर सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का चरित्र चित्रण कीजिए। अविचल धैर्य, संतोष, दत्त चित्त, स्वच्छंद मन, त्यागवृत्ति, निष्काम भाव, विक्षिप्त, स्वाभिमान

2. 'निराला जी वास्तव में निराला ही थे।' इस कथन की पुष्टि कुछ उदाहरण देकर कीजिए।

3. 'निस्पृह त्याग से बढ़कर कोई पुण्य नहीं।' इस उक्ति पर निराला के जीवन से कुछ घटनाएँ लेकर प्रकाश डालिए।

4. त्यागमूर्ति निराला के कोलकाता प्रवास पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

5. निराला को लोग विक्षिप्त क्यों समझते थे? क्या आप भी उन्हें वैसा ही समझते हैं? उदाहरण देते हुए स्पष्ट कीजिए।

6. संस्मरण विधा की मुख्य विशेषताओं के आधार पर 'त्यागमूर्ति निराला' की समीक्षा कीजिए।

खंड (ब)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. 'त्यागमूर्ति निराला' संस्मरण के आधार पर महादेव प्रसाद सेठ की उदारता का उदाहरण सहित विवेचन कीजिए।

2. मशीनमैन के दुर्घटनाग्रस्त होने पर निराला की तत्परतापूर्ण सहायता का अपने शब्दों में वर्णन कीजिए।

3. आज के जमाने में ऐसी घटनाएँ मनघडन्त और निराला जैसे लोग अजूबे क्यों मान लिए जाते हैं? सतर्क उत्तर दीजिए।

4. संस्मरण लेखक भी इस संस्मरण 'त्यागमूर्ति निराला' में उपस्थित है, संस्मरण के गहन पाठ के आधार पर सप्रसंग स्पष्ट कीजिए।

5. 'त्यागमूर्ति निराला' संस्मरण को पढ़कर मानव जीवन के किस पक्ष के प्रति आपका ध्यान सबसे अधिक जाता है और क्यों?

6. 'समाज में त्यागी और साहित्य में बागी' कहकर निराला के साहित्य के किस गुण की ओर संकेत किया गया है?

7. संस्मरण लेखक के रूप में शिवपूजन सहाय का परिचय दीजिए।

खंड (स)

I सही विकल्प चुनिए

1. निराला के लिए यह विशेषण प्रयोग नहीं किया जाता – ( )

अ) महाप्राण आ) त्यागमूर्ति

इ) छायावादी ई) रीतिवादी

2. शिवपूजन सहाय की प्रतिनिधि पुस्तक है – ( )

अ) रंगभूमि आ) देहाती दुनिया

इ) त्यागमूर्ति निराला ई) मतवाला

3. 'मतवाला' में काम करते हुए निराला ने अपने परिवार को साल भर से अधिक समय तक कोई पैसा नहीं भेजा क्योंकि – ( )

अ) उनका परिवार बहुत समृद्ध था।

आ) वे बड़े गैर-जिम्मेदार और लापरवाह थे।

इ) सारा संसार ही उनके लिए परिवार था।

ई) वे सब धन खर्च कर देते थे।

4. निराला के जीवन के संस्मरण आजकल मनघडन्त क्यों लग सकते हैं – ( )

अ) निराला त्यागमूर्ति थे। आ) निराला दानवीर थे।

इ) निराला कवि थे। ई) आजकल ऐसे लोग बहुत कम मिलते हैं।

5. दुर्घटना में घायल मशीनमैन की निराला छिपकर मदद क्यों करते थे – ( )

अ) क्योंकि वह बहुत गरीब था। आ) क्योंकि वह मुसलमान था।

इ) क्योंकि निराला किसी के आत्मसम्मान को ठेस नहीं पहुंचाना चाहते थे।

ई) क्योंकि कोई उसकी मदद नहीं करना चाहता था।

6. आत्मप्रशंसा का अर्थ है – ( )

अ) अपनी प्रशंसा स्वयं करना आ) आत्मसम्मान

इ) लापरवाही ई) निंदा करना

II रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए

1. निराला की त्यागवृति के कारण उन्हें .... निराला कहा जाता है।

2. निस्पृह त्याग से बढ़कर कोई .... नहीं।

3. परोपकार कर्म .... होते हैं।

4. दानशीलता निराला का स्वभाव था, वे नहीं चाहते थे कि लोग इसके लिए उनकी .... करें।

5. त्यागमूर्ति निराला के संस्मरण लेखक .... हैं।

6. निराला को समाज में त्यागी और साहित्य में .... कहा जाता है।

III सुमेल कीजिए

क) सूर्यकांत त्रिपाठी	I) मुंशी
ख) शिवपूजन	II) सेठ
ग) महादेव प्रसाद	III) निराला
घ) नवजादिक लाल	IV) सहाय

16.7 पठनीय पुस्तकें

1. निराला की साहित्य साधना. रामविलास शर्मा.

2. हिंदी साहित्य कोश. (सं) धीरेन्द्र वर्मा.

खंड – V : आत्मकथा और डायरी

इकाई 17 : आत्मकथा : विधागत स्वरूप

पाठ की रूपरेखा

17.0 प्रस्तावना

17.1 उद्देश्य

17.2 मूलपाठ : आत्मकथा : विधागत स्वरूप

 17.2.1 आत्मकथा : स्वरूप और परिभाषा

 17.2.2 आत्मकथा की विशेषताएँ

 17.2.3 आत्मकथा के मूल तत्व

 17.2.4 आत्मकथा, जीवनी तथा संस्मरण में अंतर

17.3 पाठ- सार

17.4 पाठ की उपलब्धियाँ

17.5 शब्द संपदा

17.6 परीक्षार्थ प्रश्न

17.7 पठनीय पुस्तकें

17.0 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो ! आप जान चुके हैं कि हिंदी साहित्य को दो विधाओं में वर्गीकृत किया गया है 'गद्य' एवं 'पद्य। आधुनिककाल में काव्य के साथ-साथ गद्य विधा का भी खूब विकास हुआ। यह आधुनिक युग की उपज है। गद्य साहित्य में अनेक रचनात्मक विधाओं का समावेश है; जैसे कहानी, निबंध, नाटक, एकांकी, उपन्यास, डायरी, जीवनी, रिपोर्ताज, यात्रा वृत्तान्त, रेखाचित्र, संस्मरण तथा आत्मकथा। गद्य साहित्य की परिधि बहुआयामी होने के कारण अनेक विधाओं में आत्मकथा भी एक विधा है। आत्मकथा अर्थात जिसमें रचनाकार के खुद के जीवन की कहानी कही गई हो। इसमें लेखक अपने जीवन का ब्योरा देता है, जो व्यक्तिगत घेरे को

तोड़कर बाहर निकल आता है अत: इस विधा में लेखक का 'स्व' 'पर' में परिवर्तित होकर सार्वजनिक हो जाता है। आधुनिक हिंदी गद्य विधाओं में कई अकाल्पनिक विधाओं का विकास हुआ। ये विधाएँ कपोलकल्पित और मन को रंजित करने वाले भावों से निकल कर वास्तविकता की कसौटी पर खरी उतरने का प्रयास करती हैं। अपने खुले, अधखुले, ढके जीवन को सार्वजनिक करना बहुत मुश्किल और साहस का कार्य है। आत्मकथा ऐसी ही विधा है। जिसमें लेखक स्वयं के जीवनानुभवों की अनुभूति को शब्दबद्ध करता है। आत्मकथा लेखन में रचनाकार का अपना दृष्टिकोण होता है। यह रचना पूरी तरह से निजी और व्यक्तिगत होती है। आत्मकथा में कल्पना का अभाव होता है। यह यथार्थ के आधार पर लिखी जाती है। अत: यह कहना उचित होगा कि आत्मकथा लेखक के जीवन का प्रत्यक्ष प्रमाण होती है। सामान्यतया यह माना जाता है कि आत्मकथा व्यक्ति विशेष के जीवन की गाथा मात्र है किंतु यह धारणा दोषपूर्ण है। आत्मकथा में जहाँ लेखक का निजी अनुभव होता है, वहीं यह एक ऐसा माध्यम भी है जिसके जरिए तत्कालीन समाज और परिस्थिति के स्वरूप से रूबरू हुआ जा सकता है।

17.1 उद्देश्य

प्रिय छात्रो! इस इकाई के अंतर्गत आप आत्मकथा के विधागत स्वरूप का अध्ययन करेंगे। इस इकाई के अध्ययन से आप -

- आत्मकथा की उत्पत्ति तथा उसके स्वरूप के बारे में जानेंगे।
- आत्मकथा की विविध परिभाषाओं के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- आत्मकथा के तत्वों को समझ सकेंगे।
- आत्मकथा की विशेषताओं से अवगत हो सकेंगे।
- हिंदी के प्रमुख आत्मकथाकारों के बारे में जान सकेंगे।

17.2 मूल पाठ : आत्मकथा : विधागत स्वरूप

शब्द और अर्थ के सामंजस्य से साहित्य की उत्पत्ति होती है। साहित्य का परम उद्देश्य समस्त जगत का हित है। इसके अलावा साहित्य को समाज का दर्पण भी कहा जाता है। भावों की अभिव्यक्ति को व्यक्ति से समष्टि के हित का साधन बनाने के लिए साहित्य की विभिन्न विधाओं की आवश्यकता होती है। अर्थात आकर्षक शैली में सरस भावों की अभिव्यक्ति ही साहित्य है। साहित्य का मुख्य लक्ष्य है समाज का मार्गदर्शन करना। इसकी दो विधाएँ हैं - पद्य और गद्य। गद्य की कुछ विधाएँ 'कथा साहित्य' के अंतर्गत आती हैं, जैसे कहानी और उपन्यास।

इसी प्रकार कुछ विधाएँ 'कथेतर साहित्य' कही जाती है। 'आत्मकथा' इसी वर्ग में सम्मिलित है।

17.2.1 आत्मकथा : स्वरूप और परिभाषा

कहानी और उपन्यास हो अथवा आत्मकथा, इन रचनाओं के सूत्र समाज और जीवन में ही विद्यमान होते हैं। लेखक इन सूत्रों को एकत्र करके अलग अलग विधा की रचनाएँ बुनता है। अत: कहा जा सकता है कि आस-पास के परिवेश का यथार्थ ही कथा का आधार होता है, जिसे लेखक अपनी कला के ताने बाने से बुनता है।

आत्मकथा को आत्मचरित्र, आत्म जीवनी, आत्मवृत्त, जीवन चरित्र, आपबीती, आत्मकहानी आदि नामों से भी जाना जाता है। 'आत्मकथा' शब्द से स्पष्ट है कि इसमें लेखक अपने जीवन से सम्बंधित घटनाओं का वर्णन करता है। वह अपने अतीत को फिर एक बार जीता है। यह लेखक का स्वयं का उसके जीवन का लिखित इतिहास होता है। आत्मकथा में आत्मनिरीक्षण तथा जीवन की सार्थकता की परख भी निहित होती है।

कहानी, उपन्यास या गद्य की अन्य विधाओं से पृथक 'आत्मकथा' को परिभाषित करने से पहले इस शब्द की उत्त्पति तथा अर्थ को जान लेते हैं। 'आत्म' शब्द 'आत्मन' से उत्पन्न हुआ है। इसका अर्थ है 'स्वयं का'। अंग्रेजी में आत्मकथा को 'आटोबायोग्राफी' कहते हैं। 'बायोग्राफ़ी' शब्द की उत्पत्ति ग्रीक शब्द 'बायोस' अर्थात 'लाइफ' (जीवन) और ग्राफ़ियर अर्थात 'टू राइट' (लिखना) के मेल से हुई है। इस प्रकार 'आत्मकथा' शब्द का अर्थ जीवन के सम्बंध में लिखने से है। आत्मकथा शब्द स्त्रीलिंग है। यह दो शब्दों के मेल से बना है। पहला है आत्म और दूसरा कथा। यहाँ आत्म शब्द से तात्पर्य है - निजी, व्यक्तिगत, या स्वयं का, और कथा शब्द का अर्थ है कहानी। अर्थात एक ऐसी कहानी जिसमें लेखक अपने जीवन का क्रमिक विवरण प्रस्तुत करता है। इस विधा में आत्मविश्लेषण होता है। आत्मकथा में लेखक स्वयं को समाज के समक्ष प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रस्तुत करता है, जिससे समाज उसके जीवन के विभिन पहलुओं से परिचित होता है।

आत्मकथा की अवधारणा पर अनेक विद्वानों ने अपने विचार रखे हैं। अत: विद्वानों के विचारानुसार आत्मकथाकार अपने जीवन की प्रमुख घटनाओं, मानवीय अनुभूतियों, भावों, विचारों तथा कार्यकलापों को निष्पक्षता एवं स्पष्टता से व्यक्त करता है। इसलिए आत्मकथा को एक स्वतंत्र तथा सम्पूर्ण विधा के रूप में स्वीकार किया जाता है। कहानी, उपन्यास या गद्य की अन्य विधाओं की तरह आत्मकथा को भी विद्वानों ने अनेक प्रकार से परिभाषित किया है। जैसे -

एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका के अनुसार, "आत्मकथा व्यक्ति के जिये हुए जीवन का

ब्योरा है, जो कि स्वयं उसके द्वारा लिखा जाता है।"

शिप्ले का कहना है, "आत्मकथा को लेखक के जीवन का एक शृंखलाबद्ध ऐसा विवरण कह सकते हैं जिसमें वह अपने विशाल जीवन की पृष्ठभूमि में से कुछ महत्वपूर्ण बातों को व्यवस्थित ढंग से सामने रखता है या फिर उसे संस्मरण के रूप में प्रस्तुत करता है।"

अमृता प्रीतम आत्मकथा को "आदर्श से यथार्थ तक पहुँचने की प्रक्रिया" मानती हैं।

हरिवंशराय बच्चन ने कहा है कि "आत्मकथा लेखन की वह विधा है जिसमें लेखक ईमानदारी के साथ आत्मनिरीक्षण करता हुआ अपने देश-काल, परिवेश से सामंजस्य अथवा संघर्ष के द्वारा अपने को विकसित एवं प्रस्थापित करता है।"

डॉ. साधना अग्रवाल के अनुसार "आत्मकथा लिखने की शर्त है ईमानदारी से सच के पक्ष में खड़ा होना और अपनी सफलता-असफलताओं का निर्ममता पूर्वक पोस्टमार्टम करना।"

यह जिज्ञासा होना स्वाभाविक है कि कोई व्यक्ति आत्मकथा क्यों रचता है। इस विषय में अजित कुमार ने हिंदी साहित्य कोश में विस्तार पूर्वक प्रकाश डाला है। वे बताते हैं कि आत्मकथात्मक साहित्य क्यों लिखा जाता है, यह बड़ा संगत प्रश्न है। सोचने पर दो भिन्न दृष्टिकोण लक्षित होते हैं। "एक प्रकार के आत्मकथात्मक साहित्य का उद्देश्य होता है – आत्म-निर्माण, आत्म-परीक्षण या आत्म समर्थन, अतीत की स्मृतियों को पुनर्जीवित करने का मोह या जटिल विश्व के उलझावे में अपने आपको अन्वेषित करने का सात्त्विक प्रयास। इस प्रकार के आत्मकथात्मक साहित्य में लेखक आत्मांकन द्वारा आत्म-परिष्कार एवं आत्मोन्नति करना चाहता है। आत्म-संबंधी साहित्य लिखने का दूसरा उद्देश्य यह भी है कि लेखक के अनुभवों का लाभ अन्य लोग उठा सकें। महान ऐतिहासिक आंदोलनों और घटनाओं के संपर्क में रहने से डायरी, संस्मरण या आत्मकथा-लेखक को यह आशा होना स्वाभाविक है कि आगामी युगों में उसकी रचना उसके युग तथा समय के प्रमाण रूप में पढ़ी जाएगी। यदि धर्म, राजनीति अथवा साहित्य के इतिहास-निर्माण में किसी व्यक्ति का महत्वपूर्ण हाथ रहा हो, तो अवश्य ही पाठक उसकी लिखी बातों को पढ़ना पसंद करेंगे।" इन दोनों कारणों के अतिरिक्त आत्मकथा-लेखन के मूल में कलात्मक अभिव्यक्ति की प्रेरणा भी हो सकती है और अपनी पद-मर्यादा अथवा ख्याति से लाभ उठाने की शुद्ध व्यावसायिक इच्छा भी।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि गद्य के बहुत से प्रकारों में 'आत्मकथा' लेखन का एक ऐसा तरीका है जिसमें लेखक अपने व्यक्तिगत अनुभवों के बारे में कह सकता है। अत: आत्मकथा लेखक की अनुभूति की अंतर्यात्रा, उसके अनुभव के बाह्य और आंतरिक दोनों पक्षों में निहित आत्म-विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति है।

बोध प्रश्न

- आत्मकथा से आप क्या समझते हैं?
- आत्मकथा को अंग्रेजी में क्या कहते हैं?
- आत्मकथा को किन-किन नामों से जाना जाता है?
- हरिवंशराय बच्चन ने आत्मकथा के बारे में क्या कहा है?

17.2.2 आत्मकथा की विशेषताएँ

आज हिंदी साहित्य में आत्मकथा एक अत्यंत रोचक एवं सजीव विधा बन चुकी है। अन्य विधाओं में लेखक व्यक्तिगत नीतियों अथवा सामाजिक समस्याओं का ही वर्णन करता है किंतु आत्मकथा में वह स्वयं के निजी व आत्मिक तथ्यों का उद्घाटन करता है। अत: कहा जा सकता है कि आत्मकथा व्यक्ति की स्पष्ट, निश्छल सहज एवं निर्भीक अभिव्यक्ति है। उपर्युक्त तथ्यों के अवलोकन के पश्चात आत्मकथा की निम्नलिखित विशेषताएँ सामने आती हैं-

1. आत्मविश्लेषण

आत्मकथा में लेखक स्वयं का विश्लेषण करता है। अपनी अच्छाइयों और बुराइयों को तोलते हुए उनको शब्दबद्ध करता है। इसमें लेखक उन तथ्यों को भी उजागर करता है जिनसे उसके जीवन पर सकारात्मक या नकारात्मक प्रभाव पड़ा हो। हर व्यक्ति में इतना साहस नहीं होता कि वह अपनी कमजोरियों को समाज के सामने रख सके। इसलिए इसे आत्म-विश्लेषणात्मक विधा कहा गया है।

2. आत्मालोचन

आत्मकथा की महत्वपूर्ण दूसरी विशेषता है आत्मालोचन। आत्मकथा लेखन में लेखक द्वारा कही गई बातों पर विश्वास करते हुए उसको सच माना जाता है। इसके प्रति लेखक स्वयं जिम्मेदार होता है। अत: लेखक अपने जीवन के सकारात्मक एवं नकारात्मक पहलुओं का सूक्ष्मता से अवलोकन एवं मूल्यांकन करता है।

3. सामाजिक सरोकार

आत्मकथा से लेखक के जीवन से जुड़ी घटनाओं का पता चलता है इससे तत्कालीन समाज का परिचय भी प्राप्त होता है। आत्मकथाएँ सामाजिक सरोकारों से जुड़ी होती हैं।

4. आत्मपरकता

लेखक के आत्म-अनुभवों की प्रस्तुति होने व अंतर्जगत से सम्बंधित होने के कारण यह विधा एक आत्मपरक विधा कहलाती है।

5. यथार्थपरकता

आत्मकथा द्वारा लेखक के जीवन का वास्तविक परिचय प्राप्त होता है, जिन बातों से पाठक वर्ग अनभिज्ञ होता है।

6. मानसिक परिपक्वता

आमतौर पर आत्मकथा या आत्म-चरित लेखक अपनी आयु की अन्तिम अवस्था में मानसिकता के परिपक्व होने पर लिखता है।

7. प्रेरकता

आत्मकथाओं से समाज को प्रेरणा भी मिलती है। समाज जब महान व्यक्तियों की आत्मकथा पढ़ता है, जिन्होंने समाज के लिए अपना जीवन न्यौछावर किया हो या जिन्होंने कष्टों, संघर्षों, साहस और धैर्य के बाद अपने जीवन में सफलता पाई हो तो ऐसी आत्मकथाओं से भावी पीढ़ी प्रेरित होती है।

आत्मकथा, साहित्य की अन्य विधाओं से अलग है। इसमें लेखक के जीवन के अनुभव ज्यों के त्यों न होकर एक विशेष चयन प्रक्रिया के तहत पुन:सृजित होते हैं, उन क्षणों को रचनाकार फिर से जीता हैं। इससे एक ऐसा आकर्षण पैदा होता है, जिससे पाठक उसकी ओर अनायास ही चले आते हैं। आत्मकथा में सत्य घटनाएँ सामने आती हैं इसलिए ईमानदार और पारदर्शी व्यक्तित्व का धनी व्यक्ति ही आत्मकथा लेखन कर सकता है। महात्मा गांधी की आत्मकथा को आदर्श आत्मकथा माना जाता है। आत्मकथाकार का सबसे बड़ा गुण उसका पारदर्शी दृष्टिकोण होता है। यह 'सत्य के प्रयोग' (महात्मा गांधी) में देखा जा सकता है। गांधी जी ने एक आम आदमी में निहित अच्छाई और बुराई का आकलन करते हुए लिखा। सत्य, अहिंसा, परोपकार जैसे मानवीय गुणों का प्रयोग जीवन में किया। अपनी गलतियों को छिपाया नहीं बल्कि उससे बेबाकी से शब्दबद्ध किया। वे पक्षपात नहीं करते थे। उन्होंने कभी महान बनने के लिए नहीं लिखा। जो भोगा वो शीशे की तरह साफ़ लिखा।

बोध प्रश्न

- आत्मकथा कैसी विधा है?
- आत्मकथा प्राय: किस अवस्था में लिखी जाती है और क्यों?
- क्या आत्मकथा में वास्तविकता का उद्घाटन आवश्यक है?
- आत्मकथा से पाठक को क्या लाभ होता है?
- आत्मकथाकार का सबसे बड़ा गुण क्या है?

17.2.3 आत्मकथा के मूल तत्व

किसी भी विधा को समझने के लिए उसके तत्वों को समझना आवश्यक होता है जिससे हम उस विधा को अन्य विधाओं से अलग कर सकते हैं। विभिन्न विद्वानों ने आत्मकथा के तत्वों के बारे में बताया है। यथा-

डॉ. कमलापति उपाध्याय के अनुसार "वर्ण्य विषय, निष्पक्षता, व्यक्तित्व चित्रण एवं ऐतिहासिक तथ्य (देशकाल) आदि चार तत्व बनते हैं।"

डॉ. बैजनाथ सिंहल "यथातथ्य जीवन, स्वलेखन, तटस्थता एवं कलात्मकता" को आत्मकथा के तत्व मानते हैं।

विद्वानों के अनुसार यहाँ आत्मकथा के तत्वों को स्पष्ट किया जा रहा है।

1. वर्ण विषय

आत्मकथा में वर्ण्य विषय में सत्यता का होना आवश्यक है। इसमें लेखक महत्वपूर्ण घटनाओं और विषयों का वर्णन करता है किंतु वर्णित विषय को कल्पना से रहित होना चाहिए अर्थात आत्मकथा का विषय यथार्थ के धरातल पर हो। लेखक अपने जीवन से जुड़े विषयों के अंतर्गत जीवन की घटनाओं के साथ-साथ सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियों का भी वर्णन करता है। इसके लिए इस बात का ध्यान रखना होता है कि अनावश्यक विस्तार न हो जाए। क्योंकि अनपेक्षित विस्तार रोचकता की अपेक्षा वर्णित विषय को नीरस बना देता है। आत्मकथा में स्पष्टवादिता, यथार्थ एवं संक्षिप्तता होनी चाहिए जिससे आत्मकथा श्रेष्ठ बन सके।

2. चरित्र चित्रण

आत्मकथाकार आत्मकथा का स्वयं प्रमुख नायक होता है, उसे इस बात का ध्यान रखना होता है कि उसका आत्मविवेचन स्पष्टता एवं सत्यता के धरातल पर हो। इसमें लेखक प्रसंगानुसार उन सभी लोगों का तथा परिवेश का वर्णन करता है जिनका उसके जीवन से संबंध रहा हो।

3. देशकाल

आत्मकथा को सजीव करने के लिए इसमें देशकाल का होना आवश्यक है। इसका प्रभाव प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तित्व पर पड़ता है। इससे तात्कालिक सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक तथा साहित्यिक परिस्थितियों के प्रभाव का पता चलता है।

4. भाषा-शैली

किसी भी रचना को अभिव्यक्त करने के लिए उसकी भाषा शैली का स्थान बहुत महत्वपूर्ण होता है। आत्मकथा में भी भाषा-शैली का प्रमुख स्थान है। सम्प्रेषणीयता के लिए भाषा-शैली का सहज ग्राह्य होना जरूरी है। भाषा-शैली से ही विषयवस्तु की अभिव्यक्ति सुंदर तथा प्रभाव पूर्ण होती है। भाषा-शैली का प्रभाव उत्पादक होना अत्यावश्यक है। क्रमानुसार वर्णन अधिक रोचक होता है। आत्मकथाएँ विभिन्न शैलियों में लिखी जाती हैं। आत्मकथा में भाषा भावानुकूल और विषयानुकूल होनी चाहिए। लेखक की भाषा शुद्ध, स्पष्ट, परिष्कृत और परिमार्जित होने तथा शब्दों का चयन और भाषा का प्रयोग पात्रों एवं परिवेश के अनुरूप होने से आत्मकथा पाठकों को प्रभावित करती है।

बोध प्रश्न

- आत्मकथा के मूल तत्व कौन-कौन से हैं?
- कैसी आत्मकथा को श्रेष्ठ कहा जा सकता है?
- आत्मकथा में वर्ण्य वैश्य कैसा होना चाहिए?
- आत्मकथा की भाषाशैली कैसी होनी चाहिए?

17.3.4 आत्मकथा, जीवनी तथा संस्मरण में अंतर

आत्मकथा, जीवनी और संस्मरण एक जैसी विधाएँ लगने पर भी इनमें मौलिक अंतर होता है। इन तीनों विधाओं में विगत जीवन और घटनाओं का महत्वपूर्ण स्थान होता है।

व्यक्ति विशेष के जीवन पर जब कोई दूसरा व्यक्ति लिखता है तो उसे जीवनी कहते हैं। किसी व्यक्ति विशेष के जीवन वृत्तान्त को जीवनी कहते हैं। अंग्रेजी में जीवनी का पर्याय 'बायोग्राफ़ी' है। हिंदी में इसे जीवन चरित्र भी कहते हैं। जीवनी के बारे में अनेक विद्वानों ने अपना मत रखा है। शिप्ले के अनुसार "जीवनी लेखक को अपने नायक के सम्पूर्ण जीवन अथवा उसके यथेष्ट भाग की चर्चा करनी चाहिए। जीवनी में इतिहास, साहित्य और व्यक्ति की त्रिवेणी होती है। इसमें मनुष्य के जीवन की व्याख्या एवं व्यक्तिगत जीवन का अध्ययन प्रत्यक्ष और वास्तविक रूप से प्राप्त होता है।" बाबु गुलाबराय ने जीवनी के बारे में कहा है कि "जीवनी घटनाओं का अंकन नहीं वरन चित्रण है। वह एक मनुष्य के अंतर्बाह्य स्वरूप का कलात्मक निरूपण है।" जीवनी वस्तुनिष्ठ होती है। आत्मकथा जीवनी से अधिक विश्वसनीय होती है। आत्मकथा में तथ्यों की पुष्टि होती है। जीवनी में लेखक जब दूसरे की बात कहता है तो सत्यापन की कहीं न कहीं कमी होती है। जबकि आत्मकथा बिना किसी कलात्मक ढंग से निष्कपटपूर्ण से लिखी जाती है।

संस्मरण भी आधुनिक साहित्य की नई विधा है यह फ्रांसीसी शब्द 'memoire' से आया

है जिसका अर्थ स्मृति या स्मरण है। अर्थात, संस्मरण स्मृति पर आधारित लिखित आलेख है। इसमें भी किसी व्यक्ति विशेष पर ही लिखा जाता है, किंतु यहाँ लिखनेवाला नायक नहीं होता बल्कि जिसके बारे में लिखा जा रहा है वह नायक होता है। संस्मरण में व्यक्ति विशेष की भावनात्मकता तथा उसके जीवन के आसपास के तथ्यों को प्रस्तुत किया जाता है। यह व्यक्ति द्वारा लिखा गया यादों का एक रमणीय संग्रह होता है। इसमें लेखक की स्वयं की अनुभूतियाँ तथा संवेदनाएँ अंतर्निहित रहती हैं। संस्मरण एक विशेष समयावधि या घटना पर आधारित होता है जबकि आत्मकथा में किसी के जीवन की पूरी अवधि शामिल होती है।

दरअसल जीवनी और आत्मकथा ऐसे गद्य रूप हैं जिनका विकास क्रमशः सूचनात्मक से सृजनात्मक धरातल की ओर हुआ है। परस्पर मानवीय संपर्क के बढ़ने तथा आधुनिक मनोविश्लेषण के प्रचार प्रसार जैसे कई कारणों से सामान्य मनुष्य चरित्र और उसके क्रिया कलापों में मनुष्य का कौतूहल इस युग में विशेष रूप से बढ़ा है। इसी अनुपात में आत्मकथा का आकर्षण भी बढ़ा है। खास बात यह है कि अब यह आकर्षण केवल महान और चर्चित लोगों के जीवन तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि अब अनाम और साधारण मनुष्यों के जीवन में भी पाठक की जिज्ञासा और रुचि बढ़ गई है। यही कारण है कि स्त्री-विमर्श, दलित-विमर्ष, आदिवासी-विमर्श और किन्नर-विमर्श के दौर में आत्मकथाओं को विशेष सफलता प्राप्त हुई है।

बोध प्रश्न

- जीवनी किसे कहते हैं?
- संस्मरण के बारे में आप क्या जानते हैं?
- आत्मकथा और जीवनी के अंतर को स्पष्ट कीजिए।

आत्मकथा के प्रकार

साहित्य की अन्य विधाओं की तरह आत्मकथा भी एक महत्वपूर्ण विधा है। इसके अनेक प्रकार हैं। डॉ. कमलेश सिंह के अनुसार तत्व, प्रतिपादित विषय, शैली एवं प्रयोजन के आधार पर आत्मकथा के कई प्रकार देखने को मिलते हैं। तत्वों के आधार पर आत्मकथा के पाँच भेद माने गए हैं - चरित्र प्रधान, कथा प्रधान, परिवेश प्रधान, जीवन दर्शन प्रधान और शैली प्रधान आत्मकथा।

हिंदी साहित्य में आत्मकथा की विकास यात्रा

आत्मकथा विधा वर्तमान की चर्चित और लोकप्रिय विधाओं में से एक है। इसमें लेखक बेबाकी से अपनी दबी हुई पीड़ा को उजागर कर सकता है। हिंदी में आत्मकथाओं की एक लंबी परम्परा रही है। बनारसीदास जैन कृत 'अर्धकथा' अथवा 'अर्धकथानक' (1641) हिंदी की पहली

आत्मकथा मानी जाती है। यह आत्मकथा ब्रजभाषा में है और काव्यात्मक है। यह किसी भारतीय भाषा में लिखी हुई प्रथम आत्मकथा है। जिस समय उन्होंने यह रचना की, उनकी आयु 55 वर्ष थी। जैन परम्परा में जीवन 110 वर्ष का माना जाता है, इसलिए इस आत्मकथा को अर्धकथानक कहा गया। गद्य में आत्मकथा लेखन का आरंभ भारतेन्दु युग में हुआ। भारतेंदु ने स्वयं 'एक कहानी - कुछ आपबीती, कुछ जगबीती' लिखकर इस विधा को पल्लवित किया। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने साहित्यकारों को विभिन्न विधाओं में हिंदी गद्य लेखन के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने 'मेरी जीवन रेखा' लिखकर आत्मकथा के विकास में योगदान दिया। हिंदी में आत्मकथा और संस्मरण लिखने की प्रवृति को प्रोत्साहन देने के लिए प्रेमचन्द द्वारा प्रकाशित 'हंस' के आत्मकथा विशेषांक का बहुत बड़ा योगदान रहा है।

सन् 1946 में राहुल सांकृत्यायन की आत्मकथा 'मेरी जीवन यात्रा' का प्रथम भाग प्रकाशित हुआ। सन् 1949 में दूसरा तथा सन् 1967 में उनकी मृत्यु के उपरांत इसके तीन भाग और प्रकाशित हुए। इस बृहत् आकार की आत्मकथा की विशेषता इसकी वर्णनात्मक शैली है। सन् 1947 के आरंभ में देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की आत्मकथा इसी शीर्षक से प्रकाशित हुई। इस बृह्दकाय आत्मकथा में राजेंद्र बाबू ने बड़ी सादगी और निश्छलता से स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान देश की दशा का वर्णन किया है। सन् 1948 में वियोगी हरि की आत्मकथा 'मेरा जीवन प्रवाह' प्रकाशित हुई जिसमें समाज के निम्न वर्ग का मार्मिक वर्णन मिलता है। हरिवंशराय बच्चन की आत्मकथा हिंदी की सर्वाधिक सफल और महत्वपूर्ण आत्मकथा मानी जाती है। 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' (सन् 1969), 'नीड़ का निर्माण फिर' (सन् 1970), 'बसेरे से दूर' (सन् 1977) और 'दशद्वार से सोपान तक' (सन् 1985) चार भागों में विभाजित उनकी आत्मकथा इस विधा को नए शिखर पर ले गई।

इनके अलावा अमृतलाल नागर की 'टुकड़े टुकड़े दास्तान', रामविलास शर्मा की 'अपनी धरती अपने लोग' तथा रवींद्र कालिया की 'ग़ालिब छुटी शराब' शीर्षक आत्मकथाएँ भी बहुचर्चित हैं।

ओमप्रकाश वाल्मीकि द्वारा लिखी आत्मकथा 'जूठन' को दलित जीवन के यथार्थ की अभिव्यक्ति का उत्कृष्ट उदाहरण है। हिंदी में स्त्री आत्मकथा लेखन की परम्परा जानकी देवी बजाज की आत्मकथा 'मेरी जीवन यात्रा' से आरंभ मानी जाती है। इसके बाद शिवरानी देवी की आत्मकथा सामने आई। कौसल्या बैसन्त्री की आत्मकथा 'दोहरा अभिशाप', मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथा 'कस्तूरी कुंडल बसे' और 'गुड़िया भीतर गुड़िया', चंद्रकिरण सौनरेक्सा की 'पिंजरे की मैना', अमृता प्रीतम की 'रसीदी टिकट', मन्नू भंडारी की 'एक कहानी यह भी' आदि आत्मकथाएं

स्त्री विमर्श की दृष्टि से विशेष उल्लेखनीय है। साहित्यकरों और राजनीतिज्ञों के अलावा व्यवसायियों तथा फ़िल्मी कलाकारों की आत्मकथाएँ भी प्रकाशित हुई हैं। इससे स्पष्ट होता है कि आत्मकथा लोकप्रिय विधा के रूप में उभर रही है।

बोध प्रश्न

- आत्मकथा कैसी घटनाओं पर आधारित होनी चाहिए?
- हरिवंश राय 'बच्चन' की आत्मकथा के 4 खंडों के नाम बताइए।
- 'रसीदी टिकट' किसकी आत्मकथा है?
- मैत्रयी पुष्पा द्वारा रचित आत्मकथाओं के नाम लिखिए?

17.3 पाठ सार

आत्मकथा आधुनिक गद्य साहित्य की प्रचलित एवं लोकप्रिय विधा है। आत्मकथा स्वानुभूति का सबसे सरल माध्यम है। आत्मकथाकार अपने जीवन के मधुर एवं कटु, साधारण एवं असाधारण प्रसंगों तथा गोपनीय सन्दर्भों को पाठक के समक्ष रख देता है। आत्मकथा लेखन साहस का कार्य है क्योंकि इसमें लेखक अपने जीवन की सिलाई नि:संकोच होकर उधेड़ता है। वह अपने जीवन को फिर से एक बार उलट-पलट कर देखता है, निरीक्षण करता है।

आत्मकथा के लिए अंग्रेजी में ऑटोबायोग्राफी (autobiography) शब्द प्रचलित है। आत्मकथा जीवनवृत्त साहित्य का एक भेद है और इसका दूसरा भेद है जीवनी। इन दोनों में मौलिक अंतर यह है कि आत्मकथा स्वयं चरितनायक द्वारा लिखी जाती है और जीवनी किसी दूसरे व्यक्ति या लेखक द्वारा लिखी जाती है।

'एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका' में कहा गया है कि "आत्मकथा, व्यक्ति के जिये हुए जीवन का ब्यौरा है, जो स्वयं उसके द्वारा लिखा जाता है" और "आत्मकथा का मूल सिद्धान्त आत्मविश्लेषण होना चाहिए।" इसी तरह कैसेल ने 'एनसाइक्लोपीडिया ऑफ लिटरेचर' में आत्मकथा को परिभाषित करते हुए कहा है कि "आत्मकथा व्यक्ति के जीवन का विवरण है, जो स्वयं के द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। इसमें जीवनी के अन्य प्रकारों से सत्य का अधिकतम समावेश होना चाहिए।"

आत्मकथा सत्य के धरातल पर लिखी जानी वाली विधा है। इसमें कल्पनाओं का कोई स्थान नहीं होता। आत्मकथाओं से न केवल व्यक्ति विशेष के जीवन के बारे में पता चलता है, अपितु तात्कालिक ऐतिहासिक, सामाजिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों के बारे में भी प्रामाणिक जानकारी प्राप्त होती है। आत्मकथा, जीवनी तथा संस्मरण विधाएँ एक जैसी

लगने पर भी तीनों में सूक्ष्म किंतु मौलिक अंतर होता है। आत्मकथा आदर्श से यथार्थ तक चलने की प्रक्रिया को कहा जा सकता है। आत्मकथा में लेखक आत्मनिरीक्षण करता है। जीवनी व्यक्ति विशेष के बारे में लिखी जाती है। आत्मकथा में व्यक्ति स्वयं के जीवन को उद्घाटित करता है। संस्मरण भी ऐसी ही विधा दिखती है, किंतु यह व्यक्ति के जीवन के किसी एक पक्ष, एक घटना या फिर एक याद पर आधारित होती है।

हिंदी में जैन कवि बनारसी दास की 1641 ई. में रचित 'अर्धकथा' को पहली आत्मकथा माना जाता है। इसके बाद भारतेंदु हरिश्चंद्र ने 'कुछ आपबीती कुछ जगबीती' शीर्षक से आत्मचरित लिखा। 1901 में अंबिका दत्त व्यास ने 'निज वृत्तान्त' नामक आत्मकथा लिखी। स्वामी श्रद्धानंद की आत्मकथा 'कल्याण मार्ग का पथिक' भी हिंदी की प्रारंभिक आत्मकथाओं में विशेष स्थान रखती है। आगे, श्याम सुंदर दास की 'मेरी आत्मकहानी' और राजेंद्र प्रसाद की 'आत्मकथा' इस विधा की प्रमुख कृतियाँ हैं। हिंदी में आत्मकथा विधा को हरिवंश राय बच्चन ने ऊँचाई पर पहुँचाया। उनकी आत्मकथा के चार खंड हैं – 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ', 'नीड़ का निर्माण फिर', 'बसेरे से दूर', 'दशद्वार से सोपान तक'।

बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशकों में हिंदी में स्त्री विमर्श और दलित विमर्श के दौर में कई महत्वपूर्ण स्त्री आत्मकथाएँ सामने आईं। जैसे – प्रतिभा अग्रवाल की 'दस्तक ज़िंदगी की' और 'मोड़ ज़िंदगी का', मैत्रेयी पुष्पा की 'कस्तुरी कुंडल बसे' और 'गुड़िया भीतर गुड़िया' तथा प्रभा खेतान की 'अन्या से अनन्या'। इसी प्रकार दलित आत्मकथाओं में ओमप्रकाश वाल्मीकि की 'जूठन' और मोहनदास नैमिशराय की 'अपने अपने पिंजरे' तथा तुलसीराम की 'मुर्दहिया' और 'मणिकर्णिका' काफी चर्चित हैं।

17.4 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष उपलब्ध हुए –

1. आधुनिक गद्य विधाओं में आत्मकथा एक प्रमुख 'स्मृति आधारित' विधा है।
2. आत्मकथा में लेखक स्वयं का विश्लेषण करता है। यह जीवनी तथा संस्मरण से भिन्न होती है।
3. भारतीय भाषाओं में पहली आत्मकथा बनरसीदास जैन कृत 'अर्धकथा' को माना जाता है, जिसका रूप काव्यात्मक है, गद्य नहीं।

4. हिंदी में विमार्शात्मक लेखन आरंभ होने पर बहुत तेज़ी से आत्मकथाएँ लिखी गईं, क्योंकि हाशिये के समुदायों को अपनी घुटन को व्यक्त करने का यही सबसे उपयुक्त माध्यम लगा।

17.5 शब्द संपदा

1. अंतर्निहित = भीतर समाया हुआ
2. कसौटी = परख या जांच का आधार
3. निरूपण = चित्रण
4. परिपक्व = पका हुआ/ पूर्ण
5. परिष्कृत = साफ़ किया हुआ, सुधारा हुआ
6. परिमार्जित = स्वच्छ किया हुआ
7. पल्लवित = विकसित
8. पुनःसृजित = फिर से रचित
9. ब्योरा = घटना का उल्लेख करना
10. विमर्शात्मक साहित्य= हाशियाकृत समूहों का साहित्य, जैसे स्त्री विमर्श और दलित विमर्श
11. संप्रेषण = किसी बात, विचार आदि को पहुँचाना
12. समयावधि = एक निश्चित काल खंड

17.6 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. आत्मकथा से आप क्या समझते हैं? अपने शब्दों में लिखिए।
2. आत्मकथा के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।

3. जीवनी, संस्मरण एवं आत्मकथा के अंतर पर प्रकाश डालिए।

4. हिंदी में आत्मकथा साहित्य के विकास पर प्रकाश डालिए।

5. आत्मकथा के मूल तत्वों का विवेचन कीजिए।

खंड (ब)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. किन्हीं दो विद्वानों की आत्मकथा सम्बंधी परिभाषाओं पर विचार कीजिये।

2. आत्मकथा की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

3. आत्मकथा साहित्य के प्रकारों पर चर्चा कीजिए।

4. आत्मकथा के वर्ण्य विषय और भाषा शैली पर प्रकाश डालिए।

खंड (स)

I सही विकल्प चुनिए

1. आत्मकथा किस काल की विधा है? ( )

(अ) आदिकाल (आ) आधुनिककाल (इ) रीतिकाल

2. आत्मवृत किस विधा को कहा जाता है? ( )

(अ) संस्मरण (आ) जीवनी (इ) आत्मकथा

3. आत्मकथा में आवश्यक नहीं है? ( )

(अ) कल्पना (आ) यथार्थ (इ) सत्यापन

4. आत्मालोचन किसकी विशेषता है? ( )

(अ) कहानी (आ) उपन्यास (इ) आत्मकथा

5. 'नीड़ का निर्माण' के रचयिता हैं? ( )

(अ) हरिवंश राय बच्चन (आ) यशपाल (इ) अमृतलाल नागर

II रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए

1. आत्मकथा में लेखक का निजी जीवन ……………. हो जाता है।

2. 'पिंजरे की मैना' ……………… की आत्मकथा है।

3. 'दोहरा अभिशाप' ………………. के आत्मकथा है।

4. मन्नू भंडारी की आत्मकथा ………………… है।

5. आत्मकथा का वर्ण्य विषय ……………. के धरातल पर होता है।

III सुमेल कीजिए

i)	स्मृतियों का संग्रह	(अ) नागर
ii)	बसेरे से दूर	(आ) संस्मरण
iii)	जीवन का ब्योरा	(इ) हंस
iv)	पत्रिका	(ई) बच्चन
v)	टुकड़े टुकड़े दास्तान	(उ) जीवनी

17.7 पठनीय पुस्तकें

1. हिंदी आत्मकथाएँ : संदर्भ और प्रकृति. श्याम सुंदर पांडेय.

इकाई 18 : जौनपुर का एक असाधारण साधारण पुरुष (अमृतलाल नागर): एक विश्लेषण

इकाई की रूपरेखा

18.0 प्रस्तावना

18.1 उद्देश्य

18.2 मूल पाठ : जौनपुर का एक असाधारण साधारण पुरुष (अमृतलाल नागर) : एक विश्लेषण

  18.2.1 अमृतलाल नागर का जीवन परिचय

  18.2.2 नागर जी का रचना संसार

  18.2.3 'जौनपुर का असाधारण साधारण पुरुष' का तात्विक विश्लेषण

  18.2.4 नागर जी की आत्मकथा 'टुकड़े-टुकड़े दास्तान' का संक्षिप्त परिचय

18.3 पाठ सार

18.4 पाठ की उपलब्धियाँ

18.5 शब्द संपदा

18.6 परीक्षार्थ प्रश्न

18.7 पठनीय पुस्तकें

18.0 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो! आप जान चुके हैं कि गद्य साहित्य की परिधि बहुआयामी है। इसकी अनेक विधाओं में आत्मकथा भी एक विधा है। आत्मकथा अर्थात जिसमें रचनाकार ने खुद अपने जीवन की कहानी कही हो। इसमें लेखक अपने जीवन का ब्योरा देता है। आत्मकथा तटस्थता और सत्यता के आधार पर खड़ी विचारों की शृंखला है। आत्मकथा में जहाँ लेखक का अपना निजी अनुभव होता है, वहाँ यह एक ऐसा माध्यम भी है जिसके जरिए तत्कालीन समाज और परिस्थिति के स्वरूप से रूबरू हुआ जा सकता है। आत्मकथा में लेखक किसी व्यक्ति को, घटना चक्र को, वातावरण के साथ व्यक्तिगत जीवन के घात-प्रतिघात को लेखन के विषय के रूप में अपना सकता है। हिंदी के आत्मकथा साहित्य में अमृतलाल नागर की आत्मकथा 'टुकड़े टुकड़े दास्तान' लीक से हटकर और विशिष्ट है। लेखक ने ऐतिहासिक तारीखों, घटनाओं और तथ्यों को

प्रस्तुत करते हुए अपने जीवन की घटनाओं को चित्रित किया है। अमृतलाल नागर की इस विशेषता की ओर इंगित करते हुए प्रो. एस.पी. दीक्षित कहते हैं, “उन्होंने लखनऊ के जनजीवन को ओढा-बिछाया, इसको पूरी तरह से जिया, उसके पूरे इतिहास और पूरी सामाजिक संरचना को समझा और हर वर्ग से निकट संबंध स्थापित कर तब उसे लेखन में परिणत किया।” यह आत्मकथा की विशेषता होती है कि उसे पढ़कर पाठक न केवल रचनाकार के जीवन की उपलब्धियों को जाने, बल्कि तात्कालिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक स्थितियों को भी समझे। नागर जी की आत्मकथा इस तथ्य पर खरी उतरती है।

18.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप -

- अमृतलाल नागर के जीवन और व्यक्तित्व बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- अमृतलाल नागर के कृतित्व के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- अमृतलाल नागर की आत्मकथा ‘टुकड़े-टुकड़े दास्तान’ से परिचित हो सकेंगे।
- नागर जी की आत्मकथा के अंश ‘जौनपुर का असाधारण साधारण पुरुष’ की विषयवस्तु से अवगत हो सकेंगे।
- ‘जौनपुर का असाधारण साधारण पुरुष’ का तात्विक विश्लेषण कर सकेंगे।

18.2 मूल पाठ : जौनपुर का एक असाधारण साधारण पुरुष (अमृतलाल नागर) एक विश्लेषण

आधुनिक हिंदी साहित्य में अमृतलाल नागर का विशिष्ट स्थान है। वे एक सहृदय व्यक्ति थे। जीवन के रंगमंच पर उन्होंने अनेक भूमिकाएँ निभाईं। नागर जी अलमस्त, बहुभाषाविज्ञ, ऐतिहासिक-पौराणिक विषयों के अध्येता और प्रगतिशील विचारक थे।

18.2.1 अमृतलाल नागर का जीवन परिचय

अमृतलाल नागर का जन्म 17 अगस्त, 1916 को मध्यम वर्ग के एक सम्मानित गुजराती परिवार में आगरा के गोकुलपुरा मोहल्ले में हुआ। नागर जी को उच्च आदर्शों और संस्कारों वाले माता-पिता का संरक्षण मिला। अमृतलाल नागर जब उन्नीस वर्ष के थे तब इनके पिता का आकस्मिक निधन हो गया। इससे किशोरवय में ही घर की जिम्मेदारी नागर जी के कंधों पर आ पड़ी। अमृतलाल नागर की पढ़ाई हाईस्कूल तक ही हो पाई। किंतु इन्होंने स्वाध्याय द्वारा

साहित्य, इतिहास, पुराण, पुरातत्व, मनोविज्ञान व समाजशास्त्र का अध्ययन किया। भारतीय भाषाओं के प्रति जिज्ञासा के कारण हिंदी, गुजराती, मराठी, बंगला भाषाओं पर पूर्ण अधिकार पाया। अंग्रेजी में भी कुशल थे। इन्होंने जीवनयापन के लिए पहले नौकरी की। फिर स्वतंत्र लेखन तथा फिल्म लेखन का भी ख़ासा काम किया। नागर जी ने 'चकल्लस' का संपादन भी किया। आकाशवाणी, लखनऊ में ड्रामा प्रोड्यूसर के पद पर भी रहे। नागर जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उनका सरल-सहज व्यक्तित्व तथा उनकी ज़िन्दादिली और विनोदी वृत्ति सबको आकर्षित करती थी। नागर जी के घर में साहित्यकारों का जमावडा लगा रहता था। उनकी पुत्री अचला नागर कहती हैं कि हमारे घर हर दिन होली होती थी; भांग, कचोरी और उल्लास के लिए त्योहारों की प्रतीक्षा नहीं करनी पडती थी। इससे स्पष्ट होता है कि वे जिंदादिल इंसान थे। प्रो.विष्णुकांत शर्मा उनके व्यक्तित्व के बारे में लिखते हैं, "गोरा रंग, प्रतिभा-प्रदीप्त चौड़ा माथा, मैत्री और आत्मीयता से झाँकती आँखें, चश्मा जिनका स्वाभाविक संगी है। तीखी नाक, भरा चेहरा, पान से रंगे होंठ, मझोला कद, दोहरा बदन - ऐसे थे नागर जी, जो जहाँ बैठ जाएँ, वहीं जीवन लहरा दें।" अपनी आत्मकथा 'टुकड़े-टुकड़े दास्तान' में 'मेरा बचपन' के अंतर्गत नागर जी अपने बचपन को याद कर दिलचस्प किस्सा कहते हैं - बचपन सुखमय था। बीते दिन भले ही सुख भरे हों या दुख भरे। सड़क पर हवेली थी। हवेली आधी घर और आधी बैंक थी। घर के नीचे सब्जी-फरोशों की सात आठ दुकानें। सवेरे से ही चहल-पहल। झगड़े। कभी-कभी देखने में बड़ा रस आता था। उनके झगड़े के संवाद और गालियाँ सुनने को मिलते थे जिन्हें अकेलेयप्र में अक्सर दोहराया करते थे। संयोग से पिताजी ने सुन लिया और गालों पर चार-पाँच तमाचे पड़े। तब नागर जी को समझ आया कि ऐसे शब्द भी होते हैं जिन्हें गालियाँ कहा जाता है और उन्हें अच्छे घरों के लड़के मुँह से भी नहीं निकालते। 'टुकड़े-टुकड़े दास्तान' के अलग अलग टुकड़ों या अंशों में उन्होंने अपने निजी जीवन, परिवार, साहित्यिक मित्रों, लेखन और महान साहित्यकारों से मुलाकातों का मर्मस्पर्शी वर्णन किया है। अमृतलाल नागरा संकीर्ण विचारों से परे थे। जाति-पांति के भेदभाव से बहुत दूर। उन्होंने अपने बच्चों को भी मानवता का पाठ पढ़ाया। अचला नागर बताती हैं, "वे हमेशा कहते थे, हमारे यहाँ पूजा होती है, होती रहेगी। हमारा धर्म मानवता है। मेरे स्कूल के फ़ार्म में धर्म के कॉलम में उन्होंने मानवता लिखवाया। वे हमेशा कहते थे कि किसी से मिलते समय हमेशा 'जयहिंद' बोलो, क्योंकि इससे धर्म का बोध नहीं होता। मानवता और देश उनके लिए सर्वोपरि थे।" नागर जी ने हमेशा संस्कारों की शिक्षा को महत्व दिया।

डॉ. रविरंजन ने अमृतलाल नागर और डॉ. रामविलास शर्मा के परस्पर अंतरंग पत्राचार

के हवाले से यह बताया है कि नागर जी मुंबई रोजी-रोजगार के लिए गए थे। अपनी आत्मकथा 'टुकड़े-टुकड़े दास्तान' में मुंबई यात्रा, प्रवास और रोजगार पर उन्होंने बहुत ही रोचक और दिलचस्प संस्मरण लिखे हैं। वे लिखते हैं : "5 मार्च, सन 1940 को मैं पहली बार मुंबई गया था। इतने दिनों में मुंबई कहाँ-से-कहाँ पहुँच गई है! ...धर्मशाला में जगह नहीं मिली पर चवन्नी रोज पर एक बड़े कमरे में कई मेहमानों के साथ बिस्तर डालकर पड़ रहने को जगह मिल गई। ...याद रखिएगा, मैं सन 1940 की बात कर रहा हूँ, अब तो छोटी जेब वालों को मुंबई रहने के लिए जगह भी नहीं देती ...मैंने रंग-बिरंगी मुंबई के कुछ रंग देखे हैं। दोनों तरह के अनुभव अच्छी तरह से पाए ...कीमती स्वादिष्ट पदार्थों के अति भोजन से बदहजमी की दवा के लिए परेशान हुआ हूँ। साथ ही पैसों के अभाव में महीनों आधे पेट खाकर संतोष किया है, तीन दिन तक फाके भी किए हैं। इस महानगरी में जहाँ अनेक प्रकार के ढंग देखे, वहाँ ही ऐसे निष्काम सेवाव्रती साधु भी देखे जो बिना भेद-भाव सबका भला करने में ही संलग्न रहते हैं।" (टुकड़े-टुकड़े दास्तान, पृ. 83-84)। आगे 'सात वर्ष का फिल्मी अनुभव' शीर्षक टुकड़े में नागर जी ने लिखा हैकि "सन'40 में मेरे फिल्म क्षेत्र में प्रवेश करने का समय युगसंधि का था। पुरानी थियेट्रिकल कंपनियों के अभिनेता, बाजारू गानेवालियाँ और लेखक मुंशी उस समय बहुतायत में थे। आमतौर पर शोहदापन अधिक था, लेखक मुंशी सेठों के मुसाहबमात्र थे। कहानियाँ धूम-धड़ाके और मारपीट की ही बना करती थीं। भोंडेपन और भोगविलास की ही धूम थी। कुछ स्टूडियोज में सेठों ने अपने लिए विलास कक्ष भी बना रख्खे थे। न्यू थिएटर्स, बांबे टाकीज और सागर मूवीटोन के स्वच्छ वातावरण से सामाजिक कहानियाँ और बंगला, गुजराती के कतिपय श्रेष्ठ उपन्यासों के आधार पर फिल्में बन चुकी थीं। प्रेमचंद जी गए और निराश लौटे, उग्रजी भी जस-तस निभाकर लौट आए थे। सुदर्शनजी अलबत्ता जमे हुए थे और उन दिनों मुंबई में ही थे। कविवर प्रदीपजी ने नई-नई चमक पाई थी। ...आरंभ से सौभाग्यवश मुझे भले लोगों के बीच रहने और काम करने का अवसर मिल गया। आज के दो ख्यातनामा निर्माता-निर्देशक श्री महेश कौल और श्री किशोर साहू उस समय मेरे अंतरंग साथी बने। ये दोनों ही कोरे फिल्मी-जीव न थे। दोनों ही ने देशी-विदेशी साहित्य का अध्ययन किया था और लघु-कथाएँ भी लिखते थे। ...मैंने किशोर की प्रारंभिक फिल्मों के लिए संवाद-लेखन कार्य किया। फिल्म में एक-एक दृश्य के लिए हम लोग बहस करते थे। यह सुविधा अन्य किसी भी निर्माता-निर्देशक के साथ मुझे प्राप्त नहीं हुई। अपने सात वर्ष के फिल्मी अनुभव में मैंने यह भी पाया कि निर्माता-निर्देशक प्रायः उसी रस प्रसंग को सराह पाते थे जो वे किसी न किसी हालीवुड फिल्म में देख चुके होते थे। कहानी अथवा चरित्र-चित्रण को समझने की बुद्धि बहुतों में तनिक भी नहीं थी।" (वही, पृ. 124-26)।

नागर जी ने 'बहूरानी', 'संगम', 'कुँवारा बाप', 'किसी से न कहना', 'पराया धन', 'उलझन', 'राजा', 'वीर कुणाल', 'सावन', 'कल्पना' आदि लगभग अठारह फिल्मों में संवाद-लेखन किया और फिल्मी-उद्योग में 'डबिंग' का काम पहले-पहल और वह भी भारी सफलता के साथ उन्होंने ही किया। पहले उन्होंने दो रूसी फिल्में हिंदी में डब कीं, बाद में एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी की फिल्म 'मीरा' की तमिळ से हिंदी में डबिंग की। किशोर साहू की मित्रता के कारण उन्होंने 'कुँवारा बाप', 'आगे कदम' और 'वीर कुणाल' में बतौर अतिथि कलाकार के रूप में अभिनय भी किया।

अमृतलाल नागर का निधन 23 फरवरी 1990 को हुआ।

बोध प्रश्न

- अमृतलाल नागर का जन्म कहाँ हुआ था?
- अमृतलाल नागर के व्यक्तित्व के दो गुण बताइए।
- नागर जी के फिल्मी दुनिया के अनुभव के बारे में बताइए।

18.3.2 नागर जी का रचना संसार

अमृतलाल नागर के लिए लेखन कार्य साधना तुल्य कार्य था। वे इसे लगन और परिश्रम से करना चाहते थे। नागर जी ने तेरह वर्ष की आयु से लिखना आरंभ किया। बचपन से ही पढ़ने के शौकीन थे। विद्वानों के सान्निध्य में बचपन बीता, पत्र-पत्रिकाएँ घर आती थीं, इन्हीं कारणों से लेखक बनने की इच्छा बलवती हुई। अमृतलाल नागर ने हिंदी साहित्य को ही नहीं बल्कि अन्य भारतीय भाषा साहित्य को भी समृद्ध किया। नागर जी का साहित्यकार व्यक्तित्व एक लोकवादी व्यक्तित्व है। उनके लेखन की जड़ें जन-जीवन के बीच गहराई से जमी हुई हैं। नागर जी ने कविता के सिवा लगभग सभी विधाओं में लेखन कार्य किया। नागर जी किस्सागोई में माहिर थे। इन पर सबसे अधिक प्रभाव प्रेमचंद और शरतचंद्र का पड़ा। ‘टुकड़े टुकड़े दास्तान’ में अमृतलाल नागर लिखते हैं “शरद बाबू हिंदी मजे की बोल लेते थे। उन्होंने मुझे एक सीख दी थी- जो लिखना अपने अनुभव से लिखना।” इस सीख को नागर जी ने अपने लेखन में बखूबी अपनाया। इनकी हर रचना में यथार्थ और सत्य झलकता है। अमृतलाल नागर की पत्नी उनके लेखन की विशेषता को इस प्रकार बताती हैं- “नागर जी लेखन के लिए खूब सामग्री जुटा लेते, जिस परिवेश पर लिखते उस स्थान पर जाकर उस स्थान का अध्ययन-निरीक्षण करने के बाद ही लिखते।” इससे स्पष्ट होता है कि परिवेश चाहे ऐतिहासिक-पौराणिक हो, चाहे वर्तमान, उसकी तह में जाकर ही वे लिखना आरंभ करते थे।

अमृतलाल नागर ने महाकाल (भूख), बूँद और समुद्र, शतरंज के मोहरे, सुहाग के नुपूर, अमृत और विष, सात घूँघट वाला मुखड़ा, एकदा नैमिषारण्ये जैसे कालजयी उपन्यास लिखे। ज्ञान, जीवन दर्शन, यथार्थ - सभी इन उपन्यासों में समाहित हैं। इसी प्रकार उन्होंने अविस्मरणीय कहानियाँ लिखीं जो वाटिका, अवशेष, तुलाराम शास्त्री, आदमी, नहीं! नहीं! पाँचवाँ दस्ता, एक दिल हज़ार दास्ताँ, एटम बम, पीपल की परी, कालदंड की चोरी, मेरी प्रिय कहानियाँ आदि संकलनों के रूप में प्रकाशित हुईं। नागर जी बहुआयामी दृष्टिकोण के रचनाकार थे। इनके द्वारा लिखे गए नाटक भी हिंदी साहित्य की धरोहर है। यथा - युगावतार, चंदन वन, चक्क सरदार, सीढ़ियाँ और अँधेरा, उतार चढ़ाव, नुक्कड़ पर, चढ़त न दूजो रंग आदि। अमृतलाल नागर ने कई संस्मरण भी लिखे। जैसे - गदर के फूल, ये कोठेवालियाँ, जिनके सतह जिया। इसके अतिरिक्त उन्होंने स्मृतियों के टुकड़ों को आत्मकथा के पिटारे में भी सहेजा है - टुकड़े टुकड़े दास्तान।

नागर जी एक सफल बाल साहित्यकार भी थे। बाल साहित्य लिखने के लिए आवश्यक है बच्चों जैसी कोमल भावना और पारदर्शी व्यक्तित्व। नागर जी इन गुणों से लैस थे। वे कहते हैं - बच्चे दर्पण की तरह अपने देश, समाज और घर के संस्कारों को झलकाते हैं। बच्चे जीवन देते हैं सबसे ज्यादा ताज़गी मुझे बच्चों से ही मिलती है। नटखट चाची, बजरंगी नौरंगी, बाल महाभारत आदि बहुत सा बाल साहित्य लिखा। इतना ही नहीं, नागर जी ने मोपासां, चेखव, ला बेयर, के. एम. मुंशी और मामा वरेरकर की रचनाओं के अनुवाद भी किए। उन्होंने सुनीति, सिनेमा समाचार, अल्ला कह दे, चकल्लस (फरवरी, 1938 से 3 अक्टूबर, 1938, साप्ताहिक), नया साहित्य (1945), सनीचर (1949) और प्रसाद (1953-54) नामक मासिक पत्रों का संपादन भी किया।

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि अमृतलाल नागर बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। सहज, सरल प्रसंग के अनुकूल भाषा के चितेरे। इनके साहित्य में मुहावरों, लोकोक्तियों, विदेशी तथा देशज शब्दों का प्रयोग हुआ है। भावात्मक, वर्णनात्मक, शब्द चित्रात्मक शैली के प्रयोग के कारण उनकी रचनाएँ जीवंत हो उठती हैं। यह कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि “नागर जी अपने व्यक्तित्व और सामाजिक अनुभवों की कसौटी पर विचारों को कसते तथा जितनी मात्रा में उन्हें ख़रा पाते, उतनी ही मात्रा में ग्रहण करते थे।” प्राचीन और आधुनिक विचारों में सामंजस्य करना उनकी विशेषता थी। इनकी रचनाओं के पात्र अपने परिवेश के अनुसार पाठक से संवाद करते हैं।

अमृतलाल नागर पूरे मन से लिखते थे। नागर जी का कहना था कि लेखन ही मेरा धन है। नागर जी हिंदी साहित्य की एक महान हस्ती थे।

बोध प्रश्न

- अमृतलाल नागर का लेखन कार्य कैसा था?
- अमृतलाल नागर द्वारा रचित उपन्यासों के नाम बताइए।
- अमृतलाल नागर की रचनाएँ जीवंत क्यों हो उठती थीं?

18.2.3 'जौनपुर का असाधारण साधारण पुरुष' का तात्विक विश्लेषण

अमृतलाल नागर जी ने अपनी आत्मकथा 'टुकड़े टुकड़े दास्तान' में 'जौनपुर का असाधारण साधारण पुरुष' के रूप में पागलों की सेवा करने वाले हठयोगी बाबा रामजी के अपने ऊपर पड़े प्रभाव का बेबाक वर्णन किया है। नागर जी कहते हैं कि 'मनुष्य के जीवन में कभी-कभी अकल्पनीय घटनाएँ घट जाती हैं। सहसा कोई ऐसा मिल जाता है, जिससे हमारा जीवन पूरी तरह से परिवर्तित हो जाता है। ऐसी ही एक घटना मेरे साथ हुई। मेरे जीवन में ऐसा अद्‌भुत परिवर्तन आया, जिसकी कल्पना भी नहीं कर सकता था।'

बोध प्रश्न

- अमृतलाल नागर जी ने अपनी आत्मकथा 'टुकड़े टुकड़े दास्तान' में किसका वर्णन किया?

18.2.3.1 विषय वस्तु

यह उन दिनों की बात है जब अमृतलाल नागर फिल्मों का लेखन के सिलसिले में वे मुंबई आ गए थे। वहाँ गीतकार कैलाशनाथ शिवपुरी से नागर जी की मित्रता हुई। घर के संस्कारों तथा जोगी फकीरों की चमत्कारी कहानियाँ सुनकर उनका मन कुछ रहस्य रोमांच की खोज में निकल पड़ा। नागर जी को मित्र ने एक बाबा फकीर के बारे में बताया। पन्नालाल हाई स्कूल की इमारत के अंदर अंधेरा गलियारा पार करके नागर जी और उनके मित्र बाबा के द्वार तक पहुँच गए। वहाँ क्या देखते हैं कि एक लंगोटीधारी कसरती बदन का अत्यंत साधारण लगने वाला व्यक्ति उनके सामने खड़ा है। गौर से देखा, वह व्यक्ति अत्यंत साधारण सा लग रहा था, लेकिन उनकी आँखें टॉर्च की तरह चमक रही थीं। नागर जी ने उन्हें प्रणाम किया, तो बाबा बोल पड़े "भले आए रामजी। कल कैलास रामजी बोले कि आप तो बड़े राम भगत हैं। हमने सोचा कि हम और आप दोनों गोमती मैया का पयपान करत हैं, तो हम दोनों का संजोग जरूरे बनना चाही।" लंगोटीधारी की देहाती मिश्रित खड़ी बोली नागर जी को बड़ी अटपटी लग रही थी, लेकिन उसमें एक रोचकता थी। वे लंगोटीधारी बाबा के चुंबकीय व्यक्तित्व से बंधते चले गए। कई बार

उनकी बातों से नागर जी को डर भी लगता था। एक दिन उन्होंने निश्चय किया कि इस बाबा में कुछ चमत्कार है और मैं कभी उनसे मिलने नहीं जाऊँगा। लेकिन यह निश्चय ज्यादा देर तक नहीं रहा, क्योंकि एक अद्भुत व्यक्तित्व नागर जी को खींच रहा था। लगभग पंद्रह दिनों तक वे बाबा के सान्निध्य में रहे, उनसे कई बातें सीखीं, जैसे- भेदभाव न करो, सभी जीवों में ईश्वर और गुरु का वास होता है। इस व्यवहार का अमृतलाल नागर पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। उन्होंने लिखा है कि मैं संकीर्ण सोच से बाहर निकलने में सफल हुआ।

बाद में, नागर जी मुंबई छोड़कर लखनऊ आ गए। कुछ समय बाद संयोग से मुंबई में फिर एक बार बाबा से भेंट हुई और नागर जी ने उनसे अनुरोध किया कि आप लखनऊ आ जाइए, वहाँ एक पागलखाना खुलवा देंगे। इस अनुरोध को बाबा ने स्वीकार किया और लखनऊ में गोमती किनारे नागर जी के सहयोग से पागलों की सेवा के लिए एक जगह बना दी गई। वहाँ बाबा गलियों में फिरने वाले विक्षिप्तों की सेवा करते थे ।

नागर जी कहते हैं कि बाबा के परलोक सिधारने के बाद भी वे मेरे साथ हैं। जाने-अनजाने में यदि कोई गलती हो भी जाती है, तो मेरे अंतर्मन में बैठे बाबा डांट लगा देते हैं। उनको नमन करते हुए नागर जी लिखते हैं कि “क्या जौनपुर ने ऐसा बड़ा आदमी और भी कोई पैदा किया है? उस लंगोटधारी पागल को और उनकी जन्मभूमि के कण-कण को सादर, सविनय, सप्रेम नमस्कार करता हूँ।”

बोध प्रश्न

- अमृतलाल नागर बाबा से कैसे प्रभावित हुए?

18.2.3.2 चरित्र चित्रण

अमृतलाल नागर ने बाबा के रहस्यपूर्ण व्यक्तित्व का चित्रण बहुत सूक्ष्मता से किया है। वे प्रभु जी या राम जी अर्थात लंगोटीधारी रहस्यमय व्यक्तित्व वाले बाबा से मिले। पागलों की सेवा करने वाले बाबा से वे बहुत प्रभावित हुए। उनका “मुँह पोपला, हजामत बढ़ी हुई, मगर आँखें उस अँधेरे में भी टॉर्च की तरह चमक रही थीं।” नागर जी ने लिखा है कि “वह व्यक्ति मुझे अच्छा तो लगा, किंतु मन ही मन मैं सहम भी गया था।” कोठरी के एक कोने में एक जवान भैया बैठा हुआ बड़े प्रेम से सिलौटी सेवा कर रहा था। नागर जी कहते हैं “वह व्यक्ति मेरे लिए अटपटा होता चला जा रहा था।” प्रभु जी के विचित्र व्यवहार के बाद निश्चय किया कि वे उस अद्भुत व्यक्ति अर्थात प्रभु जी से मिलने नहीं जाएँगे। एक दिन पूजा कर रहे थे, पैसों की तंगी के चलते पत्नी से कहा सुनी हो गई और नागर जी ने झुंझलाकर ठाकुर जी की मूर्ति पटक दी। सारा दिन परेशानी में बीता। शाम होते ही मन में हलचल हुई और चल पड़े बाबा से मिलने। प्रभु जी ने

नागर जी के कष्ट का वर्णन इस प्रकार किया- "क्यों राम जी ठाकुर जी ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है? उनसे क्यों नाराज होते हो?" यह सब सुनकर नागर जी के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। नागर जी को प्रभु जी के सान्निध्य से घबराहट होती थी, पर एक मोह था। बाबा का व्यक्तित्व चुम्बकीय था, जिससे नागर जी सम्मोहित थे। नागर जी को बाद में यह भी पता चला कि प्रभु जी या राम जी जौनपुर जिले के जुब्बापूरा निवासी हैं तथा सुभाषचंद्र बोस के बड़े भक्त हैं। उन्हें लखनऊ बुलाकर नागर जी ने उनके लिए विधिवत ऐसी जगह की व्यवस्था की, जहाँ बाबा गली में भटकते विक्षिप्त स्त्री-पुरुषों को लाकर इलाज करते थे। नागर जी के लिए वे अविस्मरणीय एवं प्रेरणा स्रोत रहे। नागर जी उस महान विभूति को स्मरण करते हुए लिखते हैं - वह महापुरुष आज भी मेरे लिए जीवित है और मुझसे बातें भी करता है। जब कोई गलत काम अपनी अहंता के वश कर भी जाता हूँ या करने लगता हूँ तो डांट भी देता है। अत: कहा जा सकता है कि नागर जी के जीवन में एक अद्‌भुत व्यक्तित्व का महत्वपूर्ण स्थान रहा है।

बोध प्रश्न

- रहस्यमय बाबा का चरित्र चित्रण कीजिए।
- नागर जी ने प्रभुजी से न मिलने का निश्चय क्यों किया?
- बाबा से नागर जी ने क्या अनुरोध किया?

18.2.3.3 आत्मालोचन और आत्म-विश्लेषण

आत्मकथा की विशेषताओं को ध्यान में रखा जाए तो अमृतलाल नागर की आत्मकथा में संकलित दास्तानों में आत्मविश्लेषण, आत्मालोचन, घटनाक्रम, आत्माचरित तथा समाज के लिए प्रेरणा जैसी आत्मकथा-लेखन की सभी विशेषताओं को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ है। नागर जी ने अपने बारे में बेबाकी से लिखा है- "मेरे गालों की हड्डियाँ उभरी हैं, जो विद्रोही व्यक्तित्व की सूचक हैं। नाक नुकीली है, देख कर कोई भी समझदार यह मान जाएगा कि नाक वाला है।" आत्मविश्लेषण भी किया है- "चांद में हल्का गंजापन का घूमन भी लग चुका है। माँग बीच से दो भागों में विभाजित करता हूँ। यह रही सिर की बात। सिर पर रोज ही शाम को भंग भवानी भी लहराती है।" इस प्रकार अपना सेल्फ़ पोर्ट्रेट कागज़ पर उतारने की कोशिश की है- "गलत ही सही पर अब कोई क्या करे। सब मिलाकर चेहरा बुरा नहीं, लोगों का ध्यान एक बार तो अपनी ओर खींच लेता हूँ। देखते ही किसी को विश्वास हो जाता है कि आदमी भला और शरीफ है, लेकिन आईने के सामने जो मुख देखा आपना, मुझसे बुरा न कोय"। वे स्वीकार करते हैं कि "मैं महत्वाकांक्षी हूँ। धनी बनने की लालसा है, पर धन कमाने की महत्वाकांक्षा नहीं। यश और आदर का सदा भूखा रहा। तमन्ना जरूर है कि एक दिन अपनी किताबों की रोटी पर निर्वाह करने लायक बन जाऊँ"। आत्मालोचन और आत्म विश्लेषण श्रेष्ठ आत्मकथा लेखन की अनिवार्य

शर्त है। नागर जी के आत्मविश्लेषण का एक प्रसंग देखिए। एक बार लंगोटीधारी प्रभुजी से झाड़ू लगाने का आदेश पाकर नागर जी के बाबू मन को ठेस पहुँची। फिर भी झोंपड़ी साफ़ की। नागर जी ने अपनी कमी और खूबी, गुण-दोषों को बिना किसी आवरण के सार्वजनिक किया है। एक श्रेष्ठ आत्मकथाकार की यही विशेषता है कि वह व्यक्तिगत जीवन को सार्वजनिक कर देता है।

18.2.3.4 घटना वर्णन

प्रिय छात्रो! आपको बताया जा चुका है कि नागर जी का नाता फ़िल्मी दुनिया से भी था। अतः 1943 में लेखन कार्य करते हुए मुंबई में रहते थे। वहाँ कैलाशनाथ 'मतवाला' से मुलाकात हुई जो परिस्थितियों के मारे एक गीतकार बन गए थे। मुंबई जैसे महानगर में वे अक्सर ऊँची पहुँच वाले फकीरों की खोज में रहते थे। इससे जुड़ी एक-एक घटना का लेखक ने सजीव रेखांकन किया है। कुछ तो घर के संस्कारों के कारण और कुछ जोगी फकीरों के चमत्कारों की कथाएँ सुन-सुनकर तथा जिज्ञावाशा उनका लेखक मन चमत्कारी व्यक्तियों की ओर मुड़ने लगा। नागर जी पागलों की सेवा करने वाले हठयोगी बाबा से बहुत प्रभावित थे। बाबा जौनपुर के निवासी थे। उनसे नागर जी की भेंट मुंबई में पन्नालाल हाई स्कूल की कोठारी में हुई थी। उस बिरले पुरुष ने नागर जे एसे कहा - "हमें लगा कि मुंबई (मुंबई) में कोनों पगला भला मानुस हमको बुलावता है, सो हम हियें चले आये।" वे पागलों की सेवा करने वाले हठयोगी थे। नागर जी के सहयोग से लखनऊ में गोमती के कुड़िया घाट पर बाबा का पागलखाना खुला।

नागर जी ने अपने जीवन पथ के साथियों का ऐसा रेखाचित्र खींचा है कि मानो वे पात्र पाठक से सीधे संवाद करते हैं। एक दिन नागर जी ने उस असाधारण पुरुष के पास एक पागल को बैठा पाया। प्रभु जी ने बताया कि हमारे गुरु जी ने हमें आज्ञा दी थी कि हर पागल को मेरा ही रूप समझ लो - "तौन ई हमार गुरुदेव हैं राम जी।" फिर उन्होंने नागर जी को पागल द्वारा की गई वमन को धोने की आज्ञा दी। नागर जी ने एक सामान्य व्यक्ति की तरह लिखा है कि आदेश मात्र से ही मुझे उबकाई आने लगी। अमृतलाल नागर कहते हैं "मात्र पंद्रह दिनों के उनके सान्निध्य में मेरी चिंतन परिधि को संकीर्ण दायरे से निकाल कर व्यापक बना दिया।"

18.2.3.5 यथार्थ का निरूपण

आत्मकथा की विशेषताओं को लेकर 'टुकड़े-टुकड़े दास्तान' पर विचार किया जाए तो स्पष्ट होता है कि नागर जी ने कहीं भी अतिशयोक्ति और कल्पना का सहारा नहीं लिया है। महिमामंडन से कोसों दूर। जो भोगा, जो जिया, जिनके साथ जिया, उसे एकदम सपाट लिखा है। पारदर्शी लेखन आत्मकथा के लिए अत्यंत आवश्यक है। उसके अनुरूप इस रचना में वर्णित हर घटना आईने में प्रतिबिंबित सी प्रतीत होती है। कुल मिलाकर, नागर जी ने अपने बारे में बेबाकी से लिखा है। अपने परिवेश और जीवनपथ में मिलने वाले लोगों पर किसी प्रकार का न

कटाकषा किया, न कीचड़ उछाला। यथार्थ को लिखा। टुकड़े टुकड़े दास्तान को सत्य के धरातल पर खड़ा किया।

बोध प्रश्न

- अमृतलाल नागर की आत्मकथा का नाम क्या है?
- नागर जी चमत्कारी लोगों के चक्कर में क्यों रहते थे?
- रहस्यमय बाबा से नागर जी की मुलाकात कहाँ हुई?
- नागर जी हठ योगी बाबा से क्यों प्रभावित थे?

18.2.4 नागर जी की आत्मकथा 'टुकड़े-टुकड़े दास्तान' का संक्षिप्त परिचय

'टुकड़े-टुकड़े दास्तान' नागर जी द्वारा अपने विषय में अलग अलग समय पर लिखे गए सैंतीस प्रसंगों का संकलन है। इन प्रसंगों में अपने जीवन, परिवार, मित्रों, साहित्यकारों से भेंट आदि का मर्मस्पर्शी वर्णन है। अलग-अलग शीर्षकों में होने के बाद भी इन्हें आत्मकथांश कहना ही उचित होगा। 'टुकड़े टुकड़े दास्तान' के प्रकाशकीय वक्तव्य में यह कहा गया है कि "आत्मकथाएं बहुत लिखी जाती हैं और उनमें से कम ही पसंद की जाती हैं और जीवित रहती हैं परंतु प्रख्यात लेखक अमृतलाल नागर की लीक से हटकर प्रस्तुत आत्मकथा अपने-आप में विशिष्ट है। इसमें ऐतिहासिक ढंग से तारीखें और तथ्य प्रस्तुत न करके उन्होंने अपने जीवन की उन विविध घटनाओं को चित्रित किया है जो उनके जीवन में महत्वपूर्ण रही हैं, जिन्होंने उनके लेखन को दिशा दी है और व्यक्ति, परिवार तथा समाज से उनके संबंधों को प्रभावित किया है। इन दास्तानों में वे अनेक महत्वपूर्ण लेखक तथा कलाकार भी शामिल हैं जो लखनऊ में उनके समकालीन तथा उनके घनिष्ट मित्र थे और वे अनेक लोग भी जो अन्य नगरों में उनके निकट संपर्क में आए।"

इस दास्तान के 'आईने के सामने' शीर्षक टुकड़े के अंतर्गत नागर जी ने अपने चेहरे मोहरे और स्वभाव का वर्णन किया है। नागर जी रेखाचित्र अंकन में बेजोड़ हैं। उन्होंने अपने गालों की उभरी हुई हड्डियों को विद्रोही स्वभाव का सूचक माना। वे स्वीकार करते हैं कि मैं महत्वाकांक्षी हूँ। धनी बनने की लालसा है और धन कमाने की महत्वाकांक्षा नहीं। यश और आदर का सदा से भूखा रहा। नागर जी कहते हैं कि मेरी एक तमन्ना जरूर है कि एक दिन अपनी किताबों की रॉयल्टी पर ही निर्वाह करने लायक बन जाऊं और जी चाहने पर किताब खरीद सकूं। वे यह भी बताते हैं कि जब व्यक्तिगत या सामाजिक अन्याय के कारण मेरे स्वाभिमान को करारा आघात लगता है, उस समय घर, परिवार, संसार किसी से भी मेरा समझौता नहीं हो सकता। 'मेरा बचपन' में उन्होंने अपने बचपन को याद किया है। 'मेरे आदि गुरु' में नागर जी की गुरु भक्ति तथा उनके जीवन में गुरु के स्थान का रोचक वर्णन हुआ है। परीक्षा के दिनों में नागर जी के गुरु

विद्यार्थियों के घर सुबह चार बजे जाकर देखते थे कि बच्चे पढ़ रहे हैं या नहीं। 'तू जालिया बनेगा' में नागर जी ने अपने नटखट स्वभाव और बुरी आदत का खुलासा किया है। वे कहते हैं- जाली दस्तखत बनाने पर पिताजी द्वारा खूब पिटाई हुई थी। उस मार से उनका अंतर तो हिल उठा था किंतु यह बुरी आदत सदा के लिए छूट गई। इसी प्रकार 'बाबूजी' में नागर जी ने अपने पिताजी की व्यवस्था, अनुशासन और लोकप्रियता को याद किया है। 'मैं लेखक कैसे बना' में साइमन कमीशन के खिलाफ निकले जुलूस पर किए गए प्रहार की चर्चा की है। वहाँ से आकर एक तुकबंदी की "कब लोग कहे लाठी खाए करें, कब लोग कहे जेल सहा करिए।" यह कविता 'दैनिक आनंद' में छपी। इससे नागर जी की ख़ुशी का ठिकाना नहीं रहा। इस प्रकार उनके लेखक बनने की पृष्ठभूमि तैयार हो गई। प्रसन्नतावश उन्होंने कहा, 'मैं लेखक बन गया।'

प्रेमचंद और शरदचंद्र का नागर जी के जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा। शरतचंद्र द्वारा दिए गए इन सुझावों को नागर जी ने जीवनपर्यंत स्मरण रखा - अपने अनुभव से लिखना, अपनी कलम से किसी की निंदा मत करो और कर्ज कभी मत लो, कर्ज साहित्यकार को कुंठित कर देता है। नागर जी ने इन सभी बातों का पूरा-पूरा ख्याल रखा। उनकी आत्मकथा उनकी जीवन-यात्रा का रोचक, विशिष्ट तथा साहित्यिक दस्तावेज है।

अमृतलाल नागर सहज-सरल व्यक्तित्व के धनी थे। उन्होंने दुनिया के अनुभवों का वर्णन किया। नागर जी को सभी भाषाओं के प्रति प्रेम था,वे बहुभाषा विज्ञ थे। एक बार उन्होंने बीबीसी के आले हसन से बात करते हुए कहा था- "मैं तो भाई जनता जो यहाँ बोलती है, उस बोली का लेखक हूँ। मैं न हिंदी जानता हूँ और न उर्दू। मैं पढ़ते-पढ़ते थोड़ी भाषा जरूर सीख गया हूँ। अभी प्रोसेस जारी है। इस अनुभव के सागर से मैंने बहुत पिया है, लेकिन अभी भी प्यासा हूँ।"

18.3 पाठ सार

अमृतलाल नागर हिंदी साहित्य के प्रमुख तथा लोकप्रिय लेखक माने जाते हैं। उन्होंने गद्य की लगभग सभी विधाओं में कालजयी रचनाओं द्वारा हिंदी साहित्य जगत को समृद्ध किया है। नागर जी का व्यक्तित्व बहुमुखी और बहुआयामी था। 'टुकड़े-टुकड़े दास्तान' में नागर जी ने अपने जीवन के अनुभवों को सत्य के धरातल पर उकेरा है। इनकी आत्मकथा सैंतीस अध्यायों में विभाजित है। उनमें से एक अध्याय है- 'जौनपुर का असाधारण साधारण पुरुष'। इसमें नागर जी ने अपने मुंबई प्रवास के दौरान घटित रोचक प्रसंगों को शब्दबद्ध किया है। नागर जी उन दिनों फिल्म लेखन के सिलसिले में मुंबई आ गए थे। मायानगरी की चहल पहल में भी साधु-सिद्धों और चमत्कारों के चक्कर में रहते थे। अपने मित्र कैलास जी की सहायता से उनकी भेंट मूलतः जौनपुर निवासी एक साधारण से दीखने वाले किंतु असाधारण पुरुष से हुई। नागर जी इस लंगोटीधारी बाबा को प्रभुजी अथवा रामजी कहते थे। बाबा की विचित्र बातों से वे कभी

विस्मित होते तो कभी प्रसन्न। नागर जी कहते हैं कि प्रभुजी नामक इस व्यक्ति के सान्निध्य में रहकर मैं संकीर्ण विचारों की दीवारें को तोड़ने में सफल हुआ। मेरे लिए बाबा का पागलों से प्रेम अद्‌भुत तथा विस्मयकारी था। वे निस्वार्थ भाव से विक्षिप्तों का ध्यान रखते, उपचार करते थे। नागर जी ने लखनऊ में उनके लिए पागलखाना खुलवाया। अमृतलाल नागर आत्मालोचक थे। उन्होंने महिमामंडन के बिना लिखा। नागर जी की भाषा-शैली पात्रों के अनुरूप है। मुहावरे-लोकोक्तियों का रचनात्मक प्रयोग उनकी अभिव्यक्ति की एक बड़ी विशेषता है।

18.4 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष उपलब्ध हुए हैं -

1. अमृतलाल नागर उत्कृष्ट कोटि के आत्मकथा-लेखक हैं।
2. 'टुकड़े-टुकड़े दास्तान' में नागर जी ने अपने जीवन के अलग-अलग प्रेरक प्रसंगों और रोचक दास्तानों को जोड़कर आत्मकथा की निजी शैली विकसित की है।
3. नागर जी की आत्मकथा में भावात्मक, वर्णनात्मक एवं चित्रात्मक शैली का प्रयोग हुआ है, जिसके कारण पात्र, घटना और मनोभाव साकार होकर उभरते हैं।
4. नागर जी जौनपुर के बाबा से प्रभावित थे और आजीवन उनके प्रति श्रद्धावान रहे।

18.5 शब्द संपदा

1. अतिशयोक्ति	=	बढ़ा चढ़ा कर कहना
2. अद्‌भुत	=	आश्चर्यजनक
3. अवशेष	=	बचा हुआ
4. अहंता	=	घमंड
5. आकृष्ट	=	आकर्षित
6. कुंठित	=	कुंद, मूर्ख
7. पारदर्शी	=	इस पार से उस पार तक दिखने वाला
8. मर्मस्पर्शी	=	दिल को छूने वाला
9. महत्वाकांक्षा	=	बड़ा बनने की इच्छा

10. महिमामंडन	=	गुणगान
11. रहस्य	=	राज़
12. व्यक्तित्व	=	पृथक अस्तित्व
13. संकीर्ण	=	संकरा
14. संरक्षण	=	हिफाज़त
15. स्रोत	=	मूल, प्रवाह

18.6 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. अमृतलाल नागर के बारे में आप क्या जानते हैं? अपने शब्दों में लिखिए।
2. 'टुकड़े टुकड़े दास्तान' के आधार पर नागर जी के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए।
3. हठयोगी बाबा के बारे में नागर जी ने क्या कहा है?

खंड (ब)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. अमृतलाल नागर की साहित्य को देन पर अपने विचार लिखिए?
2. 'नागर जी एक जिंदादिल इंसान थे।' स्पष्ट कीजिए
3. 'जौनपुर का असाधारण साधारण पुरुष' के आधार पर बाबा की किन्हीं दो विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

खंड (स)

I सही विकल्प चुनिए

1. 'टुकड़े टुकड़े दास्तान' किस विधा की रचना है? ( )
   (अ) संस्मरण (आ) जीवनी (इ) आत्मकथा (ई) निबंध

2. 'अमृत और विष' किसका उपन्यास है? ( )
   (अ) अमृतलाल नागर (आ) प्रेमचंद (इ) शरतचंद्र (ई) के एम मुंशी

3. नागर जी की प्रभुजी से भेंट कहाँ हुई? ( )
   (अ) लखनऊ (आ) मुंबई (इ) जौनपुर (ई) काशी

4. नागर जी का बचपन कैसे वातावरण में बीता? ( )
   (अ) राजनैतिक (आ) साहित्यिक (इ) सांस्कृतिक (ई) दरबारी

II रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए

1. कर्जा साहित्यकार को .... कर देता है ।
2. लखनऊ में बाबा के लिए .... खुलवाया।
3. लंगोटीधारी बाबा .... की सेवा करते थे।
4. 'मैं लेखक कैसे बना' में .... के खिलाफ जुलूस का वर्णन है।

III सुमेल कीजिए

1. पागलों का अस्पताल	(अ) आत्मकथा
2. बूँद और समुद्र	(आ) पत्रिका
3. मायापुरी	(इ) लखनऊ
4. टुकड़े टुकड़े दास्तान	(ई) उपन्यास

18.7 पठनीय पुस्तकें

1. हिंदी आत्मकथाएँ : संदर्भ और प्रकृति. श्याम सुंदर पांडेय.
2. टुकड़े टुकड़े दास्तान. अमृत लाल नागर.

इकाई 19 : डायरी : विधागत स्वरूप

इकाई की रूपरेखा

19.0 प्रस्तावना

19.1 उद्देश्य

19.2 मूल पाठ : डायरी : विधागत स्वरूप

- 19.2.1 डायरी विधा का प्रारंभिक दौर
- 19.2.2 डायरी की परिभाषा
- 19.2.3 डायरी के तत्व
- 19.2.4 डायरी के प्रकार
- 19.2.5 डायरी लेखन की विशेषताएँ
- 19.2.6 डायरी विधा की प्रमुख कृतियाँ

19.3 पाठ सार

19.4 पाठ की उपलब्धियाँ

19.5 शब्द सपंदा

19.6 परीक्षार्थ प्रश्न

19.7 पठनीय पुस्तक

19.0 प्रस्तावना

डायरी किसी व्यक्ति के द्वारा लिखा गया व्यक्तिगत अनुभवों, सोच और भावनाओं को लिखित रूप में अंकित कर बनाया गया एक साहित्यिक संग्रह है। विश्व में अनेक महान व्यक्तियों ने डायरी लेखन किया है। उनके अनुभवों से उनके निधन के बाद भी कई लोगों को प्रेरणा मिलती है। डायरी गद्य साहित्य की एक प्रमुख विधा है इसमें लेखक आत्म साक्षात्कार करता है। वह अपने आपसे सम्प्रेषण की स्थिति में होता है। प्राचीन काल में राजा महाराजाओं के समय भी एक रोजनामचा तैयार किया जाता था जो रोजाना के कार्य और घटनाओं का विवरण देता था। व्यापारियों-दुकानदारों द्वारा भी हिसाब-किताब और लेन-देन का ही विवरण सुरक्षित रखने हेतु बही खाते का प्रयोग किया जाता है, यह भी डायरी लेखन माना जाता है। अतः डायरी लेखन मित्रों को और जीवन की भूली हुई घटनाओं को याद करने का एक माध्यम है। डायरी स्मृति को

बनाए रखने का सबसे शक्तिशाली उपकरण है, जिसका उपयोग अपने बारे में महसूस करने के तरीके को बदलने के लिए भी किया जा सकता है। यह आपके तनाव, चिंता को दूर करने में मदद करता है और दिमाग को शांत रखने की मदद करता है। डायरी लेखन से यह पता चलता है कि लेखक अपने दैनिक जीवन के अनुभवों को बहुत महत्व देता है और स्मरणीय पलों को सँजो कर रखना चाहता है।

19.1 उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन से आप

1. डायरी के विधागत रूप को जान सकेंगे।
2. डायरी को साहित्यिक विधा के रूप में कैसे विकसित और स्वीकृत किया गया समझ सकेंगे।
3. डायरी अन्य गद्य विधा लेखन से किस प्रकार अलग है इसकी जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
4. डायरी के तत्वों से अवगत हो सकेंगे।
5. डायरी लेखन कितने प्रकार का होता है इसकी जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

19.2 मूलपाठ : डायरी : विधागत स्वरूप

19.2.1 डायरी विधा का प्रारंभिक दौर

डायरी शब्द की उत्पति लैटिन शब्द “Diarium” से हुई है जिसका शाब्दिक अर्थ है “Dies” अर्थात “Day” जिसका भावानुवाद है दैनिक भत्ता। यहाँ से स्पष्ट है कि डायरी का संबंध दैनिक दिनचर्या से है। डॉ. हरदेव बाहरी के शब्दकोश को देखें तो पता चलता है कि उन्होनें अंग्रेजी शब्द diary के लिए कई हिंदी पर्याय दिये हैं। उनके अनुसार डायरी को हिंदी में दैनिकी,, दैनदिनी, परामर्श पुस्तिका, रोजनामचा आदि कहा जाता है। परन्तु साहित्यिक और व्यावहारिक प्रचलन में ‘डायरी’ शब्द ही प्रयोग में लाया जाता है। डायरी, अपनी भावनाओं को व्यक्त करने का, अपने सपनों और विचारों को रिकॉर्ड करने का और अपनी दैनिक जीवन के ऊपर एक निजी, सुरक्शित स्थान पर अपनी प्रतिक्रिया दर्ज करने का एक बेहद खूबसूरत जरिया होती है। हालांकि डायरी लिखने का कोई एक अकेला, निश्चित तरीका नहीं होता है, लेकिन ऐसे कुछ मौलिक सूत्र ज़रूर हैं, जिन्हें इस्तेमाल करके आप अपने लेखन को ज्यादा से ज्यादा आकर्षक बना सकते हैं। अगर आप डायरी लिखना चाह रहे हैं, और आपको समझ नहीं आ रहा है कि कैसे शुरू किया जाए तो आप किसी प्रेरक उद्धरण या किसी क्या किसी पसंदीदा लेखक, रचनाकार की उक्ति से लिखने की शुरूआत कर अपने लेखन को गति दे सकते हैं।

‘हिंदी साहित्य कोश’(भाग 1) में यह भी स्पष्ट किया गया है कि “डायरी आत्मकथा का

ही एक बदला हुआ रूप है। डायरी में सामान्यतः ताजे अनुभवों को लिखा जाता है या संभव है कि कभी-कभी बीते हुए अनुभवों का पुनर्मूल्यांकन कर लिया जाए, जबकि दूसरी ओर, आत्मकथा में सारे अतीत पर अपेक्षाकृत कहीं अधिक परिपक्व और तटस्थ दृष्टि डाल सकने की संभावना रहती है। डायरी में वैयक्तिकता होती है और 'जर्नल' डायरी की अपेक्षा किंचित अधिक विचारप्रधान निर्वैयक्तिक रचना है।"

आधुनिक संदर्भों में डायरी विधा की शुरूआत पश्चिमी जगत से आयतित साहित्य विधा के रूप में हुई। साहित्य की विधा के रूप में डायरी को प्रतिष्ठा दिलाने वालों में जॉन ईवलिन (1620-1706) का नाम उल्लेखनीय माना जाता है। जॉन ईवलिन के डायरी लेखन के बाद से गद्य साहित्य में डायरी को एक साहित्यिक विधा के रूप में स्वीकार किया जाने लगा। इसके बाद शुरूआती दौर में डायरी साहित्य में सबसे बड़ा नाम सैमुएल पैपीज का माना जाता है। इनकी डायरी 1 जनवरी, 1960 से शुरू होकर 13 मई, 1969 को समाप्त होती है। इनके बाद डोरोथी वड्र्सवर्थ का नाम आता है और उसके बाद जार्ज इलियट, थॉमस क्रीवी, विर्जीनिया वुल्फ़, टोल्स्टोय आदि के नाम डायरी लेखन के प्रारंभिक दौर में उल्लेखनीय नाम हैं।

दो शताब्दियों के गुजर जाने के बाद गद्य साहित्य की एक विधा के रूप में डायरी विधा का आगमन भारत में 19 वीं शताब्दी में हुआ। सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक क्षेत्र में बदलाव का भी यही समय है जहाँ से अंग्रेजी हुकुमत की शुरूआत होती है। पश्चिम से आई हुई इस विधा को हिंदी साहित्य में हिंदी समाज की प्रकृति के अनुकूल बनाकर ग्रहण किया गया और भारत में डायरी लेखन की शुरूआत जीवन साधना की गाथा के रूप में हुई। वैसे तो भारतीय साहित्य में डायरी लेखन के लक्षण 19वीं शताब्दी के प्रारम्भ में ही मिलने लगते हैं लेकिन एक साहित्यिक विधा के रूप में, लेखन रूप में लोकप्रियता आज़ादी के बाद के दौर में ज्यादा देखने को मिली। हिंदी साहित्य में डायरी लेखन का महत्वपूर्ण समय छायावादोत्तर काल है। जब डायरी लेखन में साहित्यिक विद्वानों ने प्रवेश किया तो इस विधा के स्वरूप में भी बदलाव आया। छायावाद के बाद साहित्य के सोचने, समझने और लिखने में जो बदलाव आया, वह डायरी लेखन से भी जुड़ा हुआ है। डायरी लेखन एक अन्तरंग प्रक्रिया को सामने लाने का कार्य करता है। लेखक के वैयक्तिक संबंधों, अपने परिवेश और युग के साथ उसका जुड़ाव, अनुभूति की एकान्तिक तीव्रता, वर्णन की सजीवता और आत्मीय भाषा शैली के कारण डायरी लेखन ने साहित्य में एक लोकप्रिय सृजनात्मक विधा के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त की। डायरी लेखन अपने प्रारंभिक दौर में इन विशेषताओं के साथ आगे बढ़ता है और आगे चलकर केवल स्वांतः सुख़ाय लेखन ही नहीं रह जाता है बल्कि वह साहित्यिक गद्य लेखन के रूप में स्थापित होता है। विभिन्न रचनाकारों के अंतःपरक विचार, सामाजिक सोच, मानसिक अनुभूतियों से साक्षात्कार करने के माध्यम के तौर पर भी डायरी लेखन सामने आता है। यही कारण है कि कई सारे

रचनाकारों की डायरी साहित्यिक दुनिया में एक अलग प्रतिमान को भी रचती हैं, जो साहित्य की गरिमा को और ऊंचाई पर ले जाता है।

19.2.2 डायरी और उसकी परिभाषा

जैसा कि पहले कहा जा चुका है डायरी को समानतः कई नामों से कहा जाता है। कोई इसे रोजनामचा कहता है, तो कोई इसे दैनिकी या दैनंदिनी आदि शब्दों से अभिहित करता है परन्तु इन सभी या और ऐसे नामों के बावजूद डायरी नाम ही सबसे प्रमुख है। डायरी का प्रमुख ध्येय है कि इसमें लेखक का अनुभव उसके सबसे निकट होकर सामने आता है। डायरी लेखन लेखक के अनुभव से ही पुष्ट होता है, इसीलिए डायरी में लेखक की जीवन शैली का स्पष्ट प्रतिबिम्ब दिखाई देता है। अतः डायरी की प्रकृति, लेखक की प्रकृति के अनुरूप अलग अलग हो सकती है। इसी कारण इसके तत्वों और मानदंडों में भी अंतर आ जाता है। इसीलिए से डायरी की कोई स्पष्ट परिभाषा उभरकर सामने नहीं आती। फिर भी कुछ डायरी लेखकों के विचारों के माध्यम से इसके रचना विधान व मूलभूत शैली तत्व को ज़रूर समझा जा सकता है।

रामधारी सिंह दिनकर 'डायरी' शब्द को स्पष्ट करते हुए लिखते हैं कि "डायरी वह चीज है जो रोज लिखी जाती है और जिसमें घोर रूप से वैयक्तिक बातें भी लिखी जा सकती हैं।"

इसी प्रकार अनीता राकेश के अनुसार डायरी एक बहुत ही व्यक्तिगत लेखन विधा है जिसके द्वारा लेखक का अंतर्बाह्य बिना किसी लाग लपेट के व्यक्त होता है।

डायरी किसी लेखक की व्यक्तिगत चीज़ होती है और इसमें उसका सच्चा स्वरूप दिखाई देता है। इसके द्वारा स्पष्ट की हुई सच्चाई के साथ साथ उससे जुड़े लोगों का प्रतिबिम्ब भी लेखक की आँखों से देखने को मिलता है। डायरी में लेखक के उन नितांत निजी क्षणों की झलक दिखाई पड़ती है जिन्हें वह प्रत्यक्ष रूप में किसी से साझा नहीं करता। डायरी एक अर्थ बहुल साहित्य विधा है। इस ढंग से देखे तो डायरी एक ऐसी विधा है की प्रत्येक सर्जक की डायरी अलग-अलग साहित्य की संभावनाओं से युक्त दिखलाई पड़ेगी। इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि डायरी का साहित्यिक स्वरूप ही सर्जक को पूरी तरह स्वतंत्रता प्रदान करता हैं क्योंकि वह स्वरूप के किसी जड़ दायरे से बंधा हुआ नहीं होता। सर्जक या रचनाकार की प्रतिभा के मुक्त रूप से अभिव्यक्त होने की साहित्य की अन्य विधाओं की अपेक्षा डायरी में अधिक एवं विशेष संभावना रहती हैं।

बोध प्रश्न

- डायरी की एक परिभाषा दीजिए।
- डायरी किस तरह की साहित्य विधा है?

19.2.3 डायरी के तत्व

साहित्य की प्रत्येक विधा की रचना में कुछ विशिष्ट तत्व सक्रिय रहते हैं। स्मृति आधारित

विधा होने के कारण डायरी में रचनाकार के व्यक्तिगत अनुभवों का प्रभाव स्वाभाविक है। डायरी की यब विशेषता ही इसे साहित्य की दुसरे विधाओं से अलग करती हैं। यद्यपि इस विधा में निजीपन की प्रमुखता के कारण से डायरी के विधागत रूप के तत्वों के बारे में बात करना कठिन हो जाता हैं। इसलिए इस विधा के लेखन और अध्ययन को बहुत अधिक लोकप्रियता नहीं मिली। लेकिन बाद में जब साहित्य की अन्य गद्य विधाओं का प्रसार होने लगा तो डायरी लेखन को भी साहित्यिक और सामाजिक दोनों मंच प्राप्त हुए। परन्तु फिर भी डायरी के प्रतिमान और मानदंड पूर्ण रूप से स्थापित नहीं हो सके, यही कारण है कि डायरी को लेखक अपने अनुरूप भिन्न-भिन्न शैली में सृजित करते रहते हैं।

'हिंदी साहित्य कोश, भाग 1' के अनुसार डायरी विधा में लेखक अपने कुछ या सब अनुभवों तथा निरीक्षणों का दैनिक विवरण रखते हैं। अजित कुमार के अनुसार डायरी की कुछ विशेषताएँ इस प्रकार हैं –

- डायरी के माध्यम से लेखक के किसी घटना से संबंधित त्वरित भावों तथा विचारों को अभियक्ति मिलती है।
- डायरी में लेखक का अनुभव उसके सबसे निकट रहकर अंकित होता है।
- डायरी में लेखक के मन पर पड़े प्रभाव उसी दिन लिखित रूप पाते हैं।
- डायरी लेखक के व्यक्तित्व प्रकाशन का सबसे अधिक प्रामाणिक माध्यम है।
- डायरी प्रायः लेखक द्वारा अपने निजी भावों, विचारों को नोट कर लेने के उद्देश्य से लिखी जाती है, पुस्तक प्रकाशन के उद्देश्य से नहीं।
- डायरी कोई विशेष कलापूर्ण साहित्य-रूप नहीं है, पर अपने मूल अभिप्राय में वह संभवतः साहित्य-रूप है ही नहीं।
- डायरी में साहित्यिक दृष्टि से संबद्धता या संगति और शिल्पगत कलात्मकता की कमी हो सकती है, पर स्पष्ट कथन, आत्मीयता और निकटता जैसी विशेषताएँ डायरी की जान होती हैं।

कहा जाता है कि डायरी मूलतः दो बार लिखी जाती है। जब डायरी लेखक किसी वैयक्तिक या सामाजिक घटना पर तात्कालिक प्रतिक्रिया करता है तो वहाँ पर लेखन भावुकता पूर्ण या तार्किक हो सकता हैं। वही दूसरी बार डायरी तब लिखी जाती है जब लेखक प्रकाशन के उद्देश्य से कुछ ऐसे प्रसंगों को संपादित कर देता है जिन में अतिरिक्त भावुकता होती है, इस तरह वह प्रकाशन के लिए डायरी मे कुछ जोड़ता या घटाता है। इसका अर्थ यह है कि डायरी का स्वरूप और उसके तत्व स्थिर नहीं हैं। तो भी कुछ प्रमुख तत्व निर्धारित किए जा सकते हैं। जो इस प्रकार हैं -

1) वैयक्तिकता

व्यक्तिगत भावना या निजता डायरी लेखन का महत्वपूर्ण तत्व होता है। ऐसी अनुभूतियाँ

जो वास्तविकता या यथार्थ को रखती हुई चलती हैं जिसे आमतौर पर व्यक्त करना सम्भव नहीं हो पाता वे डायरी लेखन में स्थान पाती हैं। डायरी के माध्यम से लेखक की दृष्टि, इच्छाएँ, कमियाँ, सम्भावनाएँ, उपलब्धियाँ आदि अनेक बातें प्रत्यक्ष या संकेत के रूप में उभरकर सामने आती हैं। इनके जरिये ही लेखक डायरी में अपने जीवन के अनुभवों को समुचित अभिव्यक्ति प्रदान करता है। अपने व्यक्तिगत अनुभवों के माध्यम से वह नितांत एकांत की बात को भी लिपिबद्ध करता है, वहीं सामाजिकता वाले अनुभव को भी लेखन में स्थान प्रदान करता है। इसीलिए लेखक तत्कालीन परिवेश को अपने में समेटे हुए यथार्थ के धरातल पर डायरी लेखन करता है, तो वह सच्चे अर्थों में आत्म-प्रतिबिम्ब के रूप में ही सामने आता है।

2) भावाभिव्यक्ति

लेखक की मनोस्थिति और परिस्थितियों के अनुरूप जो कुछ भी महत्वपूर्ण घटित होता है, वह अनुभव के रूप में संचित रहता है, जिसका उल्लेख डायरी में लेखक करता है। ईमानदारी से लिखी गई डायरी लेखक के आइने के रूप में सामने आती है, तथा उसे समाज के प्रतिबिंब के रूप देखा जाता हैं। अन्तर्मुखी व्यक्तित्व वाले लेखक की डायरी उनके जीवन का महत्वपूर्ण साझीदार होती है, जिसमें वह अपनी उन अनुभूतियों को दर्ज करता है जिन्हें वह बाहरी दुनिया में प्रकट नहीं कर पाता। डायरी में लेखक के हृदय के गूढ़ भाव भी मौजूद होते हैं। इस प्रकार डायरी एक ही व्यक्ति के अनेक रूपों का एक संचित दस्तावेज बनकर सामने आती है।

3) तिथिक्रम

डायरी की प्रामाणिकता का आधार उसमें दर्ज समय पर निर्भर है। अधिकतर डायरी लेखक तिथि के अनुसार अपनी प्रतिक्रिया दर्ज करते हैं। वहीं कई कई ऐसे लेखक हैं जो अपने अनुभव में दर्ज संस्मरण/ याददाश्त को आधार बनाते हैं, अर्थात किसी घटना पर तुरंत उसी दिन डायरी नहीं लिखते बल्कि बाद की तिथियों में अपनी प्रतिक्रिया अंकित करते हैं। यहाँ ये कहना उचित होगा कि डायरी को अगर तिथि और आंकड़ों के आधार पर लिखा जाए, तो उसे इतिहास की किताब बनते देर नहीं लगेगी। भावावेश में जब लेखक अपने विचार व्यक्त करता है तो वह तिथि, माह आदि का ध्यान कम रखता है। इसलिए तिथियों को दर्ज करना अनिवार्य तत्व के बजाय एक सहयोगी तत्व ज़रूर है। डायरी के ढांचे को ध्यान में रखकर कई बार लेखक एक माह के अंतर्गत की टिप्पणी को बगैर तिथि के एक साथ दे देता हैं या केवल वर्ष अंकित करके उस वर्ष की टिप्पणी देकर तिथि को एक साथ दर्ज कर देता हैं या कई बार वर्ष, माह अंकित करके तिथि की अनिवार्यता को स्पष्ट देता है। निर्मल वर्मा ने अपनी डायरी "धुंध से उठती धुन" में केवल वर्ष को अंकित किया है और वहाँ वर्ष भी क्रमानुसार नहीं हैं।

4) तात्कालिक प्रतिक्रिया

डायरी का एक महत्वपूर्ण तत्व तात्कालिकता भी है। डायरी लेखन अपने मूल स्वरूप में यही है कि जैसे मन-मस्तिष्क को जो प्रभावित करे उसे तत्काल कागज पर दर्ज कर देना चाहिए।

यद्यपि स्मृतियों के आधार पर लेखक बाद में भी अपने विचार दर्ज कर सकता है, परन्तु किसी घटना के समय जो आवेग लेखक के मन में उसी दिन विद्यमान रहता है वह आवेग अधिक तीव्र होता है। समय के साथ वह आवेग शांत हो जाता है और प्रतिक्रिया उस रूप में उभरकर नहीं आती जिस रूप में वह लेखक के मस्तिष्क में प्रथम बार उभरती है। अतः प्रतिक्रिया को तत्काल ही दर्ज कर लेने से वह अधिक प्रामाणिक और सत्य के नज़दीक होग। यह और बात है कि बीतते समय के साथ भावनाओं में बदलाव आते हैं और उसके अनुसार लेखक डायरी के प्रारूप में बोध के अनुसार परिवर्तन कर सकता हैं।

5) नियमित लेखन

डायरी की प्रविष्टियाँ नियमित रूप से रोजाना लिखना एक आदर्श स्थिति है। परंटी किसी रचनाकार या कलाकार के लिए रोजाना डायरी लिखना कई कारणों से संभव नहीं हो पाता। रोज लिखी जाने वाली डायरी में तारीख का होना महत्वपूर्ण हो जाता है। रोजाना लिखने के दौरान डायरी के स्थूल ब्यौरों तक सीमित हो जाने की भी सम्भावना रहती है क्योंकि जरूरी नहीं कि हर रोज के अनुभव तीव्र और गूढ़ ही हों। साहित्य की दृष्टि से देखें तो रोजाना लिखे जाने से बेहतर है कि एक तय समय के अनुसार अनुभवों और विचारों को दैनंदिनी में शब्दबद्ध किया जाए। तीव्र अनुभव को अभिव्यक्त करने के की छटपटाहट से लिखी डायरी साहित्य, कला और समाज के लिए उपयोगी मानी जाती है।

6) परिवेश का चित्रण

डायरी में लेखक वैयक्तिक अभिव्यक्ति को तो दर्ज करता ही है, साथ ही वह अपने आस-पास के समाज को भी डायरी में साथ लेकर चलता है। इसके साथ लेखक उन परिस्थितियों का भी वर्णन करते हुए अपना स्थान निर्धारित करता चलता हैं। परोक्ष रूप से वह देश की राजनैतिक परिस्थितियों का तत्कालीन साहित्य पर भी प्रभाव बताएगा क्योंकि वातावरण का किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण में प्रमुख हाथ रहता है। डायरी लेखन के दौरान जहाँ तक परिवेश में पारिवारिक स्थिति का प्रश्न है लेखक उन सभी परिवार की घटनाओं को भी वर्णित करता है जिनका प्रभाव उसके व्यक्तित्व और मन मस्तिष्क पर पड़ता है। डायरी में लेखक के आसपास होने वाली हर उस घटना का जिक्र होता है जो उसे प्रभावित करती है - चाहे वह नकारात्मक हो या सकारात्मक। इसीलिए डायरी अपने युग और समकालीन परिवेश की सूक्ष्म पहचान को अंकित करने का भी एक माध्यम है।

7) आत्मविश्लेषण

डायरी में लेखक जीवन में होने वाली घटनाओं का ही वर्णन नहीं करता बल्कि उन घटनाओं से होने वाली मानसिक प्रतिक्रियाओं को भी दर्ज करता हुआ चलता है। डायरी की रोचकता और पठनीयता उस में वर्णित दैनिक चर्या पर कम, बल्कि ऐसी घटनाओं पर ज्यादा निर्भर करती है जिनका लेखक के जीवन पर अटल और स्थायी प्रभाव पड़ा हो। वे घटनाएँ

राजनैतिक, सामाजिक, साहित्यिक किसी भी प्रकार की हो सकती हैं। डायरी का मुख्य उद्देश्य घटना वर्णन की अपेकषा लेखक का आत्म-विश्लेषण होता है। डायरी में लेखक अपने जीवन की विवेचना प्रस्तुत करते हुए जीवन के सभी उतार-चढ़ावों का वर्णन करता चलता है। हरिवंश राय बच्चन की डायरी (प्रवास की डायरी) को लेखन में आत्म-विश्लेषण का उत्तम उदहारण माना जाता है।

8) वास्तविकता

डायरी में लेखक अपने जीवन का कच्चा चिटठा लिखता है। अपने हर अनुभव को खोल कर अभिव्यक्त कर पाना सबके बस की बात नहीं होती। वैसे तो साहित्य लेखन अपने आप में एक पीड़ादायक सुख प्रदान करने वाला कार्य है और उसमें भी डायरी विधा के लेखन के दौरान निर्भीकता के एक ऐसे पड़ाव से गुजरना होता है जो डायरी की वास्तविकता को जीवन की वास्तविकता के समकक्ष खड़ा कर दे। कहते हैं कि डरा हुआ व्यक्ति लिख नहीं सकता, डर के अनुभव को बतलाने के लिए भी डर से मुक्ति ज़रूरी है। डायरी लेखन ऐसा ही 'मुक्ति का लेखन' है जहाँ लेखक को स्वयं में रहते हुए स्वयं से मुक्त होना होता हैं। इसीलिए डायरी विधा को सत्यता के निकट की रचना मानी जाती है। नहीं तो डायरी लेखन में छिपाव का भाव हमेशा बना रहता है। डायरी के लेखक यह बात स्पष्ट करते हैं कि पूर्ण रूप से सच्ची अभिव्यक्ति के भाव का यहाँ लोप रहता है। इसीलिए आत्म-विश्लेषण का गुण होते हुए भी डायरी लेखक यह स्वीकार करते हैं कि डायरी में पूरा सच नहीं लिखा जा सकता। हमेशा लेखक को यह डर भी लगा रहता है कि उसकी डायरी कोई पढ़ न ले। डायरी लेखक इस समस्या के समाधान करने के लिए कई बार मित्रों और परिचितों के नाम को बदल देते हैं या कोई सांकेतिक नाम रख लेते हैं।

9) सृजन की पृष्ठभूमि

डायरी लेखक के जीवन व व्यक्तित्व के प्रत्येक अंश को छूती है, अतः सामाजिक, व्यावहारिक बातों के साथ साथ एक रचनाकार का रचना संसार भी डायरी में स्थान पाता है। किसी भी रचना के बनने की प्रक्रिया, उसके पीछे का मानसिक संघर्ष भी डायरी के पृष्ठों पर उतर आता है। डायरी में अतीत एवं वर्तमान तो होता ही है, परन्तु भावी योजनाओं का खाका भी तैयार होता हैं। विभिन्न रचनाओं का बनता बिगड़ता स्वरूप, लेखक की बदलती मानसिक प्रक्रिया के आधार डायरी में स्पष्ट रूप से दर्ज होता है। यह माना जा सकता है कि विभिन्न साहित्यिक माध्यमों में एक साथ गतिशील होने वाले रचनाकार की रचना प्रक्रिया के सूक्ष्म पहलू भी डायरी में दर्ज होते हैं।

10) पुनरावृत्ति

डायरी में एक ही दिन की विविध प्रकार की भाव स्थितियाँ भी देखने को मिलती हैं। एक ही दिन में कई तरह के भाव लेखक के मन में जागृत हो सकते हैं तथा एक ही तिथि के अंतर्गत

कई भाव एक साथ डायरी में लिखे जा सकते हैं। भाव अथवा विचार का पुनरावर्तन भी होता है। कई बार एक ही भाव जो लेखक के मन-मस्तिष्क में बैठ गया हो, उसकी बार बार डायरी में पुनरावृत्ति होती रहती है। डायरी में लेखक के कई बार परस्पर विरोधी भाव तथा विचार भी आते हैं। समय या परिस्थिति के साथ लेखक का बदलता दृष्टिकोण भी विरोधाभास के साथ यहाँ समाहित होता है।

11) निजी दृष्टि

डायरी लेखन लेखक के व्यक्तित्व, चरित्र और संवेदनात्मक जीवन का दर्पण होता है। इससे जीवन तथा संवेदना के प्रति लेखक के निजी दृष्टिकोण का भी पता चलता है। डायरी लेखक के स्थूल जीवन और बाह्य घटनाओं की आधारभूमि पर लिखी जाती है, परन्तु उससे रचनाकार का अन्तःकरण ही उद्घाटित होता है।सामान्य घटनाओं के माध्यम से लेखक के भीतर हिलोरें लेता उसका भीतरी आवेग पन्नों में एक भावावेग के साथ उतर आता है। इसीलिए डायरी में समाज के साथ लेखक की अपनी दृष्टि और दृष्टिकोण भी साथ-साथ यात्रा करता हुआ प्रतिबिम्बित होता है।

डायरी कई बार भावावेश प्रधान हो जाती है। ऐसे अवसर पर लेखक के लिए अपने आवेग को काबू में रख पाना नामुमकिन हो जाता है। यही कारण है कि डायरी में लेखन कभी सम्पूर्णता में नहीं हो पाता। इसीलिए कहा जाता है कि निजता के साथ एक अधूरापन भी डायरी में देखने को मिलता है।

12) भाषा-शैली

वैसे तो प्रत्येक लेखक की भाषा-शैली दूसरे से भिन्न होती हैं परन्तु डायरी की भाषा की मुख्य विशेषता यह है कि इसमें भावों की तीव्र अभिव्यक्ति के कारण शब्दों तथा वाक्यों का अधूरापन अधिकांशतः देखने को मिलता है। साथ ही भावावेग के कारण लेखन में अन्य भाषाओं के शब्दों तथा वाक्यों का आना भी स्वभाविक हो जाता है। ज्यादातर डायरी लेखक ग्रामीण तथा लोक भाषा के शब्दों एवं वाक्यों का प्रयोग बगैर किसी झिझक के करते हैं। उदाहरण स्वरूप निर्मल वर्मा तथा मोहन राकेश की डायरी में अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग मिलता है, वहीं कृष्ण बलदेव वैद की चारों डायरियाँ में छोटे तथा अधूरे वाक्यों से समृद्ध है। डायरी लेखन की यह शैली अधिकतर डायरियों में देखने को मिलती है। डायरी स्वयं के साथ स्वयं के द्वारा की गई स्वयं की बातचीत है। डायरी ऐसी बिखरी हुई कथा है जिसे लेखक पहली अनुभूति के रूप में किसी दूसरे के साथ साझा नहीं करना चाहता है। इस कोशिश में वह अनुभव की नितांत वैयक्तिक अनुभूति की अभिव्यक्ति को डायरी में स्थान देता है। इस संदर्भ में डायरी लेखक के हृदय की वह वाणी है जिसे जीवन पर्यन्त केवल वही सुनता है। जब वह डायरी प्रकाशित होकर लोगों के सामने आती है तभी दुनिया उस आंतरिक वैयक्तिक संवाद से रूबरू हो पाती है।

बोध प्रश्न

- डायरी लेखन में सबसे अधिक महत्वपूर्ण पांच तत्वों के नाम लिखिए।
- डायरी लेखन स्व हित से समाज हित की ओर कैसे जाता है? विवरण दीजिए।
- डायरी लेखन में अनुभूति की महत्ता बताइये।
- डायरी लेखन में निजी दृष्टि का क्या महत्व है?

19.2.4 डायरी लेखन के प्रकार

डायरी लेखन के चार प्रकार माने गए हैं:

1. व्यक्तिगत डायरी
2. वास्तविक डायरी
3. काल्पनिक डायरी
4. साहित्यिक डायरी

इन नामों से ही इन चारों प्रकारों का स्वरूप और अंतर स्पष्ट है। जब कोई व्यक्ति अपनी मानसिक छटपटाहट से मुक्त होने के लिए नितांत, निजी और व्यक्तिगत विषयों को डायरी में लेख बद्ध करता है तो उसे व्यक्तिगत डायरी कहा जाता है। ऐसी डायरी प्रायः बहुत गोपनीय होती है, और दूसरों से छिपाकर रखी जाती है। वास्तविक डायरी से अभिप्राय ऐसी डायरी से है जिसमें लेखक तिथि, स्थान और समय को अंकित करते हुए दैनिक घटनाओं और उन पर अपनी प्रतिक्रियाओं को तिथिवार लिखता चलता है। काल्पनिक डायरी वास्तव में डायरी नहीं होती। बल्कि वह डायरी शैली में लिखी हुई कहानी होती है। याद रहे कि अपने मूल रूप में डायरी एक अकाल्पनिक गद्य विधा है। इसमें कल्पना के लिए स्थान नहीं होता। ये तीनों प्रकार कि डायरीयाँ साहित्यिक रूप से महत्वपूर्ण नहीं मानी जातीं। साहित्य विधा के रूप में तो केवल चौथे प्रकार की डायरी को ही स्वीकार किया जा सकता है, जिसे साहित्यिक साहित्यिक डायरी कहा जाता है। यह वास्तव में स्मृतिआधारित यथार्थ चित्रण से युक्त होती है और इसमें ऊपर वर्णित डायरी विधा के सभी तत्वों का समावेश ज़रूरी है।

बोध प्रश्न

- डायरी लेखन के प्रकार कौन कौन से हैं?

19.2.5 डायरी लेखन की विशेषताएं

जहाँ तक डायरी का सम्बन्ध है, इसमें किसी विषय को लेकर लेखक आत्मप्रकाशन करता है। यह विधा सामयिकता या तात्कालिकता से जुड़ी रहती है। इसमें लेखक जताता है कि वह जो कुछ भी लिख रहा है, सब आज का है, अभी का है। लेखक ने उसी दिन या पिछले कुछ दिनों में अपने बारे में आस-पास के जीवन के विषय में जो अनुभव किया है, उसे बताता है। डायरी में

ऊपर ऊपर सामयिक जीवन की चर्चा रहती हैं किन्तु उसकी गहराई में लेखक का आत्म निरीक्षण या आत्म सम्बोधन रहता है। इसमें नित्य के जीवन के चलते हुए रूप का लेखक आभास देकर मूलतः अपने मन की बात करता हैं।

डायरी में लेखक दिन, तिथि, वर्ष इत्यादि के आधार पर अपने जीवन में घटित होने वाली घटनाओं के साथ-साथ समकालीन धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक और साहित्यिक परिस्थितियों का न केवल चित्रण करता है बल्कि युग यथार्थ को जितनी सफलता से सजग और ईमानदारी के साथ इस विधा में चित्रित कर पाता है उतना अन्य माध्यमों में नहीं। यह लेखक की निजी सम्पत्ति होती है लेकिन वह प्रकाशित होने के बाद समाज की भी हो जाती है। यद्यपि डायरी लेखन में लेखक की अपनी भावनाओं और अनुभूतियों के चित्रण में निजता का अंश अधिक होता है, यही नहीं बल्कि लेखक के सम्पर्क में आए हुए लोगों का विवेचन भी डायरी में होता हैं। उनके संबंध में लेखक अपनी प्रतिक्रिया भी देता है। डायरी का प्रमुख उद्देश्य आत्म विवेचन और आत्म विश्लेषण होता है। यह स्वांतः सुखाय लिखी जाती है। इसके माध्यम से लेखक दूसरों के विचारों और घटनाओं को सहज रूप से अभिव्यक्त कर सकता है।

बोध प्रश्न

- डायरी लेखन की विशेषताएँ क्या हैं?
- डायरी लेखन का उद्देश्य क्या है?
- डायरी लेखन में सहज अभिव्यक्ति से आप क्या समझते हैं?

19.2.6 डायरी विधा की प्रमुख कृतियाँ

बालमुकुंद गुप्त : बालमुकुंद गुप्त स्मारक ग्रंथ (1950), श्रीराम शर्मा - सेवाग्राम डायरी (1946), घनश्यामदास बिड़ला : डायरी के पन्ने (1940), प्रो. धीरेन्द्र वर्मा - मेरी कालिज डायरी (1954), अज्ञेय - बर्लिन की डायरी (1960), जमनालाल बजाज - जमनालाल बजाज की डायरी (1966), हरिवंशराय बच्चन - परवासी की डायरी (1971), रामधारी सिंह दिनकर - दिनकर की डायरी (1973), रघुवीर सहाय - दिल्ली मेरा परदेश (1976), जयप्रकाश नारायण - मेरी जेल डायरी (1977), रवीन्द्र कालिया - स्मृतियों की जन्मपत्री (1979), मोहन राकेश - मोहन राकेश की डायरी (1985), कृष्ण बलदेव वैद - ख्वाब है दीवाने का (2005), पुष्पिता अवस्थी - नीदरलैंड डायरी (2018)

19.3 पाठ सार

साहित्य की आधुनिकतम विधाओं में जिन नए गद्य रूपों को खासतौर पर गिना जाता है, वे हैं – जीवनी, आत्मकथा, रेखाचित्र, संस्मरण, यात्रावृत्त, रिपोर्ताज, पत्र और डायरी। इनमें अंतिम दो विधाएँ अर्थात पत्र साहित्य और डायरी अन्य विधाओं से इस अर्थ में अलग हैं कि मूलतः इनकी रचना आम पाठकों के लिए नहीं की जाती। प्रायः लेखक के प्रतिष्ठा प्राप्त कर लेने पर उसके पत्रों और डायरियों को भी प्रकाशन का अवसर मिल जाता है। इसलिए यह कहना ठीक होगा कि पत्र और डायरी बड़ी सीमा तक 'असजग लेखन' के उदाहरण हैं। जैसा कि डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी ने माना है, "पत्र की तुलना में डायरी का रूप स्वभावतः अधिक आत्मपरक है, क्योंकि उसका लेखन साधारणतः यह मान कर होता है कि उसका पाठक स्वयं लेखक ही होगा। इसलिए डायरी जैसी निजी और स्वच्छंद अभिव्यक्ति अन्यत्र अकल्पनीय है। यह दूसरी बात है कि डायरी शिल्प का सजग प्रयोग भी कुछ लेखकों ने कथा-विधान में किया है। पर सहज रूप में तो डायरी केवल अपने लिए है, लेखक के लिए एक निजी दस्तावेज़।"

एक धारणा यह भी है कि डायरी की आत्मपरकता कभी-कभी उसे पाठक की दृष्टि से असंप्रेषणीय बना सकती है। लेकिन यह भी ध्यान रखने की बात है कि पत्र और डायरी दोनों ही का लेखन सहज और अकृत्रिम होता है। कहा जाता है कि किसी भी लेखक की डायरी को लेकर उस पर दूरूहता का आरोप नहीं लगाया गया। इसका कारण यह है कि अगर रचनाकार की कृति स्वयं उसके लिए संप्रेषणीय है, तो पाठक भी उसे ग्रहण कर लेता है। हिंदी साहित्य में जिन लेखकों की डायरियाँ चर्चित हैं उनमें बालमुकुंद गुप्त, श्रीराम शर्मा, घनश्याम दास बिड़ला, डॉ. धीरेंद्र वर्मा, शिवपूजन सहाय, हरिवंश राय बच्चन, त्रिलोचन, शमशेर बहादुर सिंह, रामविलास शर्मा, मोहन राकेश के नाम महत्वपूर्ण हैं।

डायरी लेखन व्यक्ति के द्वारा अपने दैनिक अनुभवों, सोच और भावनाओं को लिखित रूप में क्रम से अंकित करके बनाया गया संग्रह हैं। डायरी अकाल्पनिक गद्य साहित्य की एक प्रमुख नई विधा है। डायरी में लेखक आत्म साक्षात्कार करता है। डायरी लेखन के दौरान वह स्वयं से संवाद की स्थिति में होता है। डायरी क्या है? जब हम विचार करते हैं तो इसका व्यावहारिक अभिप्राय यही सामने आता है कि हर दिन की विशेष घटनाओं का लेखा जोखा रखना डायरी है। ये विशेष घटनाएँ वे हो सकती हैं जिन्होनें अपना प्रभाव लेखक के मन-मस्तिष्क पर छोड़ा हो, भले ही वह घटना प्रिय हो या अप्रिय। डायरी लेखन एक ईमानदारी भरा ऐसा कार्य है जो जितना जोखिम भरा है उतना ही खूबसूरत और प्रेरक भी। हालाँकि डायरी लेखन का कोई एक निश्चित पैमाना या तरीका नहीं होता लेकिन ऐसी आधारभूत योजनाएँ हैं जिन्हें डायरी लेखन के दौरान आमतौर पर अपनाया जाता है ।

डायरी मनुष्य के समस्त भावों, मानसिक आवेगों और अनुभवों को अभिव्यक्त करने का एक सशक्त साहित्यिक माध्यम है। किसी भी घटना को लेकर तात्कालिक अभिव्यक्ति डायरी लेखन का बड़ा माध्यम बनती है। डायरी जब तक लिखी जा रही होती है, तब तक वह निजी लेखन मानी जाती है। लेकिन जैसे ही डायरी का प्रकाशन हो जाता है वह निजता की सीमा से निकलकर व्यापक समाज में साहित्यिक कृति के तौर पर देखी जाने लगती है। डायरी में बहुधा लोग अपने जीवन के अनुभवों को दैनिक विवरण के रूप में लिखते हैं। लेकिन वही लेखन प्रकाशित होने पर वह साहित्य की विधा के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त कर लेता है।

19.4 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष उपलब्ध हुए हैं -

1. हिंदी साहित्य के आधुनिक काल में गद्य की विधाओं का चहुमुखी विकास हुआ है।
2. गद्य लेखन का विस्तार होने पर हिंदी में कई सारी नई विधाएँ आरंभ हुई जैसे आत्मकथा, जीवनी, रेखाचित्र, संस्मरण, डायरी और यात्रावृतांत।
3. अकाल्पनिक गद्य विधा के रूप में डायरी रचनाकार के दैनिक अनुभवों का स्मृति आधारित लेखा जोखा है।
4. अपने मूल रूप में डायरी रचनाकार की नितांत, निजी अभिव्यक्ति होती है। इसलिए प्रायः प्रकाशन के पूर्व उसका पुनर्लेखन या सम्पादन किया जाता है।
5. डायरी में लेखक दैनिक घटनाओं के अलावा अपने परिवेश के विभिन्न पक्षों पर भी बेखौफ टिप्पणी करता है।

19.5 शब्द सपंदा

1. अभिव्यक्ति	=	अपनी बातों को प्रकट करना, कहना
2. कृति	=	रचना
3. डायरी	=	रोजनामचा, दैनंदिनी
4. तात्कालिक	=	वर्तमान में जो घटित हो रहा है
5. निजता	=	निजीपन, प्राइवेसी
6. निर्भीक	=	भयहीन, निडर
7. प्रवास	=	किसी दूसरे स्थान पर रहना

8. स्वलेखन = खुद से लिखा हुआ

9. स्वांतः सुखाय = स्वयं के सुख के लिए

19.6 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. 'डायरी स्वलेखन है, इसलिए उसमे किसी एक घटना का ही पक्ष उजागर होता है।' विचार कीजिए।

2. 'डायरी निजी अनुभूतियों के साथ साथ सामाजिक आर्थिक परिप्रेक्ष्य का भी ब्यौरा होती है।' स्पष्ट कीजिए।

3. 'डायरी अन्तरंग साक्षात्कार है।' सोदाहरण चर्चा कीजिए।

खंड (ब)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. डायरी नितांत वैयक्तिक रचना है। -सिद्ध कीजिए।

2. डायरी में पुनरावृत्ति का महत्व बताइए।

3. डायरी में वास्तविकता का स्थान निर्धारित कीजिए।

4. डायरी में आत्म-विश्लेषण का क्या महत्व है?

5. डायरी में तात्कालिक प्रतिक्रिया की महत्ता स्पष्ट कीजिए।

खंड (स)

I सही विकल्प चुनिए

1. डायरी लेखन किस तरह की रचना है? ( )
   अ) वैयक्तिक आ) सामाजिक इ) सार्वजनिक ई) इनमें से कोई नहीं

2. डायरी को _______ विधा के रूप में जाना जाता है। ( )
   अ) गद्य आ) पद्य इ) वैज्ञानिक ई) इनमें से कोई नहीं

3. डायरी स्वांतः सुखाय रचना है। ( )
   अ) हाँ आ) नहीं इ) गलत ई) इनमें से कोई नहीं

II रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए

1. डायरी लेखन एक निजी .... है।
2. डायरी को हिंदी में .... कहा जाता है।
3. डायरी एक साहित्यिक .... विधा है।

III सुमेल कीजिए

1. रवीन्द्र कालिया	अ) प्रवासी की डायरी
2. कृष्ण बलदेव वैद	आ) धुंध से उठती धुन
3. निर्मल वर्मा	इ) ख्वाब है दीवाने का
4. हरिवंश राय बच्चन	ई) स्मृतियों की जन्मपत्री

19.7 पठनीय पुस्तकें

---

1. हिंदी गद्य का इतिहास. रामचंद्र तिवारी.
2. डायरी लेखन एक तरल विधा. अरुण प्रकाश.
3. प्रवासी की डायरी. हरिवंश राय बच्चन.
4. व्यक्तिगत निबंध और डायरी. रामधारी सिंह दिनकर.
5. धुंध से उठती धुन. निर्मल वर्मा.

इकाई 20 : मुंबई से कन्याकुमारी तक (मोहन राकेश) : एक विश्लेषण

इकाई की रूपरेखा

20.0 प्रस्तावना

20.1 उद्देश्य

20.2 मूल पाठ : 'मुंबई से कन्याकुमारी तक' (मोहन राकेश): एक विश्लेषण

20.2.1 मोहन राकेश : जीवन और रचना यात्रा

20.2.2 मोहन राकेश की डायरी : मुंबई से कन्याकुमारी तक

20.2.3 अध्येय पाठांश का सामान्य परिचय

20.2.4 अध्येय पाठांश का विस्तृत विवेचन

20.3 पाठ सार

20.4 पाठ की उपलब्धियाँ

20.5 शब्द संपदा

20.6 परीक्षार्थ प्रश्न

20.7 पठनीय पुस्तकें

20.0 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो! पिछली इकाई में आपने हिंदी गद्य की आधुनिक विधाओं में एक 'डायरी' के विधागत रूप के बारे में जानकारी प्राप्त की। अब इस इकाई में आप मोहन राकेश की डायरी के कुछ अंशों का अध्ययन करेंगे। डायरी लिखना जीवन को रोजाना नए सिरे से देखने की कोशिश करना होता है। इस इकाई में मोहन राकेश की डायरी के निर्धारित अंश का गहन अध्ययन किया जाएगा।

20.1 उद्देश्य

प्रिय छात्रो! इस इकाई के अध्ययन के उपरांत आप -

- मोहन राकेश के बारे में व्यक्तित्व और लेखन के बारे में जान सकेंगे।
- मोहन राकेश की डायरी के जरिए यह जान सकेंगे कि उनका डायरी लेखन उनके अन्य लेखन से किस प्रकार भिन्न है।
- मोहन राकेश की डायरी की विषय वस्तु का विश्लेषण कर सकेंगे।

- मोहन राकेश की डायरी की भाषा-शैली की विशेषताओं से परिचित हो सकेंगे।

20.2 मूल पाठ : मुंबई से कन्याकुमारी तक (मोहन राकेश) : एक विश्लेषण

'मुंबई से कन्याकुमारी तक' शीर्षक यह पाठ मोहन राकेश की डायरी का एक अंश है जिसका संबंध उनकी 1953 की मुंबई और कन्नानोर की डायरी से है। मोहन राकेश को 'नई कहानी' आंदोलन के प्रमुख रचनाकारों के रूप में जाना जाता है। उन्होने आधुनिक मध्यवर्ग के जीवन की विसंगतियों को आधार बनाकर उपन्यास भी लिखे। नाटक और एकांकी लेखन के क्षेत्र में भी उन्हें एक प्रयोगशील तथा युगप्रवर्तक लेखक माना जाता है। इन सब विधाओं के अलावा उन्होंने डाइरी विधा को भी अपने लेखन द्वारा समृद्ध किया। उनकी डाइरी उनके व्यक्तित्व के मस्तमौलापन का आईना कही जा सकती है। इस विशेषता को उनके इस पाठांश में भी आसानी से देखा जा सकता है।

20.2.1 मोहन राकेश : जीवन और रचना यात्रा

नई कहानी आन्दोलन के सशक्त हस्ताक्षर मोहन राकेश जन्म 8 जनवरी, 1925 को तथा निधन 3 जनवरी, 1972 को हुआ। वे बहुपठ और बहुश्रुत विद्वान थे। उन्होनें हिंदी और अंग्रेज़ी में एम.ए की उपाधि अर्जित की तथा आजीविका के लिए अध्यापन का क्षेत्र चुना। बाद में कुछ वर्षो तक वे 'सारिका' पत्रिका के संपादक भी रहे। उनकी प्रसिद्धि का आधार मुख्यतः आषाढ़ का एक दिन, आधे अधूरे और लहरों के राजहंस जैसे सफल नाटक रहे। उनकी नाट्य प्रतिभा को देखते हुए संगीत नाटक अकादमी ने भी उन्हें सम्मानित किया। वे बहुमुखी प्रतिभा संपन्न नाट्य लेखक और उपन्यासकार माने जाते हैं। भारतेन्दु हरिश्चंद्र और जयशंकर प्रसाद के बाद हिंदी नाटक को नया मोड़ देने के लिए उन्हें सदा याद किया जाएगा।

मोहन राकेश ने कथाकार के रूप में अपनी पहचान 1961 में प्रकाशित 'अंधेरे बंद कमरे', 1968 में प्रकाशित 'न आने वाला कल' और 1972 में प्रकाशित 'अंतराल' नामक उपन्यासों से निर्मित की। इनके उपन्यासों में व्यक्ति मन की छटपटाहट, प्रश्न और बेचैनी की प्रधानता है। खास बात यह है कि उनकी कथा भाषा भी इन मनोदशाओं के अनुरूप है। उसमें एक संवेदनात्मक बेचैनी है जो आधुनिक मानसिकता वाले पाठक को बांध लेती है। 'अंधेरे बंद कमरे' में उन्होंने स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद, छठे दशक की दिल्ली की पृष्ठभूमि में कलाकारो, लेखकों और पत्रकारों की अंदरूनी ज़िंदगी का, उनके परिवेश से संघर्ष, समझौते और उससे पैदा होने वाली निराशा और कुंठा का दिलचस्प चित्रण किया है। लेखक ने यह भी दर्शाया है कि इस संघर्ष में कलाकारों

के दाम्पत्य जीवन में दरारें पैदा हो जाती हैं और प्रेम भी बेमानी लगने लगता है। 'अंधेरे बंद कमरे' ऐसे एकाकी मन-मस्तिष्क के प्रतीक हैं। 'न आने वाला कल' में लेखक ने रिश्तों के टूटने की पीड़ा को केंद्र में रखा है। यह एक ऐसे अध्यापक की कथा है जो एकाकी परिवेश की संवेदन हीनता और पत्नी से संबंध निच्छेद के कारण ऊब कर नौकरी से त्यागपत्र दे देता है। मोहन राकेश का तीसरा उपन्यास "अंतराल भी स्त्री पुरुष के बीच पैदा हो जाने वाले अंतराल और उससे मानसिक स्तर पर जूझते रहने की ही कहानी है। सम्बन्धों की सही परिभाषा ढूंढने का प्रयास मोहन राकेश के इस उपन्यास में भी लक्षित होता है। एक तरफ स्त्री में पति की मृत्यु से उत्पन्न रिक्तता की मनःस्थिति, तो दूसरी तरफ पुरुष में किसी कारणवश प्रेमिका के पत्नी के रूप में न प्राप्त होने की उदासी। दोनों तरफ उस रिक्तता को भरने की बेचैनी है। इस प्रयास में दोनों एक दूसरे के निकट आते भी हैं, पर 'कोई चीज़' उन्हें पास आने से रोक देती है।" (डॉ. गोपाल राय, हिंदी उपन्यास का इतिहास, पृष्ठ 276)।

बोध प्रश्न

- मोहन राकेश का संबंध किस आंदोलन से है?
- मोहन राकेश के तीन उपन्यासों के नाम बताइए।

एक नाटककार के रूप में भी मोहन राकेश अद्वितीय सिद्ध होते हैं। 'आषाढ़ का एक दिन' उनका कालजयी नाटक है। हिंदी नाटक के क्षितिज पर मोहन राकेश का उदय उस समय हुआ जब स्वाधीनता के बाद पचास के दशक में सांस्कृतिक पुनर्जागरण का ज्वार देश में जीवन के हर क्षेत्र को प्रभावित कर रहा था। उनके नाटकों ने न सिर्फ नाटक का आस्वाद, तेवर और स्तर ही बदल दिया, बल्कि हिंदी रंगमंच को भी नई दिशा दी। उसके पहले, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और जयशंकर प्रसाद जैसे प्रतिभावान रचनाकारों के बावजूद, हिंदी नाटक को समुचित लोकप्रियता नहीं मिल सकी थी। 'आषाढ़ का एक दिन' हिन्दी नाटक की इस यात्रा में कई प्रकार से एक महत्वपूर्ण पड़ाव तो है ही, इस दौर के नाटक-लेखन की श्रेष्ठतम उपलब्धियों में गिनने योग्य भी है। नाट्यरूप की दृष्टि से 'आषाढ़ का एक दिन' सुगठित यथार्थवादी नाटक है, जिसमें बाहरी ब्यौरे की बातों से अधिक परिस्थिति के यथार्थ को अभिव्यक्त करने का प्रयास है। शायद हिन्दी का यह पहला यथार्थवाद नाटक है, जो बाह्य और आंतरिक यथार्थ के समन्वय और अंतर्द्वंद्व को संवेदनशीलता के साथ देखता और प्रस्तुत करता है।

इसके अलावा 'मोहन राकेश की डायरी' को भी हिंदी में डायरी विधा की सबसे सुंदर कृतियों में एक माना जाता है। इस डायरी की भूमिका में कमलेश्वर ने लिखा है - "मोहन राकेश

की ज़िन्दगी एक खुली किताब रही है। उसने जो कुछ लिखा और किया - वह दुनिया को मालूम है। लेकिन उसने जो कुछ जिया - यह सिर्फ उसे मालूम था! अपनी साँसों की कहानी उसने डायरियों में दर्ज की है। और कितना तकलीफ़देह है यह एहसास कि राकेश जैसा लेखक अपने अनुभवों की कहानियाँ दुनिया के लिए लिख जाए और अपने व्यक्तिगत संताप, सुख और दुःख के क्षणों को जानने और पहचानने के लिए अपने दस्तावेज़ दोस्तों के पास छोड़ जाए...

"डायरियाँ, लेखक का अपना और अपने हाथ से किया हुआ पोस्ट-मार्टम होती हैं! एक लेखक कैसे तिल-तिल जीता और मरता है - अपने समय को सार्थक बनाते हुए खुद को कितना निरर्थक पाता है और अपनी निरर्थकता में से कैसे वह अर्थ पैदा करता है - इसी रचनात्मक आत्म-संघर्ष को डायरियाँ उजागर करती हैं। मोहन राकेश की डायरी इसी आत्म-संघर्ष के सघन एकान्तिक क्षणों का लेखा-जोखा है, जो वह किसी के साथ बाँट नहीं पाया..."

प्रमुख कृतियाँ

उपन्यास : अंधेरे बंद कमरे, अन्तराल, न आने वाला कल।

नाटक : आषाढ़ का एक दिन, लहरों के राजहंस, आधे अधूर, अण्डे के छिलके।

कहानी संग्रह : क्वार्टर तथा अन्य कहानियाँ, पहचान तथा अन्य कहानियाँ, वारिस तथा अन्य कहानियाँ।
निबंध संग्रह : परिवेश।

अनुवाद : मृच्छकटिक, शाकुंतलम।
यात्रावृत्तांत : आखिरी चट्टान।
डायरी : मोहन राकेश की डायरी।

प्रिय छात्रो! मोहन राकेश की डायरी का विश्लेषण करने से पहले, उसके निर्धारित अंश का वाचन करना ज़रूरी है। इसलिए अगले बिन्दु के अंतर्गत हम उसे अविकल रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं। इसका ध्यानपूर्वक वाचन कीजिए।

बोध प्रश्न

- मोहन राकेश के प्रमुख नाटकों के नाम बताइए।
- मोहन राकेश की डायरी के संबंध में कमलेश्वर ने क्या कहा है?

20.2.2 : मोहन राकेश की डायरी : मुंबई से कन्याकुमारी तक

मुंबई...?

दिन-भर परिभाषाएँ घड़ते रहे। साहित्य की, जीवन की, मनुष्य की। बे-सिर-पैर। सभी

पढ़ी-सुनी परिभाषाओं की तरह अधूरी और स्मार्ट। दूसरों ने जितनी स्मार्टिंग की कोशिश की, उससे ज़्यादा खुद की। जैसे परिभाषा नहीं दे रहे थे, कुश्ती लड़ रहे थे। महत्त्व सिर्फ़ इस बात का था कि दूसरे को कैसे पटखनी दी जाती है। या फिर पटखनी खाकर भी कैसे बेहयाई से उठ खड़े होते हैं। 'साहित्य का वास्तविक लक्षण यह है कि... ,' 'जीवन की आध्यात्मिक व्याख्याओं से हटकर वास्तविक व्याख्या इस रूप में दी जा सकती है कि...' 'नीत्शे की मनुष्य की कल्पना बहुत एकांगी है। मेरे विचार में मनुष्य का वास्तविक स्वरूप यह है कि...।' जिसे जितने गुर आते थे कुश्ती के, उसने वे सब इस्तेमाल कर लिये। नतीजा? कुछ नहीं, सिवाय भेल-पूरी की दावत के। साहित्य, जीवन और मनुष्य, तीनों पर एक-एक डकार और बस के क्यू में शामिल।

मुंबई...?

बहुत उलझन होती है अपने से। सामने के आदमी का कुछ ऐसा नक्शा उतरता है दिमाग़ में कि दिमाग़ बिल्कुल उसी जैसा हो जाता है। दूसरा शराफत से बात करे, तो बहुत शरीफ़। बदमाशी से बात करे, तो बहुत बदमाश। हँसनेवाले के सामने हँसोड़। नकचढ़े के सामने नकचढ़ा। जैसे अपना तो कोई व्यक्तित्व ही नहीं। जैसे मैं आदमी नहीं, एक लेंस हूँ जिसमें सिर्फ़ दूसरों की आकृतियाँ देखी जा सकती हैं। कभी जब तीन-चार आदमी सामने होते हैं, तो डबल-ट्रिपल एक्सपोज़र होता है। अपनी हालत अच्छे-खासे मोंताज की हो जाती है।

बोध प्रश्न

- अपने लेखकीय व्यक्तित्व के बारे में मोहन राकेश ने किस उलझन का ज़िक्र किया है?

कन्नानोर : 8.1.1953

आगरा से चलने के बाद आज मानसिक स्थिति ऐसी हुई है कि यहाँ कुछ लिख सकूँ। भोपाल में, मुंबई में, गोआ में, मंगलौर में-सब जगह मन में विचार आता था कि अपनी किन्हीं प्रतिक्रियाओं को बैठकर लिखूँ, परंतु या तो व्यस्तता रहती थी या थकान, या दूसरे लोग उपस्थित रहते थे।

घर से इस तरह आकर मैं कह सकता हूँ कि मुझे मानसिक स्वस्थता मिली है। यद्यपि ऐसे क्षण आते हैं, जब घर के सुखों का आकर्षण अपनी ओर खींचता है, और मन में हल्की-हल्की अशांति भर जाती है, फिर भी अहर्निश नूतन के सान्निध्य की अनुभूति, केवल निजत्व का

साहचर्य, और चारों ओर के जीवन को जानने की रागात्मक प्रवृत्ति, इन सबसे सुस्थिति बनी रहती है...

मैंने अपनी यात्रा के नोट्स में कहीं लिखा है कि किसी भी अपरिचित व्यक्ति से, चाहे उसकी भाषा, उसका मज़हब, उसका राजनीतिक विश्वास तुमसे कितना ही भिन्न हो, यदि मुस्कराकर मिला जाए तो जो तुम्हारी ओर हाथ बढ़ाता है, वह कोरा मनुष्य होता है : कुछ ऐसी ही मुस्कराहट की प्रतिक्रिया नाना व्यक्तियों पर मैंने लक्षित की है। यह ठीक है कि बाद में भाषा, मज़हब और विश्वास के दाग़ उभर आते हैं, परन्तु वे सब फिर उस वास्तविक रूप को छिपा नहीं पाते, और मनुष्य की मनुष्य से पहचान बनी रहती है। मुझे याद आता है कि डेल कार्नेगी की पुस्तक 'हाउ टु विन फ्रेंड्स एंड इन्फ्लुएंस पीपल' में एक जगह उसने लिखा है कि "जब अपरिचित व्यक्तियों से मिलो, तो उनकी ओर मुस्कराओ"। यद्यपि लेखक एक मनोवैज्ञानिक सत्य का उद्घाटन करने में सफल हुआ है, फिर भी मनुष्यता के इस गुण का व्यापारिकता, और परोक्ष लाभ की कूटनीति से सम्बन्ध जोडक़र उसने एक अबोध सत्कौमार्य को कटे-फटे हाथों से ग्रहण करने की चेष्टा की है। वह मुस्कराहट जो तहों में छिपे हुए मनुष्यत्व को निखारकर बाहर ले आती है, यदि सोद्देश्य हो तो, वह उसके सौन्दर्य की वेश्यावृत्ति है।

गाड़ी के सफर में मेरी कापरकर से जान-पहचान हो गयी, जहाज़ पर मोतीवाला से, कन्नानोर आकर कपूर से, और कल शाम को समुद्र-तट पर धनंजय से-बस उसी मुस्कराहट के बीज से। साधारण चलते जीवन में ये सबके सब 'साधारण व्यक्ति' हैं- इनमें से किसी में भी कोई ऐसी विशेषता नहीं, जो इन्हें 'जानने योग्य' व्यक्ति बनाती हो। फिर इनसे मिलना भी किसी चयन का परिणाम नहीं, केवल आकस्मिक योग ही था। परन्तु इन सबमें ही एक तत्त्व निखरकर सामने आया - वह तत्त्व जो प्रत्येक मनुष्य में रहता है, परन्तु बहुत कम ही कभी व्यक्त हो पाता है, शायद सभ्यता के संस्कार के कारण - यहाँ तक कि बहुत-से 'जानने योग्य' व्यक्तियों में भी उसके दर्शन नहीं होते-और वह या मनुष्य का मनुष्य में सहविश्वास, बिना किसी आरोप के, बिना किसी बाधा के, बिना किसी कुंठा के।

बोध प्रश्न

- किसी नए व्यक्ति के स्वभाव को परखने के लिए मोहन राकेश ने क्या कसौटी बताई है?

भोपाल में बिताई गई शाम का वातावरण अपनी हल्की-सी छाप छोड़ गया है। मुग़लकालीन जीवन की जो कल्पना मस्तिष्क में थी, उसको कुछ अंशों तक मूर्त रूप में देखकर एक ओर तो यह पुलक हुआ कि मैं एक कल्पना को साकार रूप में देख रहा हूँ और दूसरे शायद यह रोमांच हुआ कि मैं वर्तमान से कुछ पीछे हट आया हूँ। अतीत की एक शाम में, अतीत के एक नगर में, अतीत के वातावरण में, मुझे कुछ क्षण जीने का अवसर मिल गया है। वह चौक और वहाँ की दुकानें, वे तश्तरियों में दस-दस, बीस-बीस पान लेकर खाते और खिलाते हुए शायर, वे बिकते हुए मोतियाँ और चमेली के हार, वे मस्जिदों जैसे घर और शुद्ध उर्दू में बात करते हुए ताँगेवाले - मुझे महसूस हो रहा था कि अभी किसी शहज़ादे या शहज़ादी की सवारी भी उधर से आ निकलेगी, और लोग झुक-झुककर उसे सलाम करेंगे।

परन्तु सोफिया मस्जिद की आधुनिकता देखकर अतीत का यह सपना टूट गया। फिर वोल्गा होटल के कीमे की गन्ध भी मुगलिया नहीं, डालडा के आविष्कार के बाद की थी...

मुंबई विक्टोरिया टर्मिनस स्टेशन पर उतरकर यह नहीं लगा कि मैं दो वर्ष बाद वहाँ आया हूँ। ऐसा लगा जैसे मैं दादर से वहाँ आ रहा हूँ। रोज़ ही आता हूँ, और वहाँ के जीवन से उसी तरह ऊबा हुआ हूँ। वही मछलियों की गन्ध, वही जल्दबाज़ी, वही सूखे मुरझाए हुए शरीर, वही कुछ खोकर उसे ढूँढने की हताश चेष्टा का-सा जीवन - कहीं जाने का मन नहीं हुआ, किसी से मिलकर हृदय उत्साहित नहीं हुआ। जिस यात्रा में वहाँ के प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में पुनरावृत्ति है, वह दो वर्ष बाद एक दिन के लिए भी उकता देनेवाली थी, जो वह पुनरावृत्ति जीवन-भर के लिए जिए जा रहे हैं, उनके स्नायुओं में कितनी जड़ता भर गयी होगी?

शाम को इक्वेरियम में मछलियाँ देखकर हृदय और आँखों में विस्फार आ गया। शीशे के पीछे पानी था, जहाँ उपयुक्त पृष्ठभूमि देकर उसे नाना रंगों की रोशनी से आलोकित किया गया था। अपने-अपने केस में तरह-तरह की मछलियाँ, केकड़े और इन्हीं श्रेणियों के कुछ दूसरे जीव इठला रहे थे। वह उनके लिए साधारण रूप से जीना होगा, जो हमारी आँखों को 'इठलाना' नज़र आता है। मैं मछलियों के नाम भूल गया। केवल रंगों की और उनकी गति की कुछ स्मृति रह गयी है। चौड़े शरीर और छोटे आकार की वे मछलियाँ, जिनके नीचे, रेशमी डोरे-से पीछे की ओर फैले रहते थे- एक नर्तकी के लचकते हुए शरीर से कई गुना अधिक लचकती हुई नाना चितकबरे रंगों की डेढ़-दो फुट की मछलियाँ- सामूहिक रूप से एक दिशा से दूसरी दिशा की ओर जाती हुई नाना आकारों की मछलियाँ- नाखून भर के आकार तक की मुँह के रास्ते साँस लेती हुई भगत मछलियाँ, जिन्हें यह नाम शयद इसलिए दिया गया है कि उनके मुँह के खुलने

और बन्द होने में वही गति रहती है जो 'राम' नाम के उच्चारण में- और अन्यान्य कई तरह की मछलियाँ। मैं फूलों और तितलियों को देखकर ही सोचा करता था कि रंगों के और आकारों के इस वैविध्य की सृष्टि करनेवाली शक्ति के पास कितनी सूक्ष्म सौन्दर्य-दृष्टि होगी- परन्तु नाखून-नाखून भर की मछलियों के कलेवर में रंगों की योजना देखकर तो जैसे उस विषय में सोचने से ही रुक जाना पड़ा...

पूना में थर्ड क्लास के वेटिंग हॉल में कुछ समय बिताना पड़ा था। वहाँ बहुत-से ऐसे स्त्रियाँ-पुरुष थे, जो या तो विकलांग थे, या आकृति के रूखेपन के कारण मनुष्येतर-से मालूम पड़ते थे। किसी के सिर पर रूखे बाल उलझे हुए खड़े थे, किसी की दाढ़ी महीने भर की उगी हुई थी। स्त्रियों में किसी की आँखें रूखी और लाल हो रही थीं और किसी का भाव-शैथिल्य मन में एक जुगुप्सात्मक भाव भर रहा था। ऐसे व्यक्तियों की एक श्रेणी ही है जो देश के किसी भी भाग में पायी जा सकती है। काले पड़े हुए शरीर, सूखी हुई त्वचा, जीवन के प्रति नितान्त निरुत्साह भाव, चेष्टाओं में शैथिल्य और बुद्धि के नियन्त्रण का अभाव। जिस समाज में मनुष्य की एक ऐसी श्रेणी बन सकती है, उसके गलित होने में सन्देह ही क्या है?

जब मैं अपने-आपको मानसिक दुर्बलता के किसी क्षण में पकड़ पाता हूँ, तो अपने-आप बहुत भिन्न-साधारण से कहीं स्तरहीन प्रतीत होता है। ऐसे समय एक ओर तो मैं अपने चेहरे के शिथिल प्रतिभ भाव को देखता हूँ, और फिर द्रष्टा के रूप में उस भाव पर मुस्कराता हूँ...सचमुच वह अपना शिथिल-प्रतिभ रूप दर्शनीय होता है। देखा नहीं जाता।

मार्मुगाँव से मंगलोर तक जहाज़ पर की गयी उन्नीस घंटे की यात्रा में वह पुलक प्राप्त नहीं हुआ, जिसकी मुझे आशा थी। समुद्र का अपना आकर्षण था, जहाज़ के डोलने में भी थोड़ा आनन्द था, खोजने में दृष्टि को कहीं न कहीं कुछ सौन्दर्य मिल ही जाता था, पर थर्ड क्लास के डेक पर मनुष्य से जिस रूप में सफर करने की अपेक्षा की जाती है वह किसी भी तरह सह्य नहीं। जो जहाज़ पशुओं को ले जाते हैं, उनमें पशुओं के लिए शायद इससे कहीं अच्छी व्यवस्था होती होगी।

कन्नानोर के सागर पुलिन पर टहलते हुए मैं बच्चों के रेत पर बने हुए घरौंदे देखने लगा था। बच्चों के पिता साथ थे - श्री धनंजय - जिनसे बाद में परिचय हो गया। उन्होंने जब मेरा विशद परिचय जानना चाहा तो मैंने बताया कि मैं एक लेखक हूँ, घूमने के लिए निकला हूँ, पश्चिमी घाट का पूरा प्रदेश घूमने का विचार रखता हूँ। इस तरह अपना परिचय देकर मुझे एक रोमांच हो आया। मुझे लगा जैसे मैं कोई बहुत बड़ी बात कह रहा हूँ। यह होना, और ऐसे होना, जैसे जीवन में बहुत कुछ पा लेना है। मैंने एक बार लहरों की ओर देखा जो शार्क मछलियों की

तरह सिर उठाती हुई तट की ओर आ रही थीं। फिर बच्चों के घरौंदों को देखा। फिर दूर क्षितिज के साथ सटकर चलते हुए जहाज़ को देखा जो कोचीन की ओर जा रहा था। डूबते सूर्य का लगभग एक इंच भाग पानी की सतह से ऊपर था, जो सहसा डूब गया। कुछ पक्षी उड़ते हुए पानी की ओर से मेरी ओर आये। बायें हाथ कगार के नीचे काली चट्टानों के साथ एक लहर ज़ोर से टकराई। कुछ बच्चों की किलकारियाँ सुनाई दीं। पीछे पुल के पास से कोई कार चल दी।

आज मेरा जन्मदिन है। आज मैं पूरे अट्ठाईस वर्ष का हो गया। मुझे प्रसन्नता है कि मैं यहाँ हूँ। होटल सेवाय दिन भर शान्त रहता है। रात को रेडियो का शोर होता है, पर खैर! मैं यहाँ रहकर कुछ दिन काम कर सकूँगा।

बोध प्रश्न

- मनुष्य के संबंध में मोहन राकेश का क्या विचार है?

कन्नानोर : रात्रि - 21.1.53

कल सहसा चल देने का निश्चय कर लेने के अनन्तर मुझसे कुछ भी काम नहीं हो पाया। यह व्याकुलता जो सहसा जाग उठी, बिल्कुल आकस्मिक नहीं कही जा सकती। मैं जानता हूँ...चाहे यह विरोधोक्ति ही लगती है कि मुझे अर्धचेतन रूप से सदा अपने से इसकी आशंका रही है। जहाँ तक चलते जाने का प्रश्न है, चलते जाएा जा सकता है। परन्तु जहाँ ठहरने का प्रश्न आता है, वहाँ बहुत-सी अपेक्षाएँ जाग्रत हो उठती हैं और उन सब की पूर्ति असम्भव होने से, फिर चल देने की धुन समा जाती है।

यहाँ रहकर एक बात हुई है, जिसे मैं सन्तोषजनक कह सकता हूँ। उपन्यास की आरंभिक रूपरेखा के विषय में मैं इतने दिनों से संशययुक्त था... वह रूपरेखा अब बन गयी है। परन्तु मेरे इस सन्तोष को इतना मूल्य क्या कोई देगा, जितना इसके लिए मैंने व्यय किया है?

एक बात और। घूमने और लिखने की दो प्रवृत्तियाँ हैं, जिन्हें शायद मैं आपस में मिला रहा था। अन्योन्याश्रित होते हुए भी ये अलग-अलग प्रवृत्तियाँ हैं, ऐसा मुझे अब प्रतीत हो रहा है। मैं कैसा भी जीवन व्यतीत करता हुआ घूमता रह सकता हूँ, परन्तु बैठकर लिखने के लिए मुझे सुविधाएँ चाहिए ही।

कन्याकुमारी : 31-1-53

कन्याकुमारी आकर जैसे मेरा एक स्वप्न पूरा हो गया है। यह एक विडम्बना ही थी कि मैं सीधा यहाँ आने का कार्यक्रम बनाकर भी सीधा यहाँ नहीं आया। पर उससे आज यहाँ आकर पहुँचने का महत्त्व मेरे लिए और भी बढ़ गया है। साधारणतया देखने पर यह एक समुद्रतट ही

है, परन्तु यह केवल समुद्रतट ही नहीं है। यह एक कुँवारी भूमि है, जहाँ निर्माता की तूलिका का स्पर्श अभी गीला ही लगता है। यहाँ आकर आत्मा में एक सात्विक आवेश जाग उठता है। यहाँ आकर रहना अपने में ही जीवन की एक आकांक्षा हो सकती है! शायद टेलिपैथी की तरह का कोई और भी विनिमय होता है जो दो मनुष्यों के बीच नहीं, एक मनुष्य और एक स्थान के बीच सम्भव है। उसे अणुओं का अणुओं के प्रति आकर्षण कह सकते हैं। इसे एक स्थान का आवाहन कहना शायद कवित्वमय या शिशुत्वपूर्ण लगे। परन्तु व्यक्ति अपने भावोद्रेक के अनुसार ही जीवन की व्याख्या करने से नहीं रह सकता। मैं इस समय जिस भावोद्रेक में हूँ, उसे समझने के लिए बंगाल की खाड़ी, हिन्द महासागर और अरब सागर के इस संगम-स्थल को एक बार देख लेना आवश्यक है। कितना भी भटककर एक बार यहाँ आ जाए जाए, तो उस भटकने में सार्थकता है।

20.2.3 अध्येय पाठांश का तात्विक विवेचन

मोहन राकेश साहित्य की दुनिया में उन चुनिंदा लोगों में थे जो बड़ी लगन के साथ अपनी डायरी को लिखा करते थे। मोहन राकेश की डायरी की सबसे बड़ी विशेषता है जीवन और सामाजिक माहौल को लेकर अत्यंत बेलाग और गहन प्रतिक्रियाएं। एक लेखक या रचनाकार द्वारा किया जा रहा डायरी लेखन अपने समय को सार्थक बनाकर स्वयं को निरर्थक पाता है और उसी निरर्थकता में से वह अर्थ पैदा करता है। इसी रचनात्मक संघर्ष को मोहन राकेश की डायरी उजागर करती हैं। उनकी डायरी में छोटी से छोटी घटनाएं और बड़े बड़े संदर्भ उल्लिखित हैं। मोहन राकेश की डायरी कविता और गद्य का मिश्रण है। वर्ष और दिनांक के साथ लिखी गई उनकी डायरी एक साहित्यिक डायरी है। उनकी डायरी के प्रस्तुत अंश में कहीं प्राकृतिक छवियां हैं तो कहीं भावुक मन के बिम्ब हैं, कहीं जीवन के अनुभव के आधार पर व्यक्त प्रतिक्रियाएं हैं तो कहीं अकेलेपन का असहाय है। कई व्यक्तियों के लिए यह अकेलापन एक अभिशाप भी हो सकता है लेकिन मोहन राकेश ने इसे सृजनात्मकता का प्रस्थान बिन्दु बनाया।

मोहन राकेश की डायरी में मानव जीवन की छवियां मौजूद हैं। मनुष्य सबसे अधिक प्रकृति से प्रभावित होता है, मोहन राकेश भी प्रकृति की छवियों से प्रभावित होते हैं। इस बात का उल्लेख उनकी डायरी में भी मिलता है। मोहन राकेश की डायरी में प्रकृति की अद्‌भुत छटा उपस्थित है। प्रकृति का जिक्र करते हुए वे लिखते हैं कि - "आँख बार बार इस तरफ से हटकर उस तरफ चली जाती है, बेइंतहा खूबसूरती है दोनों तरफ, बादलों से ढंकी हरियाली की। घने नाटे पेड़ों के बीच बीच से उठे हुए नारियल के पेड़ गहरे बादलों के आगे अंकित और हलकी धुंध से ढंके एक तरफ हलकी ऊंचाइयों और दूसरी तरफ हरे रोयों का समतल...।"

एक भावुक रचनाकार होने के कारण उनकी डायरी में काव्यात्मकता है – "जुहू बीच। रात के ग्यारह। उमड़ती लहरें। नागिनों की तरह करवटें लेती। उनका पैरों तक आना और पानी

हो जाना। शरीर में उठती कंपकंपी। स्नायुओं में दौड़ती झुरझुरी। सहसा तेज़ चलना। जैसे कि एक बीज अपने में भर आया हो। अपने भरा होने की अनुभूति से सामने के फैलाव को देखना, सरकती रेत पर पांव जमाए दूर से दूर के बिंदु तक जाने की कोशिश करना...।" मोहन राकेश की डायरी में कविता बोलती हुई प्रतीत होती है।

मोहन राकेश ने अपनी डायरी में दैनिक जीवन में मिलने वाले मासूम और धूर्त चेहरों की धोखा धड़ी का चित्रांकन साफ और स्पष्ट रूप में किया है। उसमें किसी प्रकार का दुराव और छिपाव नहीं है।

वस्तुतः मोहन राकेश ने अपने साहित्यिक जीवन में प्रारम्भ में ही डायरी लेखन शुरू कर दिया था। इसमें उन्होंने दैनिक जीवन की घटनाओं के अलावा अपने आसपास की जिंदगी, अपने मित्रों के लेखन की प्रगति संबंधी योजनाओं, साहित्य की गतिविधि आदि सब तरह की बातों का उल्लेख किया है। यद्यपि डायरी लेखन के दौरान यह क्रम बन्द भी हो जाता था किन्तु जल्दी ही उसे लिखने की उनकी कोशिश हर वक्त बनी रहती थी। मोहन राकेश ने अपनी डायरी बेहद ईमानदारी से लिखी है। उन्होंने अपने मित्र, महिला मित्र, प्रेमिकाओं, विवाहों की चर्चा खुलेपन से की है और अपनी कमजोरियों को भी वर्णित किया है।

डायरी के प्रस्तुत अंश में लेखक के अकेलेपन की पीड़ा भी व्यक्त हुई है। डायरी के उद्देश्य के अनुसार हम जान सकते हैं कि लेखक अपनी स्वानुभूति को जगह देते हैं। डायरी में वर्णित इन मानसिक प्रतिक्रियाओं से हमारे सामने लेखक के रूप में एक ऐसे भावुक व्यक्ति की तस्वीर उभरती है जो मानवीय रिश्तों की ऊष्मा में जीना चाहता है। एक लेखक के अंदर मौजूद चेतना ही उसे निजी और आत्मीय लेखन की ओर मोड़ने का कार्य करती है। मोहन राकेश अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं और दुनियादारी की बातों को डायरी में प्रस्तुत करते हैं। वे मनुष्यता की बातों को सबसे अधिक तवज्जो देते हैं। डायरी आत्मसाक्षात्कार की विधा है। इसमें व्यक्ति अपने से संवाद करता है। मोहन राकेश की इस डायरी के अंश में लेखक की मनोस्थिति का चित्रण है, जिसका वर्णन लेखक मुंबई से कन्याकुमारी तक के विवरण में करता रहता है।

प्रस्तुत डायरी के अंश में मोहन राकेश का आत्मसाक्षात्कार मौजूद है, जिसमें लेखक के उतावलेपन, दिवा स्वप्न और आकांक्षा को अभिव्यक्ति प्राप्त हुई है। कन्याकुमारी के प्रसंग में यह बात बखूबी उभरकर सामने आती है। आत्मसाक्षात्कार के रूप में लिखी गई मोहन राकेश की डायरी में कोई भूमिका नहीं है। लेखक किसी अन्य को संबोधित नहीं करता। परंतु जब लेखक डायरी लिखता है तो वह उस दिन क्या महसूस करता रहता है, इसकी तस्वीर उस दिन की डायरी में पूरी तरह से उपलब्ध है। यही मोहन राकेश की डायरी की खूबी भी है, जो बतौर डायरी लेखक उनकी एक महत्वपूर्ण उपलब्धि भी है ।

वैसे तो डायरी कई उद्देश्यों से प्रेरित होकर लिखी जाती है। उसमें रोजाना का लेखा जोखा दर्ज होता है, लेखक के जीवन में घटने वाली घटनाओं का विवरण प्रस्तुत होता है। परंतु साहित्यिक डायरी लेखक या रचनाकार की रचनात्मक ऊर्जा की अभिव्यक्ति को सामने लाने का कार्य करती है। वहाँ घटनाओं और भावों का वर्णन ही पर्याप्त नहीं है। इस दृष्टि से हम देखते हैं कि मोहन राकेश की डायरी में घटनाओं और भावों वर्णन जरूर है लेकिन लेखक की मनोस्थिति पर उनका प्रभाव अभिक महत्वपूर्ण है। मोहन राकेश एकांत को ढूंढ़ते नजर आते हैं - "भोपाल में बिताई गई शाम का वातावरण अपनी हल्की सी छाप छोड़ गया है। मुगलकालीन जीवन की जो कल्पना मस्तिष्क में थी, उसको कुछ अंशों तक मूर्त रूप में देखकर एक ओर तो यह पुलक हुआ कि मैं एक कल्पना को साकार रूप में देख रहा हूँ और दूसरे शायद यह रोमांच हुआ कि मैं वर्तमान से कुछ पीछे हट आया हूँ।"

डायरी लेखन प्रकाशन के लिए नहीं होता लेकिन साहित्यिक डायरियों में लेखक की भाषा का उत्कृष्ट रूप देखने को मिलता है। अभिवेच्य डायरी अंश में हम पाते हैं कि लेखक शब्दों का प्रयोग अत्यन्त सजग होकर करता है। उसकी भाषा में भावात्मक तरलता का आभास लगातार मिलता रहता है।

डायरी के इन अंशों को पढ़ने से लेखक की भाषिक शक्ति का प्रमाण मिलता है। अपने मन की उलझनों को इतने खूबसूरत ढ़ंग से कह सकना मोहन राकेश की भाषा की विशेषता रही है। भाषा का यह सौंदर्य उनकी अन्य साहित्यिक रचनाओं में भी दिखाई देता है। मोहन राकेश की डायरी इस बात का भी प्रमाण देती है कि एक साहित्यकार के लिए डायरी लिखना भी रचनात्मक और कलात्मक अभिव्यक्ति है।

बोध प्रश्न

- मोहन राकेश की डायरी की तीन विशेषताएँ बताइए।
- आपको मोहन राकेश की डायरी के पठित अंश में सबसे प्रभावशाली प्रसंग कौन सा लगा और क्यों?
- मोहन राकेश की डायरी की उपलब्धि क्या है?
- मोहन राकेश की डायरी की काव्यात्मकता का एक उदहारण दीजिए।

20.3 पाठ सार

मुंबई से कन्याकुमारी तक की डायरी में लेखक ने अपने अकेलेपन की पीड़ा और भावनात्मक रिक्तता का वर्णन किया है। मुंबई के प्रथम प्रसंग से ज्ञात होता है कि लेखक की मनःस्थिति उस समय स्थिर नहीं थी। आगे 8.01.1953 को लेखक ने दर्ज की है कि आगरा से चलने के बाद मानसिक स्थिति ऐसी हुई है कि यहाँ कुछ लिख सकूं। उन्होनें आगे लिखा है कि

"किसी भी अपरिचित व्यक्ति से, चाहे उसकी भाषा, उसका मजहब, उसका राजनीतिक विश्वास तुमसे कितना भी भिन्न हो, यदि मुस्कुराकर मिला जाए तो जो तुम्हारी ओर हाथ बढ़ाता है, वह कोरा मनुष्य होता है।" लेखक इन विचारों से मनुष्य की सहज और व्यावहारिक परिभाषा लिखना चाहता है। एक सामाजिक जीवन में मनुष्य को कैसे परिभाषित किया जाएगा, मनुष्य को कैसे समझ जाएगा, क्या किसी व्यक्ति के अंदर मानवीय संवेदना है या नहीं। इन बातों के लिए जरूरी है कि मनुष्य के व्यवहार पर परखा जाए। चाहे कुछ भी पर मोहन राकेश अपनी डायरी से पाठकों को एक ऐसी दुनिया में ले जाते हैं जहाँ उनके सहित्यिक किरदारों के भोगे हुए संत्रास, उदासी, एकाकीपन, निरर्थकताबोध पाठकों के खुद के अपने लगने लगते हैं।

20.4 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष उपलब्ध हुए हैं –

1. आधुनिक गद्य विधाओं में अब डायरी भी महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर चुकी है।
2. हिंदी डायरी लेखकों में मोहन राकेश अग्रणी स्थान के अधिकारी हैं।
3. डायरी लेखन में स्थानों और घटनाओं की अपेक्षा मानसिक प्रतिक्रियाओं का अंकन अधिक महत्वपूर्ण होता है।
4. मोहन राकेश ने डायरी को आत्म-साक्षात्कार के माध्यम के रूप में विकसित किया।
5. मोहन राकेश की डायरी में उनका आत्मसंघर्ष और अकेलापन प्रतिबिम्बित होता है।
6. मोहन राकेश ने यह आदर्श उपस्थित किया कि डायरी लेखन का उपयोग लेखक आत्मविश्लेषण के लिए कर सकता है।

20.5 शब्द संपदा

1. आत्म-साक्षात्कार	=	अपने आप को पहचानना
2. आध्यात्मिक	=	आत्मा से संबंधित
3. उधेड़बुन	=	मन में घुमड़ने वाले विचार
4. एकाकीपन	=	अकेलापन
5. किरदार	=	पात्र

6. जुगुप्सा = निंदा

7. निरर्थकताबोध = कुछ न करने पाने का बोध

8. संत्रास = दुख, यातना

9. साहित्यालोचक = साहित्य के आलोचक

20.6 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. 'डायरी स्वलेखन है।' मोहन राकेश की डायरी के पठित अंश से किसी एक घटना के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

2. मोहन राकेश अपनी डायरी में किन-किन सामाजिक प्रश्नों पर विचार करते हैं? उदाहरण सहित बताइए।

3. 'डायरी अन्तरंग आत्म-साक्षात्कार है।' इस उक्ति को मोहन राकेश की डायरी के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

खंड (ब)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. साधारण व्यक्ति को मोहन राकेश किस रूप में व्याख्यायित करते हैं?
2. मोहन राकेश के यात्रा प्रेमी मन के बारे में उदाहरण सहित लिखिए।
3. अतीत को मोहन राकेश किस रूप में देखते हैं? उदाहरण देकर समझाइए।

खंड (स)

I सही विकल्प चुनिए

1. कन्नानोर के सागर पुलिन पर टहलते हुए लेखक ने क्या देखा? ( )
   (अ) साँप (आ) घरौंदे (इ) मूर्तियाँ (ई) मंदिर

2. मार्मुगांव से मंगलोर की यात्रा में कितने घंटे लगे? ( )

(अ) उन्नीस (आ) उनतीस (इ) बारह (ई) चौदह

3. लेखक का स्वप्न कहाँ जाकर पूरा हुआ? ( )

(अ) कन्नानोर (आ) मुंबई (इ) कन्याकुमारी (ई) रामेश्वरम

4. किस विचारक की मनुष्य की कल्पना बहुत एकांगी है? ( )

(अ) सुकरात (आ) नीत्शे (इ) फ्रायड (ई) सार्त्र

II रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए

1. .... से चलने के बाद लेखक की मानसिक स्थिति कुछ लिखने की हुई थी।
2. .... मस्जिद को देखने के बाद लेखक का अतीत का सपना टूट गया।
3. विक्टोरिया टर्मिनस स्टेशन .... में स्थित है।

III. सुमेल कीजिए

i) अंधेरे बंद कमरे	अ) अनुवाद
ii) आधे अधूरे	आ) यात्रा वृत्तान्त
iii) आखिरी चट्टान	इ) उपन्यास
iv) मृच्छकटिक	ई) नाटक

20.7 पठनीय पुस्तकें

1. मोहन राकेश का साहित्य. वीरेंद्र मेंहदीरत्ता.
2. डायरियाँ एक लेखक का अपना रेगिस्तान : मोहन राकेश की डायरी. कमलेश्वर.
3. मोहन राकेश की डायरी. अनीता राकेश.
4. हिंदी गद्य काव्य उद्भव विकास. अष्टभुजा प्रसाद पांडेय.
5. मोहन राकेश का साहित्य. शरेशचंद्र चुलठीमठ.

खंड – VI : व्यंग्य और यात्रावृत्त

इकाई 21 : व्यंग्य : विधागत स्वरूप

इकाई की रूपरेखा

21.0 प्रस्तावना

21.1 उद्देश्य

21.2 मूल पाठ : व्यंग्य : विधागत स्वरूप

21.2.1 व्यंग्य शब्द की व्युत्पत्ति

21.2.2 व्यंग्य की परिभाषा

21.2.3 व्यंग्य के साधन

21.2.4 व्यंग्य के तत्व एवं उद्देश्य

21.2.5 हिंदी साहित्य में व्यंग्य की विकास यात्रा

21.2.6 व्यंग्य भाषा एवं शैली

21.3 पाठ का सार

21.4 पाठ की उपलब्धियाँ

21.5 शब्द संपदा

21.5 परीक्षार्थ प्रश्न

21.6 पठनीय पुस्तकें

21.0 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो! आधुनिक हिंदी गद्य के अंतर्गत आप कहानी, उपन्यास, नाटक आदि विधाओं के बारे में जानकारी हासिल कर चुके हैं। गद्य साहित्य की परिधि बहुआयामी है। इसके अंतर्गत कई विधाओं की चर्चा होती है जिनमें व्यंग्य भी एक है। व्यंग्य का लक्ष्य आमतौर पर मानवीय दुर्बलताओं पर कटाक्ष करके उन्हें उभारना और सुधारना होता है। किसी व्यक्ति या वस्तु के प्रति अरुचि प्रकट करने के और भी ढंग हो सकते हैं, किंतु व्यंग्य का स्वर और पद्धति एकदम अलग है। यह साहित्य का वह रूप है जो लोगों या समुदायों की आडंबर-युक्त पतित अवस्था को उजागर

करता है, ताकि उनमें सुधार लाने का प्रयास किया जा सके। व्यंग्यकार के पास एक सकारात्मक आदर्श होता है और उसी के संदर्भ में वह गिरी हुई स्थिति पर कटाक्ष करता है। प्रस्तुत इकाई में हम गद्य साहित्य की व्यंग्य विधा का अध्ययन करेंगे।

21.1 उद्देश्य

- व्यंग्य विधा और उसके स्वरूप पर आधारित इस इकाई के अध्ययन से आप -
- व्यंग्य शब्द की व्युत्पत्ति से संबंधित जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- व्यंग्य की परिभाषाओं से अवगत हो सकेंगे।
- हिंदी साहित्य में व्यंग्य की विकास यात्रा पर विस्तारपूर्वक जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- व्यंग्य के साधन, विशेषता एवं उद्देश्य को समझ सकेंगे।
- व्यंग्य के शास्त्रीय पक्ष को समझते हुए उसके अलग-अलग तत्वों के बारे में जान सकेंगे।

21.2 मूल पाठ : व्यंग्य : विधागत स्वरूप

व्यंग्य समाज के यथार्थ से जुडा हुआ साहित्य है। वह समाज में व्याप्त अन्याय, आत्याचार, पाखंडीपन, कालबाजारी, धार्मिक, राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक विसंगतियों पर तीखा प्रहार करते हुए समाज को सही दिशा दिखाता है। साहित्य का मुख्य लक्ष्य है समाज को सही मार्ग दिखाना। लेकिन कई बार कुछ बातों को सीधे शब्दों में अभिव्यक्त करना असंभव लगता है। ऐसे में व्यंग्य का सहारा लेकर अभिव्यक्त किया जाता है, बात चाहे सत्ता की हो या धर्म की। व्यंग्यकार सहजता से अपनी बात कह जाता है जिससे साँप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे। धागे को सुई में जिस नाज़ुक तरीके से पिरोया जाता है, व्यंग्य भी कुछ इसी प्रकार की क्षमता रखता है। समाज रूपी सुईं में व्यंग्य रूपी धागे को पिरोने का काम व्यंग्यकार करते हैं ताकि समाज सुचारु रूप से संचालित हो सके और स्वस्थ समाज का निर्माण हो।

व्यंग्य एक भाषाई कार्य है। भाषा के साथ-साथ व्यंग्य का जन्म हुआ होगा, क्योंकि सामान्य बातचीत में, रोजमर्रा के जीवन में हम अक्सर व्यंग्य का सहारा लेते हैं। इसलिए कह सकते हैं कि बोलचाल की भाषा में व्यंग्य का प्रयोग सामान्य तौर पर होता है। हम अपनी बातचीत में व्यंग्य के लिए 'किया जाता है', 'कसा जाता है', 'व्यंग्य मारा जाता है', 'व्यंग्य बाण

चलाया जाता है' जैसे मुहावरों का प्रयोग अक्सर करते हैं। लेकिन साहित्य में एक विधा के रूप में इसका आविर्भाव बहुत बाद में होता है। इसका कारण यह हो सकता है कि साहित्य सबका साथ चाहता है, किंतु व्यंग्य में सबका साथ होना मुमकिन नहीं है।

व्यंग्य में विरोधाभास होता है। पाखंड पर चोट होती है। ऊपरी तौर पर न दिखने वाले छल-प्रपंच का पर्दाफ़ाश होता है। इसमें कटु सत्य की आलोचना होती है। व्यंग्यकार जीवन और जगत की वास्तविक अनुभूतियों को व्यंग्य का मुलम्मा चढाकर प्रस्तुत करता है। कल्पनिक जीवन के खोखलेपन से वास्तविक जीवन के कटु सत्य का साक्षात्कार कराता है। इन्हीं कारणों से व्यंग्य को साहित्य में स्थान बहुत बाद मिला।

खैर, आप इस इकाई के अंतर्गत विस्तार से व्यंग्य की व्युत्पत्ति, परिभाषा, साहित्य में व्यंग्य का स्वरूप तथा आयाम आदि के बारे में जान पाएंगे। तो चलिए, व्यंग्य को जानने-समझने का प्रयास करें।

बोध प्रश्न

- साहित्यकार व्यंग्य का सहारा क्यों लेता है?

21.2.1 व्यंग्य शब्द की व्युत्पत्ति

व्यंग्य शब्द मूलत: संस्कृत भाषा का शब्द है। संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ (पृ.1072) में इसकी निष्पत्ति वि उपसर्ग + अज्ज धातु + ण्यत प्रत्यय के योग से मानी गया है। हिंदी साहित्य कोश (पृ. 649) में वि + अंग के योग से इस शब्द की व्युत्पत्ति बताई गई है। इसका प्रयोग मूलत: शब्द शक्ति के अंतर्गत किया जाता है। इसलिए हिंदी शब्द सागर तथा नालंदा विशाल शब्द सागर में व्यंग्य का अर्थ इस प्रकार बताया गया है - 1) शब्द का वह गूढ अर्थ जो उसकी व्यंजना-वृत्ति द्वारा प्रकट हो और 2) ताना, बोली, चुटकी। मानक विशाल हिंदी शब्दकोश में व्यंजनावृत्ति द्वारा बोधित अर्थ, संकेत द्वारा भाव या अर्थ व्यक्त करना या गूढार्थ कहा गया है। वर्तमान में इसकी परिधि अधिक विस्तृत और व्यापक दिखाई देती है। इसकी कुछ विशेषताएँ हैं व्यंग्य का मूल स्रोत विकृति है। अर्थात सामाजिक विद्रूपताओं को उभारना व्यंग्य का प्रमुख कार्य है।

यह वैयक्तिकता से सामाजिकता की ओर जाने की प्रक्रिया है। साथ ही व्यंग्य बुद्धिपरक होता है, इसमें विवेक पूर्ण चिंतन होता है, इसीलिए कभी-कभी हास्य का पुट होते हुए भी चिंतन की गहराई रहती है।

अक्सर किसी विषय पर जब खुले आम बात नहीं कही जा सकती है, तब व्यंग्य का प्रयोग किया जाता है।

व्यंग्यकार सामान्य मनुष्य से भी अधिक संवेदनशील होता है। इसीलिए उसके स्वर में आक्रोश होता है, उसकी अभिव्यक्ति में चेतना का स्वर तीव्रता से मुखरित होता है, सुधार एवं न्याय की मांग होती है। मनोवैज्ञानिक तत्वों से परिपूर्ण तथा सुधार की कामना से प्रेरित होता है। यह व्यंजना मूलक अभिव्यक्ति होने के कारण सामान्य रूप में इसके अर्थ की गहराई को समझना कठिन है। इसके लिए उसमें गहरी पैठ लगाना जरूरी है। नैतिकता के निकट और विचारप्रधान होता है।

हिंदी में 'व्यंग्य' को अंग्रेजी के सटायर का पर्याय माना जाता है। पुरातन काल में यह शब्द पर-निंदा के अर्थ में प्रयुक्त होता था। लेकिन आज सटायर शब्द का प्रयोग समाज में छिपी बुराइयों को उजागर करने वाले कथन के लिए किया जाता है।

बोध प्रश्न

- व्यंग्य किसे कहते हैं?
- व्यंग्य की व्युत्पत्ति कैसे बताइए?
- व्यंग्यकार के गुण बताइए।

21.2.2 व्यंग्य की परिभाषा

दशरथ ओझा - "व्यंग्य की युगीन परंपरा अपना एक अलग इतिहास रखती है। हिंदी साहित्य के मंथन से हम इस निष्कर्ष पर पहंचते हैं कि व्यंग्य की प्रहसन परंपरा वैदिक साहित्य से होती हुई संस्कृत साहित्य तक पहुंचती है।"

हरिशंकर परसाई - "व्यंग्य जीवन से साक्षात्कार कराता है, जीवन की आलोचना करता है, विसंगतियों, मिथ्याचारों और पाखंडों का पर्दाफ़ाश करता है। अच्छा व्यंग्य सहानुभूति का सबसे उत्कृष्ट रूप होता है।"

केशवचंद्र वर्मा - "मानव व्यापार के व्यापक संदर्भ में कथनी और करनी का भेद सहज ही व्यंग्य को जन्म देता रहता है।"

हजारीप्रसाद द्विवेदी - "व्यंग्य वह है, जहाँ कहनेवाला अधरोष्ठ से हँस रहा हो और सुननेवाला तिलमिला उठा हो और फिर भी कहनेवाले को जवाब देना अपने को और भी उपहासास्पद बना देता हो।"

अंग्रेज़ी विश्वकोश - "व्यंग्य एक ऐसी साहित्यिक रचना है जो हास्यमय हो तथा व्यक्तिगत दोषों, मूर्खताओं, निंदाओं और त्रुटियों को उपहास, मज़ाक, हँसी, ठिठोली, लक्षणा आदि साधनों के द्वारा रोकती है। यह निंदा कभी-कभी सुधार के उद्देश्य से की जाती है।"

परंपरागत रूप से व्यंग्य के दो प्रकार हैं। एक को औपचारिक या प्रत्यक्ष तथा दूसरे को अनौपचारिक या अप्रत्यक्ष व्यंग्य कहा जाता है। प्रत्यक्ष व्यंग्य अपने आप में एक कृति होता है। इसमें प्रायः लेखक 'मैं' शैली का प्रयोग करता है और सीधे पाठक को संबोधित करता है। अप्रत्यक्ष व्यंग्य किसी अन्य कृति में प्रसंगवश आता है। भारतेंदु रचित 'अंधेर नगरी' प्रत्यक्ष व्यंग्य का उदाहरण है, तो प्रेमचंद रचित 'गोदान' में गोबर द्वारा सूदखोर महाजनों पर केन्द्रित उपरूपक अप्रत्यक्ष व्यंग्य का। साहित्यिक विधा के रूप में व्यंग्य रचनात्मक साहित्य को अधिक आनंदप्रद बनाता है और पाठकीय अनुकूलता प्रदान करता है। चिंतन की रूखी-सूखी अभिव्यक्ति की तुलना में व्यंग्य ज़्यादा सरस लगता है। इसलिए साहित्यकार व्यंग्य की रचना में रुचि लेते हैं।

बोध प्रश्न

- परसाई ने व्यंग्य के बारे में क्या कहा है?
- हजारीप्रसाद द्विवेदी व्यंग्य किसे कहते हैं?

21.2.3 व्यंग्य के साधन

व्यंग्यकार समाज की विकृतियों को उजागर करने के लिए हास (ह्यूमर), परिहास (पैरोडी), उपहास, वाग्वैदग्ध्य, वक्रोक्ति, प्रहसन, उपालंभ जैसे साधनों द्वारा व्यंग्य की अभिव्यक्ति करता है। व्यंग्य के लिए ये सारे साधन अस्त्र का काम करते हैं, फिर भी इनमें महीन अंतर दिखाई देता है। तो चलिए, इनमें से कुछ प्रमुख साधनों और व्यंग्य के संबंध के बारे में विस्तृत जानकारी पा लें -

अ) हास्य और व्यंग्य : पाश्चात्य साहित्य में हास्य का विवेचन कॉमेडी के अर्थ में किया जाता है तथा भारतीय साहित्य में काव्य के नौ रसों के अंतर्गत हास्य रस की विवेचना होती है। हास्य का उद्भव विकृत विचार, विकृत वेश, विकृत आचरण, विकृत वाणी आदि से होता है। इसलिए उसे विकृतियों का वाहक भी कह सकते हैं। इसमें जो विसंगति पाई जाती है, उसी से आनंद, मनोरंजन या मजा उत्पन्न होता है। हास्य के द्वारा मनुष्य अपने जीवन की जटिलताओं को दूर कर शांति का अनुभव करता है।

सामान्य तौर पर व्यंग्य शब्द का प्रयोग हास्य के साथ सहजता से ही कर दिया जाता है। यह भी माना जाता है कि हास्य-व्यंग्य अलग नहीं बल्कि एक ही हैं। जबकि दोनों शब्दों के

उद्देश्य को देखा जाय तो दोनों में अंतर की हल्की रेखा दिखाई देगी। हास्य का उद्देश्य मनोरंजन प्रदान करना, हँसाना या विनोद प्रदान करना होता है और हास्य केवल बाहरी विसंगतियों को पकडता है। जबकि व्यंग्य का प्रयोग गंभीर चिंतन से भरा होता है जिसमें विसंगतियों पर कुठाराघात किया जाता है और व्यंग्य विसंगतियों की तह तक जाता है। दोनों के अंतर को परिणामों के आधार पर स्पष्ट करते हुए गोपाल प्रसाद व्यास ने कहा है- "विनोद कालिंदी की आनंद लहर है और व्यंग्य बरसाती गंगा की उफनती धारा का कालग्रासी भँवर। विनोद साहित्य का कांतासम्मित रस है और व्यंग्य गुलाब के नीचे का काँटा।" हरिशंकर परसाई व्यंग्य के माध्यम से हास्य रस की स्थिति को इस प्रकार प्रकट करते हैं- "हमारी एक पड़ोसिन वृद्धा बीमार पड़ी थी। हमसे पानी माँगकर पीती थी-उठा नहीं जाता था। सहसा किसी ने आकर कहा कि पड़ोसी डाक्टर साहब की लड़की किसी के साथ भाग गई। बस, चाची एकदम उठीं और काँखते-काँखते दो-चार पड़ोसियों को यह शुभ संवाद अपने व्यक्तिगत कमेण्ट के साथ सुना आई। उस दिन से उनकी हालत सुधरने लगी।" (परसाई रचनावली-3 पृ.30)। इससे यह स्पष्ट होता है कि व्यंग्य मानवीय करुणा को उभारता है, उपहास करता है, साथ ही उसके मूल में आक्रमण का भाव निश्चित रूप से विद्यमान रहता है। विद्वानों के मतों के आधार पर हास्य-व्यंग्य के अंतर को इस तरह देखा जा सकता है-

हास्य में सहानुभूति होती है, व्यंग्य में घृणा, आक्रोश का भाव होता है।

हास्य का संबंध हृदय से होता है, व्यंग्य का समाज की विसंगतियों से।

हास्य का उद्देश्य मनोरंजन करना होता है, व्यंग्य का उद्देश्य वस्तु विशेष का विरोध करना भी होता है।

हास्य सतह तक ही सीमित रहता है जब कि व्यंग्य गहरा होता है।

हास्य में व्यंग्य की सृष्टि अवश्य होती है, व्यंग्य में हास्य की सृष्टि हो ही, यह जरूरी नहीं।

इस प्रकार हास्य और व्यंग्य में भिन्नता होने पर भी मान लिया जाता है कि हास्य-व्यंग्य एक दूसरे में समाहित हैं।

आ) उपहास और व्यंग्य : उपहास शब्द में खिल्ली उडाने का भाव झलकता है। इसमें कटुता का भाव है। अंग्रेजी में इसे Sarcasm, भी कहते हैं। Sarcasm की व्याख्या करते हुए उसे 'a sharp and Satirical or ironic utterance designed to cut or give pain' कहा गया है। उपहास में दो प्रमुख तत्व हैं- 1) हास, 2) किसी को उपालंभ देना, तुच्छ मानना। इसमें व्यक्तिगत ईर्ष्या, दुर्भावना की गंध आती है, लेकिन व्यंग्य व्यक्तिगत भूमि से सामाजिक भूमि तक

की यात्रा है। व्यष्टि चेतना से निकलकर समष्टि चेतना में समाहित होता है। व्यंग्य में बदले का आग्रह नहीं होता, सुधार की कामना होती है। अत: व्यंग्य का साधन होने पर भी दोनों में अर्थ की दृष्टि से सूक्ष्म अंतर दिखाई देता है।

इ) वक्रोक्ति और व्यंग्य : वक्र (विलक्षण) + उक्ति (कथन) के मेल से वक्रोक्ति शब्द बना है जिसका अर्थ होता है विलक्षण या विपरीत कथन। डॉ. नगेंद्र ने वक्रोक्ति शब्द को IRONY का हिंदी पर्याय माना है। उनका कथन है कि "जब किसी वाक्य को किसी और प्रकार से कहने पर उसका दूसरा अर्थ निकले, वही वक्रोक्ति है। वक्रोक्ति द्वारा व्यंग्य किया जा सकता है, लेकिन हर वक्रोक्ति व्यंग्य नहीं हो सकती, जब तक उसका स्वरूप सामाजिक न हो।"

ई) परिहास (पैरोडी) और व्यंग्य : 'परिहास' एक प्रकार की साहित्यिक शैली का नाम है। जिसमें किसी भी प्रचलित लोक पंक्ति या रचना की विषय वस्तु को नष्ट करके वर्तमान स्थितियों को उसी शैली या छंद में प्रस्तुत किया जाता है। शब्दों को उलट-पुलट कर व्यंग्य उभारा जाता है। इसलिए पैरोडी व्यंग्य की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है, परंतु व्यंग्य का पर्याय नहीं है।

उ) प्रहसन : प्रहसन नाटक का एक रूप है जिसका उद्देश्य हास्य रस की सृष्टि करना होता है। व्यंग्य में नाटकीय तत्व जरूरी नहीं है। व्यंग्य में पैना तथा प्रत्यक्ष रूप से प्रहार किया जाता है, जब कि प्रहसन में हमेशा असाधारण नम्रता होती है।

ऊ) उपालंभ : इसका संबंध शृंगार के वियोग पक्ष से है। इसमें नायक को उलाहना देकर उसको नायिका के मन के अनुकूल किया जाता है। प्रेमी से मिलने की इच्छा तथा विरहाग्नि को दूर करने के लिए किसी सहचर के माध्यम से प्रेमिका उपालंभ देती है। जैसे सूरदास कृत भ्रमरगीत में उद्धव और गोपियों के बीच उपालंभ की स्थिति बनती है। उपालंभ में प्रेम की स्थिति होती है, जब कि व्यंग्य में ऐसा होना जरूरी नहीं है।

बोध प्रश्न

- हास्य को अंग्रेजी में क्या कहते हैं? और हास्य का प्रमुख उद्देश्य क्या है?
- वक्रोक्ति शब्द कैसे बना है?
- प्रहसन और व्यंग्य में क्या अंतर है?
- व्यंग्य के प्रमुख साधन क्या-क्या है?

21.2.4 व्यंग्य के तत्व एवं उद्देश्य

व्यंग्य के तत्वों को लेकर विद्वानों में मतभेद है। डॉ. वीरेंद्र मेहंदीरत्ता के अनुसार व्यंग्य के तीन तत्व हैं-

1. आलोचना
2. हास्य अथवा बीभत्सता
3. सुधार।

डॉ. बरसानेलाल चतुर्वेदी ने व्यंग्य के चार तत्व माने हैं। यथा-

1. साहित्य की व्यंजना शक्ति का प्रयोग
2. दूसरों की अथवा अपनी मूर्खता की हँसी उडाना
3. व्यंग्य की सृष्टि के लिए हास्य, वक्रोक्ति, वचन विदग्धता रूपी साधनों का प्रयोग
4. सुधार करने का उद्देश्य।

इनके अतिरिक्त व्यंग्य में निहित संवेदनशीलता, गंभीरता, बौद्धिकता, सांकेतिकता एवं तटस्थ विश्लेषण। सत्य का उद्घाटन व्यंग्य का चरम लक्ष्य है।

व्यंग्य के उद्देश्य -

अब तक आप यह भली प्रकार समझ चुके होंगे कि व्यंग्य के माध्यम से मानव चरित्र की उन दुर्बलताओं का खुलासा किया जाता है जिन्हें कोई व्यक्ति अपना गुण समझता है। ऐसा करने का प्रमुख उद्देश्य है सुधार करना। व्यंग्य का प्रयोग मनोरंजन के साथ-साथ सुधार लाने के उद्देश्य से किया जाता है।

व्यंग्य के निम्नलिखित उद्देश्य हैं-

अ) सत्य का प्रकटन

व्यंग्यकार का कार्य सत्य का उद्घाटन करना होता है। सत्य के उद्घाटन के लिए उसे कठोरता का पालन करना पड़ता है। निष्ठुर होकर उसे प्रहार करना होता है। दिनकर सोनवलकर के अनुसार-“साहित्य की सबसे बडी अदालत व्यंग्य है, जहाँ किसी के बरे में व्यंग्यकार सत्य और न्याय का दो टूक फ़ैसला करता है।” इस प्रकार सत्य का साथ देते हुए सत्य की तह तक पहुंचना भी व्यंग्य का उद्देश्य है।

आ) समाज शुद्धीकरण

साहित्य समाज का दर्पण होता है। यदि समाज अच्छा है तो उत्कृष्ट साहित्य का सृजन होगा। यदि समाज कलुषित एवं गंदा है तो साहित्य उस गंदगी को दिखाते हुए उसे साफ करने का कार्य करती है। इस दृष्टि से व्यंग्य रचना समाज से गंदगी को साफ करने का कार्य करता है। अत: एक समाज को सुचारु रूप से संचालित करने के लिए व्यंग्यकारों तथा व्यंग्यपरक रचनाओं

का होना जरूरी है। व्यंग्यकार किसी भी प्रकार की आलोचना से नहीं कतराता। मेरिडिथ का कहना है कि व्यंग्यकार नैतिकता का ठेकेदार है, जिसका कार्य समाज में फैली गंदगी को साफ करना है।"

इ) क्रांति दूत

व्यंग्यकार समाज में क्रांति का कार्य करता है। उसी के जरिए समाज में व्याप्त विद्रूपताओं का पर्दाफ़श होता है, अन्यथा उस पर मखमली मुलम्मा चढा हुआ होता है ।

ई) लज्जित करना

हरिशंकर दुबे लिखते हैं, "व्यंग्य की चोट जिस पर होती है यदि वह व्यंग्य की मार से तिलमिलाता है और अपने आपको लज्जित महसूस करता है तभी व्यंग्य का सुधारात्मक उद्देश्य सफ़ल हो सकता है। जिस बात को कहने का साहस आम आदमी नहीं कर सकता व्यंग्य उसे खुले रूप में कह देता है।" व्यंग्य अपनी करारी चोट से समाज एवं जनता को लज्जित कर देता है।

उ) परिवर्तन लाना, चेतना जाग्रत करना

वास्तव में साहित्य का काम समाज को दर्पण दिखाना होता है। व्यंग्य इस उद्देश्य की पूर्ति बखूबी करता है। वह अहितकारी तत्वों का विध्वंस करता है और लोकमंगल की सिद्धि करता है।

ऊ) सुधार भावना

सत्य का उद्घाटन करना व्यंग्य तथा व्यंग्यकार का लक्ष्य होता है। सत्य का उद्घाटन करते हुए पाठक या दर्शक को मनवाने का काम भी व्यंग्य को करना है, तभी व्यंग्य तथा व्यंग्यकार सफल होते हैं। अपने समय के सत्य को स्पष्ट करने के कारण व्यंग्य साहित्य अपने युग का प्रामाणिक दस्तावेज होता है।

इनके अतिरिक्त यथार्थ, आत्मबोध, बौद्धिकता, सांकेतिकता, चिंतन दृष्टि, गंभीरता, संवेदना, विसंगतियों का कथन आदि व्यंग्य के अन्य तत्व हैं।

बोध प्रश्न

- व्यंग्य के प्रमुख उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।
- व्यंग्य के तीन प्रमुख तत्वों के बारे में बताइए।

21.2.5 हिंदी साहित्य में व्यंग्य की विकास यात्रा

प्रिय छात्रो जैसा कि आपको पहले ही बताया गया है, व्यंग्य का जन्म भाषा के साथ ही हुआ है। संस्कृत साहित्य में वैयक्तिक व्यंग्य प्रचुर मात्रा में मिलता है। कालिदास के कुमारसंभव,

भवभूति के उत्तररामचरित आदि में इसी प्रकार के व्यंग्य मिलते हैं। अध्ययन की सुविधा हेतु व्यंग्य साहित्य को निम्न रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है -

आदिकाल में व्यंग्य

अपभ्रंश साहित्य में जैन, बौद्ध, सिद्ध आदि की रचनाओं में धार्मिक आडंबर के विरोध में, धार्मिक पाखंड पर व्यंग्य किया गया है। जैन महाकवि स्वयंभू ने पउम चरिउ में सीता की पीड़ा के माध्यम से नारी अवमानना का सुंदर व्यंग्यात्मक चित्रण किया है। अमीर खुसरो ने अपनी मुकरियों में हास्य-व्यंग्य का प्रयोग किया है। चंदबरदाई कृत पृथ्वीराज रासो में भी व्यंग्य का पुट मिलता है।

भक्तिकाल तथा रीतिकाल में व्यंग्य

भक्तिकाल का संत साहित्य व्यंग्य का भंडार है, ऐसा कहना गलत नहीं होगा। क्योंकि इस युग के संत कवि जैसे कबीर, रैदास, तुलसीदास आदि ने समाज में व्याप्त कुरीतियों पर, धार्मिक कट्टरपन पर, अंधविश्वास पर, जाति-पाँति आदि पर व्यंग्यबाण चलाए हैं। व्यंग्य का जैसा पैनापन कबीर के साहित्य में है, वह अन्यत्र नहीं। कबीर ने दोहों के माध्यम से अपने युग में व्याप्त खोखले कर्मकांड, सामाजिक तथा जातिगत भेद-भावों पर इस प्रकार व्यंग्य किया है कि उन्हें हिंदी का प्रथम व्यंग्यकार भी कह सकते हैं। इसीलिए आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है -“सच पूछा जाए तो आज तक हिंदी में ऐसा जबरदस्त व्यंग्य लेखक पैदा ही नहीं हुआ। उनकी साफ चोट करने वाली भाषा, बिना कहे ही सब कुछ कह देने वाली शैली और अत्यंत सादी किंतु तेज प्रकाशन भंगिमा अनन्यसाधारण है।”

कबीर की तरह मध्ययुग में सूरदास का नाम भी श्रेष्ठ व्यंग्यकारों की सूची में शामिल है। सूरदास ने भ्रमरगीत में सगुण भक्ति की श्रेष्ठता को सिद्ध करने के लिए निर्गुण भक्ति पर व्यंग्य किया है। उपालंभ तथा वाग्विदग्धता के माध्यम से गोपियों ने कृष्ण के प्रति अपने प्रेम को तथा विरह की वेदना को उद्धव के सम्मुख प्रस्तुत किया है। उद्धव को ज्ञानी पंडित कहकर उन्हें चिढ़ाती हैं और आयो घोष बड़ो व्यापारी कहकर व्यंग्य करती हैं। तर्क-वितर्क के रूप में बड़ा सुंदर व्यंग्य सूरदास के भ्रमरगीत में मिलता। तुलसीदास सामाजिक व्यंग्य के प्रबल समर्थक हैं। “मनही मन महेसु मुसकाही/हरि के विंग्य वचन नहि जाही”-शिव विवाह के इस प्रसंग में व्यंग्य का दर्शन होता है। परशुराम-लक्ष्मण संवाद, रावण-अंगद संवाद आदि में भी व्यंग्य का दर्शन होता है। रीतिकाल में भी बिहारी, घनानंद, रहीम, वृंद, रसखान आदि कवियों ने व्यंग्यपूर्ण

लेखन किया है। केशवदास ने अपनी रामचंद्रिका में व्यंग्य-विनोद का प्रयोग किया है। इस युग में अधिकतर व्यंग्य का प्रयोग वक्रोक्ति, अन्योक्ति, समासोक्ति के रूप में हुआ है।

आधुनिक काल में व्यंग्य

आदिकाल से आधुनिक काल तक आते-आते व्यंग्य की पृष्ठभूमि पूरी तरह से निर्मित हो चुकती है। भारतेंदु हरिश्चंद्र के साथ हिंदी साहित्य में आधुनिक युग का प्रारंभ माना जाता है। इस युग के प्रमुख व्यंग्यकारों में स्वयं भारतेंदु हरिश्चंद्र, बालकृष्ण भट्ट, बालमुकुंद गुप्त, प्रतापनारायण मिश्र, राधाचरण गोस्वामी और बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' प्रसिद्ध हैं। भारतेंदु ने गद्य-पद्य के साथ प्रहसन, नाटक, निबंध, कविता आदि कई विधाओं में व्यंग्य को जीवंत रखा। अंधेर नगरी प्रहसन में अंग्रेजी शासन प्रणाली पर व्यंग्य किया गया है। प्रतापनारायण मिश्र स्वच्छंद एवं उन्मुक्त व्यंग्यकार थे।

भारतेंदु युग में जिन विधाओं में रचनाएँ हुईं उसका विकसित एवं परिनिष्ठित रूप द्विवेदी युग में दिखाई देता है। इस युग में चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' अच्छे व्यंग्यकार थे। सरदार पूर्णसिंह, बाबू गुलाबराय, पद्मसिंह शर्मा और जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी आदि इस युग के प्रसिद्ध रचनाकार एवं व्यंग्यकार थे। लोकरूढ़ि, अंधविश्वास, बाह्य आडंबर, ढकोसले, आर्थिक विषमता, अकाल, महामारी जैसी गंभीर समस्याओं पर लेखनी चलाई गई। शिवपूजन सहाय की रचनाओं में हास्य का समावेश होता है। उनका निबंध 'मैं हज्जाम हूँ' व्यंग्यपरक है।

द्विवेदी युग के बाद शुक्ल युग प्रारंभ होता है। इस युग में हिंदी गद्य विशेष रूप से निबंध प्रगति के मार्ग पर था। इस युग में वैचारिकता तथा मनोवैज्ञानिकता का अधिक समावेश था। आ.रामचंद्र शुक्ल स्वयं बहुत अच्छे निबंधकार थे। चिंतामणि-भाग 1 में उनके निबंध संकलित हैं। व्यंग्य के समावेश से उनके सारे निबंध प्रभावी बन पडे हैं। माखनलाल चतुर्वेदी, सियारामशरण गुप्त, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, बेढब बनारसी आदि इस युग के प्रमुख रचनाकार हैं। इस युग के बाद आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का नाम उल्लेखनीय है। काव्य के क्षेत्र में निराला तीखे व्यंग्यकार थे। व्यंग्य की दृष्टि से कुकुरमुत्ता उनकी महत्वपूर्ण रचना है। पांडेय बेचन शर्मा उग्र और भगवतीचरण वर्मा ने भी व्यंग्य का प्रयोग किया है। भगवतीचरण वर्मा की हास्य-व्यंग्यपरक कहानी प्रायश्चित में धार्मिक पाखंड का पर्दाफ़ाश किया गया है।

स्वातंत्र्योत्तर काल में व्यंग्य साहित्य में महत्वपूण मोड़ आया। व्यंग्य एक अलग विधा के रूप में स्थान पाने लगा। कविता के माध्यम से भी व्यंग्य का तीव्र स्वर गुंजित हुआ। श्रीलाल

शुक्ल, नरेंद्र कोहली, विद्यानिवास मिश्र, लक्ष्मीनारयण लाल, हरिशंकर परसाई, यशपाल, शरद जोशी, रवींद्र त्यागी, प्रेम जनमेजय, लतीफ घोंघी आदि व्यंग्य विधा के उन्नायक हैं। ।

बोध प्रश्न

- पउम चरिउ किसकी रचना है?
- भ्रमरगीत में किस पर व्यंग्य कसा गया है?
- कुकुरमुत्ता किसकी रचना है?
- प्रायश्चित किसकी कहानी है?
- आधुनिक काल के प्रमुख व्यंग्यकारों के नाम बताइए।

21.2.6 व्यंग्यभाषा एवं शैली

व्यंग्यभाषा में शब्द और वाक्य, मुहावरे, विशेषणों, सादृश्यों एवं विचलन का अपना शैलीय प्रभाव है। व्यंग्यभाषा आवृत्ति, पर्यायवाची, लक्षणात्मकता, आलंकारिकता, अर्थसामर्थ्य से परिपूर्ण होती है। इन सभी के सही प्रयोग से व्यंग्य रचना अत्यंत प्रभावी बनती है। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि व्यंग्य की अपनी निजी शैली है।

बोध प्रश्न

- व्यंग्यभाषा को कैसे प्रभावशाली बनाया जा सकता है?

21.3 पाठ का सार

व्यंग्य साहित्य की एक सशक्त विधा है। वास्तव में साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है। व्यंग्य के माध्यम से मानव चरित्र की उन दुर्बलताओं का खुलासा किया जाता है जिन्हें कोई व्यक्ति अपना गुण समझता है। ऐसा करने का प्रमुख उद्देश्य है सुधार करना। व्यंग्य का प्रयोग मनोरंजन के साथ-साथ सुधार लाने के उद्देश्य से किया जाता है। तात्पर्य यह कि साहित्य का मूल उद्देश्य समाज का दिशा निर्देश करना होता है। इस दृष्टि से व्यंग्य साहित्य का महत्वपूर्ण योगदान है क्योंकि यह कुठाराघात भी करता है, सोचने पर विवश भी करता है। लेकिन लचीले पन के साथ तथा हास्य के पुट के साथ। यही कारण है कि व्यंग्य साहित्य दूसरी सभी विधाओं से भिन्न होता है। मनोरंजन प्रधान, तीखा प्रहार करने वाली और विचार प्रधान एक अनूठी साहित्यिक विधा के रूप में 'व्यंग्य' विधा अब पूरी तरह प्रतिष्ठित है। व्यंग्य की चोट जिस पर होती है यदि वह व्यंग्य की मार से तिलमिलाता है और अपने आपको लज्जित महसूस

करता है, तभी व्यंग्य का सुधारात्मक उद्देश्य सफल हो सकता है। जिस बात को कहने का साहस आम आदमी नहीं कर सकता व्यंग्यकार उसे खुले रूप में कह देता है। व्यंग्य अपनी करारी चोट से समाज एवं जनता को लज्जित कर देता है। व्यंग्य सत्य का उद्घाटन करते हुए पाठक या दर्शक को मनवाने का काम भी करता है। अपने समय के सत्य को स्पष्ट करने के कारण व्यंग्य साहित्य अपने युग का प्रामाणिक दस्तावेज होता है। यथार्थ, आत्मबोध, बौद्धिकता, सांकेतिकता, चिंतन दृष्टि, गंभीरता, संवेदना, विसंगतियों का कथन आदि भी व्यंग्य के तत्वों में शामिल हैं।

21.4 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष उपलब्ध हुए हैं -

1. व्यंग्य एक ऐसी विधा है जो मूलतः सामाजिक परिवर्तन और सुधार के लिए समर्पित है।
2. संस्कृत काव्य शास्त्र में व्यंजना शब्द शक्ति, ध्वनि और वक्रोक्ति व्यंग्य के स्रोत के रूप में स्वीकृत हैं।
3. अंग्रेज़ी में सटायर की परंपरा व्यंग्य को पुष्ट करती है।
4. हिंदी साहित्य में सरहपाद, गोरखनाथ, कबीरदास, सूरदास और तुलसीदास से लेकर रीतिकालीन कवियों तक के काव्य में व्यंग्यात्मक उक्तियाँ मिलती हैं।
5. आधुनिक काल में भारतेन्दु युग से ही गद्य और पद्य दोनों में चुटीली व्यंग्यशैली के दर्शन होते हैं।
6. आज़ादी के बाद, क्रमशः व्यंग्य को स्वतंत्र विधा के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त हुई।

21.5 शब्द संपदा

1. अभिधा	=	वाच्यार्थ प्रकट करने वाली शब्द शक्ति
2. अमर्याद नाटक	=	वह नाटक जो मर्यादा की परिधि से बाहर होता है, अश्लील
3. कुठाराघात	=	प्रहार करना, शब्दों से वार करना
4. मुखरित होना	=	अभिव्यक्त होना
5. मुलम्मा	=	दिखावा करना, पॉलिश
6. लक्षणा	=	सामान्य अर्थ से भिन्न अर्थ देने वाली शब्द शक्ति

7. विद्रूपता = कुरीति, बिगड़ी हुई

8. व्यंजना = अभिधा और लक्षणा के विरत हो जाने पर संकेत द्वारा अर्थ प्रकट करना

21.6 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. व्यंग्य के बारे में आप क्या समझते हैं? अपने शब्दों में लिखिए।
2. हास्य और व्यंग्य के अत:संबंध पर प्रकाश डालिए।
3. हिंदी में व्यंग्य की विकास यात्रा पर प्रकाश डालिए।
4. सफ़ल व्यंग्य के साधन कौन-कौन से हैं? विस्तारपूर्वक लिखिए।
5. व्यंग्य की व्युत्पत्ति पर विचार करते हुए सटायर शब्द के अर्थ को स्पष्ट कीजिए।

खंड (ब)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. व्यंग्य को अंग्रेजी में क्या कहा जाता है? अर्थ स्पष्ट करें।
2. किन्हीं दो भारतीय विद्वानों के अनुसार व्यंग्य परिभाषा लिखिए।
3. व्यंग्य के उद्देश्य को स्पष्ट कीजिए।
4. भक्तिकाल में व्यंग्य के प्रयोग पर प्रकाश डालिए।
5. परिहास और उपालंभ के अर्थ को स्पष्ट करें।

खंड (स)

I सही विकल्प चुनिए

1. कुकुरमुत्ता के रचनाकार हैं - ( )

(अ) प्रेमचंद (आ) निराला (इ) शुक्ल

2. प्रायश्चित इनकी कहानी है ( )

(अ) गुलाबराय (आ) बालमुकुंद गुप्त (इ) भगवतीचरण वर्मा

3. सटायर के लिए हिंदी में इस शब्द का प्रयोग होता है ( )

(अ) वक्रोक्ति (आ) उपहास (इ) व्यंग्य

4. रामचंद्रिका के रचयिता हैं ( )

(अ) केशवदास (आ) रैदास (इ) घनानंद

II रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

1. अंधेर नगरी एक ....है।
2. परिहास को ....भी कहा जाता है।
3. आधुनिक काल को रामचंद्र शुक्ल ने ....काल भी कहा है।
4. भगवतीचरण वर्मा की हास्य-व्यंग्यपरक कहानी .... है।
5. वैयक्तिकता से सामाजिकता की ओर जाने की प्रक्रिया को .... कहा जाता है।
6. 'मैं हज्जाम हूँ' के रचनाकार .... हैं।

III सुमेल कीजिए

1. आयो घोष बडे व्यापारी	(अ) व्यंग्य
2. सुधार की कामना	(आ) व्यंग्यकार
3. हरिशंकर परसाई	(इ) शब्द शक्ति
4. व्यंजना	(ई) गोपियाँ

21.7 पठनीय पुस्तकें

1. हिंदी का स्वातंत्र्योत्तर हास्य और व्यंग्य. बालेंदुशेखर तिवारी.
2. आधुनिक हिंदी साहित्य में व्यंग्य. वीरेंद्र मेहंदीरत्ता.
3. साहित्य में हास्य एवं व्यंग्य. प्रेमनारायण टंडन.

इकाई 22 : 'सदाचार का ताबीज़' (हरिशंकर परसाई) : एक विश्लेषण

इकाई की रूपरेखा

22.0 प्रस्तावना

22.1 उद्देश्य

22.2 मूल पाठ : 'सदाचार का ताबीज़' (हरिशंकर परसाई) : एक विश्लेषण

22.2.1 हरिशंकर परसाई : जीवन और रचनायात्रा

22.2.2 'सदाचार का ताबीज़' : कथावस्तु

22.2.3 'सदाचार का ताबीज़' में प्रयुक्त व्यंग्य के साधन

22.2.4 'सदाचार का ताबीज़' में व्यंग्य : तात्विक विश्लेषण

22.2.5 'सदाचार का ताबीज़' भाषा एवं शैली

22.3 पाठ सार

22.4 पाठ की उपलब्धियाँ

22.5 शब्द संपदा

22.6 परीक्षार्थ प्रश्न

22.7 पठनीय पुस्तकें

22.0 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो! पिछली इकाई में आप व्यंग्य लेखन या व्यंग्य विधा के सैद्धांतिक स्वरूप की जानकारी हासिल कर चुके हैं। आप जान चुके हैं कि व्यंग्य के माध्यम से लेखक मानव-चरित्र की उन दुर्बलताओं का खुलासा करता है जिन्हें कोई व्यक्ति या समुदाय अपना गुण समझता है। लेकिन इस तरह खुलासा करने का उद्देश्य 'सुधार' करना होता है। अभिप्राय यह है कि व्यंग्य का प्रयोग मनोरंजन के साथ साथ सुधार लाने के उद्देश्य से किया जाता है। आधुनिक हिंदी साहित्य में व्यंग्य विधा को ऊँचाई पर पहुँचानेवाले लेखकों में हरिशंकर परसाई का नाम अग्रगण्य है। प्रस्तुत इकाई में आप हरिशंकर परसाई के एक व्यंग्य निबंध 'सदाचार का ताबीज़' का अध्ययन करेंगे।

22.1 उद्देश्य

इस इकाई में आप हरिशंकर परिसाई द्वारा लिखे गए व्यंग्य 'सदाचार का ताबीज़' का अध्ययन करेंगे। इस इकाई के अध्ययन से आप-

- हरिशंकर परसाई का जीवन और साहित्यिक परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- परसाई की रचनाओं के उद्देश्य और सामाजिक परिवर्तन में इनकी भूमिका का विवेचन कर सकेंगे।
- 'सदाचार का ताबीज़' की कथावस्तु और इस व्यंगता के प्रयोजन को समझ पाएंगे।
- व्यंग्य लेखन के लिए जिन साधनों का उपयोग किया जाता है, उनके आधार पर 'सदाचार का ताबीज़' को परख सकेंगे।
- विवेच्य व्यंग्य की सामाजिक उपादेयता को समझ सकेंगे।

22.2 मूल पाठ : 'सदाचार का ताबीज़' (हरिशंकर परसाई) : एक विश्लेषण

प्रिय छात्रो ! 'सदाचार का ताबीज़' एक व्यंग्यात्मक निबंध है। पहले ही बता दिया गया है कि हरिशंकर परसाई ने इस निबंध में भ्रष्टाचार की व्याप्ति की चर्चा की है। उन्होंने न केवल भ्रष्टाचार की चर्चा की है बल्कि उसके उन्मूलन के उपाय पर भी विचार किया है। इसके साथ-साथ सामान्य जनता की रोजमर्रा की जरूरतों की पूर्ति में आने वाली कठिनाइयों को व्यंग्य शैली में अंकित किया है। तो चलिए, पाठ को विस्तार से पढ़ लें और समझने का प्रयास करें कि परसाई ने इस रचना में भ्रष्टाचार जैसे गंभीर विषय को किस प्रकार रोचक शैली में प्रस्तुत किया है। यह भी जान लें कि समाज में इसके दुष्प्रभाव एवं समाधान को उन्होंने इस रचना में किस तरह इंगित किया है। तो चलिए, पहले का परिचय प्राप्त कर लें।

22.2.1 हरिशंकर परसाई : जीवन और रचनायात्रा

अ) जीवन परिचय

हरिशंकर परसाई का जन्म मध्यप्रदेश के होशंगाबाद जिले में स्थित जामनी गाँव में 22 अगस्त, 1924 को हुआ था। परसाई की बाल्यावस्था के दौरान ही उनकी माता चंपाबाई का प्लेग के कारण देहांत हो गया था। परसाई के पिता का नाम झुमकलाल था जो कोयले की छोटी-छोटी ठेकेदारी करते थे। लेकिन कुछ असह्य बीमारी के कारण उनकी भी मृत्यु जल्दी हो गई थी। परिवार में पांच भाई-बहन थे। सबसे बड़े परसाई थे।

माता-पिता की मृत्यु के बाद परिवार का बोझ परसाई पर पड़ा। इसलिए उन्होंने विवाह भी नहीं किया। आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। बावजूद इसके, परसाई निरंतर अध्ययन करते थे। पढ़ाई उन्होंने नहीं छोड़ी। नागपुर विश्वविद्यालय से हिंदी में एम.ए. किया। 18 वर्ष की आयु में ही उन्होंने जंगल विभाग, नाकू (इटारसी के पास) में नौकरी शुरू कर दी। उन्होंने 1941 से 1943 तक जबलपुर के स्पेन्स ट्रेनिंग कॉलेज में प्रशिक्षण लिया। बाद में 1943 में मॉड़ल हाईस्कूल, जबलपुर में अध्यापक हुए। कुछ विवाद के कारण उन्होंने 1952 में इस पद से त्यागपत्र दे दिया। 1953 में वह किसी प्राइवेट स्कूल में अध्यापन कार्य करने लगे। लेकिन बाद में 1957 में वहाँ भी त्यागपत्र दे दिया। उसके बाद परसाई हमेशा के लिए स्वतंत्र लेखन की ओर अग्रसर हो गए और साहित्य सृजन करते रहे।

बोध प्रश्न

- हरिशंकर परसाई का बचपन कैसे गुज़रा?
- परसाई ने कहाँ से एम.ए. की शिक्षा प्राप्त की?

आ) साहित्यिक परिचय

साहित्य सृजन के लिए परसाई ने व्यंग्य को अस्त्र के रूप में चुना। उनके व्यंग्य सृजन का विषय प्राय: प्रशासन, शासन, भ्रष्टाचार, राजनीति, सामाजिक कुरीतियाँ, धार्मिक आडंबर, अंधविश्वास, पाखंड, शैक्षिक मूल्य विघटन आदि रहा है। व्यंग्य के माध्यम से इन सभी क्षेत्रों पर परसाई ने प्रहार किया है। विषय-क्षेत्र के चयन के बारे में वे स्वयं कहते हैं -"जीवन में जो घटनाएँ घटती हैं उन्हें देखता हूँ, विश्लेषित करता हूँ, विषयवस्तु का चुनाव विराट जन-जीवन से करता हूँ। अपने अध्ययन और अनुभव को रचनात्मक चेतना का अंग बना कर लिखता हूँ।" उनके इन शब्दों से यह स्पष्ट है कि रचनाकार अपने आस-पास के परिवेश से प्रभावित होकर सृजन करता है।

परसाई जी साम्यवादी विचारधारा से प्रभावित रचनाकार थे। इसलिए आम आदमी के जीवन की विसंगतियों को उन्होंने पूरी संवेदना के साथ स्वर दिया है। वे अपने साहित्य में सहज रूप से साम्यवाद को ले आते हैं। मुक्तिबोध का मानना है कि परसाई के साहित्यिक सामर्थ्य का श्रेय मार्क्सवाद को जाता है - "परसाई जी का सबसे बडा सामार्थ्य संवेदनात्मक रूप से यथार्थ का आकलन है, चाहे वह राजनीतिक प्रश्न हो या चरित्रगत। हमारे यहाँ की साहित्यिक संस्कृति ने सच्चाई के प्रकटीकरण पर जो हदबंदी करके रखी है, उसे देखते हुए परसाई की कला सहज ही वामपंथी हो जाती है।"

परसाई की प्रथम रचना, 'पैसे का खेल' 23 नवंबर, 1947 को प्रहरी में छपी। 1955 तक प्रहरी में उनकी रचनाएँ छपती रही। 'कल्पना' और 'नई कहानियाँ' में नियमित रूप से परसाई जी के लेख छपते रहे। सारिका में कबिरा खडा बाजार में, परिवर्तन में अरस्तू की चिट्ठी, करंट में देख कबीरा रोया तथा माटी कहे कुम्हार से आदि कॉलम भी लिखे। प्रहरी, वसुधा और परिवर्तन नामक पत्रिकाओं में भी वे नियमित लिखते रहे। वसुधा पत्रिका की संपादकीय जिम्मेदारी भी कुछ वर्षों तक निभाई। जनयुग में ये माजरा क्या है, साप्ताहिक लेख माला आदम नाम से तथा नयी दुनिया में सुनो भाई साधो साप्ताहिक लेख माला कबीर के नाम से लिखी।

उनकी समस्त कृतियाँ 'परसाई रचनावली' के छह खंडों में संकलित हैं। उनकी प्रमुख व्यंग्य रचनाएँ इस प्रकार हैं- हँसते हैं रोते हैं (1951), तट की खोज (1955), तब की बात और थी (1956), भूत के पाँव पीछे (1961), रानी नागफनी की कहानी (व्यंग्य उपन्यास 1962), सदाचार का ताबीज़ (1967), निठल्ले की डायरी (1968), वैष्णव की फिसलन (1976) के अतिरिक्त जैसे उनके दिन फिरे, बेईमानी की परत, सुनो भाई साधो, पगडंडियों का जमाना, उल्टी सीधी, और अंत में, ठिठुरता हुआ गणतंत्र, शिकायत मुझे भी है, अपनी-अपनी बीमारी, तिरछी रेखाएँ, मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ, एक लड़की पाँच दीवाने, विकलांग श्रद्धा का दौर, पाखंड़ का अध्यात्म, नाक वाले लोग, काग भगोड़ा, प्रतिनिधि व्यंग्य, तुलसीदास चंदन घिसै, कहत कबीर आदि महत्वपूर्ण व्यंग्य रचनाएँ हैं।

बोध प्रश्न

- परसाई किस वाद से प्रभावित थे?
- परसाई की पहली रचना किस पत्रिका में प्रकाशित हुई?
- परसाई की का नाम बताइए।

इ) सम्मान एवं पुरस्कार

परसाई को उनके महत्वपूर्ण साहित्यिक योगदान के लिए सन 1943 में रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर द्वारा डी.लिट. की मानद उपाधि प्रदान की गई। वे प्रगतिवादी लेखक संघ के अध्यक्ष भी रहे। 1982 में उन्हें साहित्य सेवा के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 1984 में मध्यप्रदेश सरकार का शिखर सम्मान प्राप्त हुआ। उस समय इनके पैर में गंभीर चोट थी और वे चल-फिर नहीं सकते थे। अत: उन्हें शिखर सम्मान से पुरस्कृत करने के लिए मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री स्वयं उनके घर गए थे। मुंबई के सुप्रसिद्ध सांस्कृतिक संस्थान द्वारा चकल्लस पुरस्कार भी प्राप्त हुआ। उन्होंने 1962 में विश्व शांति

सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधि मंड़ल के सदस्य के रूप में सोवियत संघ की यात्रा भी की।

बोध प्रश्न

- परसाई को चकल्लस पुरस्कार किस संस्थान के द्वारा प्राप्त हुआ?
- उन्हें डी.लिट. की उपाधि कौन से विश्वविद्यालय से प्राप्त हुई?

ई) परसाई का व्यक्तित्व और व्यंग्य लेखन

परसाई के व्यक्तित्व एवं उनके जीवन के गर्दिश के दिन उन्हें कटु व्यंग्यकार बनाते हैं। उनके बारे में जानने के लिए स्वयं लेखक के आत्मकथ्य सहायक सिद्ध होते हैं। वे अपने बारे में सीधे शब्दों में बताते हैं कि वे एक ऐसे आदमी हैं, जो हँसता है, जिसमें मस्ती है, जो बेहद तीखा और कटु भी है। इसका कारण उनकी अपनी जिंदगी है - एक निहायत कटु, निर्मम और धोबी पछाड़ आदमी की ज़िंदगी।

बचपन में ही प्लेग से माँ की मृत्यु हो गई थी जिससे घर के हालात बिगड़ गए थे। परसाई के अनुसार वे काली रातें थीं - 1936-37 की वो काली रातें जब पूरे गांव पर प्लेग का कब्जा था। सब लोग गाँव छोड़कर चले गए थे। कुत्ते तक बस्ती छोड़ चले गए थे। जब खुद की आवाज़ें ही ड़रा देती थीं। जब मरणासन्न माँ के सामने सब लोग आरती गाते। ओम जय जगदीश हरे गाते-गाते पिता सिसकने लगते और माँ बिलखकर बच्चों को हृदय से चिपटा लेतीं और सब दुख में डूब जाते। माँ की मृत्यु के बाद पिता जिए तो, लेकिन लगातार बीमार, हताश, निष्क्रिय और अपने से ही ड़रते हुए। पाँचों भाई बहनों में मृत्यु का अर्थ समझने की स्थिति सिर्फ़ परसाई की थी। धंधा सब ठप्प। जमा पूंजी खायी जाने लगी। ऐसे में बहन का विवाह करके बोझ कम किया था। परसाई खुद लिखते हैं कि मुझे चूहों ने ही नहीं मनुष्य नुमा बिच्छुओं और सांपों ने भी बहुत काटा है और जब भी ऐसा होता है तब किसी भी व्यक्तित्व में एक धार आ जाती है। एक तीव्र प्रतिक्रिया प्रतिपल होती रहती है। यथार्थ की टक्करों से ऐसा बोध पैदा हो जाता है जिसमें उस समाज को बदल डालने की विकट इच्छा का होना लाज़िमी होता है। बशर्तें सोच की दिशा सकारात्मक हो।

परसाई कभी झूठ और पाखंड़ बर्दाश्त नहीं करते थे। दिखावे और सहानुभूति से उन्हें सख्त नफरत थी। वे लिखते हैं - “अभी भी दिखाऊ सहानुभूति वाले को चाँटा मार देने की इच्छा होती है। ज़ब्त कर जाता हूँ वरना कई शुभचिंतक पिट जाते।” उनके व्यक्तित्व को जानने के लिए ऐसे वाक्य सहायक हैं और साथ ही हमें यह भी पता चलता है कि तीखे व्यंग्य को रचना का आधार बनाने में परसाई जी का जीवन क्रम और उसमें निहित सकारात्मकता मुख्य कारण हैं। अपने जीवन की लाचारी से उन्होंने तीन विद्याएं सीखी थी - गरीबी पर बात करना और गरीबी

में जीना, उधार माँगने की विद्या, बिल्कुल नि:संकोच और तीसरी बेफ़िक्री। अर्थात जो होना होगा, होगा, और क्या होगा? ठीक ही होगा। इस प्रकार की चेतना से परसाई के व्यक्तित्व निर्माण हुआ है जो उनकी लेखन में बकायदा प्रतिफलित होती रही है। बचपन से लेकर युवावस्था तक के गर्दिश के दिन उनकी मानसिकता और व्यक्तित्व निर्माण का अहम हिस्सा हैं। इसके विपरीत उनके व्यक्तित्व का दूसरा पक्ष यह भी है कि वे बहुत भावुक, संवेदनशील और बेचैन तबियत के आदमी थे।

उनकी प्रकृति पलायनवादी नहीं थी। वे हालात से कतराकर भागते नहीं थे, बल्कि संघर्ष करते थे और अपने आप को समझाते - "परसाई ड़रो मत किसी से। ड़रे कि मरे।" इसका मतलब यह नहीं कि वे घमंडी या उद्दंड़ थे। वे संघर्ष से लड़ने के लिए समष्टि से मिल जाना उचित मानते थे। इसके लिए वे व्यंग्य को हथियार बानाना चाहते थे। लेकिन व्यंग्य का सहारा लेना और लिखना क्या आसान था? इसके लिए उन्होंने इतिहास, समाज राजनीति और संस्कृति का गहरा अध्ययन किया।

परसाई बुनियादी तौर पर शिक्षक थे और मानते थे कि कोई भी सच्चा व्यंग्य लेखक मनुष्य को नीचा नहीं दिखाना चाहता। क्योंकि व्यंग्य तो मानव सहानुभूति से पैदा होता है जो मनुष्य को बेहतर मनुष्य बनाना चाहता है। अर्थात व्यंग्य उससे कहता है-तू अधिक सच्चा, न्यायी और मानवीय बन! यदि सवाल उठे कि अच्छे व्यंग्य की पहचान क्या है? तो उनका जवाब होगा - "अच्छे व्यंग्य की पहचान यह है कि उसमें करुणा की अंतर्धारा होती है।"

बोध प्रश्न

- परसाई की माँ की मृत्यु किस बीमारी से हुई?
- क्या परसाई जी पलायनवादी प्रकृति के थे?
- अच्छे व्यंग्य की पहचान क्या है?

22.2.2 'सदाचार का ताबीज़' : कथावस्तु

प्रस्तुत पाठ 'सदाचार का ताबीज़' एक व्यंग्यपरक रचना है। ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के आधार पर परसाई ने तत्कालीन समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार पर कुठाराघात किया है। इसकी रचना संवाद शैली में हुई है। इसका प्रारंभ राजदरबार के दृश्य से होता है। यह एक ऐसे राज्य का दृश्य है जहाँ पर भ्रष्टाचार बडे पैमाने पर फ़ैला हुआ है जिसके कारण उस राज्य के राजा चिंताकुल हैं। रचना की शुरूआत इन पंक्तियों से होती है - एक राज्य में हल्ला मचा कि भ्रष्टाचार

बहुत फैल गया है। राजा अपने दरबारियों से कहते हैं कि प्रजा भ्रष्टाचार के फैलने की बात को लेकर बहुत हल्ला मचा रही है, लेकिन मुझे आज तक वह नहीं दिखा। कोई दिखे तो मुझे भी दिखाओ। रचना के आरंभ ही में ही उस देश और वहाँ के शासक की दशा का पता चल जाता है। जब राजा को भ्रष्टाचार नहीं दिखाई देता है तो दरबारियों को कैसे दिखाई देगा? राज दरबार में ऐसे लोग रहते हैं जो वास्तव में भ्रष्टाचार से जुड़े हैं, भ्रष्टाचार को पनपाते हैं और ऊपर से यह ढोंग रचते हैं कि भ्रष्टाचार आँखों से दिखनी वाली चीज़ नहीं है। इसकी जड़ें कहाँ तक और किस प्रकार फ़ैली हुई हैं, ये कहना कठिन है। फिर विशेषज्ञों को बुलाया जाता है। विशेषज्ञ कहते हैं - “हुजूर, वह हाथ की पकड़ में नहीं आता। वह स्थूल नहीं सूक्ष्म है, अगोचर है। पर वह सर्वत्र व्याप्त है। उसे देखा नहीं जा सकता, अनुभव किया जा सकता है।” विशेषज्ञों की बातें सुनकर राजा कहता है कि ये गुण तो ईश्वर के हैं, तो क्या भ्रष्टाचार ईश्वर है? तो जवाब मिलता है कि अब भ्रष्टाचार ईश्वर हो गया है।

फिर भ्रष्टाचार मिटाने की योजना बनाई जाती है। भ्रष्टाचार की जड़ों को मिटाना बहुत जोखिम भरा कार्य था। विशेषज्ञों द्वारा दी गई रिपोर्ट पर सोच-सोचकर राजा बीमार पड़ जाते हैं। उनकी रातों की नींद हराम हो जाती है। दरबारी एक साधु की शरण में जाते हैं। लेखक के शब्दों में – एक दिन दरबारियों ने राजा के सामने एक साधु को पेश किया और कहा- "महाराज, एक कन्दरा में तपस्या करते हुए इस महान साधक को हम ले आये हैं । इन्होंने सदाचार का तावीज़ बनाया है। वह मन्त्रों से सिद्ध है और उसके बाँधने से आदमी एकदम सदाचारी हो जाता है।" साधु ने अपने झोले में से एक तावीज़ निकालकर राजा को दिया।

साधु ने राजा को सदाचार का ताबीज़ देते हुए कहा कि - “महाराज, भ्रष्टाचार और सदाचार मनुष्य की आत्मा से होता है, बाहर से नहीं होता। विधाता जब मनुष्य को बनाता है तब किसी की आत्मा में ईमान की कल फ़िट कर देता है, और किसी की आत्मा में बेईमानी की। इस कल में ईमान या बेईमानी के स्वर निकलते हैं जिन्हें आत्मा की पुकार कहते हैं। आत्मा की पुकार के अनुसार आदमी काम करता है। जिनकी आत्मा से बेईमानी के स्वर निकलते हैं, उन्हें दबाकर ईमान के स्वर कैसे निकाले जाएँ? मैं कई वर्षों से इसी चिंता में लगा हूँ। अभी मैंने यह सदाचार का ताबीज़ बनाया है। जिस आदमी की भुजा पर यह बंधा होगा, वह सदाचारी हो जाएगा। इस ताबीज़ से सदाचार के स्वर निकलते हैं। जब किसी की आत्मा बेईमानी के स्वर निकालने लगती है तब इस ताबीज़ की शक्ति आत्मा का गला घोंट देती है और आदमी को

ताबीज़ से ईमान के स्वर सुनाई पड़ते हैं। वह इन स्वरों को आत्मा की पुकार समझकर सदाचार की ओर प्रेरित होता है।”

ताबीज़ के इस विशेष गुण के बारे में सुनकर राजा दरबारियों से सलाह मशविरा करने के पश्चात यह निश्चय करते हैं कि अपने राज्य से भ्रष्टाचार को पूरी तरह से मिटानेके लिए साधु को सदाचार का ताबीज बनाने का ठेका दिया जाय। राज्यों के अखबारों में खबरें छपीं - सदाचार के ताबीज़ की खोज! ताबीज़ बनाने का कारखाना खुला!

कुछ दिनों के पश्चात परीक्षा लेने के उद्देश्य से राजा वेष बदलकर कार्यालय गए। उस दिन 2 तारीख थी, एक दिन पहले तन्ख्वाह मिली थी। एक कर्मचारी को जब राजा ने पाँच का नोट दिया तो उसने उन्हें डाँटकर भगा दिया। महीने के आखिरी दिन राजा उसी व्यक्ति के पास जाते हैं और पाँच का नोट दिखाते हैं, वह चुपचाप ले लेता है। राजा असमंजस में पड़ जाते हैं। जब ताबीज़ पर कान लगाकर सुनते हैं तो तावीज से स्वर निकल रहा था - अरे, आज तो इकतीस है, आज तो ले ले? सदाचारी या दुराचारी बनना हालात के अनुकूल तय होता है।

बोध प्रश्न

- राजा ने दरबारियों से क्या कहा?
- राजा ने भ्रष्टाचार को ईश्वर क्यों कहा?

22.2.3 ‘सदाचार का ताबीज़’ में प्रयुक्त व्यंग्य के साधन

हरिशंकर परसाई ने ‘सदाचार का ताबीज़’ में व्यंग्य के साधनों का भरपूर प्रयोग किया है। छात्रो! लेखक ने बडे ही रोचक ढंग से भ्रष्टाचार और सदाचार के अंतर को बारीकी से स्पष्ट किया है। ध्यान से पढने पर इसमें निहित हास्य, वक्रोक्ति, उपहास या परिहास को हम समझ सकते हैं। इसमें निहित व्यंग्य को समझने के लिए बारीकी से इस पाठ को पढ़ना जरूरी है क्योंकि इसमें भ्रष्टाचार का वर्णन है जो स्वयं बारीक और सूक्ष्म होता है।

इसमें निहित हास-परिहास की बात यह है कि एक ओर भ्रष्टाचार को मिटाने के लिए ठेका और ठेकेदारों को मिटाने की बात होती है, वहीं पर दूसरी ओर एक साधु को सदाचार का ताबीज़ बनाने का ठेका दिया जाता है। पाठ में विशेषज्ञों द्वारा जो सुझाव दिया जाता है उससे यह बात स्पष्ट होती है- “भ्रष्टाचार मिटाने के लिए महाराज को व्यवस्था में बहुत परिवर्तन करने होंगे। एक तो भ्रष्टाचार के मौके मिटाने होंगे। जैसे ठेका है तो ठेकेदार है। और ठेकेदार है तो अधिकारियों को घूस है। ठेका मिटा दिया जाए तो उसकी घूस मिट जाए।”

आगे चलकर ऐसी परिस्थिति बनती है जब राज्य में सदाचार का ताबीज़ बनाने के कारखाने खोलने की बात होती है। तब एक मंत्री कहते हैं - "महाराज, राज्य क्यों झंझट में पडे? मेरा तो निवेदन है कि साधु बाबा को ठेका दे दिया जाय। वे अपनी मंड़ली से ताबीज़ बनवाकर राज्य को सप्लाई कर देंगे।"

एक स्थान पर साधु कहता है - "मैंने कुत्ते पर भी प्रयोग किया है। यह ताबीज़ गले में बाँध लेने से कुत्ता भी रोटी नहीं चुराता।" इस कथन के माध्यम से लेखक ने बहुत गंभीर बात को हास्य के पुट के साथ प्रस्तुत किया है। व्यंग्य के आधार पर परसाई इस बात की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करते हैं कि भ्रष्टाचार निवारण के नाम पर भ्रष्टाचार को प्रश्रय दिया जाता है।

प्रस्तुत पाठ से हास-परिहास या उपहास और वक्रोक्ति के उदाहरण स्वरूप कुछ वाक्य प्रस्तुत हैं -

"हमें तो आज तक कहीं नहीं दिखा। तुम लोगों को कहीं दिखा हो तो बताओ।" - महाराज के इस कथन पर हँसी भी आती है और दया भी। जब महाराज ही भ्रष्टाचार को देख नहीं पाते, तो दूसरे कैसे देख सकते हैं? यह सोचने वाली बात है और शासन तंत्र पर कठोर व्यंग्य है। महाराज के संवादो में शासन करने वालों का अज्ञान नजर आता है। जैसे कि इस वाक्य में - "कहीं मिल जाए तो हमारे देखने के लिए नमूना लेते आना। हम भी तो देखें कि कैसा होता है।"

"अगर मिल जाय तो पकड़कर हमारे पास ले आना। अगर बहुत हो तो नमूने के लिए थोड़ा-सा ले आना।"

"सिंहासन में है?" कहकर राजा साहब उछलकर दूर खडे हो गए।"

"हमारे प्रपितामह को तो जादू आता था; हमें वह भी नहीं आता।"-राजा के इन शब्दों से अंधविश्वास को प्रश्रय मिलता है। राजतंत्र से जुडे हुए व्यक्ति किस प्रकार चापलूसी करके अपना उल्लू सीधा करते हैं, इस पर यह वाक्य प्रकाश डालता है- "हुजूर, वह हमें नहीं दिखेगा। सुना है, कि बहुत बारीक होता है। हमारी आँखें आपकी विराटता देखने की इतनी आदी हो गयी हैं कि हमें बारीक चीज़ नहीं दिखती। हमें भ्रष्टाचार दिखा भी तो उसमें हमें आपकी ही छवि दिखेगी क्योंकि हमारी आँखों में तो आपकी सूरत बसी हुई है।"

इसी क्रम में वक्रोक्ति के कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं -

"हुजूर, वह हाथ की पकड़ में नहीं आता। वह स्थूल नहीं, सूक्ष्म है, अगोचर है। पर वह

सर्वत्र व्याप्त है। उसे देखा नहीं जा सकता, अनुभव किया जा सकता है।"

"ये तो गुण ईश्वर के हैं। तो क्या भ्रष्टाचार ईश्वर है?"

"हाँ, महाराज, अब भ्रष्टाचार ईश्वर हो गया है।"

"वह सर्वत्र है। वह इस भवन में है। वह महाराजा के सिंहासन में है।"

"आधा पैसा बीचवाले खा गए।"

22.2.4 'सदाचार का ताबीज़' में व्यंग्य : तात्विक विश्लेषण

अध्येय व्यंग्य पाठ का मूल उद्देश्य है भ्रष्टाचार पर हमारा ध्यान आकृष्ट करना और भ्रष्टाचार के उन्मूलन हेतु शासन तंत्र से जुडे लोग कैसे कदम उठाते हैं जिससे कि उन्मूलन के बहाने पुन: भ्रष्टाचार का प्रसार हो। भ्रष्टाचार के उन्मूलन के लिए ठोस कदम उठाए तो जाते हैं लेकिन आखिरकार यह निर्णय कर लिया जाता है कि भ्रष्टाचार को जड़ से खत्म करने के लिए शासन व्यवस्था में ठोस बदलाव करना होगा जो कि संभव नहीं है। अत: बीच का रास्ता अपनाया जाता है। प्रस्तुत वाक्यों से आप इसे स्पष्टत: समझ सकते हैं-

विशेषज्ञ : "भ्रष्टाचार मिटाने के लिए महाराज को व्यवस्था में बहुत परिवर्तन करने होंगे।"

दरबारी : "महाराज, वह योजना क्या है, एक मुसीबत है। उसके अनुसार कितने उलट-फ़ेर करने पड़ेंगे! कितनी परेशानी होगी! सारी व्यवस्था उलट-पुलट हो जाएगी। जो चला आ रहा है, उसे बदलने से नई-नई कहानियाँ पैदा हो सकती हैं। हमें तो कोई ऐसी तरकीब चाहिए जिससे बिना कुछ उलट-फेर किए भ्रष्टाचार मिट जाए।"

राजा : "मैं भी यही चाहता हूँ। पर यह हो कैसे? हमारे प्रपितामह को तो जादू आता था, हमें वह भी नहीं आता।"

राजा के इन शब्दों से बीच का रास्ता निकालने का अर्थ बोधित होता है अर्थात कोई ऐसा रास्ता जिससे भ्रष्टाचार भी नष्ट हो और व्यवस्था भी यथारूप बनी रहे। साथ ही अंधविश्वास को भी पनपने में राजा योगदान देते हैं। देश की वास्तविक स्थिति पर यह कुठाराघात है।

बोध प्रश्न

- 'सदाचार का ताबीज़' का मूल उद्देश्य बताइये।

विवेच्य पाठ के माध्यम से इस कटु सत्य का उद्घाटन किया गया है कि कर्मचारियों को उचित वेतन नहीं मिलता जिससे वे अपना पेट भर सकें और लाचार होकर इधर-उधर रुपये के

लिए न भटकें और भ्रष्टाचारी न बनें। महीने के पहले सप्ताह में कर्मचारी का पाँच रुपये को ठुकराना और उसी कर्मचारी का महीने की आखिरी तारीख को पाँच रुपये का नोट लेने के लिए मजबूर होना इस बात का साक्षी है। आदमी पेट के लिए गलत काम करता है। पेट और लालच आदमी की हैवानियत को बाहर लाने का काम करते हैं। अच्छे हालात में अच्छा बनना कोई बड़ी बात नहीं है किंतु विपरीत परिस्थितियों में भी यदि कोई अच्छा काम करता है तो वही सच्चा काम होता है। अत: एक ओर परिस्थिति आदमी को सदाचारी या दुराचारी बनाती है तो दूसरी ओर राजनीति के इस खेल में जहाँ ऊपर से नीचे तक भ्रष्टाचार को प्रश्रय दिया जाता है, भ्रष्टाचार के मिटने का सवाल ही नहीं उठता। गांधारी की आँखों पर बंधी पट्टी की तरह सदाचार का ताबीज़ बाँध लेने मात्र से क्या भ्रष्टाचार समाप्त हो जाएगा? यह गंभीर चिंतन का विषय है।

बोध प्रश्न

- भ्रष्टाचार के कोई दो कारण बताइए।

भ्रष्टाचार को मिटाने की योजना बनाई जाती है, इसके माध्यम से परसाई समाज के शुद्धीकरण की बात करते हैं। विशेषज्ञ सुझाव तो देते हैं, परंतु उस पर चलना या न चलना शासक के हाथ में है।

इस व्यंग्य के माध्यम से परसाई जी इस सत्य का उद्घाटन करते हैं कि भ्रष्टाचार का उन्मूलन तभी संभव है जब प्रत्येक व्यक्ति की आत्मा से सदाचार की पुकार उठे। जो कि कठिन है। किंतु उस राह पर चलने का प्रयास अवश्य किया जा सकता है।

परसाई जी का मानना है कि "सुधरने के लिए नहीं, बदलने के लिए लिखता हूँ। चाहता हूँ। याने कोशिश करता हूँ-चेतना में हलचल हो जाये, कोई विसंगति नजर के सामने आ जाये इतना काफ़ी है। सुधरने वाले खुद अपनी चेतना से सुधरते हैं।"

'सदाचार का ताबीज़' में सुधारवादी संकेत नहीं है। इतना है कि ताबीज़ बांधकर आदमी को ईमानदार बनाने की कोशिश की जा रही है। पहले जो कर्मचारी घूस को मना करता है, वही महीने की आखिरी तारीख को घूस लेने के लिए मजबूर होता है। ताबीज़ तो बंधा है लेकिन जेब खाली है।

इसके माध्यम से परसाई जी यह कहना चाहते हैं कि "बिना व्यवस्था में परिवर्तन किए, भ्रष्टाचार के मौके को खत्म किए और कर्मचारियों को बिना आर्थिक सुरक्षा दिए भाषणों,

सर्कुलरों, उपदेशों, सदाचार समितियों, निगरानी आयोगों द्वारा कर्मचारी सदाचारी नहीं होगा।"

बोध प्रश्न

- भ्रष्टाचार को मिटाने के लिए क्या करना चाहिए?

22.2.5 'सदाचार का ताबीज़' : भाषा एवं शैली

विवेच्य व्यंग्य की रचना सामान्य बोलचाल की भाषा में हुई है। संवाद शैली में कथा के रूप में इसका वर्णन किया गया है। छोटे-छोटे वाक्यों से जादू उत्पन्न किया गया है। भाषा सपाट है जैसे - एक राज्य में हल्ला मचा कि भ्रष्टाचार बहुत फैल गया है। इसमें देशज, उर्दू, संस्कृत के शब्दों का भी यथारूप प्रयोग किया गया है।

उर्दू के शब्द : हुज़ूर, दरबारी, नाज़ुक, हाजिर, ताबीज़, आदि।

संस्कृत के शब्द : विराट, अंजन, विशेषज्ञ, निवेदन, स्थूल, सूक्ष्म, अगोचर, सर्वत्र, व्याप्त, भवन, प्रपितामह, सदाचार आदि।

विदेशी शब्द : बिल, रिपोर्ट, सप्लाई आदि।

मुहावरे और लोकोक्तियाँ : हल्ला मचाना, आग के हवाले कर देना, कान खडे हो जाना, उलट-फेर करना आदि।

रचना के प्रस्तुतीकरण में नाटकीय शैली पाठक को विशेष प्रभावित करती है।

बोध प्रश्न

- 'सदाचार का ताबीज़' की भाषा शैली कैसी थी?

22.3 पाठ सार

हिंदी व्यंग्य लेखन में हरिशंकर परसाई का स्थान इसलिए महत्वपूर्ण है कि वे हिंदी के ऐसे पहले रचनाकार हैं जिन्होंने 'व्यंग्य' को 'विधा' का दर्जा दिलाया। उन्होंने व्यंग्य को हल्के-फुल्के मनोरंजन की परंपरागत परिधि से निकालकर समाज के व्यापक प्रश्नों से जोड़ा। उनकी व्यंग्य रचनाएँ पाठक के मन में गुदगुदी ही पैदा नहीं करतीं, बल्कि उसे उन सामाजिक वास्तविकताओं के आमने-सामने खड़ा करती हैं, जिनसे घिरा होते हुए भी वह आम तौर से बचकर निकाल जाता है। मध्यमवर्गीय मन की सच्चाइयों को उन्होंने बहुत ही निकटता से पकड़ा

है। सामाजिक पाखंड और रूढ़िवादी जीवनमूल्यों की खिल्ली उड़ाते हुए वे हमेशा विवेक और विज्ञान-सम्मत दृष्टि को सकारात्मक रूप में प्रस्तुत करते हैं।

हरिशंकर परसाई का व्यंग्य 'सदाचार का ताबीज़' समाज-समीक्षा की दृष्टि से विशेष उल्लेखनीय है। इस व्यंग्य-रचना के माध्यम से लेखक ने राजा की मूर्खता, कपटी प्रजा और साधु के माध्यम से भ्रष्टाचार का खुलासा किया है। साथ ही अंधविश्वास के बढ़ने के कारण को भी इंगित किया है। लेखक ने यह स्पष्ट किया है कि सदाचार बाह्य वस्तु नहीं है। वह प्रत्येक व्यक्ति के अंदर आत्मा की पुकार बनकर व्याप्त है। भ्रष्टाचार को रोकने के लिए परिस्थिति भी अनुकूल हो और व्यक्ति के मन में सदाचारी भाव निहित हो, यह आवश्यक है। अन्यथा ऊपरी तौर पर केवल सदाचार के ताबीज़ बांधने से जड़ तो क्या भ्रष्टाचार की शाखाओं को भी तोड़ा नहीं जा सकता। सदाचार का तावीज बाँधकर भी अंदर से सदाचारी होना यही जीवन की कठोर आवश्यक है।

22.4 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष उपलब्ध हुए हैं –

1. हरिशंकर परसाई को व्यंग्यकार बनाने में उनके जीवन की कठिन परिस्थितियों का बड़ा योगदान है।
2. हरिशंकर परसाई ने आज़ादी के बाद के भारत में वर्तमान विसंगतियों को अपने व्यंग्य का लक्ष्य बनाया है।
3. परसाई व्यंग्य लेखन में कथातत्व और नाटकीयता का भरपूर इस्तेमाल करते हैं।
4. परसाई ने व्यंग्य लेखन केवल पाठक को हँसाने के लिए नहीं बल्कि सामाजिक विकृतियों का बोध कराने के लिए किया है।
5. परसाई अपने व्यंग्य में समस्याओं का समाधान नहीं देते बल्कि उनका खुलासा करके पाठक की चेतना पर चोट करते हैं।

21.5 शब्द संपदा

1. उन्मूलन	=	मिटाना, निर्मूलन करना, जड़ से उखाड़ना
2. जटिल	=	कठिन, मुश्किल
3. प्रपितामह	=	परदादा

4. भर्त्सना = निंदा, दोषारोपण

5. मरणासन्न = जिसकी मृत्यु निकट हो

6. मूल्य विघटन = मूल्यों का ह्रास, मूल्य नष्ट होना

7. यथार्थ परिदृश्य = वास्तविक चित्रण, हकीकत

8. विसंगति = बेमेल स्थितियाँ

22.6 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. हरिशंकर परसाई का जीवन परिचय दीजिए।
2. व्यंग्य लेखन में परसाई के योगदान पर प्रकाश डालिए।
3. 'सदाचार का ताबीज़' का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।
4. व्यंग्य के तत्वों के आधार पर 'सदाचार का ताबीज़' का विश्लेषण कीजिए।

खंड (ब)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. 'सदाचार का ताबीज़' में अभिव्यक्त हास्य व्यंग्य पर अपने शब्दों में लिखिए।
2. साधु ने सदाचार और भ्रष्टाचार का विश्लेषण किस प्रकार किया?
3. हरिशंकर परसाई की रचनाओं पर प्रकाश डालिए।

खंड (स)

I सही विकल्प चुनिए

1. राज्य में क्या फ़ैला? ( )
   अ) सदाचार आ) दुराचार इ) भ्रष्टाचार

2. 'सदाचार का ताबीज़' किसने दिया? ( )

अ) साधु ने   आ) विशेषज्ञों ने   इ) दरबारियों ने

3. महाराजा व्याकुल थे, क्योंकि   (   )
अ) सदाचार फ़ैला   आ) भ्रष्टाचार फ़ैला   इ) अनैतिकता फ़ैली

II रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

1. परसाई एक ....रचनाकार हैं।
2. परसाई जी की माँ का देहांत ....के कारण हुआ था।
3. .... बाह्य वस्तु नहीं है।
4. 'सदाचार का ताबीज़' की शैली .... है।
5. महाराजा 'सदाचार का ताबीज़' बनाने के लिए ....खोलते हैं।

III सुमेल कीजिए

1. रोटी चुराना	(अ) पुकार
2. आत्मा की	(आ) मरे
3. डरे कि	(इ) कुठारागात
4. भ्रष्टाचार पर	(ई) कुत्ता

22.7 पठनीय पुस्तकें

1. सदाचार का ताबीज़. संकलित: गद्य गाथा. (सं) वीणा अग्रवाल
2. परसाई रचनावली. छह खंड. (सं) कमला प्रसाद.

इकाई 23 : यात्रा साहित्य : विधागत स्वरूप

इकाई की रूपरेखा

23.0 प्रस्तावना

23.1 उद्देश्य

23.2 मूल पाठ : यात्रा साहित्य : विधागत स्वरूप

23.2.1 यात्रा साहित्य का अभिप्राय

23.2.2 यात्रा साहित्य के प्रचलित पर्याय

23.2.3 यात्रा साहित्य : स्वरूप, प्रकार एवं विशेषताएँ

23.2.4 यात्रा साहित्य के तत्व

23.2.4.1 यात्रा का विवरण

23.2.4.2 वैयक्तिकता

23.2.4.3 आत्मीयता

23.2.4.4 रोचकता

23.2.4.5 सौंदर्य बोध

23.2.4.6 उद्देश्य

23.2.5 हिंदी में यात्रा साहित्य का विकास

23.3 पाठ सार

23.4 पाठ की उपलब्धियाँ

23.5 शब्द संपदा

23.6 परिक्षार्थ प्रश्न

23.7 पठनीय पुस्तकें।

23.0 प्रस्तावना

मानव सभ्यता के विकास में यात्रा की अहम भूमिका रही है। इसी के माध्यम से मनुष्य विकास के पथ पर अग्रसर हुआ। उसने नए स्थानों की खोज की, वहाँ की रीति-नीति से अवगत हुआ और उसकी विचारधारा विकसित हुई। मनुष्य जाति का इतिहास इस बात का प्रमाण है कि

वह घुमक्कड़ प्रवृत्ति का रहा है। इसी घुमक्कड़ी ने जब लेखन का स्वरूप ग्रहण किया, तो वह साहित्य की परिधि में सम्मिलित हो गया। यात्रा साहित्य का लेखक अपने लेखन में मुक्त प्रवृत्ति रखता है। केवल यात्रा करने से ही कोई यात्री साहित्यिक नहीं बन जाता। यात्रा के दौरान वह अपनी आँखों से जो कुछ भी देखता है, उसका यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करना ही उसे साहित्यिक महत्व प्रदान करता है। प्रस्तुत इकाई में एक विधा के रूप में यात्रा साहित्य पर चर्चा की जा रही है।

23.1 उद्देश्य

छात्रो! इस इकाई के अध्ययन से आप-

- यात्रा साहित्य के अर्थ और परिभाषा को समझ पाएँगे।
- यात्रा साहित्य की विशेषताओं को समझ सकेंगे।
- हिंदी में यात्रा साहित्य के विकास से परिचित हो सकेंगे।
- कुछ महत्वपूर्ण यात्रा लेखकों से परिचित होंगे।
- यात्रा साहित्य के विभिन्न पहलुओं से अवगत हो सकेंगे।

23.2 मूल पाठ : यात्रा साहित्य : विधागत स्वरूप

मानव में अनादिकाल से ही घूमने की जिज्ञासा रही है। इसी जिज्ञासा का परिणाम है कि आज हमें विश्व एक गाँव के रूप में दिख रहा है। जिन व्यक्तियों ने भ्रमण किया और उसके अनुभव को शब्दबद्ध रूप में सुरक्षित रख लिया, उन्हें ही यात्रा साहित्य के सृजन का श्रेय जाता है।

23.2.1 यात्रा साहित्य का अभिप्राय

'यात्रा' शब्द की व्युत्पत्ति 'या+ष्ट्रन्' से हुई है। व्याकरण के अनुसार यह स्त्रीलिंग शब्द है। इस शब्द का विद्वानों ने अनेक प्रकार से अर्थ किया है। गणेशदत्त शास्त्री के अनुसार यात्रा शब्द का अर्थ "जीतने की इच्छा से राजाओं का जाना, धावा करना या देवता के उद्देश्य से एक प्रकार का उत्सव" माना गया है। चतुर्वेदी द्वारिका प्रसाद शर्मा इसका अर्थ सफ़र, एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने की क्रिया से लगाते हैं। यात्रा ज्ञान और शिक्षा का प्रमुख साधन है। इससे मनुष्य की बुद्धि का विस्तार होता है। उसके अनुभव संसार में वृद्धि होती है। यात्रा के दौरान अर्जित किए गए अनुभवों को जब वह शब्दबद्ध करता है, तो वही यात्रा वृत्तांत या यात्रा साहित्य

कहलाता है। इसकी परिभाषा इस प्रकार दी जा सकती है- "साहित्यकार जब सौंदर्यबोध की दृष्टि से उल्लास भावना से प्रेरित होकर यात्रा करता है, और उसकी मुक्त भाव से अभिव्यक्ति करता है, तो उसे यात्रा साहित्य अथवा यात्रा वृत्तांत कहते हैं।"

हिंदी साहित्य कोश (भाग 1)के अनुसार, मनुष्य-जातियों का इतिहास उनकी यायावरी अर्थात घुमक्कड़ी प्रवृत्ति से जुड़ा है। सम्भवतः यह मानव की एक मूल प्रवृत्ति है। प्रारम्भ में यह उसके लिए आवश्यक भी थी। परन्तु उसके सौन्दर्य बोध के विकासके साथ चारों ओर फैले हुए जगत का आकर्षण भी उसके लिए बढ़ता गया। यहाँ के देशों में विविधता है, ऋतुओं में परिवर्तन होता है और साथ साथ ही प्रकृति के रूपों में विभिन्नता और सौन्दर्य का अचरजभरा संसार है। साहित्यिक यायावर को एक अद्‌भुत आकर्षण अपनी ओर खींचता है। वह मन्त्र-मुग्धकी भाँति उसकी ओर खिंच जाता है । आम लोग इस पुकार को सुन नहीं पाते या सुनकर भी अनसुनी कर देते हैं। वे चलते हैं, यात्रा करते हैं, पर वे तेली के बैल की तरह अपने भार के साथ कोल्हू के चारों ओर घूमने में ही अपने परिश्रम-की सार्थकता मान बैठते हैं। पर साहित्यिक यायावर मुक्त मनोवृत्ति के साथ घूमता है। इस प्रकार सौन्दर्य बोध की दृष्टि और उल्लास की भावना से प्रेरित होकर यात्रा करने वाले यायावर एक प्रकार से साहित्यिक मनोवृत्ति के माने जा सकते हैं और उनकी मुक्त अभिव्यक्ति को यात्रा-साहित्य कहा जाता है।

बोध प्रश्न

- यात्रा साहित्य से क्या अभिप्राय है?

यात्रा साहित्य आधुनिक युग की एक लोकप्रिय गद्य विधा है। यह निबंध शैली का विकसित रूप है। चूँकि घुमक्कड़ होना मनुष्य की प्रवृत्ति है और साहित्यकार जब कहीं भ्रमण करने के लिए जाता है, तो उस स्थान के प्राकृतिक दृश्यों को अपने लेखन के अन्दर समाहित कर लेता है। यह पाठकों के समक्ष केवल विभिन्न स्थानों को मूर्त रूप ही प्रदान नहीं करता बल्कि उन स्थानों के भौगोलिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक आदि परिवेश व वातावरण का भी चित्रण करता है। हिंदी साहित्य में इस विधा का शुभारम्भ आधुनिक काल में भारतेंदु युग से हुआ। शीघ्र ही यह लोकप्रिय भी हो गई और केवल देश ही नहीं अपितु विदेशों की पृष्ठभूमि पर भी यात्रा साहित्य लिखा गया।

यात्रा साहित्य हिंदी की नवीन विधाओं में से एक है और यह निबंध का विकसित रूप है। इस विधा के अंतर्गत यात्रा का वर्णन होता है। इस वर्णन में लेखक अपनी यात्रा के दौरान घटित घटनाओं, स्थलों, समाज और संस्कृति एवं प्रकृति को शब्दबद्ध करता है। इसमें लेखक की यात्रा के संबंध में उसके अनुभव और स्मृतियाँ सम्मिलित होते हैं। यात्रा साहित्य के पढ़ने से पाठकों के

सम्मुख वे स्थान सजीव हो उठते हैं, जिनका वर्णन किया जाता है। यात्रा साहित्य के संबंध में कैलाश चंद्र भाटिया का मत है कि “यात्रा साहित्य में कहीं मात्र सूचना और विवरण, कहीं प्रकृति-संसर्ग-जनित उल्लास, कहीं जीवन-दर्शन, कहीं संस्मरण मात्र मिलते हैं।“

बोध प्रश्न

- कैलाश चंद्र भाटिया यात्रा साहित्य में क्या-क्या शामिल मानते हैं?

मोटे तौर पर यात्रा साहित्य में तथ्यात्मकता, आत्मीयता, स्थानीयता, वैयक्तिकता, कल्पना-प्रवणता, रोचकता आदि गुण मिलने चाहिए, जिससे पाठक बंधा रहे। यात्रा साहित्य में लेखक अपनी आँखों से देखता है, कानों से सुनता है और मस्तिष्क से महसूस करता है। इसलिए यात्रा साहित्य के लेखक के लेखन में यथार्थ होता है। इसके परिणामस्वरूप यात्रा साहित्य हमें नए ज्ञान से अवगत कराता है। भारत में तो घुमक्कड़ी की एक लम्बी परंपरा रही है।

हिंदी साहित्य में भारतेंदु युग में हिंदी की विभिन्न विधाओं का आगमन हुआ। इसी क्रम में यात्रा साहित्य भी भारतेंदु युग की ही देन है। स्वयं भारतेंदु हरिश्चंद्र ने कई यात्रा वृत्त लिखे हैं। इसके अतिरिक्त भारतेंदु हरिश्चंद से इतर भी उस युग के कई लेखकों ने यात्रा साहित्य में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आगे, राहुल सांकृत्यायन ने विपुल मात्रा में यात्रा साहित्य का सृजन किया । उन्होंने तो ‘घुमक्कड़ शास्त्र’ ही रच दिया।

बोध प्रश्न

- पाठक को बाँधे रखने के लिए यात्रा साहित्य में क्या-क्या गुण होने चाहिए?
- घुमक्कड़ शास्त्र किसने रचा?

23.2.2 यात्रा साहित्य के प्रचलित पर्याय

हिंदी में यात्रा साहित्य अंग्रेजी साहित्य की विधा ‘travelogue’ का समानार्थी है। इसके अन्य प्रचलित पर्याय हैं - यात्रा वृत्त, यात्रा वृत्तांत, यात्रा वर्णन, यात्रा विवरण और यात्रा संस्मरण। इस साहित्य विधा के पीछे का उद्देश्य लेखक के रमणीय अनुभवों को ज्यों का त्यों पाठक तक प्रेषित करना है। जिसके माध्यम से पाठक उस अनुभव को आत्मसात कर सके।

23.2.3 यात्रा साहित्य: स्वरूप, प्रकार एवं विशेषताएँ

मानव की यात्रा का इतिहास काफी पुराना है। मानव यात्रा अनादिकाल से करता आया है। लेकिन हिंदी साहित्य में यह विधा उतनी पुरानी नहीं है जितना कि मानव यात्रा का विकास। साहित्यिक दृष्टि से यह एक नवीन विधा है, जो निबन्ध शैली का एक नया रूप है,

जिसे 'यात्रा वृत्तांत' कहते हैं। इसविधा के माध्यम से लेखक अपनी यात्रा के अनुभवों को पाठक तक प्रेषित करता है। पाठक लेखक के अनुभवों को आत्मसात कर उस यात्रा का अनुभव करता है। मानव प्रकृति और सौंदर्य का प्रेमी है। वह जहाँ भी जाता है, वहाँ कुछ न कुछ ग्रहण करता है। ग्रहण किए गये प्रेम, सौंदर्य, भाषा, स्मृति आदि को अपने शुद्ध मनोभावों से प्रकट करता है। इसी से यात्रा साहित्य के स्वरूप का निर्माण होता है।

बोध प्रश्न

- यात्रा साहित्य के स्वरूप का निर्माण कैसे होता है?

आधुनिक युग में जब तकनीकी तौर पर हम इतना विकास कर चुके हैं कि दुनिया के किसी भी देश की खबर मिनटों में हमारे पास पहुँच जाती है, ऐसे में यात्रा का महत्व थोड़ा कम हुआ है। प्राचीनकाल में ऐसा मुमकिन नहीं था। इसलिए यात्रा का महत्व भी बहुत अधिक था। लेखक एक दूसरे देश में घूम कर अपने अनुभवों को दूसरों से साझा करते थे। यही कारण था कि ऐसे लोगों का काफी महत्व था। ऐसे यात्रियों का महत्व राज दरबार से लेकर शिक्षा और धर्म के प्रचार-प्रसार करने तक था। अलबरूनी, इब्ने बतूता, अमीर खुसरो, ह्वेनसांग, फाह्यान आदि अपनी यात्रा और उसके अनुभवों के कारण विश्वभर में प्रसिद्ध हुए।

बोध प्रश्न

- कुछ विश्व प्रसिद्ध यात्रियों के नाम बताइए?

यात्रा साहित्य में लेखक अपनी अभिव्यक्ति न के बराबर करता है। बल्कि अपनी यात्रा के दौरान वह जो कुछ देखता है, उसका वर्णन अपने यात्रा साहित्य में करता है। यही कारण है कि आधुनिक यात्रा साहित्य का विकास शुद्ध निबन्ध शैली से माना जाता है। यात्रा साहित्य का उद्देश्य लेखक के यात्रा अनुभवों को पाठक के साथ बांटना और पाठकों को भी उन स्थानों की यात्रा के लिए प्रेरित करना है। इन स्थानों की प्राकृतिक विशिष्टता, सामाजिक संरचना, समाज के विविध वर्गों के सह-संबंध, वहाँ की भाषा संस्कृति आदि की जानकारी इस साहित्य के माध्यम से प्राप्त होती है।

बोध प्रश्न

- यात्रा साहित्य के उद्देश्य को स्पष्ट कीजिये?

यात्रा साहित्य के प्रकार

यात्रा साहित्य को यात्रा के विषय, साहित्यिक लालित्य, शैली एवं स्वरूप के आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है। जैसे-

1. साहित्यिक लालित्य के आधार पर

अ] सूचना व विवरण प्रधान यात्रा वृत्त

इसमें ऐसी सूचनाएँ होती हैं जो वृत्तांतपरक होती हैं। इसमें साहित्य की अपेक्षा जानकारीपरक बातों पर अधिक बल दिया जाता है। हिंदी यात्रा साहित्य में राहुल संकृत्यायन का 'किन्नर देश में', सेठ गोविन्ददास के 'सुदूर' और 'पृथ्वी परिक्रमा' इसके उदाहरण हैं।

आ] विशुद्ध साहित्यिक यात्रा वृत्त

इस प्रकार की रचनाएँ प्रायः संस्मरणात्मक और रोचक होती हैं। इस प्रकार के यात्रा वर्णन में लेखक अपनी मानसिक प्रतिक्रियाओं को रमणीय अभिव्यक्ति प्रदान करता है। अज्ञेय और निर्मल वर्मा के यात्रा वृत्तांत इसी कोटि के हैं।

बोध प्रश्न

- 'किन्नर देश में' किस प्रकार का यात्रा वृत्त है?

2. शैली के आधार पर वर्गीकरण

साहित्यकार साहित्यिक विधा के माध्यम से अपनी भावनाओं को प्रकट करने के लिए विभिन्न शैलियों का प्रयोग करते हैं। यात्रा साहित्य में भी लेखक अपने यात्रा वृत्तांत को अनेक शैलियों के माध्यम से पाठक के सम्मुख प्रस्तुत करते हैं। जैसे- निबंधात्मक शैली के यात्रा वृत्तांत, पत्रात्मक शैली के यात्रा वृत्तांत, डायरी शैली के यात्रा वृत्तांत।

बोध प्रश्न

- शैली के आधार पर यात्रा साहित्य के प्रकार बताइए?

3. यात्रा मार्ग के आधार पर

यात्रा मार्ग के आधार पर भी यात्रा साहित्य का वर्गीकरण किया जा सकता है। इसका विभाजन यातायात के साधनों पर निर्भर करता है। जैसे-

अ] स्थल मार्ग की यात्राएँ

आ] जलमार्ग की यात्राएँ

इ] आकाश मार्ग की यात्राएँ।

4. विषय के आधार पर

इस प्रकार की यात्राएँ लेखक की मनोवृत्ति पर निर्भर करती हैं। इसमें यात्रा के उद्देश्य विषय के आधार पर निर्धारित होते हैं। हिंदी यात्रा साहित्य के अंतर्गत इस प्रकार की यात्राएँ

बहुतायत में मिलती हैं। जैसे- अ] धार्मिक यात्राएँ, आ] सांस्कृतिक यात्राएँ, इ] ऐतिहासिक यात्राएँ, ई] भौगोलिक यात्राएँ, उ] राजनैतिक यात्राएँ, ऊ] शिकारियों की यात्राएँ।

बोध प्रश्न

- विषय के आधार पर यात्रा साहित्य का वर्गीकरण कीजिए?

23.2.4 यात्रा साहित्य के तत्व

यात्रा साहित्य के कुछ आवश्यक तत्व होते हैं। जो रचना को अधिक मजबूती प्रदान करते हैं। यात्रा साहित्य व्यक्ति की यात्रा के अनुभवों का शब्द बद्ध रूप है। इसमें उसकी कल्पनाशीलता, सौंदर्य दृष्टि, संवेदना, अनुभव, अभिव्यंजना आदि ऐसे कुछ बुनियादी तत्व हैं जो इसे रचना का आकार देते हैं। इन्हीं तत्वों को सहेजकर कर किसी महत्वपूर्ण स्थान या देश-प्रदेश की यात्रा कर लौटा लेखक यात्रा वृत्तांत रचता है।

23.2.4.1 यात्रा का विवरण

लेखक जब नए स्थानों की यात्रा करता है, वह अनुभवों को साथ लेकर चलता है। यात्रा वृत्तांत की यात्रा का विवरण यथार्थ होना चाहिए, जो स्वयं लेखक द्वारा संपन्न की गई हो और इस यात्रा के दौरान पूरी तरह सजग रहा हो। यदि कोई व्यक्ति चाहे किसी दूसरे की यात्रा के अनुभवों को सुनकर यात्रा वर्णन के रूप में निबद्ध कर दे, वह ऐसा कर सकता है लेकिन यह वृत्तांत विश्वसनीय नहीं होगा। क्योंकि उसमें दूसरे व्यक्ति की कल्पना भी शामिल हो जाएगी। यात्रा वर्णन में प्रत्यक्ष अनुभव को ही महत्व प्राप्त है, अर्थात किसी अन्य के अनुभव के आधार पर यात्रा वृत्तांत नहीं लिखे जा सकते हैं। लेखक का स्वयं अनुभवकर्ता के रूप में उस स्थान पर होना अनिवार्य है।

बोध प्रश्न

- यथार्थ विवरण से क्या अभिप्राय है?

23.2.4.2 वैयक्तिकता

एक ही समय में एक ही स्थान पर कई लेखकों की यात्राएँ एवं उनका साहित्य भिन्न-भिन्न देखने को मिलता है, इसका कारण वैयक्तिकता है। यात्रा वृत्तांत में भिन्नता के लिए वैयक्तिक संस्पर्श आवश्यक तत्व है। इसमें रचनाकार के व्यक्तित्व की छाप अमिट रूप से दिखाई पड़ती है। यात्रा स्थलों, दृश्यों, वस्तुओं, वहाँ की सभ्यता, संस्कृति, भाषा और लोगों के वर्णन में लेखक जितनी आत्मीयता स्थापित कर सकेगा, उतना ही रोचक और आकर्षक उसका यात्रा साहित्य होगा।

बोध प्रश्न

- यात्रा वृत्त में वैयक्तिकता का महत्व बताइए।

23.2.4.3 आत्मीयता

आत्मीयता की साहित्य की किसी भी विधा में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यात्रा साहित्य में भी इसकी अहम भूमिका है, जो यात्रा साहित्य को मर्मस्पर्शी बनाती है। लेखक स्थानों का वर्णन इस प्रकार करता है कि उसका मन वहाँ की प्रकृति, वहाँ के समाज, वहाँ की भाषा, संस्कृति, कला आदि को सजीवता प्रदान करता है। आत्मीयता ही उसे सिर्फ आंकड़े प्रस्तुत करने से भिन्न साहित्यिक रचना बनाती है। यात्रा के दौरान प्राप्त अनुभूतियों और मन-मस्तिष्क पर पड़ने वाली छाप को एवं प्रतिक्रियाओं को वह आत्मीयता के कारण ही सजीवता व मार्मिकता से वर्णित पाता है।

बोध प्रश्न

- यात्रा वृत्त में आत्मीयता के महत्त्व को स्पष्ट कीजिए?

23.2.4.4 रोचकता

यात्रा साहित्य के आवश्यक तत्वों में रोचकता एक महत्वपूर्ण तत्व है। लेखक अपनी यात्रा विषयक रचना में रोचकता बनाए रखने के लिए स्थान विशेष के चित्रण में वहाँ की लोक कथा, कहानी, संस्कृति आदि का प्रसंगानुसार चित्रण करता रहता है। रोचकता के इन तत्वों के कारण ही यात्रा वृत्तांत भी कहानी जैसी आकर्षित करने वाली रचना के समान हो जाता है। इसी तत्व के कारण पाठक में यात्रा वृत्तांत को रुचिपूर्वक पढ़ने की जिज्ञासा होती है।

बोध प्रश्न

- यात्रा साहित्य में रोचकता कैसे आती है?

23.2.4.5 सौंदर्य बोध

मानव प्राकृतिक सौंदर्य से बहुत आकर्षित होता है। यात्रा के दौरान जब नए स्थान पर जाता है तो प्रकृति के विविध प्रकार के सौन्दर्य से परिचित व आकर्षित होता है। प्रकृति रूपी सुंदरी हर ऋतु में अपने रूप का नया-नया शृंगार करती है। लेखक इसका भी अनुभव करता है। पाठक को भी किसी नए देश-प्रदेश के सौंदर्य के बारे में जानने की जिज्ञासा होती है क्योंकि मानव प्रकृति प्रेमी है। यही कारण है कि किसी भी यात्रा साहित्य में सौंदर्य बोध एक आवश्यक तत्व माना जाता है।

बोध प्रश्न

- 'मानव प्रकृति प्रेमी है' से क्या अभिप्राय है?

23.2.4.6 उद्देश्य

कोई भी यात्रा निरुद्देश्य नहीं होती। किसी भी यात्रा करने के पीछे यात्री के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, साहित्यिक व सांस्कृतिक उद्देश्य होते हैं। वैसे ही कोई भी रचना किसी न किसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए की जाती है। ये ही यात्रा साहित्य के भी उद्देश्य माने जा सकते हैं। लेखक और पाठक का एक रिश्ता होता है। अपनी रचना के दौरान लेखक पाठक की रुचि को भी ध्यान में रखता है। यात्रा साहित्य का स्पष्टतः एक उद्देश्य यही है कि लेखक अपनी विशिष्ट यात्रा के दौरान किए गए अनुभवों में पाठक को सहभागी बनाना चाहता है। लेखक के अनुभव की संप्रेषणीयता पाठक को ज्ञान संपन्न बनाने के साथ-साथ उसका मनोरंजन भी करती है तथा उसे आनंद प्रदान करती है। इसीलिए कहा जाता है कि-

मन का रंजन और साथ ही देह-समर्थन।

अनायास ही प्राप्त करो, कर लो देशाटन॥

बोध प्रश्न

- यात्रा साहित्य का एक उद्देश्य बताइए?

23.2.5 हिंदी में यात्रा साहित्य का विकास

अपने जीवन काल में हर व्यक्ति यात्रा ज़रूर करता है, लेकिन केवल सृजनात्मक प्रतिभा का धनी व्यक्ति ही अपने यात्रा संबंधी अनुभवों को पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत कर यात्रा साहित्य की रचना में योगदान दे पाता है। जैसा कि प्रवीण प्रणव ने लिखा है, “यात्रा विवरण या यात्रा-वृत्तांत का इतिहास भी साहित्य की अन्य विधाओं की तरह बहुत पुराना है। पाश्चात्य साहित्य में पौसानियस, जो एक ग्रीक भूगोलवेत्ता थे, ने द्वितीय शताब्दी में यात्रा संस्मरण लिखा। आधुनिक काल के आरंभिक दिनों में जेम्स बोसवेल्स ने 'जर्नल ऑफ ए टूर टू द हेब्रिड्स (1786)' नाम से यात्रा संस्मरण लिखा। यदि भारत की यात्रा की बात करें, तो चौथी शताब्दी में फाहियान नाम का एक बौद्ध भिक्षु अपने तीन अन्य भिक्षु-साथियों के साथ भारत आया। फाहियान पहला चीनी यात्री था, जिसने अपने यात्रा वृत्तांत को लिपिबद्ध किया।” (तत्वदर्शी निशंक, 2021, पृष्ठ 256)।

हिंदी यात्रावृत्त के इतिहास की बात की जाए, तो जैसा कि डॉ. रामचंद्र तिवारी ने बताया है, “हिंदी साहित्य में यात्रा वृत्तांत लिखने की परंपरा का सूत्रपात भारतेंदु से माना जाता है। भारतेंदु ने 'सरयू पार की यात्रा', 'महरवाल की यात्रा', 'लखनऊ की यात्रा' आदि शीर्षकों से

अपनी यात्राओं का बड़ा रोचक और सजीव वर्णन किया है।" (रामचंद्र तिवारी, हिंदी का गद्य साहित्य, 1955, पृ. 164) और यदि भारत से विदेश जाकर यात्रा विवरण लिखने की बात हो तो ऐसी मान्यता है कि श्रीमती हरदेवी की 'लंदन यात्रा' (सन 1883) विदेश यात्रा पर आधारित हिंदी का प्रथम यात्रा वृत्तांत है। आरंभिक विदेशी यात्रा विवरणों में कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर लिखित 'हमारी जापान यात्रा', रामनारायण मिश्र की 'यूरोप यात्रा के छह मास', मौलवी महेश प्रसाद की 'मेरी ईरान यात्रा' और दामोदर शास्त्री की 'मेरी पूर्व दिग्यात्रा' प्रसिद्ध हैं। भारतीय साहित्यकारों में यात्रा-वृत्तांत विधा में लिखकर सबसे ज्यादा ख्याति प्राप्त करने वाले लेखक हैं- राहुल सांकृत्यायन। इन्होंने अनेक यात्रा आधारित पुस्तकें लिखीं, जिनमें 'घुमक्कड़ शास्त्र', 'वोल्गा से गंगा', 'मेरी तिब्बत यात्रा', लद्दाख यात्रा', 'किन्नर देश में', 'रूस में 25 मास', 'तिब्बत में सवा वर्ष', 'मेरी यूरोप यात्रा 'यात्रा के पन्ने', 'जापान', 'ईरान', 'एशिया के दुर्गम खंडों में' प्रमुख हैं।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि हिंदी साहित्य में यात्रा वृत्त लेखन का आगमन आधुनिक युग में हुआ। इस विधा में लेखन कार्य तो बहुत हुआ, किंतु इसका प्रारंभ भारतेंदु युग से ही माना जाता है। यात्रा साहित्य के आरम्भ पर यदि हम विचार करें तो हम पाते हैं कि इसकी शुरूआत पत्र-पत्रिकाओं से हुई और शीघ्र ही इसने पुस्तक का रूप भी धारण कर लिया। जैसा पहले बताया जा चुका है, आधुनिक हिंदी साहित्य के जनक भारतेंदु हरिश्चंद्र ने इस विधा का भी सूत्रपात किया। सन् 1871-1879 के मध्य भारतेंदु हरिश्चंद द्वारा प्रकाशित पत्रिका ‘कविवचनसुधा’ के कई अंकों में भारतेंदु हरिश्चंद के यात्रा साहित्य से सम्बन्धित अनेक रचनाएँ प्रकाशित हुई थीं। जैसे- सरयू पार की यात्रा, लखनऊ, जनकपुर की यात्रा, वैद्यनाथ की यात्रा आदि। कालांतर में भारतेन्दुयुगीन लेखक बालकृष्ण भट्ट और प्रतापनारायण मिश्र की क्रमशः ‘गया यात्रा’ और ‘विलायत यात्रा’ प्रकाशित हुई।

बाबू शिवप्रसाद गुप्त द्वारा लिखे गए यात्रा वृत्तांत ‘पृथ्वी प्रदक्षिणा’ (1924) को हम आरंभिक यात्रा साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान दे सकते हैं। यह चित्रात्मक शैली में लिखा गया है। कन्हैयालाल मिश्र ‘प्रभाकर’ ने भी अपनी विदेश यात्रा के अनुभवों को साहित्य के रूप में प्रस्तुत किया है। उनकी ‘हमारी जापान यात्रा’ (1931) इसका सर्वोत्तम उदहारण है।

राहुल सांकृत्यायन का योगदान यात्रा साहित्य में अद्वितीय है। ये घुमक्कड़ स्वभाव के व्यक्ति थे। यात्रा करने से कभी हिचकिचाते नहीं थे। राहुल संकृत्यायन की घुमक्कड़ प्रवृत्ति या उनके जीवन में यात्रा के महत्त्व को उनके इस कथन से समझा जा सकता है- “जिसने एक बार घुमक्कड़ धर्म अपना लिया, उसे पेंशन कहाँ, विश्राम कहाँ? आखिर में हड्डियाँ कटते बिखर जाएँगी।” उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं- ‘मेरी तिब्बत यात्रा’, ‘मेरी लद्दाख यात्रा’, ‘किन्नर देश में’,

'रूस में पच्चीस मास', 'तिब्बत में सवा वर्ष', 'मेरी यूरोप यात्रा' आदि। उनके लेखन में एक तरफ यात्राओं का सामान्य वर्णन मिलता है, वहीं दूसरी तरफ स्थान के साथ-साथ उन्होंने अपने समय को भी लिपिबद्ध किया है। सन् 1948 में राहुल सांकृत्यायन ने 'घुमक्कड़ शास्त्र' नामक ग्रंथ की रचना की।

बोध प्रश्न

- भारतेंदु के यात्रा वृत्त किस पत्रिका में प्रकाशित होते थे?
- हिंदी साहित्य में राहुल संकृत्यायन का नाम यात्रा लेखकों में अग्रणी माना जाता है। क्यों?

राहुल सांकृत्यायन के बाद 'अज्ञेय' ने भी यात्रा साहित्य में विशेष योगदान दिया। उनका यह कहना कि "यायावर को भटकते हुए चालीस बरस हो गए, किन्तु इस बीच न तो वह अपने पैरों तले घास जमने दे सका, न ठाठ जमा सका है, न क्षितिज को कुछ निकट ला सका है। उसके तार छूने की तो बात ही क्या? यायावर ने समझा है कि देवता भी जहाँ मन्दिर में रुके कि शिला हो गए और प्राण संचार की पहली शर्त है गति; गति; गति।" अज्ञेय द्वारा रचित प्रमुख यात्रा वृत्तांत है - 'अरे यायावर याद रहेगा' (1953), 'एक बूँद सहसा उछली' (1964)।

आज़ादी के बाद बहुतायत में यात्रा साहित्य का सृजन हुआ। रामवृक्ष बेनीपुरी कृत 'पैरों में पंख बाँधकर' (1952), यशपाल कृत 'लोहे की दीवार के दोनों ओर' (1953), प्रभाकर माचवे कृत 'गोरी नज़रों में हम' (1964) आदि उल्लेखनीय हैं। हिंदी यात्रा साहित्य के संदर्भ में मोहन राकेश और निर्मल वर्मा का योगदान भी भुलाया नहीं जा सकता। मोहन राकेश द्वारा लिखित 'आखिरी चट्टान तक' (1953) में दक्षिण भारत का विस्तार से वर्णन देखने को मिलता है। मोहन राकेश के यात्रा साहित्य में कहानी सी रोचकता और नाटक सा आकर्षण देखने को मिलता है। निर्मल वर्मा के "चीड़ों पर चाँदनी" में चिंतन क्षमता और उनकी सृजन प्रक्रिया में समरसता दिखाई पड़ती है।

बोध प्रश्न

- अज्ञेय और निर्मल वर्मा के यात्रा वृत्तों के नाम बताइए।
- मोहन राकेश के किस यात्रा वृत्त में दक्षिण भारत का दर्शन होता है?

23.3 पाठ सार

'यात्रा साहित्य' गद्य की वह विधा है, जिसमे लेखक किसी स्थान की यात्रा का वर्णन प्रस्तुत करता है। यात्रा वृत्तांत के माध्यम से लेखक किसी विशिष्ट स्थान की यात्रा के अनुभवों के

साथ वहाँ के इतिहास, भूगोल, संस्कृति, अर्थव्यवस्था, भाषा आदि का भी विवरण प्रस्तुत करता है। दरअसल इस विधा का संबंध मनुष्य की यायावरी अथवा घुमक्कड़ी वृत्ति से है। सौन्दर्य बोध की दृष्टि एवं उल्लास की भावना से प्रेरित होकर यात्रा करने वाले घुमक्कड़ यात्री एक प्रकार से साहित्यिक मनोवृत्ति के माने जा सकते हैं। इस प्रकार की यात्राओं से प्राप्त अनुभवों की अभिव्यक्ति को यात्रा साहित्य कहा जाता है। अलग अलग तरह की रुचि वाले लेखक अलग अलग तरह के स्थानों की यात्रा करना पसंद करते हैं। इस आधार पर यात्रा साहित्य में अनेक विविधताएँ पाई जाती हैं। उदाहरण के लिए, प्रकृति प्रेमी लेखक प्राकृतिक स्थलों की सैर करना चाहता है, तो संस्कृति प्रेमी लेखक अलग अलग संस्कृतियों के बीच रहकर दुनिया को समझता है। इसी प्रकार चुनौतियों (एडवेंचर) को प्रेम करने वाले लेखक रोमांचकारी और साहसिक यात्राओं के लिए निकलना पसंद करते हैं। इस प्रकार यात्रावृत्त-लेखक अपने यात्रा-अनुभवों को सँजो कर साहित्य की समृद्धि का काम करते हैं।

यात्रा साहित्य की दो खूबियाँ होती हैं, एक तो सौंदर्य बोध और दूसरा पाठक के कौतुहल को जगाए रखना। वस्तुतः यात्रा साहित्य व्यक्ति की यात्रा के अनुभवों का शब्दबद्ध रूप है। इसमें उसकी कल्पनाशीलता, सौंदर्य दृष्टि, संवेदना, अनुभव, अभिव्यंजना आदि ऐसे कुछ बुनियादी तत्व हैं जो इस विधा का आकार देते हैं। इन्हीं तत्वों को सहेजकर कर किसी महत्वपूर्ण स्थान या देश-प्रदेश की यात्रा कर लौटा लेखक यात्रा वृत्तांत रचता है।

हिंदी साहित्य में यात्रा साहित्य आधुनिक गद्य विधा के रूप में स्वीकृत है। यात्रा साहित्य वर्तमान युग की एक लोकप्रिय विधा है। यह पाठकों के समक्ष विभिन्न स्थानों को मूर्त रूप ही प्रदान नहीं करता, बल्कि स्थानों के भौगोलिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक राजनीतिक, आर्थिक आदि परिवेश व वातावरण का भी चित्रण करता है। हिंदी साहित्य में इस विधा का आरंभ आधुनिक काल में भारतेंदु युग से हुआ और शीघ्र ही यह लोकप्रिय हो गई। देश ही नहीं अपितु विदेशों की पृष्ठभूमि पर भी यात्रा वृत्त लिखे गए हैं।

यात्रा साहित्य हिंदी की नवीन विधाओं में से एक है और यह निबंध का विकसित रूप है। इस विधा के अंतर्गत यात्रा का वर्णन होता है। मोटे तौर पर यात्रा वृत्त में तथ्यात्मकता, आत्मीयता, स्थानीयता, वैयक्तिकता, सौन्दर्य बोध, रोचकता आदि गुण मिलने चाहिए, जिससे पाठक बंधा रहे। उल्लेखनीय है कि यात्रा साहित्य में महज सूचनाएँ एवं घटनाओं का वर्णन नहीं होता। अपितु तत्संबंधी देश एवं वहाँ के समाज और जीवन का भी चित्रण होता है। इसमें लेखक की अपनी रुचि, संस्कार, विचार, पसंद-नापसंद तथा शैली का भी समावेश होता है। इससे रचना में कथात्मकता और सरसता आती है।

हिंदी साहित्य में भारतेंदु युग में हिंदी की विभिन्न विधाओं का आगमन हुआ। इसी श्रेणी

में यात्रा साहित्य भी भारतेंदु युग की ही देन है। स्वयं भारतेंदु हरिश्चंद ने कई यात्रा वृत्त लिखे हैं। इसके अतिरिक्त भारतेंदु हरिश्चंद से इतर भी उस युग के कई लेखकों ने यात्रा साहित्य में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। यात्रा साहित्य की शुरूआत पत्र-पत्रिकाओं से हुई और शीघ्र ही इसने पुस्तक का रूप भी धारण कर लिया। राहुल सांकृत्यायन ने विपुल मात्रा में यात्रा साहित्य का सृजन किया है। उनका योगदान यात्रा साहित्य में अद्वितीय है। उन्होंने अपने यात्रा साहित्य में प्राकृतिक संपदा, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक घटनाओं को भी बारी बारी प्रस्तुत किया है। राहुल सांकृत्यायन के बाद 'अज्ञेय' ने भी यात्रा साहित्य में विशेष योगदान दिया। अज्ञेय और निर्मल वर्मा ने अपने यात्रा वृत्तांत के माध्यम से विदेशी अनुभवों को एक कहानीकार की रोचकता और यात्रा के रोमांच के साथ प्रस्तुत किया है। मोहन राकेश के यात्रा साहित्य में कहानी सी रोचकता और नाटक सा आकर्षण देखने को मिलता है।

23.4 पाठ की उपलब्धियाँ

इस पाठ के अध्ययन से कुछ महत्वपूर्ण बिंदु निष्कर्ष के रूप में हमारे सामने प्रस्तुत होते हैं, जो निम्नलिखित हैं-

1. यात्रा साहित्य या यात्रा वृत्त आधुनिक हिंदी साहित्य की एक महत्वपूर्ण गद्य विधा है।
2. यात्रा वृत्त में लेखक यात्रा का यथार्थ अंकन करता है। इसमें काल्पनिक विवरण के लिए स्थान नहीं होता।
3. यात्रा वृत्त का लेखक प्राकृतिक सौंदर्य के अतिरिक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक आदि स्थितियों का भी वर्णन करता है।
4. हिंदी में यात्रा वृत्त का आरम्भ भारतेंदु युग में हुआ।
5. राहुल सांकृत्यायन, अज्ञेय, मोहन राकेश, निर्मल वर्मा आदि हिंदी के महत्वपूर्ण यात्रा वृत्त लेखक हैं।

23.5 शब्द संपदा

1. अनादि	=	आदिरहित, जिसका आदि या आरम्भ न हो
2. अभिव्यक्ति	=	प्रकट करना, ज़ाहिर करना
3. आत्मसात	=	जो पूरी तरह से समाहित कर लिया गया हो
4. जीवनयापन	=	जीवन निर्वाह
5. निबद्ध	=	बंधा हुआ

6. बहुतायत	=	अधिकता
7. यथार्थ	=	सत्य, हू-ब-हू
8. लालित्य	=	ललित होने का भाव
9. संरचना	=	बनावट
10. संसर्ग	=	संयोग, प्रेम
11. संस्मरण	=	बार-बार स्मरण करना, गद्य की एक विधा
12. सजग	=	सतर्क, सावधान
13. समक्ष	=	सामने, उपस्थित

23.6 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. यात्रा साहित्य के विकास पर प्रकाश डालिए?

2. यात्रा साहित्य के स्वरूप पर चर्चा कीजिए?

3. यात्रा साहित्य के तत्वों पर प्रकाश डालिए

खंड (ब)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. यात्रा साहित्य का अभिप्राय स्पष्ट कीजिए।

2. राहुल सांकृत्यायन के यात्रा वृत्त पर प्रकाश डालिए।

3. अज्ञेय के यात्रा वृत्त पर प्रकाश डालिए।

खंड (स)

I सही विकल्प चुनिए

1. यात्रा साहित्य का आरम्भ कब हुआ? ( )

(क) आदिकाल (ख) भक्तिकाल

(ग) रीतिकाल (घ) आधुनिक काल

2. 'अरे यायावर रहेगा याद' के लेखक का नाम बताइए? ( )

(क) मोहन राकेश (ख) धर्मवीर भारती

(ग) रामवृक्ष बेनीपुरी (घ) इनमें से कोई नहीं

3. 'घुमक्कड़ शास्त्र' के लेखक का नाम बताइए? ( )

(क) राहुल सांकृत्यायन (ख) अज्ञेय

(ग) मोहन राकेश (घ) इनमें से कोई नहीं

II रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए

1. 'आखिरी चट्टान' के लेखक का नाम...........है।
2. 'किन्नर देश में' के लेखक का नाम .... है।

III सुमेल कीजिए

i) एक बूँद सहसा उछली	(अ) भारतेंदु
ii) कविवचन सुधा	(आ) राहुल संकृत्यायन
iii) घुमक्कड़ शास्त्र	(इ) अज्ञेय

23.7 पठनीय पुस्तकें

1. आधुनिक हिंदी गद्य साहित्य. हरदयाल.
2. तत्वदर्शी निशंक. ऋषभदेव शर्मा.
3. यात्रा साहित्य का उद्भव और विकास. सुरेंद्र माथुर.
4. हिंदी यात्रा साहित्य. श्रीनिवास नाइक.
5. हिंदी यात्रा साहित्य एक विहंगम दृष्टि. विश्व मोहन तिवारी.

इकाई 24 : धरती का स्वर्ग (विष्णु प्रभाकर) : एक विशलेषण

इकाई की रूपरेखा

24.0 प्रस्तावना

24.1 उदेश्य

24.2 मूल पाठ : धरती का स्वर्ग(विष्णु प्रभाकर) : एक विश्लेषण

24.2.1 विष्णु प्रभाकर: व्यक्तित्व और कृतित्व

24. 2.2 'धरती का स्वर्ग' का परिचय

24.2.3 'धरती का स्वर्ग' का तात्विक विश्लेषण

24.3पाठ का सार

24.4 पाठ की उपलब्धियाँ

24.5 शब्द संपदा

24.6 परीक्षार्थ प्रश्न

24.7 पठनीय पुस्तकें

24.1 प्रस्तावना

अनादिकाल से ही मनुष्य यायावर रहा है। प्रकृति का उन्मुक्त सौन्दर्य उसको आकर्षित करता रहा है। मनुष्य के आंतरिक एवं बाह्य विकास के साथ यात्रा का घनिष्ठ एवं अटूट संबंध रहा है। यात्रा अनुभव की प्रगति का सोपान है। यात्रा के कारण मनुष्य को बहुआयामी व्यक्तित्व तथा अनेक अनुभूतियों का गहरा ज्ञान होता है। हिंदी साहित्य में यात्रा वृत्तांत लेखन की परम्परा पहले से ही है। इस इकाई में आप विष्णु प्रभाकर ने अपने यात्रा वृत्तांत 'धरती का स्वर्ग' का अध्ययन करेंगे। इस यात्रा वृत्तांत में लेखक ने कश्मीर के प्राकृतिक सौन्दर्य का सूक्ष्म अंकन किया है। वहाँ के सौन्दर्य, संस्कृति, लोक जीवन इत्यादि का अवलोकन लेखक ने किया है।

24.1 उद्देश्य

प्रिय छात्रो! इस इकाई के अध्ययन से आप-

- यात्रा वृत्त लेखक विष्णु प्रभाकर के जीवन वृत्त को समझ सकेंगे।
- निर्धारित यात्रा वृत्तांत की विषय वस्तु से परिचित हो सकेंगे। ।

- निर्धारित यात्रा वृत्तांत में वर्णित कश्मीर के विषय में जान सकेंगे।
- निर्धारित यात्रा वृत्तांत की विशेषताओं को आत्मसात कर सकेंगे।
- निर्धारित यात्रा वृत्तांत का तात्विक विवेचन कर सकेंगे।
- विष्णु प्रभाकर की भाषा-शैली परक विशेषताओं से अवगत हो सकेंगे।

24.2 मूल पाठ : धरती का स्वर्ग (विष्णु प्रभाकर) : एक विश्लेषण

प्रिय छात्रो! आग हम विष्णु प्रभाकर के निधारित यात्रा वृत्तांत 'धरती का स्वर्ग' का विस्तार पूर्वक तात्विक विश्लेषण करेंगे। उसके पूर्व लेखक के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया जा रहा है।

24.2.1 विष्णु प्रभाकर : व्यक्तित्व और कृतित्व

विष्णु प्रभाकर का जन्म 21 जून, 1912 को उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर जिले के मीराँपुर गांव में हुआ था। इनके पिता दुर्गा प्रसाद धार्मिक विचारों वाले व्यक्ति थे और माता महादेवी पढ़ी-लिखी महिला थी, जिन्होंने अपने समय में पर्दा प्रथा का विरोध किया था। इनकी पत्नी का नाम सुशीला था।

विष्णु प्रभाकर की आरंभिक शिक्षा मीराँपुर में ही हुई। बाद में वे अपने मामा के घर हिसार चले गए जो तब पंजाब प्रांत का हिस्सा था। घर की माली हालत ठीक नहीं होने के चलते आगे की पढ़ाई ठीक से नहीं कर पाए और गृहस्थी चलाने के लिए उन्हें सरकारी नौकरी करनी पड़ी। चतुर्थ वर्गीय कर्मचारी के तौर पर काम करते समय उन्हें प्रति माह अठारह रुपये मिलते थे। लेकिन मेधावी और लगनशील विष्णु प्रभाकर ने पढ़ाई जारी रखी और हिंदी भूषण की उपाधि के साथ ही संस्कृत में प्राज्ञ और अंग्रेजी में बी.ए की डिग्री प्राप्त की।

विष्णु प्रभाकर पर महात्मा गांधी के दर्शन और सिद्धांतों का गहरा प्रभाव पड़ा। इसके कारण उनका रुझान कांग्रेस की तरफ हुआ और स्वतंत्रता संग्राम के समय में उन्होंने अपनी लेखनी का भी एक उद्देश्य बना लिया, जो आजादी के लिए सतत संघर्षरत रही। अपने दौर के लेखकों में वे प्रेमचंद, यशपाल, जैनेंद्र और अज्ञेय जैसे महारथियों के सहयात्री रहे हैं। लेकिन रचना के क्षेत्र में उनकी एक अलग पहचान है।

अजित कुमार ने अपने आलेख "घरबारी मसीहा विष्णु प्रभाकर" में लिखा है कि "अनेक अर्थों में वे (विष्णु प्रभाकर) उस भारतीयता के प्रतीक थे, जो आज़ाद हिंदुस्तान में तेजी से मिटती नज़र आती है। जहाँ देश की नई पीढ़ी में व्यक्तिवाद, आत्मकेंद्रिकता, अधैर्य, भौतिकता, महत्वाकांक्षा, प्रतियोगिता आदि के प्रति उत्सुक आकर्षण है, वहाँ उनकी निष्ठा की परिधि में थे-

संयुक्त परिवार, सामाजिकता, धीरता, गंभीरता, गांधीवादी सादगी, दैनिक चर्या के अनिवार्य क्रम में लेखन का सम्मिलन और मान-सम्मान के प्रति निर्विकार दृष्टि। उनकी मित्र मंडली में बुजुर्गों से लेकर नौजवानों तक सभी शामिल थे, लेकिन न तो उन्होने अपने इर्द गिर्द कोई गुट बनाया था, न हिंदी की साहित्यिक राजनीति में वे कोई रुचि लेते थे।"

बोध प्रश्न

- विष्णु प्रभाकर का जन्म कब और कहाँ हुआ था?
- विष्णु प्रभाकर के आरंभिक जीवन संघर्ष पर 2 वाक्य लिखिए।

विष्णु प्रभाकर ने पहला नाटक लिखा- हत्या के बाद। साथ ही इन्होंने हिसार में नाटक मंडली में भी काम किया। बाद में इन्होंने लेखन को ही अपनी जीविका बना लिया। विष्णु प्रभाकर का आरंभिक नाम विष्णु दयाल था। एक संपादक ने उन्हें प्रभाकर का उपनाम रखने की सलाह दी। सन 1931 ई. में हिंदी मिलाप में पहली कहानी 'दीवाली के दिन' छपने के बाद लेखन का जो सिलसिला शुरू हुआ था वह निरंतर आजीवन चलता ही रहा।आजादी के बाद वे नई दिल्ली आ गए और सितंबर 1955 में आकाशवाणी में नाट्य निर्देशक के तौर पर नियुक्त हो गए।

विष्णु प्रभाकर ने अपनी लेखनी से हिंदी साहित्य को समृद्ध किया। उन्होंने साहित्य की सभी विधाओं पर अपनी लेखनी चलाई है। नाथूराम शर्मा प्रेमी के कहने से वे शरत चंद्र की जीवनी 'आवारा मसीहा' लिखने के लिये प्रेरित हुए। कहानी, उपन्यास, नाटक एकांकी, यात्रा वृत्तांत, बाल साहित्य सभी विधाओं में प्रचुर साहित्य लिखने के बावजूद 'आवारा मसीहा' उनकी पहचान का पर्याय बन गई। 'अर्धनारीश्वर' पर उन्हें बेशक साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला हो, किंतु 'आवारा मसीहा' ने साहित्य में उनका मुकाम अलग ही रखा। प्रसंगवश यहाँ इन दोनों कृतियों के बारे में संक्षिप्त जानकारी आवश्यक है।

'आवारा मसीहा' विष्णु प्रभाकर द्वारा रचित प्रसिद्ध बांग्ला साहित्यकार शरत चंद्र चट्टोपाध्याय की जीवनी है। शरत की गणना भारत के ऐसे उपन्याकारों में की जाती है, जो आज भी सच्चे अर्थों में देशभर में अत्यन्त लोकप्रिय हैं। परंतु आश्चर्य की बात यह है कि एकाध को छोड़कर उनकी कोई भी प्रामाणिक जीवनी बांग्ला में भी उपलब्ध नहीं है। 'आवारा मसीहा' लिखकर विष्णु प्रभाकर ने इस बड़े अभाव की पूर्ति की। उन्होंने यात्रा, पत्र-व्यवहार, भेंटवार्ता आदि समस्त उपायों और साधनों से इसके लिए ज़रूरी शोधकार्य को पूर्ण किया। डॉ. सुभाष रस्तोगी के अनुसार, " विष्णु प्रभाकर की 'आवारा मसीहा (1974)' निःसंदेह जीवनी विधा का अब तक का सर्वाधिक महत्वपूर्ण गौरव-ग्रंथ इसलिए है क्योंकि इसमें जीवनी, संस्मरण,

रेखाचित्र, कहानी, नाटक, यात्रा आदि अनेकानेक विधाओं के चरमोत्कर्ष के दर्शन होते हैं।”

विष्णु प्रभाकर ने साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित अपने महाकाय उपन्यास ‘अर्द्धनारीश्वर’ में आज की सर्वाधिक ज्वलन्त समस्या बलात्कार से जुड़े मूलभूत सामाजिक और मनोवैज्ञानिक मौलिक प्रश्न उठाए हैं। यह उपन्यास हिंदी उपन्यास के परंपरागत ढांचे से भिन्न का अतिक्रमण करता है। इसके प्रमुख पात्रों की संपूर्ण जीवनचर्या ‘अर्द्धनारीश्वर’ के रूपक को चरितार्थ करती प्रतीत होती है क्योंकि वे दोनों एक दूसरे से कुछ भी छिपाते नहीं हैं। इस उपन्यास के सभी पात्र वास्तविक जीवन से लिए गए हैं जो इसकी ‘सार्वकालिक प्रासंगिकता का आधार है।

वर्ष 2005 में तब वे सुर्खियों में आए जब राष्ट्रपति भवन में कथित दुर्व्यवहार के विरोध स्वरूप उन्होंने पदम भूषण की उपाधि लौटाने की घोषणा की। विष्णु प्रभाकर का निधन 11 अप्रैल, 2009 को दिल्ली में हुआ। उन्होंने अपनी वसीयत में अपने संपूर्ण अंगदान करने की इच्छा व्यक्त की थी। इसलिए उनका अंतिम संस्कार नहीं किया गया। बल्कि उनके पार्थिव शरीर को अखिल भारतीय आयुर्वेदिक संस्थान को सौंप दिया गया।

बोध प्रश्न

- ‘आवारा मसीहा’ किसकी जीवनी है?
- विष्णु प्रभाकर को साहित्य अकादमी पुरस्कार किस रचना पर मिला।

कृतित्व

उपन्यास : ढलती रात (1945), निशिकांत (1953), तट के बंधन (1955), स्वप्नमयी (1956), दर्पण का व्यक्ति (1968), परछाई (1968), कोई तो (1982), अर्धनारीश्वर (1992)। लगभग 1200 पृष्ठ के बृहत उपन्यास ‘अर्धनारीश्वर’ पर उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

कहानी संग्रह : आदि और अंत, रहमान का बेटा, जिन्दगी के थोड़े, संघर्ष के बाद, धरती अब भी घूम रही है, सफर के साथी, खण्डित पूजा, सांचे और कला, मेरी तैतीस कहानियाँ, पुल टूटने के पहले, मेरा वतन, खिलौने, मेरी लोकप्रिय कहानियाँ, मेरी कथा यात्रा, एक और कुंती, जिन्दगी एक रिहर्सल, आपकी कृपा इत्यादि।

नाटक : नव प्रभात, समाधि, युगे-युगे क्रांति, टूटते परिवेश, कुहासा और किरण, डॉक्टर, टगर, बंदिनी, सत्ता के आर-पार, अब और नहीं, श्वेत कमल।

एकांकी संग्रह : इंसान, अशोक, प्रकाश और परछाई, बारह एकांकी, दस बजे रात, ये रेखाएँ ये दायरे, ऊँचा पर्वत, मेरे प्रिय एकांकी, तीसरा आदमी, नये एकांकी, डरे हुए लोग, मैं भी मानव हूँ, दृष्टि की खोज, स्वाधीनता संग्राम, मैं न तुम्हें क्षमा करुगाँ, एक लिकंन, विद्रोह।

जीवनी और संस्मरण : आवारा मसीहा, अमर शहीद भगत सिंह, सरदार वल्लभ भाई पटेल, जाने अनजाने, कुछ शब्द कुछ रेखाएं, यादों की तीर्थ यात्रा, मेरे अग्रज मेरे मीत, समांतर रेखाएँ शुचि-स्मिता, मेरे हम सफर, राह चलते-चलते, भारतीय साहित्य के निर्माता- काका कालेलकर।

यात्रा वृत्तांत : जमना-गंगा के नैहर में, हँसते निर्झर, दहकती भट्टी, अभिप्राय और यात्रायें, ज्योति पुंज हिमालय, हिम शिखरों की छाया, धरती का स्वर्ग इत्यादि।

अन्य रचनाएँ : एक देश एक हृदय, मानव अधिकार, बापू की बातें, हजरत उमर, हमारे पड़ोसी, मन के जीते जीत, यमुना की कहानी, पाप का घड़ा, हीरे की पहचान, जीवन पराग, गुड़िया खो गई, पहला सुख निरोगी काया इत्यादि।

पुरस्कार एवं सम्मान : राष्टीय एकता पुरस्कार, सोवियत लेंड नेहरु पुरस्कार, सूर-पुरस्कार : हरियाणा साहित्य अकादमी, तुलसी पुरस्कार : उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, शरत पुरस्कार : बंग साहित्य परिषद, साहित्य इंटरनेशनल ह्युमिनिस्ट अवार्ड : इंटरनेशनल ह्युमिनिस्ट सोसायटी इंडिया। साहित्य अकादमी पुरस्कार।

इसके अतिरिक्त विष्णु प्रभाकर को विशिष्ट साहित्यकार सम्मान, संस्थान सम्मान, नागरी प्रचरिणी सभा का ताम्रपत्र, साहित्य वाचस्पति, शब्द शिल्पी आदि उपधियाँ भी प्रदान की गई हैं। इसके अतिरिक्त आप भारत की विभिन्न साहित्यिक संस्थानों के सदस्य और प्रतिनिधि भी रह चुके है। अनेक विश्वविद्यालयों तथा मंत्रालयों के भी आप विशेष परामर्शदाता रहें हैं।

बोध प्रश्न

- विष्णु प्रभाकर के कहानी संग्रहों के नाम लिखिए।
- 'अर्द्ध नारीश्वर' किस विधा की रचना है तथा इसका प्रकाशन किस वर्ष हुआ?
- विष्णु प्रभाकर के 5 यात्रा वृत्तांतों के नाम लिखिए।

24.2.2 'धरती का स्वर्ग' का परिचय

प्रिय छात्रो! आप जानते हैं कि यात्रा वृत्तांत मूलत: किसी रोचक यात्रा का संस्मरण होता है। आपको यह जानकर अचरज होगा कि संसार के बड़े-बड़े यायावर अपनी मनोवृत्ति में साहित्यिक रहे हैं। फाहियान, ह्वेनसांग, इत्सिंग, इब्न बतूता, अलबरूनी, मार्को पोलो और

टैनियर आदि जितने प्रसिद्ध घुमक्कड़ हुए हैं, अथवा देश-विदेश के साहसी अन्वेषक हुए हैं, सब साहित्यिक यायावर थे। वे केवल घुमक्कड़ी के लिए घूमते रहे, घूमना ही उनके लिए प्रधान उद्देश्य रहा। विष्णु प्रभाकर भी काफी हद तक घुमक्कड़ कोटि के व्यक्ति थे।

विष्णु प्रभाकर द्वारा लिखित 'धरती का स्वर्ग' एक महत्वपूर्ण यात्रा वृत्तांत है। इसमें लेखक ने कश्मीर के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन किया है। विष्णु प्रभाकर ने कश्मीर की यात्रा अपने मित्र के साथ की थी। कश्मीर का नाम लेते ही अमीर खुसरो की ये प्रसिद्ध पंक्तियाँ स्वतः ही स्मरण हो आती हैं - अगर फिरदौस बर रू-ए-ज़मीं अस्त/ हमीं अस्त-ओ, हमीं अस्त-ओ हमीं अस्त। अर्थात् ज़मीन पर कहीं स्वर्ग है तो वह यहीं है, यहीं है और यहीं है। कश्मीर जिसे धरती का स्वर्ग कहा जाता है, उसका प्राकृतिक सौन्दर्य अत्यंत मनोहारी है। मानो विधाता ने अपना सर्वस्व उसी पर न्यौछावर कर दिया है। राजतंरगिणी के रचनाकार कल्हण ने लिखा है कि - तीनों लोकों में रत्नों को पैदा करने वाली धरती सबसे सुंदर है। जिसके उत्तर में कुबेर पर्वत है। उससे अधिक सुंदर गिरिराज हिमाचल है। हिमाचल से भी अधिक सुंदर है उसकी गोद में बसा हुआ कश्मीर। यहाँ पर बादल सदा आँख-मिचौली खेलते रहते हैं। हिम शिखरों से निकली नदियाँ कल-कल करती हैं। बड़े-बड़े देवदार,चीड़, अखरोट और बादाम के वृक्ष हवा के हिंडोले में झूले झूला करते हैं। केसर की महक और फूलों की सुगंध हर क्षण मनुष्य को लुभाया करती है। यहीं पर कालिदास, मम्मट, सोमदेव और क्षेमेंद्र ने काव्य प्रेरणा पाई है। यहीं पर किन्नर बालाओं ने देवताओं के दिलों में हिलोरे पैदा की हैं। यहाँ पर ही नीलकंठ शंकर का निवास स्थान हैं। जहांगीर ने भी मरने से पहले अंतिम शब्द यही कहे थे - कश्मीर और कुछ नहीं।

बोध प्रश्न

- 'राजतरंगिणी' के लेखक का नाम लिखिए?
- कश्मीर को धरती का स्वर्ग क्यों कहा जाता है?

लेखक ने कश्मीर की झीलों के भी मनोरम दृश्य का वर्णन किया है। वह अपनी हाउसबोट पर बैठा हुआ शांति से देख रहा है कि किस तरह सूरज की लालिमा पहाड़ियों से घाटी में उतरती है। ठीक सामने शिखर को देखकर ऐसा लग रहा है कि शंकराचार्य मानो स्वयं इस घाटी के प्रहरी हों। लेखक ने कश्मीर के प्राकृतिक सौंदर्य के साथ-साथ वहाँ की लोक संस्कृति का भी थोड़ा बहुत चित्रण किया है।

दिन निकलते ही कश्मीरी लोग शिकारे लेकर अपने-अपने काम पर लग जाते हैं। स्त्रियाँ जो खेतों में काम करती हैं और ये स्त्रियाँ ही क्यों, वह कश्मीरी किशोर-किशोरियों को भी शिकारों पर बैठे झील के साथ बह जाते हुए देखता है। धीरे-धीरे सूरज की किरणें चारों ओर फैल रही हैं और लेखक दूसरे किनारे पर चला जाता है। तभी उसे सहसा अपने मित्र की बात याद आती है और वह कहता है कि- रूस में कहीं एक झील के किनारे हम खड़े थे, तभी मित्र ने कहा-

देखी है ऐसी सुंदर झील? मै आश्चर्य से उनकी ओर ताकता रहा और फिर बोला कि - कश्मीर गए हो कभी? वहाँ की झीलें देखी हैं? मित्र ने कहा - नहीं।

हम भारतीय लोगों की यह विशेषता है कि विदेशो में जाकर अति उत्साह में अपने देश की निंदा करने लगते हैं। जबकि कश्मीर के संबंध में हम कह सकते हैं कि यह कोई रंगीन चित्र नहीं है, जिसे सिर्फ देखा जा सके बल्कि यह तो वह सजीवता है जिसे भोगा भी जा सकता है। लेखक ने कश्मीर के सौंदर्य के साथ वहाँ के लोक जीवन का भी वर्णन किया है। कश्मीर के कोने-कोने में सौंदर्य बिखरा हुआ है। प्राकृतिक सौंदर्य के आगे मानो सब कुछ कम हो जाता है।

बोध प्रश्न

- कश्मीर के प्राकृतिक सौन्दर्य की क्या विशेषता है?
- कश्मीर की झील देखकर लेखक को किस घटना की याद आई?

24.2.3 'धरती का स्वर्ग' का तात्विक विश्लेषण

यात्रा व्यक्ति के जीवन में बदलाव के लिए आवश्यक है। हिंदी के साहित्यकारों ने यात्रा वृत्तांत पर भी काफी चर्चा की है। राहुल सांकृत्यायन, मोहन राकेश, अज्ञेय, विष्णु प्रभाकर आदि लेखकों ने अनेक यात्रा वृत्तांत लिखे हैं। विष्णु प्रभाकर ने यात्रा वृत्तांत 'धरती का स्वर्ग' में कश्मीर यात्रा के दौरान के अपने अनुभवों को लिखा है। इसमें लेखक ने कश्मीर के साथ-साथ वहाँ के लोक जीवन का भी वर्णन किया है।

प्रकृति प्रेमियों को हमेशा प्राकृतिक सुंदरता लुभाती रही है। ऐसी ही एक घटना लेखक को याद आ गई। कई वर्ष पूर्व विश्व भ्रमण करने वाले एक जर्मन पर्यटक से लेखक की भेंट हुई थी। वह निरंतर 44 वर्षों से घूम रहे थे। शरीर बूढ़ा हो आया था। आँखों की ज्योति क्षीण हो चली थी। लेकिन क्षीण नहीं हो रहा था उनका उत्साह। लेखक ने उनसे कहा, आँखों की ज्योति इसी तरह क्षीण होती रही तो आपकी यात्रा भी एक दिन समाप्त हो जाएगी। उन्होंने उत्तर दिया कि यदि मेरी यात्रा रुक गई, तो मैं निश्चय ही अंधा हो जाऊँगा। घूमते रहने से मेरी आँखें ठीक रहती हैं। नई-नई चीजें देखता हूँ, तो ज्योति लौट आती है। लेखक उस दिन उनकी बात का मतलब नहीं समझ पाया था, परंतु जब उसने कश्मीर को देखा तो समझ गया। यह वही धरती है जिसके एक ओर कुबेर पर्वत है तो दूसरी ओर हिमालय उसको अपनी गोद में संवार रहा है, जैसे एक माँ अपने शिशु को संवारती है।

बोध प्रश्न

- हिंदी साहित्य के कुछ प्रसिद्ध यात्रा वृत्तांत लेखकों के नाम लिखिए।
- जर्मन पर्यटक से लेखक की क्या बातचीत हुई?

लेखक ने कश्मीर की झीलों का वर्णन अधिक किया है जैसे- डल, वूलर, नगीन, अंचार,

मानस बल, गंधार बल, शेषनाग, कौंसरनाग अफरावत इत्यादि। लेखक कश्मीर के सौन्दर्य को देखकर स्तब्ध है। नगीन जो खेलों के लिए प्रसिद्ध है, वहाँ पर छोटी सी झील है। जिसमें युवक-युवती तैरते हैं या नाव चलाते हैं। वहाँ पर संध्या के समय कश्मीरी लोक गीत चल रहा था परन्तु लेखक का मन तो झील से उठने वाले संगीत में अधिक रम रहा था।

विष्णु प्रभाकर ने 'धरती का स्वर्ग' में कश्मीर सुषमा का चित्रिण किया है। वहा की झीलों के साथ-साथ पहाड़ियों का भी वर्णन भी किया है। शेषनाग झील लगभग 12 फीट की ऊंचाई पर स्थित है। ब्रह्मा, विष्णु, महेश नामधारी तीनों धवल शिखर झाँकते है और ऐसा लगता है कि धरा और अम्बर एक हो रहे हैं। एकदम शांत जगह जहाँ व्यक्ति अपनी सारी चिंताओं को भूल सकता है। सामने ही वेदकालीन प्रसिद्ध नदी वितस्ता है जो बेरीनाग से निकलकर आगे बढ़ती जाती है और कश्मीर के हृदय अर्थात वूलर झील में मिल जाती है। लेखक ने वहाँ की पहाड़ियों से भी पाठक को अवगत कराया है। लेखन शक्ति की यह कला है कि वह दृश्यों का ऐसा वर्णन करते हैं कि पाठक के मानस में उसका दृश्य उभर आता है और पाठक को ऐसा अनुभव होता है कि वह भी वहाँ उपस्थित है। विष्णु प्रभाकर ने भी अपने पाठकों के हृदय में यही छाप छोड़ी है।

बोध प्रश्न

- लेखक ने किन झीलों का वर्णन किया है?
- लेखक ने कश्मीर के किन पहाड़ों का वर्णन किया है?

यात्रा का विवरण

'धरती का स्वर्ग' में लेखक ने अपनी कश्मीर यात्रा के अनुभवों का वर्णन किया है। चारों ओर सुंदर पहाड़ियों से घिरा कश्मीर जहाँ हरित-वसना धरती हर क्षण इंद्रधनुष के रंगों में से आँख मिचोली खेला करती है। इसके आँगन में मोती की चमक के समान नदियाँ कल-कल करती झीलों से खिलवाड़ करती हैं। देवदार, चीड़ के तरु प्रहरी की तरह खड़े हैं। लेखक ने यहाँ कश्मीर की झीलों का वर्णन किया है। डल झील कश्मीर की सुप्रसिद्ध झील है। जहाँ पर कश्मीरी लोग शिकारों में अपना सामान बेचते हैं। लेखक कहता है कि मैं 5 मील लंबी और 2 मील चौड़ी इस डल झील को ही देखता हूँ, जीवन से जैसे उमड़ी पड़ती है। इसके तैरती उपवन नावघर सैलानियों को अचरज से भर देते हैं और रात को जब असंख्य प्रकाशदीप इसमें जाते हैं तो नंदन कानन की छवि नैनों में उभरती है। इसके अतिरिक्त लेखक ने नगीन का भी वर्णन किया है जो खेलों के लिए प्रसिद्ध है। जहाँ शाम के समय कश्मीरी लोकगीत को लोग सुनते हैं और रोमांचित होते हैं। लगभग 12000 फुट की ऊँचाई पर स्थित शेषनाग झील में जब ब्रह्मा, विष्णु, महेश नामधारी तीन धवल शिखर झाँकते हैं। यह स्थान वर्ष के अधिकांश समय में बर्फ से ढका रहता है फिर भी यह झील किस तरह अपने रूप को संजोये रहती है। वूलर झील जिसे कश्मीर का

प्राण कहा जाता है। वेद कालीन प्रसिद्ध नदी जो बेरीनाग से निकलकर धीरे-धीरे जाकर वूलर में मिल जाती है। इन सब का सजीव वर्णन किया है।

बोध प्रश्न

- डल झील के सौंदर्य का वर्णन कीजिए?
- शेषनाग झील का वर्णन कीजिए?

व्यक्तिपरकता

व्यक्तिपरक चेतना वास्तविकता और सत्य के बोध से संबंधित वह दार्शनिक अवधारणा है जिसमें किसी व्यक्ति या अन्य बोध करने वाले जीव को वास्तविकता सी प्रतीत होती है। विष्णु प्रभाकर ने 'धरती का स्वर्ग' में भी व्यक्तिपरकता को महत्व दिया है। लेखक कहता है कि कश्मीर रंगीन चित्र मात्र नहीं है, वह सचमुच सजीव है, उसको हम जी सकते हैं, अनुभव कर सकते हैं। कश्मीर के सौंदर्य को देखकर लेखक विस्मित हो जाता है। वह जितना भी उसे देखता है बस उसी में खो जाता है। मन ही मन वह अपने उस मित्र को पुकारता है जो रूस की झील को सुंदर कहता है। वह कहता है कि आओ भाई आओ! दो क्षण की शांति के लिए यहाँ आकर देखो! ये झीले तुम्हें संजीवनी से भर देंगे। संजीवनी संघर्ष की शक्ति है। झीलों से दृष्टि उठाओगे तो उपवन मृदु मधुर स्वर में तुम्हें पुकारेंगे। झरनों का संगीत तुम्हें आकर्षित करेगा तथा गिरिशिखर और स्तब्ध कर देने वाली चरागाह। सत्य तो यह है कि कश्मीर के कोने-कोने में पड़ा हुआ है।

बोध प्रश्न

- लेखक को मित्र की याद कब और क्यों आई?

आत्मीयता

यात्रा करना मनुष्य की प्रवृत्ति है। अपनी जीवन यात्रा में मनुष्य कभी न कभी यात्रा करता है। उस यात्रा में उसकी आँखों के सम्मुख न जाने कितने ही चित्र अंकित होते हैं, कितने ही दृश्य ऐसे होते हैं जो मानस पटल में जीवन भर तैरते रहते हैं। यही चित्र जीवन का अनुभव बनकर एक विचार लोक या भाव लोक की रचना भी करते हैं। 'धरती का स्वर्ग' यात्रावृत्तांत में भी लेखक ने कश्मीर का प्राकृतिक सौंदर्य, झीलों का वर्णन, पहाड़ों पर अठखेलियाँ करता सूरज इत्यादि का वर्णन अत्यंत आत्मीयतापूर्वक किया है। साथ ही साथ वहाँ के लोक जीवन के छोटे-छोटे दृश्य हैं जो पाठकों को आनंदित कर देते हैं। इन झीलों का वर्णन लेखक ने अत्यंत मनोरम रूप से प्रस्तुत किया है। वह पाठक के हृदय में अपनी छवि अंकित कर देता है।

बोध प्रश्न

- लेखक ने किन दृश्यों का वर्णन आत्मीयता से किया है?

रोमांच एवं साहसिकता

मनुष्य हमेशा से जिज्ञासु प्राणी रहा है। वह जीवन में नित्य नवीन खोज में लगा रहता है। वह अपने जीवन को रोमांच से भरता है। इसी कारण यात्रा भी करता है। ताकि उसके जीवन में रोमांच भरा रहे। इस संबंध में 'धरती का स्वर्ग' का कथन द्रष्टव्य हैं- लेखक ने एक वृद्ध पर्यटक से कहा कि आप इतनी यात्रा करते हैं एक दिन आँखों की ज्योति इसी तरह क्षीण हो जाएगी और आपकी यात्रा आप ही समाप्त हो जाएगी। दृढ़ स्वर में उस वृद्ध ने उत्तर दिया कि मेरी यात्रा रुक गई तो मैं निश्चय ही अंधा हो जाऊँगा। घूमते रहने से मेरी आँखें ठीक रहती है। नई-नई चीजें देखता हूँ तो ज्योति जैसे लौट आती है। उस व्यक्ति का साहस ही था जो अभी तक क्षीण नहीं हुआ था और नित्य नए रोमांच के साथ आगे बढ़ता ही जा रहा था। जीवन का सत्य भी यही है कि व्यक्ति आगे बढ़ता जाता है। उसे नहीं पता होता कि अगले पल क्या होने वाला है। जीवन एक यात्रा ही है जो साहस एवं रोमांच से भरी हुई है।

बोध प्रश्न

- धरती का स्वर्ग में चित्रित रोमांचक प्रसंग का वर्णन कीजिए?

सौंदर्य बोध

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने 'कविता क्या है' निबंध के अंतर्गत सौंदर्य के विषय में कहा है कि जैसे वीर कर्म से पृथक वीरत्व कोई पदार्थ नहीं, वैसे ही सुंदर वस्तु से पृथक सौंदर्य कोई पदार्थ नहीं है। वास्तव में सौंदर्य दृश्य और दृष्टा दोनों में ही है। सुंदर क्या है? इसकी कोई सीमा नहीं बांधी जा सकती। जिसको जो अच्छा लगता है उसके लिए सुंदर वही है। विष्णु प्रभाकर ने अपने यात्रा वृत्तांत 'धरती के स्वर्ग' में कश्मीर के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन किया है। लेखक ने झीलों की तुलना नीलवर्ण से की है। लेखक ने यहाँ झीलों में उतरते सूर्य की किरणों का मनोहर वर्णन किया है। प्रभात की किरणें पहाड़ियों पर से होकर घाटियों में उतरती आ रही है। दाहिने ओर से शिखरों पर मेघ इस प्रकार लेटे हैं, जैसे प्रेमी और प्रेमिका रात की खुमारी के बाद भी अलग नहीं होना चाहते हैं। वहीं दूसरी ओर शिकारे पर बैठे किशोर-किशोरियों का वर्णन भी किया है। झील के वक्ष में किशोर और किशोरी कुछ-कुछ उन रक्त कमलों जैसे लग रहे हैं। लेखक ने कश्मीर के प्राकृतिक सौंदर्य का मनोहर चित्र प्रस्तुत किया है।

बोध प्रश्न

- लेखक ने किरणों और बादलों की तुलना किससे की है?

प्रकृति और परिवेश

प्रकृति सदा से ही मनुष्य को अपनी ओर आकर्षित करती रही है। कश्मीर जिसे धरती का स्वर्ग कहा जाता है उसे देखकर ऐसा लगता है कि वह इस कथन को सार्थक कर रहा है। राजतरंगिणी के कवि ने लिखा है कि तीनों लोकों में रत्नों को पैदा करने वाली धरती सबसे सुंदर

है। इसके उत्तर दिशा में कुबेर पर्वत है और उससे अधिक सुंदर गिरिराज है। कश्मीर हिमालय की गोद में बसा है। जहाँ की झीलें, वृक्ष इत्यादि सदैव मनुष्य को लुभाते रहे हैं। इस प्रदेश में जाने का मन तो सभी का करता है फिर सैर करने वालों की तो बात ही अलग है। वातावरण में केसर और फूलों की महक घुली हुई है जो मन को मादक कर देती है। बड़े-बड़े देवदार, बादाम, चीड़ के पेड़ हवा में झूलते रहते हैं। दुर्गम पहाड़ियों के बीच से निकलती नदियाँ श्वेत धारा के समान लगती है। 12,000 फीट की ऊँचाई पर स्थित शेषनाग झील का वर्णन भी लेखक ने किया है। इस यात्रावृत्तांत का परिवेश स्थिति के हिसाब से बदलता है। कहीं तो ग्रामीण झलक दिखती है तो कहीं शहरी जीवन का वर्णन मिलता है।

बोध प्रश्न

- 'धरती का स्वर्ग' के प्राकृतिक परिवेश की क्या विशेषता है?
- राजतरंगिणी के कवि ने कश्मीर के बारे में क्या लिखा है?

सांस्कृतिक बोध

विष्णु प्रभाकर ने 'धरती का स्वर्ग' यात्रावृत्तांत में कश्मीर की संस्कृति का परिचय कम ही दिया है। लेखक का दिल प्राकृतिक सौंदर्य वर्णन में अधिक रमा है। फिर भी प्रभाकर जी ने सांस्कृतिक पक्ष का भी वर्णन किया है। डल झील पर लगने वाला नौका बाजार वहाँ की संस्कृति का हिस्सा है। इसके अतिरिक्त लेखक ने वहाँ की और झीलों शेषनाग, मानस बल इत्यादि का वर्णन किया है। इन स्थानों में क्या प्रसिद्ध है इन सबका वर्णन लेखक ने किया है। लेखक ने कश्मीर के लोक संगीत इत्यादि का भी वर्णन किया है।

बोध प्रश्न

- नौका बाज़ार कहाँ लगता है?

24. 3 पाठ सार

विष्णु प्रभाकर हिंदी साहित्य के यथार्थवादी लेखक हैं। उन पर गांधी जी के विचारों का गहरा प्रभाव पड़ा था। उनके बाह्य और आंतरिक व्यक्तित्व के निर्माण में गांधी चिंतन की बड़ी भूमिका रही। वे विचारों से गांधीवादी तथा स्वभाव से आदर्शवादी थे। सदैव खादी के वस्त्र पहनते थे तथा साहित्यकार कम और नेता ज्यादा लगते थे। वे 'मानव' को साहित्य का परम लक्ष्य मानते थे। वे 'मानवतावादी' आदर्श के बिना जीवित नहीं रह सकते थे। उन्होंने स्वयं कहा है कि मनुष्य जो कुछ दिखाई देता है केवल वही नहीं है, इसके अतिरिक्त वह कुछ और ही है,

बल्कि वह और कुछ से अधिक है। वे आदर्श और यथार्थ को एक दूसरे के विपरीत नहीं, पूरक मानते थे। उन्होने लिखा आई कि समन्वय मुझे प्रिय है और 'मानवता' मेरा लक्ष्य।

विष्णु प्रभाकर ने गांधी जी से प्रभावित होकर भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान निरंतर राष्ट्रीय चेतना और सांस्कृतिक मूल्यों को अभिव्यक्त करने वाला साहित्य रचा। अपने दौर के लेखकों में वे प्रेमचंद, यशपाल, जैनेंद्र और अज्ञेय जैसे साहित्यकारों के समकालीन रहे। लेकिन उन्होंने इन सबसे अलग अपनी निजी रचना शैली विकसित की। उन्होंने कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी, संस्मरण, यात्रावृत्त, जीवनी और बाल साहित्य आदि विधाओं में बड़ी मात्रा में लेखन किया। उनके द्वारा रची गई शरतचंद्र चट्टोपाध्याय की जीवनी 'आवारा मसीहा' उनकी पहचान का पर्याय मानी जाती है। महाकाय उपन्यास 'अर्धनारीश्वर' पर उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ।

विष्णु प्रभाकर ने अनेक यात्रा वृत्तांत लिखे हैं। उन यात्रा वृत्तांतों में 'धरती का स्वर्ग' भी एक महत्वपूर्ण यात्रा वृत्तांत है। 'धरती का स्वर्ग' में लेखक ने कश्मीर के प्राकृतिक सौंदर्य का अभूतपूर्व चित्रण किया है। कश्मीर का, वहाँ की झीलों का, घाटियों का और वहाँ के लोक जीवन का चित्रण किया है। साथ ही लेखक ने वहाँ के पहाड़ी दृश्यों का अत्यंत मनोरम चित्र अंकित किया है। लेखक ने झील की तुलना नीलवर्ण से की है और झील में उतरते सूर्य की किरणों का मनोहर वर्णन किया है। प्रभात की किरणें पहाड़ियों पर से होकर घाटियों में उतरती आ रही है। दाहिने ओर से शिखरों पर मेघ इस प्रकार लेटे हैं, जैसे प्रेमी और प्रेमिका रात की खुमारी के बाद भी अलग नहीं होना चाहते हैं। वहीं दूसरी ओर शिकारे पर बैठे किशोर-किशोरियों का वर्णन भी मनोरम है। लेखक को ये किशोर और किशोरी झील में खिले रक्त कमलों जैसे लगते हैं।

इस यात्रा वृत्तान्त में लेखक ने कश्मीर की संस्कृति की तुलना में वहाँ के प्राकृतिक सौंदर्य के चित्रण में अधिक रुचि प्रदर्शित की है। इसके बावजूद कुछ स्थलों पर कश्मीर का सांस्कृतिक पक्ष भी कुछ सीमा तक सामने आ सका है। डल झील पर लगने वाला नौका बाजार वहाँ की संस्कृति का हिस्सा है। इसके अतिरिक्त लेखक ने वहाँ की दूसरी झीलों शेषनाग, मानस बल इत्यादि का भी रोचक वर्णन किया है। साथ ही यह भी स्पष्ट किया गया है कि इन स्थानों की प्रसिद्धि का आधार क्या है। प्रसंगवश लेखक ने कश्मीर के लोकसंगीत का भी यथास्थान वर्णन किया है।

24.4 पाठ की उपलब्धियाँ

इस पाठ के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष उपलब्ध हुए हैं-

1. विष्णु प्रभाकर एक साधारण पृष्ठभूमि से उठे ऐसे लेखक हैं जिन्होंने निरंतर लेखन से उत्कृष्ट

साहित्यिक उपलब्धियाँ अर्जित कीं।

2. विष्णु प्रभाकर ने विविध विधाओं में साहित्य रचकर अपनी बहुमुखी प्रतिभा का परिचय दिया है।
3. 'धरती का स्वर्ग' लेखक का एक मार्मिक यात्रावृत्त है जिसकी चित्रात्मकता पाठक को बांध लेती है।
4. कश्मीर का प्राकृतिक सौंदर्य मनमोहक है।
5. कश्मीर की लोक संस्कृति वहाँ के निवासियों के प्रकृति प्रेम का दर्पण है।

24.5 शब्द संपदा

1. अठखेलियाँ	=	मस्ती और विनोद से भरी चंचलता
2. अभूतपूर्व	=	जो पहले न हुआ हो
3. अरुण	=	प्रात:कालीन सूर्य
4. इंदुदल	=	छोटे छोटे बादल
5. कुसुम	=	फूल
6. गिरिशिखर	=	पहाड़ की चोटी
7. धवल	=	उजला, सफेद
8. नीलवर्णन	=	नीला रंग
9. सुरभि	=	सुगन्धित, खुशबूदार
10. सुषमा	=	अत्यधिक सुंदर
11. सौरभ	=	महक

24.6 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. विष्णु प्रभाकर का साहित्यक परिचय अपने शब्दों में दीजिए?

2. 'धरती का स्वर्ग' का सांराश लिखिए?

3. 'धरती का स्वर्ग' के आधार पर कश्मीर के प्राकृतिक सौंदर्य का निरूपण कीजिए?

4. 'धरती का स्वर्ग' का तात्विक विश्लेषण कीजिए।

खंड (ब)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. विष्णु प्रभाकर के कृतित्व पर प्रकाश डालिए।

2. 'धरती का स्वर्ग' में चित्रित आत्मीयता का विवेचन कीजिए।

3. 'धरती का स्वर्ग' में निहित सांस्कृतिक बोध पर चर्चा कीजिए।

खंड (स)

I सही विकल्प चुनिए

1. विष्णु प्रभाकर का जन्म कब हुआ था? ( )

(क) 1927ई. (ख) 1912ई.

(ग) 1918ई. (घ) 1911ई.

2. शरत चंद्र की जीवनी किसने लिखी थी। ( )

(क) मोहन राकेश (ख) धर्मवीर भारती

(ग) विष्णु प्रभाकर (घ) इनमें से कोई नहीं

3. विष्णु प्रभाकर को किस रचना पर साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला था? ( )

(क) अर्धनारीश्वर (ख) आवारा मसीहा

(ग) ढलती रात (घ) इनमें से कोई नहीं

4. विष्णु प्रभाकर की मृत्यु कब हुई थी? ( )

(क) 2005ई. (ख) 2007ई.

(ग) 2008ई. (ग) 2009ई.

5. ढलती रात किसका उपन्यास है? ( )

(क) विष्णु प्रभाकर (ख) शरत चंद्र

(ग) कुबेरनाथ राय (घ) मोहन राकेश

II रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए

1. विष्णु प्रभाकर हिंदी साहित्य के ....वादी लेखक हैं।

2. विष्णु प्रभाकर पर .... के विचारों का गहरा प्रभाव पड़ा था।

3. .... कश्मीर की सुप्रसिद्ध झील है।

4. कश्मीरी लोग .... में अपना सामान बेचते हैं।

5. विष्णु प्रभाकर को .... पर साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला था।

III सुमेल कीजिए

i) आवारा मसीहा	(अ) नाटक
ii) धरती का स्वर्ग	(आ) उपन्यास
iii) अर्द्धनारीश्वर	(इ) कहानी
iv) युगे युगे क्रांति	(ई) जीवनी
v) धरती अब भी घूम रही है	(उ) यात्रा वृत्तांत

24. 7 पठनीय पुस्तकें

1. संघर्ष के बाद. विष्णु प्रभाकर.

2. हिंदी यात्रा साहित्य : एक विहंगम दृष्टि. विश्व मोहन तिवारी.

3. आधुनिक हिंदी गद्य साहित्य. हरदयाल.

4. यात्रा साहित्य का उद्भव और विकास. सुरेंद्र माथुर.

5. हिंदी यात्रा साहित्य. श्रीनिवास नाइक.

परीक्षा प्रश्न पत्र का नमूना

Programme: BA Hindi MIL

Title and Paper Code: आधुनिक हिंदी गद्य (BAHN601GET)

SEMESTER : 1st

Time: 3 hours | Marks: 70

यह प्रश्नपत्र तीन भागों में विभाजित है- भाग 1 भाग 2 और भाग 3। प्रत्येक प्रश्न के उत्तर निर्धारित शब्दों में दीजिए।

भाग-1

1. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर एक शब्द या एक वाक्य में दीजिए- 1x10=10

I. सैटायर के लिए हिंदी में किस शब्द का प्रयोग होता है ?

II. 'ढलती रात' किसका उपन्यास है ?

III. कहानी कला के कितने तत्व होते हैं ?

iv. प्रसाद जी का कौन सा उपन्यास अपूर्ण है ?

v. 'दिव्या' उपन्यास के उपन्यासकार का नाम बताइए ?

vi. हिंदी निबंध के जनक का नाम बताइए ?

vii. 'अमृत और विष' किसका उपन्यास है ?

viii. यात्रा साहित्य का आरंभ कब से हुआ ?

ix. 'आवारा मसीहा' किसकी जीवनी है ?

x. आत्मालोचन किस विधा की विशेषता है ?

भाग-2

निम्नलिखित आठ प्रश्नों में से किन्ही पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 200 शब्दों में देना अनिवार्य है। 5x6 = 30

2. महादेवी वर्मा के गद्य की कुछ विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

3. संस्मरण लेखक के रूप में शिवपूजन सहाय का परिचय दीजिए।

4. आत्मकथा की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

5. 'पंच परमेश्वर' कहानी से लेखक क्या संदेश देना चाहते हैं? स्पष्ट कीजिए।

6. 'धरती का स्वर्ग' में निहित सांस्कृतिक बोध पर चर्चा कीजिए।
7. साहित्यिक विधा के रूप में रेखाचित्र की विशेषताएं बताइए।
8. यात्रा साहित्य का अभिप्राय स्पष्ट कीजिए।
9. एकांकी के महत्व पर प्रकाश डालिए।

भाग-3

निम्नलिखित 5 प्रश्नों में से किन्ही तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 500 शब्दों में देना अनिवार्य है। 3x10 = 30

10. डायरी स्वलेखन है। मोहन राकेश की डायरी के पठित अंश से किसी एक घटना के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

11. हिंदी में संस्मरण विधा के विकास पर उदाहरण सहित चर्चा कीजिए।

12. द्विवेदी युग का संक्षिप्त परिचय देते हुए महावीर प्रसाद द्विवेदी के योगदान की चर्चा कीजिए।

13. कहानी के स्वरूप पर विस्तार से प्रकाश डालिए।

14. हास्य और व्यंग्य के अंत:संबंध पर प्रकाश डालिए।

महत्त्वपूर्ण बिन्दु

महत्त्वपूर्ण बिन्दु